ज्योतिष तत्त्व

ज्योतिष ज्ञान के लिए सुबोधगम्य प्रामाणिक पुस्तक

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी पंचाँगकर्त्ता



ज्योतिष तत्त्व लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी पंचाँगकर्ता

BIG VIEW COMPUTERS

ज्योतिष तत्व

(संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)

जन्मपत्री निर्माण तथा गणित व फलित ज्योतिष का ज्ञान कराने वाली प्रामाणिक पुस्तक

लेखक :

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

गणितमार्तण्ड गोल्डमैडलिस्ट

सम्पादक : पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री एवं तिथ पत्रिका

जालन्धर



कार्यालय :

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी ऐण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट व अड्डा होशियारपुर,

जालन्धर शहर-144008

मूल्य : 60-00 रुपये

प्रकाशक :
पं. पन्ना लाल ज्योतिषाचार्य एम.ए.
पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़,
माई हीरां गेट व अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।
फोन : 57959

नवीन संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

मुख्य वितरक :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर,
जालन्धर शहर–144008

लेज़र टाईपसैटिंग :
कपूर लेज़र ग्राफिक्स
अड्डा टांडा, जालन्धर ।

ज्योतिष तत्त्व

प्राचीनकाल से ही मनुष्य को अपने शुभाशुभ भविष्य को जानने की जिज्ञासा रही है। उसकी इसी प्रवृत्ति ने ज्योतिष विद्या को जन्म दिया। वास्तव में ज्योतिष शास्त्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो ईश्वरीय एवं शुद्ध प्राकृतिक नियमों पर आधारित है। प्राचीन मनीषियों ने अपनी दिव्य ज्ञान चक्षुओं, सतत साधना द्वारा ग्रह-नक्षत्रों की प्रकृति एवं प्रभाव का गहन अनुशीलन किया। जिसके फलस्वरूप हमें गणित एवं फलित ज्योतिष के सिद्धान्त प्राप्त हुए। ज्योतिष शास्त्र भूत, भविष्य और वर्तमान की साकार कहानी है।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रारम्भिक जानकारी, मूलभूत गणितीय एवं फलित सम्बन्धी सिद्धान्त, सम्पूर्ण **जन्मपत्री बनाने की सरल विधियां**, नक्षत्रों, ग्रहों एवं राशियों के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन, तिथि-वारादि पंचाँग परिचय, नवग्रह स्पष्ट एवं भाव स्पष्ट करना, **चलित चक्र, नवांशादि वर्ग** लगाना तथा उन पर आधारित **फलादेश कहना, विंशोत्तरी महादशा**, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा, अष्टोतरी-योगिनी आदि दशाएं निकालने की सरल विधियां उदाहरण सहित बतलाई गई हैं।

इसके अतिरिक्त **चन्द्रस्पष्ट करने की सारिणीयां**, भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं देशान्तर, गोचर ग्रह फल, गण्डान्त विचार आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। जिसके अनुशीलन से साधारण पठित व्यक्ति भी एक कुशल ज्योतिषी बन सकता है। आशा है यह पुस्तक सभी वर्ग के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय होगी।

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

गणितकर्त्ता पंचाँग दिवाकरम्

जालन्धर

वितरक

जनरल बुक डिपो,

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (पंजाब)

विषय सूची

ज्योतिष तत्त्व

सप्तम भाग

अष्टम भाग

नवम भाग

दशम भाग

एकादश भाग

द्वादश भाग

प्राक्कथन (भूमिका)

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपंकज स्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥
स्वर्लोके विराजन्तं ज्योतिः शास्त्रे विचक्षणं महर्षिभाव भावितम्।
विश्व विख्यातं राजपण्डितं प्रपितामहऽहं वन्दे देवीदयालु संज्ञकम् ॥

ज्योतिष जगत में भारतीय मनीषियों द्वारा रचित ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्त एवं फलित ग्रन्थों की कमी नहीं है, परन्तु अधिकांश ग्रन्थ विषय, शैली एवं रचना की दृष्टि से बहु-संस्कृतनिष्ठ एवं अनांनुक्रमिक होने से ज्योतिष के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए सुगमता से बोधगम्य नहीं होते। मेरी चिरकाल से यह आकांक्षा थी कि ज्योतिष जैसे दुरूह्य विषय पर प्राचीन ग्रन्थों एवं अपने अनुभवों के अनुशीलन के पश्चात् ऐसी पुस्तक प्रणीत की जावे, जो ज्योतिष के गणित एवं फलित-दोनों विषयों पर सुगम एवं उपयोगी हो सके।

प्राचीनकाल से ही ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध मानव, मानवीय सभ्यता एवं तत्सम्बन्धी इतिहास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। आदिकाल में केवल सूर्यादि ग्रहों एवं काल का बोध करवाने वाले शास्त्र को ही ज्योतिष शास्त्र माना जाता था-(ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधक शास्त्रम्) परन्तु शनैः-शनैः मानवीय सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य की बाह्य एवं आन्तरिक प्रवृत्तियों का अनुशीलन भी इसी शास्त्र के अन्तर्गत किया जाने लगा। मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप-जैसे सुख-दुख, उन्नति-अवनति, इष्ट-अनिष्ट, भाग्योदयादि-सभी का समाधान 'ज्योतिष शास्त्र' में ढूंढा जाने लगा।

ज्योतिष कोई नया विज्ञान नहीं है और न ही यह कोई नवीन आविष्कार है, बल्कि अतीतकाल में यह एक अत्यन्त विकसित शास्त्र रहा है। जिसके अनेक मौलिक सूत्र सभ्यता और इतिहास के थपेड़ों से कहीं बिखर गए थे। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं विकीर्ण सूत्रों को एक सूत्र में पिरोने की मेरी अल्प चेष्टा मात्र होगी।

भारतीय ज्ञान की पृष्ठभूमि में ज्योतिष सम्भवतः सबसे पुराना विषय है। ऋग्वेद में ९५ हजार वर्ष पूर्व ग्रह-नक्षत्र की स्थिति का वर्णन मिलता है। इसी आधार पर लोकमान्य तिलक ने ज्योतिष को इतने वर्ष के पूर्वकाल में इसके अस्तित्व को स्वीकार किया है। वस्तुतः ज्योतिष एक वैज्ञानिक चिन्तन है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में सम्पूर्ण विश्व एक जीवन्त संरचना (Organic Unity) है। इस जगत में जो कुछ भी घटित हो रहा है अथवा भविष्य में घटित

होगा, वह सापेक्षित है–अर्थात् प्रत्येक घटनाक्रम कारण अथवा कार्य रूप में किसी अन्य वस्तु पिण्ड से प्रभावित हो रहा है। भविष्य बिल्कुल अनिश्चित नहीं है, बल्कि वह संश्लिष्ट रूप से अतीत और वर्तमान से जुड़ा हुआ है। ज्योतिष केवल ग्रह–नक्षत्रों आदि का अध्ययन मात्र नहीं, बल्कि यह मनुष्य और प्रकृति को अलग–अलग आयामों से जानने की प्रक्रिया है।

आधुनिक विज्ञान भी अब स्वीकार करने लगा है कि ग्रह नक्षत्रों आदि से मनुष्य जीवन निश्चित रूप से प्रभावित होता है। परन्तु व्यक्तिगत रूप से कोई मनुष्य कितना प्रभावित होता है ? इस सम्बन्ध में अभी कोई निश्चित वैज्ञानिक मान्यताएं प्रकट नहीं हुईं। ज्योतिष इस सम्बन्ध में अवश्य उत्तर देता है। परन्तु मनुष्य पर ग्रहों आदि के प्रभाव के सम्बन्ध में यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि ग्रह–नक्षत्रादि सौर–पिण्ड मनुष्य जीवन के शुभाशुभ फलादेश के नियामक नहीं है, परन्तु सूचक हैं। (Planets indicate & impel the future happenings, they do not compel it) मनुष्य और प्राकृतिक पदार्थों के अणु–अणु का परिशीलन एवं विश्लेषण करना भी ज्योतिष शास्त्र का ध्येय है। विश्व के समस्त क्रिया–कलापों को देशकाल एवं दिशा के तीन आयामों में स्वीकारते हुए हमारे पूर्वाचार्यों ने एक विराट काल पुरुष की कल्पना की है। काल पुरुष के अन्तर्गत नवग्रहों एवं द्वादश राशियों की परिकल्पना की गई है। **जैसे सूर्य को काल पुरुष की आत्मा, चन्द्रमा को मन, मंगल को सत्त्व, गुरु को ज्ञानादि का प्रतीक माना गया है।** इस भांति शिरादि पर मेष राशि का आधिपात्य माना गया है। (इनका विस्तृत विवेचन पुस्तक के भीतर किया गया है)

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता के सम्बन्ध में किसी भी बुद्धिजीवी व्यक्ति को सन्देह नहीं होना चाहिए। जैसे कि पहले भी लिखा है कि यह शास्त्र एक सूचनात्मक शास्त्र है। इस शास्त्र के ज्ञान के द्वारा मनुष्य को शुभ या अशुभ काल, यश–अपयश, लाभ–हानि, उन्नति–अवनति, जन्म–मृत्यु, भाग्योदयकाल आदि का ज्ञान हो सकता है। जैसे वर्षा आगमन की सूचना शीतवायु के प्रवाह से पूर्वतः ही मिल जाती है एवं च जैसे मछलियों को समुद्रिक तूफान की पूर्वानुभूति हो जाती है, उसी भान्ति ज्योतिष आचार्यों द्वारा प्रणीत ज्योतिषीय सूत्रों से मनुष्य के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य काल की सूचनाएं इस शास्त्र के अनुशीलन द्वारा ज्ञात की जा सकती हैं। मनुष्य के अनुकूल, प्रतिकूल समय का ज्ञान कराने वाला एकमात्र साधन ज्योतिष ही है। ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध प्रायः सभी शास्त्रों के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। दर्शन शास्त्र, गणित शास्त्र, खगोल एवं भूगोल शास्त्र, मंत्र शास्त्र, कृषि शास्त्र, आयुर्वेद आदि शास्त्रों के साथ तो ज्योतिष का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मिलता है। अतएव इस शास्त्र की सर्वाधिक उपयोगिता यही है कि यह मानव जीवन के अनेक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रहस्यों का विवेचन करता है और मानव जीवन

लीला को प्रत्यक्ष रूप में रखे हुए दीपक की भान्ति प्रकट करता है। व्यवहार के लिए अत्यन्त उपयोगी दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, अयन, ऋतु, सम्वत्सर उत्सवों आदि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा होता है। काल के मुख्य पांच अंगों तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण का सम्पूर्ण वर्णन ज्योतिष के वार्षिक प्रकाशन पंचांग द्वारा करवाया जाता है। पंचांग में ग्रहों के उदय, अस्त, वक्री–मार्गी, राशि परिवर्तन, नक्षत्र प्रवेश, चन्द्र–सूर्यग्रहण, धार्मिक पर्व, सामाजिक उत्सव, महापुरुषों के जन्मदिन, वर्षा आदि का ज्ञान, विवाहादि शुभ मुहूर्त्त, राशि चक्र, सर्वार्थ सिद्धादि योगों तथा राजनीतिक भविष्यवाणियों का विशद वर्णन दिया रहता है। जिस कारण प्रत्येक हिन्दू धर्म–परायण व्यक्ति का इस शुद्ध गणित ग्रंथ (पंचांग) के प्रति श्रद्धावान होना स्वाभाविक ही है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर ज्योतिष शास्त्र का विशेष प्रभाव रहा है।

पूर्वकाल से ही ज्योतिष सम्बन्ध के तीन विभाग किए गए हैं।

सिद्धान्त संहिता–होरारूपं स्कन्ध त्रयात्मकम् ।
वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शास्त्रमनुत्तमम् ॥

सिद्धान्त ज्योतिष के अन्तर्गत नक्षत्रों एवं सूर्यादि ग्रहों की स्पष्ट गति व स्थिति, अयन, योग, ग्रहण, ग्रहों के उदयास्तादि के विषयों का सैद्धान्तिक विवेचन दिया रहता है। यथा–सिद्धान्त शिरोमणि संहिता ग्रन्थों में ग्रहस्थिति वश भिन्न–भिन्न काल पर विभिन्न देशों पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभावों का वर्णन जैसे–सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवर्षा, बाढ़, युद्ध, राज्य–क्रान्ति आदि का वर्णन रहता है। यथा–वृहत्संहिता, होरा शास्त्र–में जातक के जन्म समय, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि के आधार पर मनुष्य के सुख–दुख, लाभ–हानि आदि परिस्थितियों की सूचना मिलती रहती है। श्री पाराशरकृत होरा शास्त्र, वाराहामिहिर का वृहद्जातकम् आदि ग्रन्थ इसी क्षेत्र में आते हैं।

ज्योतिष तत्त्व–दो अलग–अलग भागों में प्रकाशित की जा रही है। प्रस्तुत प्रथम भाग में ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष के विभिन्न अंगों, सृष्टिक्रम व सौर मण्डल का वर्णन, काल विभाजन, पंचांग परिचय, तिथियों, नक्षत्रों, राशियों एवं ग्रहों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के साथ साथ लग्न कुण्डली तैयार करने की सरल एवं सुगम प्रणालियां, राशियों एवं लग्नों के स्वोदयमान ज्ञात करना, नवग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्टादि करना, चलित भाव चक्र, नवांशादि सप्तवर्गी की बृहद् जन्मपत्री निर्माण करने की सोदाहरण विधियां, विंशोतरी, अष्टोतरी, योगिनी आदि दशाएं, अन्तर्दशाएँ, एवं प्रत्यन्तर्दशाएँ निकालने की सरल विधियां उदाहरण सहित वर्णन की गई हैं। इनके अतिरिक्त ग्रहों के कालादि बल, शयनादि अवस्थाएं निकालने की विधियाँ एवं फल तथा अंत में जन्मपत्री द्वारा जातक के फलादेश कथन सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों एवं दशाऽन्तर्दशाओं के फल का

विस्तृत वर्णन किया गया है, जिनका आद्योपान्त पठन, मनन एवं अभ्यास करने के पश्चात ज्योतिष का प्रारम्भिक विद्यार्थी सहज रूप से एक कुशल ज्योतिषी बन सकता है।

पुस्तक के इस नवीन संशोधित संस्करण में फलादेश में उपयोगी नियमों के अतिरिक्त संवत्सरों एवं ऋतुओं में जन्म का फल, चैत्रादि सौर मासों में जन्म फल, जन्म तिथि एवं सप्तवारों में जन्म का फल तथा सत्ताईस नक्षत्रों में जातक के जन्म का विस्तृत फलादेश संयोजित कर दिया गया हैं ताकि जिज्ञासु प्रारम्भिक विद्यार्थियों के मन में फलादेश सम्बन्धी अभिरूचियों को जागृत किया जा सके।

पाठकों के लाभार्थ, सूर्यादि ग्रहों की अन्तरदशाओं में प्रत्यन्तर दशाएं, प्रमुख नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा जालन्धर से भारत के अन्य प्रसिद्ध नगरों के लग्नान्तर की सारणियों का समावेश भी कर दिया गया है।

यद्यपि ज्योतिष जैसे अत्यन्त गूढ़, विस्तृत एवं अगाध विषय को एक ही पुस्तक के अन्तर्गत कतिपय नियमों में आबद्ध करना प्रायः सम्भव कार्य नहीं है। तथापि अपनी अल्पमति एवं अपने दिवंगत पूज्य पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी, पं. मोहन लाल व दिवंगत पिता पं. चूनी लाल प्रभृति पूर्वजों के शुभाशीषों एवं प्रेरणा स्वरूप 'ज्योतिष तत्त्व' का यह लघु प्रयास कहां तक सफल हो पाया है, इसका निर्णय तो स्वयं सुविज्ञ पाठकवृन्द ही कर पाएंगे। इस पुस्तक की रचना में जिन ज्ञात एवं अज्ञात विद्वानों एवं ग्रन्थों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सबके प्रति मैं हृदय से आभारी हूं। पुस्तक के लेखन–सम्पादन में असावधानीवश, यदि कहीं त्रुटि रह गई हो, तो सुविज्ञ पाठक कृपया यदि, अपनी अमूल्य सम्मति भेजने का कष्ट करेंगे तो, मैं उनका हृदय से आभारी रहूंगा, ताकि आगामी संस्करण में उनका संशोधन करके 'ज्योतिष तत्त्व' को जन साधारण के हितार्थ और भी अधिक उपयोगी बनाया जा सके। प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में सूर्यादि ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टियों के विषय में ओर अधिक वर्णन किया गया है।

स्खलनं गच्छतः क्वाऽपि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समदधति सज्जनाः ॥

दिनांक
८ मार्गशीर्ष
वि. संवत २०५५

निवेदक :–
पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए.
गणितकर्त्ता, पंचांग दिवाकर व
मुफीद आलम जंत्री, माई हीरां गेट व
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।
फोन : 221325 एवं 57959

*** प्रस्तुत संशोधित एवं संवर्धित संस्करण में ज्योतिष सम्बन्धी अत्यन्त नवीन एवं महत्त्वपूर्ण विषय शामिल किए गए हैं।**

ज्योतिष : उद्भव और विकास

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्राकौ यत्र साक्षिणौ ॥

न्याय, मीमांसादि अप्रत्यक्ष शास्त्रों के सम्बन्ध में परस्पर विवाद अथवा संदेह उत्पन्न हो सकते हैं, परन्तु ज्योतिष तो पृथ्वी पर प्रत्यक्ष शास्त्र है। सूर्य चन्द्रादि ग्रह इसके स्वयं सिद्ध साक्षी हैं।

ज्योतिष का प्रादुर्भाव मानवीय सभ्यता के प्रारम्भिक विकास से हो गया था। छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार "मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके पूर्व-संकल्पों और कामनाओं का परिणाम है। वह इस जीवन में जैसा संकल्प करता है, वैसा ही यहां से जाने के पश्चात् बन जाता है।" वस्तुतः मनुष्य वर्तमान में, अतीत और भविष्य की कड़ी एवं श्रृंखला है। जहां पर जगत् की अनन्त शक्तियां आकर एक बिन्दु को काटती हैं, वहीं एक जीवन या व्यक्ति का जन्म होता है। सम्पूर्ण जगत् एक संयुक्त इकाई (Organic Unity) है। ग्रह-नक्षत्रों पर होने वाले प्रत्येक परिवर्तन का प्रभाव पृथ्वी एवं तद् विषयक प्राणियों पर पड़ रहा है।

अनादि काल से अज्ञात् एवं अगोचर के प्रति जिज्ञासा या उत्सुकता के कारण मनुष्य सतत अन्वेषणशील रहा है। (अथातो ब्रह्मजिज्ञासा) । सम्भवतः इसी जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण आदि मानव ने अपने परिवेश से हज़ारों-लाखों मील दूर संचरणशील ग्रह-नक्षत्र एवं तारा-मण्डलों के स्वरूप तथा उनके प्रभावों का गहन अध्ययन (निरीक्षण) करना प्रारम्भ कर दिया। सृष्टि के अनन्त-गहन रहस्य को समझ पा लेना यद्यपि सामान्य मानव के बस की बात नहीं, तथापि दिव्य चक्षु प्राप्त हमारे प्राचीन ऋषियों ने मानव कल्याण की भावना से अनुप्रेरित होकर ज्योतिष शास्त्र की रचना की। उन्होंने वेदादि सत्य शास्त्रों का मन्थन कर ज्योतिष शास्त्र को प्रकट किया। इसकी जन्मभूमि भारतवर्ष ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं। वैदिक साहित्य के अनुशीलन से पता चलता है कि वेदाङ्ग के छः अंग १. ज्योतिष, २. शिक्षा, ३. कल्प, ४. व्याकरण, ५. निरुक्त और ६. छान्दोग्य शास्त्र जाने जाते हैं। वैदिक ज्योतिष के रचयिता ऋषि लगधाचार्य माने जाते हैं। षडाङ्ग में ज्योतिष शास्त्र को मूर्धन्य स्थान प्राप्त था। ज्योतिष शास्त्र को वेद चक्षु भी कहा जाता है। इसके बिना कोई भी श्रुति स्मार्तादि-कार्य सिद्ध नहीं होता था।

''वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम् ।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तां न सिद्धयति ॥''   नारद

दिव्य चक्षु प्राप्त ऋषियों द्वारा इस गहन, रहस्यमय ज्योतिष शास्त्र का सूत्रपात अति प्राचीन काल से ही हो चुका था। वेदांग पूर्व वैदिक साहित्य में अनेकत्र ज्योतिष विषयों का प्रसंगवश उल्लेख मिलता है। सहस्रों वर्ष पूर्व मानव ने जब आधुनिक कारिमक यंत्रों की कल्पना भी नहीं की थी तभी दिव्य दृष्टि प्राप्त हमारे मनीषियों ने 'या पिण्डे सा ब्रह्माण्डे' महतो महीयान् अणोऽणीयान्' के सिद्धान्तानुसार पिण्ड और ब्रह्माण्ड में, नर–नारायण में, 'व्यष्टि–समष्टि' में तादात्म्य स्थापित करते हुए मात्र सूक्ष्मऽन्तर्चक्षुओं के द्वारा आकाश में विचरणशील ग्रह–नक्षत्रों की गतियों एवं समस्त प्राणियों पर उनके प्रभाव का विशद वर्णन किया है। ऋक्, यजुः एवं अथर्ववेद में कृतिकादि नक्षत्रों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। ऋग्वेद में नक्षत्र गणना कृतिका नक्षत्र से की जाती थी। इससे कुछ विद्वान अनुमान लगाते हैं कि वैदिक काल में कृतिका का प्रथम चरण ही सम्पात् बिन्दु था। अथर्ववेद में मूला नक्षत्र में उत्पन्न बालक की अरिष्ट शान्ति के लिए अग्नि आदि देवताओं से प्रार्थना की गई है। शतपथ और तैतिरीय ब्राह्मण ग्रन्थों में नक्षत्रों की आकृति का सुन्दर विवेचन मिलता है। आकाश रूपी प्रजापति का चित्रा शिर, हस्त हाथ, स्वाती हृदय, विशाखा जंघा एवं अनुराधा पाद है।'' इस प्रकार नभस्थ नक्षत्रों की समष्टि रूप विराट काल पुरुष के रूप में स्थापना की कल्पना की गई है। कुछ मन्त्रों में यज्ञ एवं अन्य धार्मिक कृत्यों के लिए शुभाशुभ नक्षत्रों का वर्णन किया गया है।

वैदिक साहित्य में गुरु, शुक्रादि ग्रहों के भी स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। ऋग्वेद संहिता के ५वें मण्डल में सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण का वर्णन मिलता है। पृथ्वी के गोल आकार और निराधारत्व के सम्बन्ध में भी ऋग्वेद संहिता में स्पष्ट वर्णन मिलते हैं।

तैतिरीय ब्राह्मण में एक प्रसंगानुसार स्वाती (निष्ट्या) नक्षत्र में दान की गई कन्या पति को अत्यन्त प्रिय रहती है।

''यां कामयेत दुहितरं प्रिया स्यादिति ।
तां निष्ट्यायां दद्यात् । प्रियैव भवति ।''   **तै ब्रा. १/५/२**

इसके अतिरिक्त कल्प, निरुक्त, श्रुति, स्मृति एवं महाभारतादि ग्रन्थों में भी ज्योतिष पिण्डों के स्पष्ट उल्लेख पाए जाते हैं।

महाभारत काल में भी ग्रहों का शुभ नक्षत्रों के साथ योग होना प्राणियों के लिए कल्याणकारी माना जाता था। शुक्र, गुरु को शुभ तथा शनि, मंगल को दुष्ट ग्रह माना जाता था। मंगल का वक्री होकर अनुराधा नक्षत्र में जाना अशुभ माना जाता था। एक ही मास में सूर्य, चन्द्र दो ग्रहणों का तथा १३ दिन के पक्ष का होना अत्यन्त अशुभ बताया गया है।

याज्ञवलक्य स्मृति में नवग्रहों का स्पष्ट वर्णन मिलता है–

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः ।
शुक्रः शनैश्चरी राहु केतुश्चैते ग्रहा स्मृताः ॥

उपरोक्त किंचित् उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि अति प्राचीन वैदिक काल से ही हमारे पूर्वज ऋषियों को ज्योतिष का विशेष ज्ञान प्राप्त था। जिसकी अभिव्यक्ति क्रमिक साहित्य के रूप में धीरे–धीरे हुई। वस्तुतः ज्योतिष के प्रारम्भिक विकास का इतिहास संसार की सभ्यता के उत्थान का इतिहास है। भारतीय ज्योतिष, संस्कृति एवं दर्शनादि शास्त्रों का बहुत सा अमूल्य इतिहास विदेशी आक्रमणों के आघात से नष्ट होता रहा है, परन्तु फिर भी उपलब्ध साहित्य के अवशेषों से पता चलता है कि प्राचीन भारत में ज्योतिषीय सभ्यता और संस्कृति का इतिहास कितना समृद्ध था।

वेदांग ज्योतिष जिसके रचयिता (ऋषि लगधाचार्य माने जाते हैं) के काल में ज्योतिष ने समस्त वेदांगों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर लिया था। वेदांग काल ई. पूर्व ५०० वर्ष माना जाता है। इस युग में ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान को व्यवहारोपयोगी होने के साथ–साथ आत्म ज्ञान पथ–प्रदर्शक माना जाता था। ज्योतिष को परम कल्याण प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है तथा यह सम्पूर्ण लोगों के शुभाशुभत्व को व्यक्त करने वाला है–

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ॥

वेदांगोत्तर काल में ज्योतिष सम्बन्धी अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ एवं फुटकर रचनाएं मिलती हैं। जैसे–सूर्य प्रज्ञाप्ति, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, ज्योतिष्करण, कल्प सूत्र, निरुक्त, व्याकरण स्मृति और महाभारतादि ग्रन्थों में ईसवी सन् से सैंकड़ों वर्ष पूर्व ज्योतिष के विभिन्न विषयों के प्रसंगवश उल्लेख मिलते हैं।

सन ईसवी की प्रथम शताब्दी के उपरान्त ज्योतिष शास्त्र में विशेष उन्नति हुई। अनेक ऋचनाओं में अभिव्यक्त ज्योतिष सूत्रों को क्रमबद्ध ज्योतिष ग्रन्थों कें रूप में मुखरित किया जाने लगा। इस काल में ज्योतिष शास्त्र के निम्न २० मुख्य प्रवर्त्तक हुए, जिन्होंने अपने दिव्य ज्ञान के मंथन द्वारा ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों का प्रणयन किया–

"१. सूर्य, २. पितामह, ३. बृहस्पति, ४. व्यास, ५. वसिष्ठ, ६. अत्रि, ७. पाराशर, ८. काश्यप, ९. नारद, १०. गर्ग, ११. मरीचि, १२. मनु, १३. अंगिरा, १४. लोमश, १५. पुलिश, १६. च्यवन, १७. यवन, १८. भृगु, १९, शौनक, २०. पुलस्त्य"

उपरोक्त ऋषि–प्रणीत ग्रन्थों में ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का मौलिक एवं विशद वर्णन किया गया। इन्हीं से प्रभावित होकर पाश्चात्य देशों में भी ज्योतिष ज्ञान प्रफुलित होने लगा था। दूसरी शताब्दी में पाश्चात्य देशों में ज्योतिष ज्ञान जब अभी प्रस्फुटित हो रहा था, भारतवर्ष में यह ज्ञान उत्कृष्ट सीमा पर था। विदेशी विद्वानों ने भी यह तथ्य निसंकोच

रूप से स्वीकार किया है। ज्योतिष--शास्त्र के पूर्वोक्त प्रवर्त्तक–मनीषियों के पश्चात् अनेक मूर्धन्य ज्योतिषाचार्य हुए, जिन्होंने भारतीय ज्योतिष के विभिन्नांगों को सुसज्जित करने में अपनी–अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनमें आचार्य आर्यभट्ट प्रथम, आर्यभट्ट द्वितीय, वाराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भट्टोत्पल, श्रीपति, भास्कराचार्य मकरन्द, केशवानन्द, गणेश, नीलकण्ठ, ढुण्डिराज (जातकाभरण) गोविन्द आदि तथा आधुनिक काल में सूर्यनारायण व्यास दिवाकर, कमलाकर भट्ट, बापूदेव शास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, केतकाचार्य मानसागर, पं. देवी दयालु आदि।

श्री बापूदेव शास्त्री और केतकाचार्य ने भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष के ग्रह–गणित सिद्धान्तों का सूक्ष्म एवं समन्वयात्मक चित्रण अपनी पुस्तकों में किया है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में भारतीय ऋषियों ने अपने दिव्यज्ञान और योग बल से ग्रह और नक्षत्रों के सम्बन्ध में अद्वितीय ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे आकाशीय पिण्डों–(ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि) का आधिपत्य मानव–शरीर एवं सम्पूर्ण जगत पर मानते हुए उनके शुभ–अशुभत्व का निरूपण करते रहे हैं। यह आज की भारतीय सभ्यता एवं समाज का दुर्भाग्य है कि सामान्य लोग अपनी प्राचीन एवं पौराणिक परम्पराओं को भूल कर पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर रहे हैं।

एक समय था जब ज्योतिष को मात्र ग्रह, नक्षत्रादि का ज्ञान करवाने वाला शास्त्र माना जाता था।

"ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम् ॥"

परन्तु आदिकाल के अन्त से ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्त गणित और फलित, ये दो भेद स्वतन्त्र रूप में प्रस्फुटित होने प्रारंम्भ हो गए थे। इस शास्त्र के अन्तर्गत ग्रहों की गति, स्वरूप, रंग, दिशा, तत्त्व, उदयास्त, शुभाशुभत्वादि के साथ–साथ यज्ञादि कार्यों में शुभ मुहूर्त्त एवं मानव जीवन के सुख–दुख, इष्ट–अनिष्ट, भाग्योदयादि का भी व्यापक विवेचन होने लगा था। सूर्य सिद्धान्त के काल (ई. पू. ११०) से तो ज्योतिष शास्त्र १. सिद्धान्त २. संहिता और ३. होरा–इस त्रयात्मक स्कन्ध के रूप में स्पष्टतः प्रकट होने लगा। सन् ई. प्रथम शताब्दी में वसिष्ठ, नारद संहिता, गर्ग संहिता आदि अनेक सिद्धान्त और संहिता ग्रन्थों का प्रणयन हो चुका था। तदनन्तर पाराशर, वराहमिहिर के काल (५०० ई.) के बाद तो ज्योतिष शास्त्र में ग्रह, नक्षत्र, राशि एवं मानव जीवन के सम्पूर्ण क्रिया–कलापों के विषयों का समावेश होने लगा। इस काल में ज्योतिष विषय में विशिष्ट एवं व्यापक उन्नति हुई। ज्योतिष के स्कन्धत्रय में प्रश्न शास्त्र और शकुन शास्त्र को भी सम्मिलित कर लिया गया।

इस प्रकार मध्यकाल एवं उत्तरकाल में ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत धार्मिक, पारलौकिक एवं सामाजिक विषयों के अतिरिक्त जीवन से सम्बद्ध प्रायः सभी उपयोगी विषयों का सूक्ष्म विवेचन शुरू हो गया था।

सृष्टि क्रम व हमारा सौर मण्डल

यह समस्त ब्रह्माण्ड अत्यन्त विशाल, असीम एवं अनन्त है। इसमें संचरणशील ग्रह नक्षत्रादि आकाशीय पिण्डों की अथाह विराटता के समक्ष मनुष्य मन की कल्पना की उड़ान भी सीमित अनुभव होती है। तथापि आकाशस्थ पिण्डों की पारस्परिक दूरी का अनुमान लगाने के लिए मील अथवा किलोमीटर एक बहुत स्थूल ईकाई है। इसके लिए 'प्रकाश वर्ष' का प्रयोग किया जाता है। (प्रकाश एक सैकिण्ड में १ लाख, ८६ हज़ार, ३०० मील की दूरी तय कर लेता है।) अतः दूर स्थित किसी आकाशीय पिण्ड का प्रकाश एक वर्ष में जितनी दूरी तय करता है, वैज्ञानिक उसे **'प्रकाश वर्ष' (Light year)** कहते हैं।

हमारी पृथ्वी (जो कि सूर्य परिवार की एक सदस्या है।) ब्रह्माण्ड की विराटता के समक्ष एक 'अणु' मात्र है–यह ग्रहों, नक्षत्रों एवं अन्य तारा समूहों से निरन्तर प्रभावित हो रही है। हमारे सौर मण्डल में पृथ्वी, मंगल, शुक्र आदि सभी ग्रह सूर्य से प्रकाशित होकर उसी के इर्द–गिर्द परिभ्रमण कर रहे हैं। खोज से पता चला है कि हमारा सौर जगत अपने परिवार सहित किसी और शक्तिशाली सूर्य के गिर्द चक्कर काट रहा है। तथा ग्रह मण्डल भी एक विशाल तारा समूह का एक भाग है, जिसे हम ''आकाश गंगा'' **(Galaxy)** कहते हैं। इस आकाश गंगा में सूर्य की भान्ति ही अंसख्य तारा समूह हैं जो कि हमारे सूर्य की तुलना में बहुत बड़े हैं। परन्तु अति दूर होने के कारण चक्षुओं द्वारा बहुत छोटे दिखाई देते हैं। सृष्टि में हमारी 'आकाश गंगा' की भान्ति अन्य और अनगिणित असंख्य तारा समूह भी हैं जो अनन्त एवं रहस्यमय ब्रह्माण्ड के भाग मात्र है। आधुनिक मानव ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने एवं समझने में सतत प्रयत्नशील है।

आधुनिक वैज्ञानिक सौरमण्डल का मूल आधार सूर्य को ही मानते हैं। उनके अनुसार पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों, उपग्रहों का जन्म सूर्य से ही हुआ है। ये सब किसी कारण सूर्य से अलग होकर उसी के प्रकाश से प्रतिबिम्बित होते हुए सूर्य के इर्द–गिर्द भ्रमण रहे हैं। भारतीय पौराणिक साहित्य में भी सूर्य को ही जगत् की उत्पत्ति और प्रलय का कारण माना गया है–

–''**सूर्यात् प्रसूयते सर्वं तत्र चैव प्रलीयते ।**'' सूर्य पुराण

ऋग्वेद के अनुसार ब्रह्म (ईश्वर) ने पूर्व कल्पों की भान्ति ही सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा उनमें स्थित आकाशीय पिण्डों की रचना की–

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।

दिवंच पृथ्वीं चान्तरिक्षमथोस्वः ॥ ऋ० स० १०॥१९०॥

उपनिषदों में तो सृष्टि क्रम के सम्बन्ध में और भी सूक्ष्म वर्णन मिलते हैं। यथा-

एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः आकाशात् वायु । वायोरग्निः ।
अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधयः । ओषधीभ्योऽन्नम् ।
अन्नात् पुरुषः । (तै० उप० २ ।१ ब्रह्मवल्ली)

—"अर्थात् ब्रह्म के आत्मस्वरूप से आकाश की उत्पत्ति हुई। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधियां, औषधियों से अन्न और अन्न से मनुष्य की उत्पत्ति हुई।"

इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, आकाश, वायु, अग्नि, जलादि सृष्टि तत्त्वों का सृजन व प्रलय का क्रम अनादि काल से चल रहा है। जैसे मकड़ी अपने शरीर से निकले तन्तुओं द्वारा जाल बुनती है और फिर उन तन्तुओं को स्वयं में ही समाविष्ट कर लेती है। वैसे ही सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा सृष्टि की रचना और संहार का क्रम चलता रहता है।

"यथोर्ण नाभिः सृजते गृहणते च"—माण्डूक्योपनिषद् ।

ब्रह्मपुराण के अनुसार चैत्र शु. प्रतिपदा को अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में सूर्योदय काल में सृष्टि की रचना हुई। उसी समय से सभी ग्रहों ने अपनी-अपनी कक्षा में परिभ्रमण आरम्भ कर दिया-

"चैत्रे मासि, जगद् ब्रह्मा ससर्वा प्रथमेऽवनि ।
शुक्लपक्षे समग्रं तत्—तदा सूर्योदये सति ॥"

इस पर भी उपनिषदों में हमारे पूर्वाचार्यों ने समस्त सृष्टि की उत्पत्ति का वास्तविक रहस्य जान लेना असम्भव बतलाया है।

"कुत अजाता कुत इयं विसृष्टि" (तै. बा. २ ।८ ।९)

सौरमण्डल का संक्षिप्त वर्णन

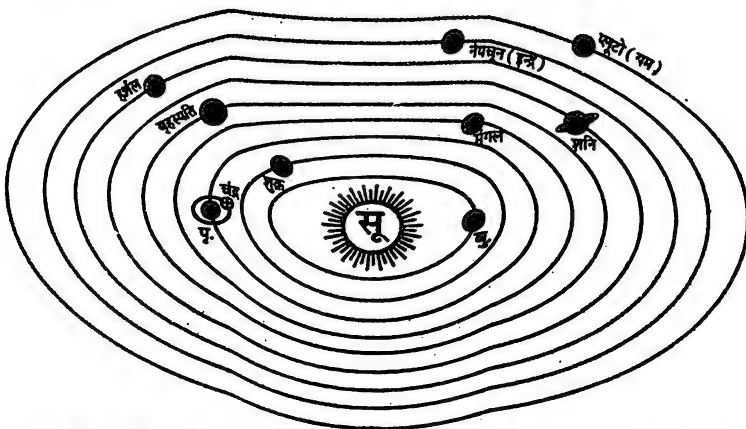
"सौर-मण्डल" में सूर्य सब ग्रहों का मुख्य केन्द्र है। पृथ्वी, मंगल, शुक्र, शनि आदि सभी ग्रह (अपनी धुरी पर घूमते हुए) एक निश्चित मार्ग पर पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं।*

वैज्ञानिक दृष्टि से चन्द्रमा यद्यपि पृथ्वी का उपग्रह है, परन्तु फलित ज्योतिष की दृष्टि

*** ज्योतिष में सुविधावश पृथ्वी को केन्द्र और सूर्य को परिक्रमा करने वाला मान लिया जाता है। वास्तव में वस्तुस्थिति एक ही है।**

से चन्द्रमा को भी ग्रह मान लिया जाता है। सौर परिवार एवं सूर्यमण्डल (Solar System) में पृथ्वी सहित नौ प्रमुख ग्रह हैं। सूर्य से दूरी के क्रम से, उन ग्रहों के नाम ये हैं :–बुध, शुक्र, पृथ्वी, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, प्रजापति (यूरेनस), वरुण (नैपचून) और कुबेर (Pluto)। बुध की दूरी सूर्य से लगभग ६ करोड़ किलोमीटर है। पृथ्वी की सूर्य से औसत दूरी १५ करोड़ किलोमीटर है। जबकि प्लूटो ग्रह सूर्य से लगभग ६ अरब किलोमीटर दूर है। आकार में बृहस्पति अन्य ग्रहों में सबसे बड़ा है और बुध सबसे छोटा तथा सूर्य से निकटतम भी है। जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि ये सभी ग्रह स्वतः प्रकाशमान नहीं है बल्कि सूर्य से प्रकाशित होकर अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर निरन्तर घूमते रहते हैं। इस परिभ्रमण के कारण उनमें आकर्षण शक्ति भी है। आधुनिक वैज्ञानिक सूर्य को अत्यन्त ऊष्म प्रज्वलित गैस पदार्थों का पिण्ड मानते हैं जिसका व्यास लगभग १४ लाख कि. मी. है। इसमें हमारी पृथ्वी जैसे १० लाख से अधिक पिण्ड समा सकते हैं। यह हमारी पृथ्वी से लगभग १५ करोड़ कि. मी. की दूरी पर है। इसके प्रकाश को पृथ्वी तक पहुंचने में साढ़े आठ मिनट लगते हैं। सूर्य से ही हमें प्रकाश, गर्मी, शक्ति एवं जीवन मिलता है।

दूरी क्रम से ग्रहों की कक्षा



अपनी धुरी पर घूमते हुए पृथ्वी सूर्य के गिर्द लगभग सवा ३६५ दिनों में एक परिभ्रमण पूरा करती है। बुध लगभग ८८ दिनों में, शुक्र २२५ दिनों में, मंगल ६८७ दिनों में ; बृहस्पति लगभग पौने बारह वर्षों में, शनि लगभग साढ़े २९ वर्षों में, यूरेनस ८४ वर्षों में, नैपचून लगभग १६५ वर्षों में तथा प्लूटो २४८ वर्ष एवं ५ मासों में सूर्य के गिर्द परिक्रमण पूरा करता है। सभी ग्रह अपने पथ पर क्रान्तिवृत्त से ७–८ अंश दक्षिणोत्तर होकर सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं।

उपग्रह–उपग्रह अपने–अपने ग्रहों की परिक्रमा करते हैं। चन्द्रमा पृथ्वी का एक

उपग्रह है। यह पृथ्वी से लगभग ४ लाख किलोमीटर दूर है तथा लगभग साढ़े २९ दिनों में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी करता है। इस अवधि को एक चान्द्रमास कहते हैं। बुध और शुक्र का कोई उपग्रह नहीं है। मंगल और वरुण के दो–दो उपग्रह हैं। बृहस्पति के १२ उपग्रह (चन्द्रमा) हैं। शनि के ११, यूरेनस के ५ उपग्रह हैं। सौर परिवार में लगभग ३१ उपग्रह हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के सर्वाधिक समीप एवं प्रभावी होने के कारण ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की कोटि में ही गिना जाता है।

सभी ग्रह और उपग्रह अपने–अपने अक्ष (धुरी) पर घूमते हैं। जिसे परिभ्रमण या घूर्णन गति कहते हैं। पृथ्वी का अपनी धुरी पर झुकाव साढ़े २३ अंश के लगभग है तथा वह २३ घण्टे ५६ १/१२ मिनटों (औसतन २४घण्टे) में दैनिक परिभ्रमण करती हैं।

राहु–केतु–ये कोई दृष्टिगोचर होने वाले ग्रह नहीं, बल्कि सम्पात बिन्दु हैं। इसीलिए इन्हें छाया ग्रह कहते हैं। क्रान्तिवृत्त पर चन्द्रमा तथा पृथ्वी के परिक्रमण पथ एक–दूसरे को दो स्थानों पर काटते हैं। उन्हीं दो सम्पात बिन्दुओं को राहु–केतु कहते हैं। उत्तरी सम्पात बिन्दु को राहु तथा दक्षिणी सम्पात–बिन्दु को केतु कहते हैं। अग्रेज़ी में इन्हें (North & South Nodes of Moon) अथवा (Dragon's head & Dragon's Tale) भी कहते हैं। दोनों सम्पात् बिन्दु अन्य ग्रहों से विपरीत दिशा में रहने से राहु–केतु की वक्रगति रहती है। दोनों का अन्तर १८० अंश पर रहता है। अतएव जन्म कुण्डली में राहु–केतु की स्थिति एक–दूसरे से सातवीं राशि पर होती है।

आकाश में सूर्य, चन्द्र, मंगलादि ग्रहों की राश्यंशादि में स्थिति जानने के लिए पंचांग–जन्त्री की सहायता ली जाती है। अतएव शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचांग का होना नित्तान्त आवश्यक है।

ग्रह और तारा–दोनों में मूलतः बहुत अन्तर है। नक्षत्र, तारादि स्वयं प्रकाशित हैं जबकि ग्रह (Planets) स्वयं प्रकाशित नहीं होते बल्कि अपने निकटतम तारा से प्रकाश ग्रहण करते हैं। हमारा सूर्य भी ताराओं की श्रेणी में आता है। नक्षत्रादि भी तारागण कहलाते हैं। हमारे वातावरण में अत्यन्त दूर होने के कारण, ये रात को टिमटिमाते हुए दिखाई पड़ते हैं।

धूमकेतू–इन्हें पुच्छल तारे भी कहते हैं। यह आकाशीय पिण्डों, गैसों एवं धूलकणों का मिश्रण होते हैं। ये आकाश में कभी–कभी उदय होते हैं। इनकी गिनती और कक्षाक्रम निश्चित नहीं। हैली धूमकेतु सन् ई० १९१०, १९८५–८६ में दिखाई दिया था। फलित ज्योतिष में इनका उदय होना अनिष्टकारक माना जाता रहा है।

उल्का–पिण्ड–विभिन्न ग्रहों के छोटे–छोटे विकीर्ण पिण्डों को उल्का–पिण्ड कहते हैं। ये कभी–कभी तीव्रगति के साथ पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे

तीव्रगति से पृथ्वी की आकर्षण शक्ति में आ जाते हैं। वायु की घर्षण के कारण चमकती रेखा के समान दिखाई पड़ते हैं। लोग भ्रमवश इसे 'तारा टूटना भी कह देते हैं।' वास्तव में यह तारा नहीं होता। शकुनादि शास्त्र में इनको देखना अशुभ माना जाता है।

काल विभाजन

काल ही मनुष्य के सुख–दुख, जीवन–मरण, लोक–परलोक, एवं उत्थान–पतन का नियामक होता है। काल ही से मनुष्य उत्पन्न होकर उसी में लीन हो जाता है।

"कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ।"

काल के दो रूप कहे जा सकते हैं। एक अनादि, अनन्त एवं असीम महाकाल है। वह कितना बड़ा है ? गिना नहीं जा सकता। विश्वोत्पत्ति से पूर्व भी इसका अस्तित्व था, और भविष्य में भी सर्वदा रहेगा।

काल का दूसरा रूप सगुणात्मक एवं व्यवहार योग्य हैं। सगुणात्मक काल (समय) का आधार सूर्य ही है। यह काल सूर्य के वश चक्रवत परिवर्तित होता रहता हैं–

"चक्रवत् परिवर्तते कालः सूर्यवशात् ॥"

मानव जीवन को नियमित एवं सुव्यवस्थित रूप निर्धारण करने के लिए ही हमारे पूर्वाचार्यों ने व्यवहारिक 'काल मान' का प्रणयन किया है। भचक्र में भ्रमण करते हुए सूर्य के एक चक्र को 'वर्ष' की संज्ञा दी गई है। व्यवहारिक रूप में 'वर्षमान' की सूक्ष्मतम इकाई को क्षण, विपल या सैकिण्ड कहते हैं। आजकल काल विभाजन का निर्धारण यद्यपि घण्टा, मिनट, सैकिण्डों में किया जाता है। परन्तु भारतीय ज्योतिष आचार्यों ने अहोरात्र, दिन, घड़ी, पल, विपल, मुहूर्त्तों आदि में अति सूक्ष्म रूप में काल विभाजन किया था। भारतीय ज्योतिष के विद्यार्थियों को भारतीय काल–गणना की इकाईयों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है–

भारतीय मान्यता अनुसार काल–विभाजन

भारतीय मान्यतानुसार पलक झपकने में जितना समय लगता है, उसे निमेष कहते हैं। तीन निमेष का एक क्षण होता है। ५ क्षण की एक काष्ठा, तथा १५ काष्ठा की १ लघु एवं १५ लघु की १ घटी (घड़ी) होती है। सुविधा हेतु काल विभाजन इस प्रकार से होगा–

३ लव अथवा १ पलक झपकना	१ निमेष
३ निमेष	१ क्षण
५ क्षण	१ काष्ठा
१५ काष्ठा	१ लघु

१५ लघु	१ घटी (या २४ मिनट)
$२^१/_२$ (अढ़ाई) घटी	१ घण्टा
६० घटी	२४ घण्टा

इसी तरह से एक अन्य प्रकार अनुसार–

१० बार गुरु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे १ प्राण अथवा १ असु कहते हैं। एवं च कमल पत्र पर सूई से छेद करने में जो समय लगता है, उसे त्रुटि कहते हैं।

१ असु	१० विपल या ४ सैकिण्ड
६० विपल	१ पल (या २४ सैकिण्ड)
६० पल	१ घटी (घड़ी)
१ घटी	२४ मिनट
६० घटी	२४ घण्टे
२ घटी	१ मुहूर्त्त (४८ मिनट)
३० मुहूर्त्त	१ अहोरात्र (दिन–रात)
१ याम	दिन का चौथा भाग या १ प्रहर
८ प्रहर	१ अहोरात्र
७ अहोरात्र	१ सप्ताह
४ सप्ताह	१ मास
१२ मास	१ वर्ष

घण्टों–मिनटों का घड़ी पलों में परिवर्तन

१ मिनट	अढ़ाई ($२^१/_२$) पल	६० विकला	१ कला
४ मिनट	१० पल	६० कला	१ अंश
१२ मिनट	३० पल	३० अंश	१ राशि
२४ मिनट	१ घड़ी	१२ राशि	१ मगण
६० मिनट (१ घण्टा)	६० घड़ी		

दिनमान	=	सूर्योदय से सूर्यास्त तक,
रात्रिमान	=	सूर्यास्त से आगामी सू. सूर्योदय उ. तक
उषाकाल	=	सूर्योदय पूर्व ५ घटी
प्रातः	=	सूर्योदय से ३ घटी तक
सायं	=	सूर्यास्त से ३ घटी तक

प्रदोष	=	सूर्योस्त से ६ घटी तक
निशीथ	=	अर्ध रात्रि के मध्य की २ घटी
७ दिन–रात	=	१ सप्ताह
१५ अहोरात्र	=	१ पक्ष
२ पक्ष	=	१ चान्द्रमास
२ मास	=	१ ऋतु
६ ऋतुएं	=	१ वर्ष
३ ऋतुएं (६ मास)	=	१ अयन
२ अयन	=	१ वर्ष

सौर, चान्द्रादि वर्षों का वर्णन आगामी पृष्ठों में किया गया है।

इस प्रकार परिलक्षित होता है कि भारतीय काल–मान की पद्धति प्राचीन काल से ही अत्यन्त सूक्ष्म रही है एवं भारतीय पौराणिक परिपाटी के अनुसार ४३२०००० वर्षों का एक महायुग होता है। ४३ लाख, बीस हज़ार वर्षों की अवधि में ही सत्ययुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग–इन चारों युगों का अनुक्रम चलता है। इन वर्षों में से १७ लाख, २८ हज़ार वर्षों का एक सत्ययुग, १२ लाख ९६ हज़ार वर्षों का एक त्रेतायुग, ८ लाख ६४ हज़ार वर्षों में एक द्वापर युग एवं ४ लाख, ३२ हज़ार वर्षों का एक कलियुग होता है। तथा चारों युगों का १ महायुग एवं ७१ महायुगों का १ मन्वतंर, और १ हज़ार महायुगों का १ कल्प या ब्रह्मा का एक दिन कहलाता है। ३६० कल्पों में ब्रह्मा का १ वर्ष होता है तथा ३६००० कल्पों की ब्रह्मा की आयु का प्रमाण होता है। प्रत्येक मन्वतंर के आदि और अन्त में सतयुग प्रमाण की १ संधि होती है। संधि को प्रलय काल भी कहते हैं। १५ संधि समेत ही १४ मन्वंतरों का एक कल्प होता है।

उपरोक्त १४ मन्वतंरों में प्रत्येक मन्वतंर का एक–एक अलग मनु होता है। इस समय वैवस्वत नामक सातवां मन्वतंर बीत रहा हैं तथा छः मन्वतंर बीत चुके हैं। और ७१ महायुगों में से २७ महायुग बीत चुके हैं। २८वें महायुग के ३ युग (सत्, त्रेता, द्वापर) बीत गए हैं। तथा कलियुग का प्रथम चरण प्रारम्भ हो चुका है।

सृष्टि की उत्पत्ति–श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण ब्रह्मा ही हैं। एक सृष्टि की समयावधि को कल्प कहते हैं। कल्प ब्रह्म के एक दिन के बराबर है, तथा ३६० कल्पों के बराबर ब्रह्मा का एक वर्ष होता है। ऐसे ही ब्रह्मा के एक हजार महायुग विष्णु की एक घड़ी के बराबर होते हैं। (सृष्टि उत्पत्ति काल के सम्बन्ध में पिछले अध्याय में लिख चुके हैं।)

कलियुग की उत्पत्ति–विक्रमी सम्वत् २०५६ में कलियुग के कुल वर्ष प्रमाण (४ लाख ३२ हज़ार वर्ष) में से ५१०० वर्ष बीत चुके हैं जबकि सृष्टि आरम्भ हुए १९५५८८५१०० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। भोग्य कलि वर्ष ४२६९०० हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में ब्रह्मा का द्वितीय प्रहर, श्वेतवाराह कल्प और वैवस्वत नामक सातवां मन्वन्तर एवं २८वें महायुग के अन्तर्गत तीन (सत्युगादि) बीत कर कलयुग का प्रथम चरण व्यतीत हो रहा है। यज्ञ, हवन एवं संकल्पादि के प्रारम्भ में इसी कालावधि का संस्मरण एवं उच्चारण किया जाता है।

कलियुग को उत्पत्ति सन् ईसवी शुरू होने से ३१०२ वर्ष पूर्व, १८ फरवरी भाद्रपद मास, कृष्णपक्ष, त्र्योदशी तिथि, रविवार, आश्लेषा नक्षत्र, व्यतीपात योग में अर्द्धरात्रि के समय हुई थी। विक्रमी सम्वत् से ३०४५ वर्ष पूर्व कलियुग की उत्पत्ति मानी जाती है। कलियुग से आजपर्यन्त बीते वर्षों को कलि संवत् कहते हैं।

कलियुग से ३०४५ वर्ष पर्यन्त युधिष्ठिर सम्वत् का प्रचलन रहा। फिर * विक्रमी सम्वत् का शुभारम्भ हुआ। इसका आरम्भ काल ईसा से ५७ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से माना जाता है। पंचांग पद्धति में बहुधा इसी का प्रयोग किया जाता है। विक्रमी सम्वत् चान्द्र मास आधारित होने पर भी इसमें सौरमासों का समावेश रहता है। चान्द्र वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से किया जाता है।

शक सम्वत्–वि. संवत् के १३५ वर्ष पश्चात् राजा शालिवाहन ने इसका प्रचलन आरम्भ किया। भारत सरकार ने भी इसी संवत् को मान्यता प्रदान की है। परन्तु यह संवत् अभी अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाया है। इसमें भी चैत्र, वैशाखादि मासों की गणना की जाती है। परन्तु इसका आरम्भ चैत्र (प्रायः २२ मार्च) से किया जाता है।

भारत में इनके अतिरिक्त अनेक सन्–संवतों का प्रचलन प्रादेशिक परिस्थितिवश अथवा किसी दिव्य महापुरुष के युग, नाम एवं जन्मकाल के आधार पर होता चला आ रहा है–विक्रमी संवत् २०५६ में उनकी स्थिति इस प्रकार होगी–

श्रीकृष्ण संवत् ५२३४, कलि सम्वत् ५१००, बुद्ध संवत् २५४२, महावीर संवत् २०२५, शाका संवत् १९२१, हिजरी सन् १४२०, फसली सन् १४०७, सन ई. १९९९, नानकशाही ५३१ ।

शाका संवत् में ७८ वर्ष जोड़ देने से सन् ईसवी बन जाता है। इसी भान्ति शाका संवत् में १३५ जोड़ देने से विक्रमी संवत् निकल आता है। सन् ईसवी में ५७ वर्ष जोड़ देने से विक्रमी संवत् प्राप्त हो जाता है।

---

* विक्रमी संवत ५७ वर्ष B.C. में उज्जयिनी नरेशी विक्रमादित्य ने विदेशियों पर विजयोत्सव के उपलक्ष्य में शुरू किया था।

भारतीय वर्षमान पद्धति

भारतीय पूर्वाचार्यों द्वारा पांच प्रकार के वर्षमान ही मुख्यतयः व्यवहार्य रहे हैं– (१) सौर, (२) चान्द्र, (३) नाक्षत्र, (४) सावन एवं (५) बाहर्स्पत्य।

(१) **सौरवर्ष** –जितने काल में सूर्य मेषादि द्वादश राशियों (एक भचक्र) का भ्रमण करता है, उसे सौर वर्ष कहते हैं। एवं जितने दिनों में सूर्य एक राशि (अथवा ३० अंश)* का भ्रमण करता है, उसे सौर मास तथा जितने काल में सूर्य १ अंश पूरा करता है, उसे सौर दिन कहते हैं।

आधुनिक मतानुसार एक सौर वर्ष में ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल और ५७॥ विपल तदनुसार ३६५ दिन, ६ घण्टे, ९ मिनट व ११ सैकिण्ड होते हैं। सूर्य द्वारा एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश काल को संक्रान्ति कहते हैं।

(२) **चान्द्र वर्ष**–जितने काल में चन्द्रमा भचक्र के १२ चक्र काटता है, उसे चान्द्र वर्ष एवं जितने समय में चन्द्रमा भचक्र का एक चक्र काटता है, उसे चान्द्रमास तथा जितने काल में चन्द्रमा भचक्र के १२ अंशों (एवं १तिथि) को पूर्ण करता है, उसे चान्द्र दिन कहते हैं। एक चान्द्र मास २९ दिन, २१ घड़ी, ५० पल एवं ७॥ विपल का होता है तथा एक चान्द्र वर्ष औसतन ३५४ दिन, २२ घड़ी, १ पल और २३ विपल का है।

(३) **नाक्षत्र वर्ष**–चन्द्रमा द्वारा एक नक्षत्र के भोगकाल को 'नाक्षत्र दिन' और चन्द्रमा द्वारा २७ नक्षत्रों के भोग्य काल को नाक्षत्र मास तथा १२ नाक्षत्र मासों का एक नाक्षत्र वर्ष होता है। एक नाक्षत्र वर्ष प्रायः ३२४ दिनों का होता है।

(४) **सावन वर्ष**–एक सूर्योदय से आगामी दिवस के सूर्योदय तक की काल अवधि को सावन दिन तथा ३० सावन दिनों की अवधि को एक सावन मास, और १२ सावन मासों का एक सावन वर्ष होता हैं। सावन वर्ष ३६० दिनों का होता है।

भारतीय वर्षमान पद्धति–प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित वर्षमान में तथा आधुनिक वेध सिद्ध शोधानुसार प्रणीत वर्षमान में बहुत ही अल्पान्तर रहता है। इसी से सिद्ध होता है कि हमारे पूर्वाचार्यों की पर्यावेक्षण शक्ति कितनी सूक्ष्म थी। उदाहरणार्थ, प्राचीन एवं नवीन वर्षमान देखें–

---

*१२ राशियां (१) भचक्र = ३६० अंश   १ अंश = ६० कला
१ राशि = ३० अंश   १ कला = ६० विकला

	दिन	घटी	पल	विपल
आर्यभट्ट	३६५	१५	३१	३०
सूर्य सिद्धान्तीय	३६५	१५	३१	३१॥
ब्रह्मगुप्त सिद्धान्त	३६५	१५	३०	२२॥
सिद्धान्तशिरोमणि	३६५	१५	३०	२२॥
ग्रहलाघव गणेश दैवज्ञ	३६५	१५	३१	३०
ज्योतिर्गणितीय	३६५	१५	२२	५३
आधुनिक शोध सि॰	३६५	१५	२२	५७॥

अधिक मास और क्षयमास

सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष में सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए हर तीसरे वर्ष पंचाँगों में एक चान्द्रमास की वृद्धि कर दी जाती है। इसी को अधिक मास कहते हैं। सौर वर्ष का मान ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल, और ५७ विपल हैं। जबकि चान्द्रवर्ष ३५४ दिन, २२ घड़ी, १ पल और २३ विपल का होता है। दोनों वर्षमानों में प्रतिवर्ष १० दिन, ५३ घटी, २१॥पल (औसतन ११ दिन) का अन्तर पड़ता है। इस अन्तर में समानता लाने के लिए चान्द्रवर्ष १२ मासों के स्थान पर १३ मास का हो जाता है। वास्तव में यह स्थिति स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है क्योंकि जिस चन्द्रमास में सूर्य संक्रान्ति नहीं पड़ती, उसी को **'अधिक मास'** की संज्ञा दे दी जाती है।

तथा जिस चन्द्रमास में दो सूर्य संक्रांतियों का समावेश हो जाय, वह 'क्षयमास' कहलाता है।

''असंक्रांतिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात् द्विसंक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ॥''

–सिद्धान्तशिरोमणि ॥

क्षयमास केवल कार्तिक, मार्ग व पौष मासों में होता हैं। जिस वर्ष क्षयमास पड़ता है, उसी वर्ष अधि–मास भी अवश्य पड़ता है। परन्तु यह स्थिति १९ वर्षों या १४१ वर्षों के पश्चात् आती है। जैसे विक्रमी संवत् २०२० एवं २०३९ में क्षयमासों का आगमन हुआ तथा भविष्य में संवत् २०५८, २१५० में पड़ने की सम्भावना है।

क्षय एवं अधिक मासों में विवाह, यज्ञ, मुण्डनादि शुभ कृत्यों का प्रारम्भ करना निषेध माना जाता है।

मास वर्णन–

भारतीय ज्योतिष में मुख्यतया दो प्रकार के मास ही व्यवहार में आते हैं। सौर मास एवं चान्द्रमास।

सौर मास–सूर्य की एक राशि के भोग काल को सौर मास कहते हैं। एक सौर मास लगभग ३० दिन और १० घण्टे का होता है। जब वृष राशि में सूर्य प्रविष्ट हो, उस दिन से ज्येष्ठादि मास होते हैं। जब सूर्य मेष, वृषादि किसी राशि में प्रवेश करता है, उस दिन सौर मास की प्रथम तारीख होती है। इसी को संक्रान्ति भी कहते हैं।

सौर मासों के नाम (1) वैशाख, (2) ज्येष्ठ, (3) आषाढ़, (4) श्रावण, (5) भाद्रपद, (6) आश्विन, (7) कार्तिक, (8) मार्गशीर्ष, (9) पौष, (10) माघ, (11) फाल्गुन, (12) चैत्र

चान्द्रमास–कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक, अन्य मतानुसारेण शुक्ल–प्रतिपदा से अमावस्या तक की समयावधि को "चान्द्रमास" कहा जाता है। प्रत्येक चान्द्रमास लगभग २९ दिन, और २२ घण्टे का होता है। यह ध्यातव्य है कि अधिकांशतः चान्द्रमासों के नाम प्रायः पूर्णिमा के दिन चन्द्र द्वारा संचरित नक्षत्र संज्ञा पर आधारित होते हैं।

मास	चैत्र	वैशा	ज्ये.	आषा	श्राव	भाद्र	आश्वि	कार्ति	मार्ग	पौष	माघ	फागु
नक्षत्र	चित्रा स्वा.	विशा अनु	ज्ये. मूला	पूषा उषा	श्रव धनि	शत पूभा उभा	रेव. अश्वि भर.	कृति. रोह	मृग आर्द्रा	पुन पुष्य	श्ले मघा	पूफा उफा हस्त

भारतीय परम्परानुसार उपरोक्त १२ मासों का एक वर्ष होता है। जैसा कि पहले भी लिखा है कि भारतीय पंचांगों में प्रतिपादित चान्द्रवर्ष (३५४ दिन एवं लगभग २२ घड़ी) तथा सौर वर्षमान (३६५ दिन, लगभग ६ घण्टों) में तालमेल (सामजंस्य) स्थापित करने के लिए प्रति तीसरे वर्ष अधिक चान्द्रमास की व्यवस्था की जाती है।

प्रभवादि सम्वत्सर

बृहस्पति मध्यम गति से जितने समय में एक राशि का संचरण करता है, उसे बाहर्स्पत्य वर्ष कहते हैं। इसकों सम्वत्सर भी कहते हैं, संवत्सरों की कुल संख्या साठ (६०) है जिनकी पुनरावृत्ति होती रहती है। विवाह, यज्ञ, अनुष्ठानादि शुभ कार्यों के आरम्भ में संवत्सर का उच्चारण अवश्य किया जाता है। सम्वत्सरों के नाम क्रमशः

निम्नलिखित हैं।

१. प्रभव	१६. चित्रभानु	३१. हेमलम्बी	४६ परिधावी
२. विभव	१७. सुभानु	३२. विलम्बी	४७. प्रमादी
३. शुक्ल	१८. तारण	३३. विकारी	४८. आनन्द
४. प्रमोद	१९. पार्थिव	३४. शार्वरी	४९. राक्षस
५. प्रजापति	२०. व्यय	३५. प्लव	५०.नल
६. अंगिरा	२१. सर्वजित्	३६ शुभकृत	५१. पिंगल
७. श्रीमुख	२२. सर्वधारी	३७. शोभन	५२. कालयुक्त
८. भाव	२३. विरोधी	३८. क्रोधन	५३. सिद्धार्थ
९. युव	२४. विकृति	३९. विश्वावसु	५४. रौद्र
१०. धाता	२५. खर	४०. पराभव	५५. दुर्मति
११. ईश्वर	२६. नंदन	४१ प्लवंग	५६. दुंदुभि
१२. बहुधान्य	२७. विजय	४२. कीलक	५७. रूधिरोद्गारी
१३. प्रमाथी	२८. जय	४३. सौम्य	५८. रक्ताक्षी
१४ विक्रम	२९. मन्मथ	४४. साधारण	५९. क्रोधन
१५. वृष	३०. दुर्मुख	४५. विरोधकृत	६०. क्षय

सम्वत्सर निकालने की विधि

जिस विक्रमी सम्वत् में सम्वत्सर जानना हो, उसमें ९ जोड़कर प्राप्त संख्या को ६० द्वारा भाग देने पर, जो शेष बचे, उसमें १ जोड़ देने पर प्रभवादि सम्वत्सर होगा ॥ उदाहरणार्थ यदि वि. संवत् २०५६ में सम्वत्सर जानना हो, तो संवत् २०५६ में ९ जमा कर देने पर २०६५ वर्ष बने। इनको ६० द्वारा भाग देने पर ३४ लब्धि तथा शेष २५ बचे, इस संख्या में १ जमा कर देने से संख्या २६ बनी। उपरोक्त तालिका अनुसार वि. २०५६ में २६वां अर्थात् नन्दन नामक सम्वत्सर होगा। सम्वत्सर के नामानुसार ही उसके शुभाशुभ फल का संकेत मिल जाता है। प्रत्येक वर्ष की पंचाँगदिवाकर (कृत पण्डित पन्ना लाल ज्यो.) में नवसंवत्सर के देश, परिवेश एवं जातक के शुभाशुभ फल सम्बन्धी भविष्य कथन का वर्णन रहता है।

सम्वत्सर–स्वामी–

साठ (६०) सम्वत्सरों को द्वादश (१२) भागों से विभाजित कर देने से प्रत्येक भाग में पांच सम्वत्सर होते हैं। इस सवंत्सर की पंच–कालावधि 'युग' कहलाती है। पांच–पांच संवत्सरों से निर्मित क्रमानुसार युगसमूह के अधिपति (स्वामी) इस प्रकार हैं। उदाहरणार्थ–प्रभव से प्रजापति तक सम्वत्सर का समह प्रथम युग कहलाता है। इसका स्वामी विष्णु है॥

पंच सम्वत्सर (युग) स्वामी

युग क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	विष्णु	बृहस्पति	इन्द्र	अग्नि	विश्वकर्मा	अहिर्बुध्न्य	पितर	विश्वे देवा	चन्द्र	इन्द्राग्नि	अश्विनी	भग

अयन, गोलार्ध एवं षड् ऋतुएं–

अयन–एक संवत् (वर्ष) में दो अयन होते हैं॥

1. उत्तरायण (**Summer Solstice**) एवं 2. दक्षिणायन

1. **उत्तरायण**–जब तक सायन सूर्य मकर राशि से मिथुन राशि पर्यन्त (तक) रहता है, तब तक छः मासों की अवधि को उत्तरायण काल कहा जाता है। यह अवधि लगभग २२ दिसबंर से प्रायः २०/२१ जून तक रहती हैं। उत्तरायण में शिशिर, बसंत और ग्रीष्म–ये तीन ऋतुएं होती है। उत्तरायण को देवताओं का दिन माना जाता है। उत्तरायण काल में नूतन गृह प्रवेश, दीक्षा ग्रहण, देव प्रतिष्ठा, यज्ञ, व्रतानुष्ठान, विवाह, मुण्डनादि कार्य प्रशस्त माने जाते हैं।

2. **दक्षिणायन (Winter Solstice)**–यह अवधि देवताओं की रात्रि मानी जाती है। जब सायन सूर्य कर्क राशि से धनु राशि पर्यन्त संचरणशील होता है। यह अवधि भी प्रायः २१/२२ जून प्रायः २१ दिसंबर तक ६ मास के लिए होती है। दक्षिणायन में मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि विशेष शुभ कृत्यों का निषेध तथा नृसिंह, भैरव, वाराह, दुर्गा आदि देवी देवताओं की प्रतिष्ठा तथा उच्चारण, मारण आदि तामसिक प्रयोग प्रशस्त माने जाते हैं। दक्षिणायन में वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतुओं का समावेश रहता है।

गोलार्द्ध–पृथ्वी के ऊपर व्याप्त आकाश मण्डल के उत्तरी ध्रुव में स्थित अर्द्ध–भाग को उत्तरी गोलार्द्ध तथा शेष द्वितीय अर्द्ध–भाग को दक्षिणी गोलार्द्ध कहते हैं। सूर्य जब सायन मेष राशि से कन्या राशि पर्यन्त होता है, तो उत्तरी गोलार्द्ध तथा जब सायनार्क तुला से मीन राशि पर्यन्त रहता है, तो दक्षिणी गोलार्द्ध स्थित कहलाता है।

उत्तरायण (सौम्यायन) में उत्पन्न मनुष्य रूपवान, गुणी, शास्त्रों का ज्ञाता, धर्म और काम से युक्त, उदार, प्रसन्नचित्त, दीर्घायु एवं पुत्र व स्त्री आदि सुखों से युक्त होता है।

दक्षिणायन में जन्म लेने वाला व्यक्ति झूठा, प्रपंच करने वाला, असत्य एवं कठोर वचन बोलने वाला, असहनीय, वाक्पटु, अधर्मी एवं रोगी होता है।

गोलार्द्ध फल–मेष से कन्या राशि पर्यन्त सूर्य हो तो सौम्य (उत्तर) गोल और तुला से मीन राशि पर्यन्त सूर्य हो, तो दक्षिण (याम्य) गोल कहलाता है।

उत्तर गोल में जन्म लेने वाला धनी, विद्वान, पुत्र–पौत्रादि से युक्त और राजमान्य होता है।

दक्षिण गोलार्द्ध में उत्पन्न व्यक्ति सुख से हीन, झूठ वक्ता, दुराचारी, धन–सम्बन्धी कार्यों में दुःखी होता है।

षड् ऋतु वर्णन

मेषादि प्रत्येक दो राशियों पर सायन सूर्य के संक्रमण काल को 'ऋतु' कहा जाता है। इस प्रकार एक वर्ष अर्थात् १२ महीनों में ६ ऋतुएं होती हैं। यह ६ ऋतुएं इस क्रम से व्यवस्थित हैं। बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर॥ किन मासों में कौन सी ऋतु होती है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए।

ऋतुएं	वसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्	हेमन्त	शिशिर
सायन सूर्यस्थित राशि	मीन–मेष	वृष–मिथु	कर्क–सिंह	कन्या–तुला	बृश्चि–धनु	मकर–कुंभ
चान्द्रमास	चैत्र–वैशाख	ज्ये.–आषाढ़	श्रावण–भादों	आश्विन कार्तिक	मार्ग–पौष	माघ–फागुन

उपरोक्त ऋतुओं में बसन्त, ग्रीष्म तथा वर्षा–इन तीन ऋतुओं को देवी तथा शरद्, हेमन्त और शिशिर में पितर् ऋतुएं कहलाती हैं। अतएव इन ऋतुओं में यथोचित कर्म ही शुभ फल प्रदान करते हैं।

अब पंचाँग में प्रतिपाद्य कुछ मुख्य विषयों का वर्णन किया जाता है।

1. **शिशर ऋतु**–में जन्म होने से जातक सुन्दर स्वरूप, स्वस्थ, विलम्ब से कार्य करने वाला, काम युक्त, अभिमानी, बलवान् एवं मिष्टान्न प्रिय होता है।

2. **बसन्त में** जन्म हो तो जातक देश–विदेश में घूमने वाला, सब रसों को जानने वाला, उद्यमी, मनस्वी, अनेक कार्य करने वाला, धैर्यवान, संगीत में रूचि रखने वाला, सुगन्धप्रिय, धनी एवं दीर्घायु वाला होता है।

3. **ग्रीष्मकाल में** जन्म हो तो मनुष्य बहुत कार्यो को आरम्भ करने वाला, क्षुधातुर कामी, लम्बा कद, शठ बुद्धि वाला, भोगी, बुद्धिमान, कृश शरीर, जल–विहार प्रिय, विद्या, धन आदि भोगों से युक्त एवं वाचाल होता है।

4. **वर्षाकाल में** जन्म लेने वाला गुणी, राजमान्य, चतुर, भोगी, अपने प्रयोजन की बात करने वाला, कफ और वात युक्त, क्षीर–दूध एवं कटुपदार्थों का प्रेमी होता है।

5. **शरद ऋतु में** जन्म लेने वाला व्यापार या खेती द्वारा जीविका कमाने वाला, धन–धान्य से युक्त, तेजस्वी और लोकमान्य, वाहनादि सुखों से युक्त एवं नामी होता है।

6. हेमन्त ऋतु में जन्म लेने वाला व्यक्ति भोगी, कृश शरीर, तेजहीन, रोगी, भयभीत, छोटी और मोटी गर्दन वाला और लोभी होता है। परन्तु नर्म स्वभाव, उदार एवं श्रेष्ठ कर्मों से युक्त होता है।

मास, नक्षत्र, ग्रहों एवं भावों सम्बन्धी अधिक विस्तृत फलादेश के लिए इसी पुस्तक का द्वितीय भाग देखें।

चैत्रादि मास में जन्म–फल

1. चैत्र में जन्म लेने वाला–सदा हर्षयुक्त, अहंकारी, सुन्दर स्वरूप, लाल नेत्रवाला, रोषयुक्त और स्त्री में आसक्त होता है।

2. वैशाख में जन्म–होने से मनुष्य भोगी, धनवान, प्रसन्नचित्त, क्रोधी, सुन्दर रूपवाला और स्त्रियों का प्रिय होता है।

3. ज्येष्ठ–में जन्म लेने से परदेसी, पवित्र हृदय, धनवान, दीर्घायु और सुबुद्धि होता है।

4. आषाढ़ में जन्म लेने वाला–पुत्र पौत्रादि सन्तान से युक्त, धर्मात्मा, धनहानि से पीड़ा पानेवाला, सुन्दर वर्ण और अल्प सुखवाला होता है।

5. श्रावण में जन्म होने से–मनुष्य सुख–दुख, हानि और लाभ में समबुद्धि, मोटी देह और सुन्दर रूप वाला होता है।

6. भाद्रपद में उत्पन्न नित्य हर्ष से युक्त, वृथावादी, पुत्रवान, सुखी, कोमल वचन मधुर–भाषी और सुशील होता है।

7. आश्विन में जन्म हो तो–सुन्दर रूप और सुख से युक्त, कवि, परमपवित्र, गुणी और कामी होता है।

8. कार्तिक में जो जन्म लेता है–वह धनवान्, कामी, दुष्ट, क्रय–विक्रय करने वाला, तथा दुष्ट हृदय एवं कटुवाणी होता है।

9. मार्गशीर्ष में जन्म हो तो वह मनुष्य–प्रियवक्ता, धनी, धर्मात्मा, बहुत मित्रवाला, पराक्रमी और परोपकारी होता है।

10. पौष मास में जन्म हो तो–वह मनुष्य वीर, बड़ा प्रतापी, देवता और पित्तरों को नहीं मानने वाला, ऐश्वर्य और धन उपार्जन करने वाला होता है।

11. माघ मास में–जिसका जन्म होता है वह बुद्धिमान, धनवान्, और कठोर शब्द वक्ता, कामी और रणधीर होता है।

12. फाल्गुण में जन्म-लेने से गौरवर्ण, परोपकारी, धन, विद्या, और सुख से युक्त और विदेश में भ्रमण करने वाला होता है।

13. मलमास में जन्म लेने वाला-विषयों में रहित, सच्चरित्र, अनेक, तीर्थ करने वाला, निरोग, सबका प्रिय और आत्महितैषी होता है।

14. क्षयमास में जन्म-हो तो वह मनुष्य बुद्धि-विद्या, धनधान्य और सुख से हीन तथा अनेक व्याधि से युक्त होता है।

पक्ष फल

1. शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वाला पूर्ण चन्द्र समान शोभायमान, धनवान्, उद्योगी, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, कार्यकुशल और ज्ञानी होता है।

2. कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो निष्ठुर, कुवचनभाषी, स्त्री का द्वेषी, बुद्धिहीन, दूसरों की सहायता से जीने वाला और अधिक परिवार वाला होता है।

पंचाँग परिचय

पंचाँग भारतीय ज्योतिष का दर्पण माना जाता है। समय की विभिन्न इकाइयों संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वारादि विधाओं में अभिव्यक्त करने का पंचाँग एकमात्र सशक्त माध्यम है। प्राचीन काल में वैदिक, स्मार्त एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक एवं सांकल्पिक अनुष्ठान आदि कृत्यों का मार्गदर्शन पंचाँग के तिथ्यादि अंगों के द्वारा ही सिद्ध हुआ माना जाता था। इसी कारण काल रूपी ईश्वर के अंगभूत पंचाँग (तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के संकलन) को नमस्कार किया जाता था।

"श्रौतं स्मार्तं च गार्हस्थ्यं यद् विना नैव सिद्धयति ।
तत् कालाख्येश्वरस्यागं वन्दे तिथ्यादि पंचकम् ॥"

कृषि, व्यापार, होम-यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठानों को प्रारम्भ करने का काल ज्ञान पंचाँग द्वारा ही किया जाता रहा है। प्राचीन काल में पंचाँग के पांच अंग- 1. तिथि, 2. वार, 3. नक्षत्र, 4. योग व 5. करण ही आवश्यक अंग माने जाते थे, परन्तु कालान्तर एवं अर्वाचीन काल से पंचाँग के आधुनिक स्वरूप में दैनिक ग्रह संचार एवं राशि परिवर्तन, ग्रहण-विवरण, राशिफल, पर्व-त्यौहार निर्णय, विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, गृह निर्माण, विपणि आदि मुहूर्त्त, भविष्यवाणियां आदि विविध विषयों का समावेश किया जाने लगा है।

प्रत्येक प्रामाणिक पंचाँग किसी स्थान विशेष के अक्षांश रेखांश पर आधारित होता है। उसमें स्थानीय सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि-वार-नक्षत्र-योगादि के घड़ी पल स्थानीय

सू. उ. के अनुसार दिए रहते हैं। परन्तु जहां तिथि, नक्षत्र एवं योगों आदि के मान घण्टे-मिनटों में दिए गए हैं, वह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार होने से अखिल भारतोपयोगी होते हैं। दैनिक सूर्यादि ग्रहस्पष्ट भी भा. स्टै. टाईम आधारित होने से सर्व भारतोपयोगी होंगे।

भारत के किसी भी नगर में नक्षत्रादि का मान जानना अथवा **पंचांग परिवर्तन करना**– जैसे हमारे कार्यालय से प्रकाशित पंचाँग दिवाकर स्थानिक (जालन्धर) के सू. उ. पर आधारित होने से तिथि नक्षत्रादि के घड़ी पल जालन्धर व उसके समीपस्थ नगरों पर के तिथि–नक्षत्रों के समाप्ति काल को प्रकट करते हैं, तथा घण्टा–मिण्टों में लिखे गए तिथि–नक्षत्रादि के मान भारत के किसी भी अन्य नगर पर के समाप्ति काल को प्रकट करते हैं। दिल्ली, हिमाचल, हरि., या जम्मू आदि के अन्य प्रदेशों में स्थित किसी अन्य नगर में तिथिनक्षत्रादि के घटी–पलों में समा. काल जानने के लिए अपने अभीष्ट शहर के सू.उ. घटाकर फिर शेष के अढ़ाई गुणा करके घटी पल बना लेने से आप किसी भी शहर पर के तिथि, नक्षत्रादि का स्थानीय समा काल (घटी–पलों) में जान सकते हैं।। उदाहरणार्थ यदि आपको 18 दिसंबर 1999 ई. को रेवती नक्षत्र का समा. काल घटी पलों दिल्ली में जानना हो, तो हमारे कार्यालय से प्रकाशित पंचाँग दिवाकर २०५६ के पृष्ठ 85 पर देखा, तो रेवती नक्षत्र भा. स्टै. टाईम अनुसार 11 बजकर 52 मिनट पर समाप्त है। अब इसी पंचाग के पृष्ठ 165 पर 18 दिसं को दिल्ली का सूर्योदय देखा, तो 7 बजकर 12 मिन्ट पर मिला। 7.12 को 11 घण्टे, 52 मिनट में से घटाने पर 4 घण्टे, 40 मिन्ट प्राप्त हुए। इनके अढ़ाई गुणा करने पर हमें 11 घड़ी 40 पल प्राप्त हुए। दिल्ली में (घटी पलों में) रेवती नक्षत्र का समा. काल 11.40 घटी पल होंगे। *इसी प्रकार आप किसी भी नगर में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रादि संचार का (घटी पलों में) समाप्ति काल जान सकते हैं। दूसरे, ज्ञातव्य रहे कि किसी भी जातक की जन्मपत्री या कुण्डली बनाने के लिए जातक के जन्म कालीन वर्ष की पंचाँग एवं जन्म स्थान (अथवा समीपस्थ नगर) का सूर्योदयास्त तथा उस स्थान की (अथवा समीपस्थ नगर की) लग्न सारिणी होना आवश्यक होता है।

पंचांग–परिवर्तन करने का एक अन्य प्रकार देखें पंचांगदिवाकर २०५६ के पृष्ठ १४१ पर।

आगे पंचाँगों में प्रतिपाद्य कुछ आवश्यक विषयों का वर्णन किया जाता है।

---

* **विशेष**–पाठक कृपया ध्यान दें कि प. देवी. दयाल ज्यो. के नाम पर दिल्ली से छपने वाली पंचाँगदिवाकर गलत व अनेक विसंगतियों से भरी हुई होती है कोई प्रकाशक लोगों को धोखा देने की नीयत से छाप रहा है। उससे प्राप्त होने वाला गणित भी अशुद्ध होगा। गणितकर्ता पण्डित पन्ना लाल एम. ए. का नाम पढ़ देखकर ही पंचांग खरीदें।

चान्द्रमास एवं कृष्ण–शुक्लादि पक्ष–

प्रत्येक भारतीय पंचाँग * चान्द्रमासों पर आधारित होता है। सौरमासों की भान्ति चान्द्रमासों के नाम भी एक जैसे ही हैं, जो क्रमशः इस प्रकार से हैं।

1. चैत्र
2. वैशाख
3. ज्येष्ठ
4. आषाढ़
5. श्रावण
6. भाद्रपद
7. आश्विन
8. कार्तिक
9. मार्गशीर्ष
10. पौष
11. माघ
12. फाल्गुन

प्रत्येक चान्द्रमास में कृष्ण (वदि) और शुक्ल (शुदि) दो पक्ष होते हैं। प्रत्येक मास में पहिले कृष्णपक्ष और तत्पश्चात् शुक्ल पक्ष आता है। यह परम्परा पूर्वी तथा उत्तरी भारत (म. प्र., उ. प्र., दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, ज. का. आदि प्रदेशों) में विशेषतया अपनाई जाती है। परन्तु दक्षिणी भारत, गुजरात में चान्द्रमास में पहिला पक्ष शुक्ल और दूसरा कृष्ण पक्ष माना जाता है। उदाहरणार्थ वहां की प्रथानुसार चैत्र शुक्ल के पश्चात् ज्येष्ठ कृष्ण न आ कर चैत्र कृष्ण लिखा जाएगा। इसी प्रकार अन्य सभी मासों को भी समझना चाहिए अर्थात् दक्षिण भारत का चान्द्रमास उत्तरी भारत के चान्द्रमास से सदा एक पक्ष पीछे होता है। प्रायः एक पक्ष १५ दिन का होता है। कभी–कभी तिथि क्षय वृद्धि के कारण न्यूनाधिक भी हो जाता है।

सौर मास की तारीखें–जैसे कि पहिले बतला चुके हैं कि सौर मास की तिथि का प्रारम्भ सूर्य संक्रान्ति के दिन से ही होता है। अर्थात् जिस दिन सूर्य राशि परिवर्तन करता है वह सूर्य की पहिली तारीख होती है, इसे प्रचलित भाषा में प्रविष्टा भी कहते हैं। सूर्य को पूरी राशि में संक्रमण करने में प्रायः ३० या ३१ दिन लग जाते हैं, कभी–कभी ३२ भी हो जाते हैं।

तिथियां–चन्द्रमा की एक कला को तिथि माना जाता है। तिथि का मान चन्द्रमा की गति पर आधारित होता है। तिथियां कुल ३० होती हैं। १५ कृष्ण पक्ष में तथा १५ शुक्ल पक्ष में। कृष्णादि दोनों पक्षों की तिथियों के नाम चतुदर्शी (१४) तक क्रमशः एक जैसे हैं। परन्तु शुक्ल पक्ष की (१५) तिथि को पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष की अंतिम १५वीं तिथि को ३० अंक द्वारा अभिव्यक्त करते हैं, अथवा अमावस कहते हैं॥

---

* चान्द्र व सौरमासों का विवरण हम गत पृष्ठों में विस्तार पूर्वक लिख चुके हैं। देखें॥

शुक्ल पक्ष में तिथिक्रम व नाम	कृष्ण पक्ष में तिथि क्रम व नाम	शुक्ल पक्ष में तिथिक्रम व नाम	कृष्ण पक्ष में तिथि क्रम व नाम
१. प्रतिपदा	१. प्रतिपदा	९. नवमी	९. नवमी
२. द्वितीया	२. द्वितीया	१०. दशमी	१०. दशमी
३. तृतीया	३. तृतीया	११. एकादशी	११. एकादशी
४. चतुर्थी	४. चतुर्थी	१२. द्वादशी	१२. द्वादशी
५. पंचमी	५. पंचमी	१३. त्रयोदशी	१३. त्रयोदशी
६. षष्ठी	६. षष्ठी	१४. चतुर्दशी	१४. चतुर्दशी
७. सप्तमी	७. सप्तमी	१५. पूर्णिमा	३०. अमावस
८. अष्टमी	८. अष्टमी		

तिथियों का वैज्ञानिक आधार–चन्द्रमा के सूर्य से बारह (१२°) अंश के अन्तराल को तिथि कहते हैं। तिथि का मध्यम मान लगभग ६० घड़ी है। परन्तु चन्द्रमा की गति में तीव्र विभिन्नता के कारण तिथि के मान में न्यूनाधिकता बनी रहती है। चन्द्रमा की गति सूर्य की गति से बहुत अधिक रहती है। सूर्य व चन्द्रमा में परस्पर शून्य अन्तर के बाद जब दोनों का अन्तर बढ़ने लगता है, तो एक (१) तिथि का आरम्भ होने लगता है। अर्थात् प्रतिपदा तिथि का प्रारम्भ होने लगता है। जब यह अन्तर बढ़ते–बढ़ते बारह अंश का हो जाता है। तब प्रतिपदा तिथि पूर्ण हो जाती है और द्वितीया शुरू हो जाती है। जब सूर्यांशों से चन्द्रमा का अन्तर २४° अंश हो जाता है, तो द्वितीया तिथि पूर्ण हो जाती है। इसी भांति जब चन्द्रमा सूर्य से १२×१५=१८० अंश आगे हो जाता है, तब पूर्णिमा तिथि समाप्त होती है और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा का आरम्भ होता है, जब चन्द्रमा और सूर्य का अन्तर ३६० अंश अर्थात् शून्य हो जाता है। तब उस अवस्था को अमावस्या तिथि कहते हैं। इस प्रकार ३० तिथियों (एवं ३६० अंशों) के एक सम्पूर्ण परिभ्रमण को चान्द्रमास कहते हैं। इस क्रम की निरन्तर पुनरावृत्ति होती रहती है।

तिथि वृद्धि एवं क्षयत्व–चन्द्रमा और सूर्य की गतियों में असमानता के कारण तिथियों का मान भी सदा समान नहीं होता। जब चन्द्र की गति बहुत कम होगी, तो तिथि का मान ६० घड़ी से अधिक होकर आगामी सूर्योदय के उपरान्त भी तिथि का अस्तित्व बना रहता है, तो उसे तिथि वृद्धि कहती हैं। कभी–कभी चन्द्रमा की तीव्रगति के कारण एक ही दिन में दो तिथियों का समावेश हो जाता है (यानी आगामी सूर्योदय से पूर्व ही दूसरी तिथि भी समाप्त हो जाती है।) इस स्थिति को अवम एवं तिथिक्षय कहते हैं।

पंचाँग दिवाकर में तिथियां शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती है। १५ तिथि को

पूर्णिमा होती है। जबकि अमावस्या में ३० की संख्या लिखी रहती है।

अंशों के अनुसार तिथियों का क्रम

शुक्ल पक्ष की तिथियां

तिथि क्रम	नाम तिथि	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी	तिथि क्रम	नाम क्रम	सूर्यांश से चन्द्रमा की दूरी
१	प्रतिपदा	० अंश से १२ अंश तक	९	नवमी	९६ अंश से १०८° तक
२	द्वितीया	१२° अंश से २४° तक	१०	दशमी	१०८ अंश से १२० तक
३	तृतीया	२४ अंश से ३६ तक	११	एकादशी	१२० अंश से १३२ तक
४	चतुर्थी	३६ अंश से ४८ तक	१२	द्वादशी	१३२ अंश से १४४ तक
५	पंचमी	४८ अंश से ६० तक	१३	त्र्योदशी	१४४ अंश से १५६ तक
६	षष्ठी	६० अंश से ७२ तक	१४	चतुर्दशी	१५६ अंश से १६८ तक
७	सप्तमी	७२ अंश से ८४ तक	१५	पूर्णिमा	१६८ अंश से १८०° तक
८	अष्टमी	८४ अंश से ९६ तक			

कृष्णपक्ष की तिथियां

तिथि क्रम	नाम तिथि	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी	तिथि क्रम	नाम क्रम	सूर्यांश से चन्द्र की दूरी
१	प्रतिपदा	१८०° से १९२° तक	९	नवमी	२७६ अंश से २८८° तक
२	द्वितीया	१९२ से २०४ तक	१०	दशमी	२८८ अंश से ३०० तक
३	तृतीय	२०४ से २१६ तक	११	एकादशी	३०० अंश से ३१२ तक
४	चतुर्थी	२१६ से २२८ तक	१२	द्वादशी	३१२ अंश से ३२४ तक
५	पंचमी	२२८ से २४० तक	१३	त्र्योदशी	३२४ अंश से ३३६ तक
६	षष्ठी	२४० से २५२ तक	१४	चतुर्दश	३३६ अंश से ३४८ तक
७	सप्तमी	२५२ से २६४ तक	३०	अमावस	३४८ अंश से ३६० तक
८	अष्टमी	२६४ से २७६ तक	३६०° का सूर्य–चन्द्रान्तर होने पर अन्तर शून्य रह जाता है।		

उदाहरणार्थ–विक्रमी सम्वत् २०५६ के पंचाँग दिवाकर में २३ नवंबर (प्रति. ८ मार्ग), मंगलवार को १५ तिथिं अर्थात् पूर्णिमा १३ घड़ी ४५ पल पर समाप्त हुई है।

१३।४५ घट्यदि को अढ़ाई से भाग देने पर ५ घण्टे, ३० मिनट मिले, इन्हें उस दिन के सूर्योदय (७.०५) में जमा कर देने से हमें.१२.३५ घं. मिं. प्राप्त होंगे। अंशों (Degrees) में इसको इस प्रकार कहा जाएगा, कि दोपहर भा. स्टै. टाईम अनुसार १२ बज कर ३५ मिनट पर सूर्य का चन्द्रमा से अन्तर ठीक १८० अंश हो जाएगा। इसी प्रकार ऊपर लिखे अनुसार अन्य सभी तिथियों का मान जान सकते हैं। ध्यान रहे, पंचाँगों में तिथि, नक्षत्र एवं योगादि का घट्यादि या घण्टा मिन्टों में जो मान लिखा होता है, वह उनका समाप्ति काल होता है।

यदि तिथि का कुल मान ज्ञात करना हो, तो गत तिथि को ६० में से हीन करके शेष को वर्तमान तिथि में जमा कर देने से तिथि का कुल मान निकल आएगा।

पंचाँग के कुछ अन्य आवश्यक अंग

दिनमान–सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को दिनमान कहते हैं। प्राप्त घण्टों मिनटों को अढ़ाई गुणा कर देने से घट्यादि में **दिनमान** होगा। ६० घड़ी में से दिनमान कम करने से **रात्रिमान** निकल आता है। प्रत्येक अक्षांश पर सूर्योदयास्त भिन्न–भिन्न काल पर होता है। अतः वहां के दिनमान में भी भिन्नता होती है। सूर्य के उत्तरायण में रहने पर दिनमान अधिक तथा रात्रिमान कम होता है, जबकि दक्षिणायन में इसके विपरीत– दिनमान कम तथा रात्रिमान अधिक होता है। वर्ष में केवल दो बार दिनमान व रात्रिमान बराबर होते हैं। लगभग २१ मार्च और २३ सितम्बर–इन दिनों दिन–रात बराबर होते हैं।

चन्द्र संचार–प्रायः सभी पंचाँगों में चन्द्र संचार (Transit of Moon) का कालम दिया रहता है। जब चन्द्रमा नक्षत्र पथ पर भ्रमण करता हुआ सवा दो नक्षत्र–अर्थात् एक राशि पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तो इसकी प्रक्रिया को चन्द्र संचार कहते हैं। घड़े पलों अथवा घण्टों में लिखा हुआ चन्द्रमा का समय प्रवेश काल होता है। चन्द्रमा की भान्ति सूर्य, मंगल, बुध आदि सभी ग्रहों का प्रवेश काल ही दिया रहता है। यदि घड़ी पलों को घंटा मिनटों (अथात् स्टैण्डर्ड टाईम) में परिवर्तन करना चाहें, तो पहिले घड़ी पलों के अढ़ाई से भाग करके घण्टा मिन्ट बना लें–फिर उसी दिन के सूर्योदय को जमा कर देने से स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा मिनट बन जाएंगे।

उदाहरणार्थ, हमने 24 नवंबर 1999 ई.के चन्द्र संचार घट्यादि के स्टै. टा. में घण्टा मिंट बनाने हों तो संवत् २०५६ की पंचाँग पृष्ठ 72 पर मिथुनेंदु ४५।२५ के १८ घण्टे १० मिनट बनेंगे। इनको उस दिन के सूर्योदय ७।०६ में जमा कर देने से हमें भा. स्टै. टा. में २५ घं., और १६ मिनट प्राप्त होंगे–अर्थात् रात्रि १ बजकर १६ मिनट से चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा। इसी तरह सभी ग्रहों का संचार समय जान सकते हैं।

चन्द्रमा और उसकी कलाएं

पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों सूर्य से ही प्रकाश ग्रहण करते हैं। इनके गोल होने के कारण दोनों का आधा भाग सदा प्रकाशित रहता है, और आधा भाग सदा अंधेरे में॥

चन्द्रमा की किरणों से प्रकाशित पृथ्वी के अर्धगोलार्द्ध को शुक्ल पक्ष कहते हैं। पृथ्वी पर चन्द्रमा का सम्पूर्ण प्रकाशित भाग महीने में केवल एक बार अर्थात् पूर्णिमा को दिखाई देता है। इसी प्रकार मास में एक दिन ऐसा भी आता है जब चन्द्रमा का सम्पूर्ण अप्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने होता है और तब चन्द्रमा दिखाई नहीं देता, वह दिन अमावस्या कहलाता है। अमावस्या से पूर्णमाशी तक, चन्द्रमा का हमें दिखाई देने वाला प्रकाशित भाग प्रतिदिन बढ़ता जाता है। तथा पूर्णिमा से अमा. तक यह शनैः शनैः घटता जाता है। चन्द्र की इन्हीं बदलती अवस्थाओं को चन्द्र कलाएँ कहते हैं। बढ़ते चान्द के पखवाड़े को 'शुक्ल पक्ष' और घटते चाँद के पखवाड़े को 'कृष्ण पक्ष' कहते हैं।

सूर्य—चन्द्रादि ग्रहण

चन्द्र ग्रहण—जब पूर्णिमा के दिन पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के बीच में ठीक सीध में आ जाए, तो पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ने लगती है, जिस कारण चन्द्रमा पर ग्रहण की स्थिति उत्पन्न होती है। इसे चन्द्र—ग्रहण कहते हैं। जब चन्द्रमा का केवल कुछ भाग पृथ्वी की परछाईं में आता है, तो इसे खण्ड ग्रहण कहते हैं। जब चन्द्रमा का सम्पूर्ण भाग पृथ्वी की परछाईं में आता है तो उसे खग्रास (पूर्ण चन्द्र ग्रहण) कहते हैं। चन्द्रग्रहण सदा पूर्णिमा तिथि को ही लगता है। परन्तु जिस पूर्णिमा को चन्द्रमा पृथ्वी की कक्षतल में होता है तभी चन्द्र ग्रहण लगता है।

सूर्य ग्रहण—जब चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के बीच ठीक एक सीध में आ जाता है तो सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के कुछ भाग पर नहीं पहुँच पाता। दूसरे शब्दों में पृथ्वी पर जहां—जहां चन्द्रमा की परछाई पड़ती है, वहां सूर्य ग्रहण लगा दिखाई देगा। जब सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा द्वारा पूर्णतया अवरुद्ध हो जाता है तो पूर्ण सूर्य—ग्रहण होता है।

पृथ्वी पर वर्ष भर में अधिक से अधिक सात ग्रहण लगतें हैं और कम से कम दो ग्रहण लगते हैं। चन्द्र ग्रहणों की पुनरावृत्ति प्रायः १८ वर्ष, ११ दिन और और १८ घण्टों के पश्चात् होती रहती है।

ध्यान रहे, चन्द्रग्रहण सदा पूर्णिमा को तथा सूर्यग्रहण सदा अमावस के दिन ही घटित होता है।

तिथियों की नन्दादि विशेष संज्ञा–जैसा कि पहिले लिख चुके हैं कि प्रत्येक पक्ष में प्रायः १५ तिथियां होती हैं। प्राचीन शास्त्रकारों ने तिथियों की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए, उन्हें भिन्न–भिन्न नामों की संज्ञा प्रदान की है। तिथियों के नामानुरूप ही उनका शुभाशुभ फल माना जाता है। यथा–

1. **नन्दा तिथियां**–१, ६, ११ नन्दा तिथियां कहलाती हैं। इन तिथियों में गीत वाद्य, नृत्य, कृषि, उत्सव, गृहस्थ सम्बन्धी कार्य, वस्त्र बुनना या ग्रहण करना एवं शिल्पादि का अभ्यास करना प्रशस्त रहते हैं।

2. **भद्रा**–२, ७, १२ तिथियां भद्रा तिथियां है। इनमें विवाह, उपनयन, यात्रा, आभूषण निर्माण और उन्हें धारण करना, कला सीखना, हाथी घोड़ा एवं कार–स्कूटर आदि गाड़ी को क्रय अथवा सवारी करना आदि प्रशस्त होता है।

3. **जया तिथियां**–३, ८, १३ तिथियां **जया** संज्ञक है। इनमें सैन्य संगठन, सैनिक शिक्षा, शस्त्र निर्माण, युद्धाभ्यास, यात्रा, उत्सव, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, व्यापार, एंव औषध कर्म करना प्रशस्त रहता है।

4. **रिक्ता तिथियां**–४, ९, १४ तिथियां **रिक्ता** संज्ञक होती हैं। इनमें शत्रु का दमन करना, शस्त्र प्रयोग, शल्य–क्रिया (Operation), अग्नि लगाना आदि क्रूर कर्मों में ग्राह्य होती हैं।

5. **पूर्णा तिथियां**–५, १०, १५ तिथियां **पूर्णा** कहलाती हैं। इनमें विवाह, यज्ञोपवीत, नृपाभिषेक, शान्ति एवं पौष्टिक कर्मादि कृत्य करने प्रशस्त होते हैं।

तिथियों की कुछ अन्य संज्ञाएं–

1. **पर्व संज्ञा**–कृष्णा–अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य संक्रान्ति के दिन विद्यमान तिथि **पर्व संज्ञक** हैं, जिन्हें सहवास, स्त्री प्रसंग तथा अन्य विशेष मांगलिक कार्यों में यथा संभव त्याज्य समझना चाहिए।

2. **छिद्रा तिथियां**–प्रत्येक पक्ष की ४, ६, ८, ९, १२ और १४ तिथियां छिद्रा तिथियां कहलाती हैं। सूक्ष्म रूप से मुहूर्त्त का विचार करने वाले जातक को शुभकार्यों में यथासंभव इनका त्याग अपेक्षित है। आवश्यक परिस्थितिवश चतुर्थी में ८ छटी, षष्ठी में ९, अष्टमी में १४, नवमी में १५, द्वादशी में १० तथा चतुर्दशी में ५ घड़ियां छोड़कर ग्रहण कर सकते हैं।

3. **शून्य तिथियां**–चैत्रादि मासों में कुछ विशेष तिथियों को 'शून्य' कहा गया है। इनमें सम्पादित कर्म निष्फल होते हैं। मास शून्य तिथियां निम्नलिखित चक्र में द्रष्टव्य हैं।

मास	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ		आषा.		श्रा.	भाद्र	अश्वि.	कार्तिक		मार्ग	पौष	माघ		फागु	
पक्ष	०	०	कृ	शु.	कृ.	शु.	०	०	०	कृ.	शु.	०	०	कृ.	शु.	कृ.	शु.
शून्य	८	०	०	०	०	०	२	१	१०	५	१४	७	४	६	५	४	३
तिथि	९	१२	१४	१३	७	६	३	२	११			८	५				

जहां कृष्ण, शुक्लादि कोई शब्द नहीं लिखा गया है। वहां कृष्ण व शुक्ल दोनों पक्ष जानें।

मुहूर्त्त कालीन यदि केन्द्र त्रिकोण एवं उपचय स्थानों में गुरु, शुक्र, चन्द्रादि कोई शुभ–ग्रह बलान्वित हो, तो शून्य, छिद्रादि तिथि दोष समाप्त हो जाता है।

युगादि तिथियां–सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग आदि चार युगों के प्रारंम्भ की तिथियां युगादि के नाम से प्रचलित हैं। यथा–

1. सतयुग–कार्तिक शुक्ल नवमी (९) तिथि॥
2. त्रेतायुग–वैशाख शुक्ल तृतीया (३) तिथि ।
3. द्वापर युग–माघ कृष्ण पूर्णिमा (१५) तिथि ।
4. कलियुग–श्रावण कृष्ण त्र्योदशी (१३) तिथि।

मन्वादि तिथियां–स्वायं भुवादि चौदह मनुओं से सम्बन्धित चौदह (१४) तिथियां मन्वादि तिथियां कहलाती हैं। नन्वादि तिथियां निम्नानुसार जानें–

मास	चैत्र	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र	आश्विन	कार्ति.	पौष	माघ	फागुन
पक्ष	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल
मन्वादि	३	१५	१०	८	३	९	१२	११	७	१५
तिथियां	१५		१५	३०			१५			

उपरोक्त मन्वादि–युगादि तिथियों में स्नान, जप–पाठ, हवन, दानादि करने से अनन्त गुणा पुण्य की प्राप्ति होती है।

दग्धा तिथि विचार–विभिन्न राशिगत सूर्य में कुछ तिथियां दग्ध हुई मानी जाती हैं। इनमें विवाहादि प्रमुख मांगलिक कार्यों के सम्पादन का निषेध माना जाता है। यथा–

सूर्य राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दग्ध तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
पक्ष	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण

सिद्धा तिथियां–कुछ तिथियां वार विशेष के संयोग से सिद्धा तिथियां कहलाती

हैं, यथा–

३, ८, १३ तिथियां मंगलवार को, २, ७, १२ बुधवार को, ५, १०, १५ तिथियां गुरुवार को, १, ६, ११ तिथियां शुक्रवार को तथा ४, ९, १४ तिथियां शनिवार को सिद्धा तिथियां कहलाती हैं। इनमें किए गए विशेष काम्य अभीष्ट कार्य प्रायः सिद्ध होते हैं।

मास शून्य तिथियां–चैत्र में दोनों पक्ष की अष्टमी और नवमी, वैशाख में दोनों पक्षों की द्वादशी, ज्येष्ठ में शुक्ला त्र्योदशी, आषाढ़ में शुक्ल सप्तमी व कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि मास शून्य तिथियां कहलाती हैं। इनमें विशेष अभीष्ट कार्य करने से सफलता संदिग्ध रहती हैं।

तिथियों के स्वामी

विभिन्न तिथियों के अलग–अलग स्वामी माने गए हैं। यथा प्रतिपदा का स्वामी अग्नि, द्वितीया का ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, चतुर्थी का गणेश, पंचमी का शेषनाग, षष्ठी का कार्तिकेय, सप्तमी का सूर्य, अष्टमी का शिव, नवमी की दुर्गा, दशमी का यम, एकादशी का विश्वेदेवा, द्वादशी के विष्णु, त्र्योदशी का कामदेव, चतुर्दशी का शिव, पूर्णमाशी का चन्द्रमा, और अमावस्या के स्वामी पितर हैं। तिथियों के शुभाशुभ फल के समय इनके स्वामियों का विचार किया जाता है।

तिथि स्वामी चक्र

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी
१	अग्नि	९	श्री दुर्गा
२	ब्रह्मा	१०	यम
३	गौरी	११	विश्वेदेता
४	गणेश	१२	श्री विष्णु
५	सर्प (शेणनाग)	१३	कामदेव
६	स्कन्द (कार्ति)	१४	शिव जी
७	सूर्य देव	१५	चन्द्रमा
८	शिव जी	३०	पितर

विभिन्न तिथियों में जन्म लेने का फल

1. प्रतिपदा में जिसका जन्म होता है वह दुर्जनों के संग रहने वाला, कुल में श्रेष्ठ तथा व्यसनों में आसक्त एवं मनमानी करने वाला होता है।

2. **द्वितीया**–में उत्पन्न मनुष्य परस्त्रीगामी, सत्य प्रिय, आचरण से विहीन पर उद्यमी और स्नेहहीन परन्तु धन संपदा युक्त होता है।

3. **तृतीया**–में जन्म लेने वाला चेष्टाहीन, विकल, संसाधनों से हीन और दूसरों से प्रेम रखने वाला होता है।

4. **चतुर्थी**–में जन्म लेने से मनुष्य भोगी, दाता, मित्रों से प्रेम करने वाला, पण्डित, संतान, धन और साधनों से युक्त होता है।

5. **पंचमी**–में उत्पन्न मनुष्य व्यवहारज्ञाता, गुणग्राही, माता–पिता का भक्त, दानी, परोपकारी, भोगी, अल्प प्रेम करने वाला होता है।

6. **षष्ठी**–में होने से देश विदेश में भ्रमण करने वाला, झगड़ालू और उदर रोगों से पीड़ित एवं संघर्ष पूर्ण जीवन होता है।

7. **सप्तमी**–में उत्पन्न मनुष्य अल्प में ही सन्तुष्ट, तेजस्वी, सौभाग्यशाली और गुणों से युक्त, सन्तान और धन एवं सवारी आदि सुखों से सम्पन्न होता है।

8. **अष्टमी**–में जन्म लेने वाला धर्मात्मा, सत्यवक्ता, भाग्यशाली, दयावान, गुणज्ञ और सब कार्यों में कुशल होता है।

9. **नवमी**–में जन्म लेने वाला देवताओं का भक्त, पुत्रवान, धनी, स्त्री में आसक्त और शास्त्राभ्यासी और परोपकारी स्वभाव वाला होता है।

10. **दशमी**–में जन्म लेने वाला धर्म–अधर्म का ज्ञाता, देशभक्त, शुभ कर्म करने वाला, तेजस्वी और सुख–साधनों से सुखी होता है।

11. **एकादशी**–में जन्म लेने वाला स्वल्प में सन्तुष्ट, राजा मान्य, पवित्र, भाग्यवान, धनवान् और बुद्धिमान होता है।

12. **द्वादशी**–में जन्म लेने वाला चंचल, अस्थिर बुद्धि, प्रदेश में भ्रमण करने वाला व्यवहार कुशल, परिश्रमी होता है।

13. **त्रयोदशी**–में उत्पन्न होने वाला उद्यमशील पुरुष, बड़ा दयालु, पण्डित, कर्मठ शास्त्राभ्यासी, जितेन्द्रिय और परोपकारी होता है।

14. **चतुर्दशी**–में जन्म लेने वाला धनवान, धर्मात्मा, वीर, अपने वचन को पालने वाला, राज मान्य और यशस्वी परन्तु खर्चीले स्वभाव का होता है।

15. **पूर्णिमा**–में उत्पन्न मनुष्य सम्पत्तिवान्, बुद्धिमान्, भोजनप्रिय, कल्पनाशील और परस्त्री में आसक्त और नई नई योजनाएं बनाने में कुशल होता है।

16. **अमावस्या**–में जन्म लेने वाला दीर्घसूत्री, परद्वेषी, कुटिल, षड्यन्त्रकारी, पराक्रमी, गुप्त विचार रखने वाला और संघर्षशील होता है।

17. तिथिक्षय या तिथिमल–में जन्म होने से संघर्षशील, अल्पधनी, कुटिल और परवंचक होता है।

वार क्रम

भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक नवीन 'वार' का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। अतः सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक के समय को 'वार' कहा जाता है। वार क्रमानुसार सात हैं।

1. रविवार, 2. सोमवार (चन्द्रवार), 3. मंगलवार, 4. बुधवार, 5. बृहस्पतिवार (गुरुवार), 6. शुक्रवार (भृगुवार), एवं 7. शनिवार।

सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई पड़ता है, इसलिए पहली होरा सूर्य से शुरू की जाती है। अतएव पहले वार का नाम रविवार है। तत्पश्चात दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी चन्द्रमा है। तीसरे दिन की १ ली होरा का स्वामी मंगल–इस प्रकार क्रम से सातों वारों में प्रथम होरा के स्वामी के नामाधार ही सप्तवार के नाम पड़े हैं :

काल होरा ज्ञान–प्रत्येक वार में लगभग २४ घण्टे होते हैं। प्रत्येक वार के प्रारम्भ का प्रथम घण्टा उसी वार की होरा से होता है, जिसे क्षणवार भी कहते हैं। सूर्योदय से प्रारम्भ करके उसी वार क्रम से प्रति १–१ घण्टे की वार आवृत्ति की जाती है। यदि परिस्थितिवश शीघ्रता में और कोई निर्दिष्ट मुहूर्त्त न निकलता हो, तो विहित वार की काल–होरा (क्षणवार) में अभीष्ट कार्य सम्पादन करना प्रशस्त माना जाता है। प्रत्येक क्षणवार गत कालहोरेश से छटा होता है। जैसे शुक्रवार की प्रथम होरा शुक्र की, दूसरी होरा (शुक्र से छटी) अर्थात् बुध की होरा, तृतीय होरा सोम (बुध से छठे वार) की होगी।

काल होरा विशेषफल

सूर्य की होरा–टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने– देने के लिए अच्छी होती है। **चन्द्र की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**–युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देना, सभा सोसाइटी में जाना आना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

कालहोरा चक्र

होरा घ.	रवि	सोम	मंग.	बुध	बृह	शुक्र	शनि
१	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि
२	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह
३	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग
४	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि
५	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र
६	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध
७	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम
८	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि
९	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह
१०	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग
११	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि
१२	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र
१३	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध
१४	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम
१५	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि
१६	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह
१७	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग
१८	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि
१९	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र
२०	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध
२१	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम
२२	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह	शुक्र	शनि
२३	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग	बुध	बृह
२४	बुध	बृह	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंग

सात वारों में जन्म का फल

1. रविवार में जन्म लेने वाला–पित्तप्रकृति, परमचतुर, तेजस्वी, युद्ध–प्रिय, दानी और अत्यन्त उत्साही होता है।

2. सोमवार में जन्म हो तो–बुद्धिमान, प्रियवक्ता, शांत, राजा का आश्रित, सुख–दुख को समान मानने वाला धनी और सवारी आदि साधनों से युक्त होता है।

3. मंगलवार में जन्म हो तो–मनुष्य तीव्र बुद्धि, भूमि कार्यों से जीविका प्राप्त करने वाला, पराक्रमी, युद्धप्रिय, महाबली, सेनापति या जनपालक होता है।

4. बुधवार में जन्म होने से–गणित लेख आदि से आजीविका प्राप्त करने वाला, प्रिय वक्ता, पण्डित, बुद्धिमान, सौन्दर्य और सम्पत्ति से युक्त होता है।

5. गुरुवार में जन्म होने से–धनवान्, बुद्धिमान, विवेकी, लोगों में मान्य, अध्यापक या राजमन्त्री, धार्मिक विचारों वाला होता है।

6. शुक्रवार–में जन्म दिन होने से चंचलचित्त, कामासक्त, धनोपार्जन और क्रीड़ा में प्रेम करने वाला, बुद्धिमान, सुन्दर और सवारी आदि सुखों से युक्त होता है।

7. शनिवार में जन्म हो तो–स्थिर वचन वाला, चिन्तनशील स्वभाव, पराक्रमी, नीच दृष्टि, विकृत नखवाला, अधिक केशवाला और प्रारम्भिक जीवन में संघर्ष अधिक होता है। अनेक उपायों से धनार्जन करने वाला होता है।

१. दिन में जन्म–हो तो बहु–पुत्रवाला, भोगी, अधिक मित्रवाला, कामातुर, वस्त्रादि से पूर्ण, बुद्धिमान और सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

२. रात्रिकाल में जन्म–लेने वाला जातक दीघ्र सूत्री, तामसिक वृत्तिवाला, कामी, चोरी छिपे पापाचरण करने वाला, तथा वृथा चिन्ता करने वाला होता है।

वारों के देवता व अधिदेवता–रविवार के सूर्यव शिव जी, सोमवार की शिव–पार्वती, मंगलवार के कार्तिकेय, बुध के देव विष्णु, बृहस्पतिवार के ब्रह्मा, शुक्रवार के इन्द्र और शनिवार के यम (काल) देवता माने जाते हैं।

सातवारों में करणीय कर्त्तव्य (मुहूर्त्त)

सप्तवारों में विशेष कार्य हेतु तभी मुहूर्त्त ग्रहण करें जबकि तिथि, नक्षत्रादि की अनुकूलता उपलब्ध हो।

1. रविवार–ध्रुव एवं स्थिर संज्ञक है। इस दिन राज्यभिषेक, गीत–वाद्यारंभ, राज्यसेवा आरंभ करना, गाय–बैल, अनाज आदि का क्रय, औषधि एवं अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, सुवर्ण–चान्दी–ताम्रादि कार्य करना, मन्त्रोपदेश, यज्ञादि अनुष्ठान तथा नवीन वस्त्र धारण करना प्रशस्त है।

इस दिन पूर्व, उत्तर एवं आग्नेय (दक्षिण–पूर्व) दिशा की यात्रा करना शुभ होता है।

2. **सोमवार**–'चर' संज्ञा है। इस दिन आभूषण निर्माण या धारण करना, वाटिका लगाना, संगति नृत्यादि आरम्भ, गाय भैंस दूध आदि पशुओं का लेन–देन, शंख–मोती, चान्दी एवं कृषि सम्बन्धी कार्य, धन, सम्पदा, स्त्री, सौन्दर्य सम्बन्धी कार्यारम्भ करना शुभ है। इस दिन पश्चिम, दक्षिण एवं वायव्य (उत्तर–पश्चिम) दिशा की यात्रा प्रशस्त होती है।

3. **मंगलवार**–इसें 'उग्रवार' भी माना जाता है। इस दिन किसी को कैद करना, विष देना, सन्धि–विच्छेद, सैन्यादि युद्ध की सामग्री इकट्ठी करना, सुवर्ण–मूंगा आदि धातुएं इकट्ठी करना, अग्नि, बिजली, भूमि सम्बन्धी कार्य करना शुभ है।

इस दिन दक्षिण, पूर्व एवं आग्नेय (दक्षिण–पूर्व) दिशा की यात्रा शुभ होती है।

4. **बुधवार**–'मिश्र' संज्ञा है। इस दिन साहित्य–संगीत–कला गणित, लेखनादि बौद्धिक कार्य, बैंकिंग, ज्योतिष, तकनीकि हुनर, सम्पादन कार्य, वाहन का क्रय–विक्रय, मूर्ति निर्माण, धान्यादि का संग्रह, व्यवसायारंभ आदि कार्य प्रशस्त हैं। इस दिन दक्षिण, पूर्व तथा नैऋत्य (दक्षिण–पश्चिम) की यात्रा करना शुभ होता है।

5. **गुरुवार**–इस दिन यज्ञ, हवन, देवार्चन, नवग्रह पूजन, शान्ति कर्म, धार्मिक अनुष्ठान, विद्यारम्भ, नवीन वस्त्र धारण, विदेश गमन, वाहन क्रय–विक्रय, नव आभूषण धारण व क्रय–विक्रय, औषधि का लेन–देन, लकड़ी, भूमि सम्बन्धी कार्य, अनुष्ठानादि कार्य शुभ होते हैं।

इस दिन पूर्व, उत्तर एवं ईशान (पूर्व उत्तर) दिशा की यात्रा करना शुभ होती है।

6. **शुक्रवार**–नृत्य, वाद्य, गायन, कला–संगीत, अदाकारी (Acting), गीत–काव्य रचना, स्त्रियों एवं सुंगन्धी, सौंदर्य सम्बन्धी कार्य, नूतन वस्त्र, भूषण धारण, बैंकिंग, व्यापार, कृषि एवं विदेश सम्बन्धी कार्य करने शुभ होते हैं।

7. **शनिवार**–इस दिन अस्त्र का आदान–प्रदान, लोहा, धातु–मशीनरी सम्बन्धी तकनीकि ज्ञान, लकड़ी, चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोलियम, भूमि, अधीनस्थ कर्मचारी, विदेश गमन, वाहनादि प्रयोगारम्भ करना शुभ होता है। इस दिन पश्चिम, दक्षिण एवं नैऋत्य (दक्षिण–पश्चिम) की यात्रा करना शुभ होता है।



नक्षत्र परिचय

एक अथवा अनेक दैदीप्यमान तारा समूह को नक्षत्र (Constellation) कहते हैं। आकाश मण्डल एवं भचक्र में असंख्य तारे हैं, जो कुछ विशेष प्रकार की आकृतियां बनाते दिखाई देते हैं। जैसे–अश्व, शकट, सर्प, हस्त (हाथ), चक्र, त्रिकोण आदि। भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा ताराओं की आकृति विशेष के आधार पर ही अश्विनी, भरणी, कृतिका आदि नक्षत्रों के नाम रखे गए प्रतीत होते हैं। हमारा सूर्य भी एक देदिप्यमान तारा है। सूर्य की भान्ति सभी नक्षत्र स्वतः प्रकाशमान हैं, अर्थात्–चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों की भान्ति नक्षत्र किसी अन्य तारा से प्रकाश ग्रहण नहीं करते हैं।

जिस प्रकार सामान्य व्यवहार में पृथ्वी पर एक स्थान पर से दूसरे स्थान की दूरी मीलों अथवा किलोमीटर में बताई जाती है, उसी प्रकार सूर्य, मंगलादि ग्रहों की दूरी का मापदण्ड नक्षत्रों के द्वारा किया जाता है। पौराणिक ग्रंथों में **नक्षत्रों की संख्या** असंख्य बताई गई है। **स्कन्द पुराण** के अनुसार नक्षत्रों की संख्या अस्सी समुद्र, चौदह अरब और बीस करोड़ बतलाई गई है। इनमें कुछ पौराणिक प्रसिद्ध नक्षत्र भी शामिल हैं जैसे–सप्तर्षि मण्डल, मरीचि, वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, ध्रुव, अगस्त्य आदि।

अथर्व संहिता आदि प्राचीन ग्रंथों में प्रतिपादित तथा आधुनिक खगोल शास्त्रियों ने क्रान्तिवृत्त के दोनों ओर (दक्षिणोत्तर) ९°–९° अंश के राशिपथ (भचक्र) में पड़ने वाले मुख्य तारा समूह एवं नक्षत्रों की ८८ संख्या को मान्यता प्रदान की है। भारतीय ज्योतिर्विदो ने इन्हीं ८८ मुख्य तारा समूहों में से निम्नलिखित २७ अथवा २८ प्रमुख नक्षत्रों का चयन किया।

* सूर्य, चन्द्र, मंगलादि सभी ग्रह भचक्र में पड़ने वाले सभी २७/२८ नक्षत्रों के प्रभाव क्षेत्र में अपनी–अपनी गत्यानुसार आते रहते हैं तथा तदनुरूप प्रभाव करते हैं। भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने गणितीय दृष्टि से क्रान्तिवृत्त एवं भचक्र में पड़ने वाले अश्विनी, भरणी आदि २७ नक्षत्रों को ही मुख्यतया स्वीकार किया है। २८वां अभिजित नक्षत्र क्रान्तिवृत्त से (६१ अंश, ४४ कला) किंचित दूर होने से सामान्यतः कम प्रयोग किया गया है।

आकाशमण्डल में क्रान्तिवृत्त की भान्ति भचक्र के 360° अंश होते हैं। २७ नक्षत्रों द्वारा भाग देने से प्रत्येक नक्षत्र १३° अंश, २० कला का होता है।

ध्यान रहे, भारतीय ज्योतिष में चान्द्र नक्षत्रों को विशेष महत्त्व दिया जाता हैं। क्योंकि चन्द्रमा मन का स्वामी है तथा पृथ्वी से सर्वाधिक नज़दीकी उप–ग्रह होने से गर्भस्थ शिशु पर चन्द्रमा एवं चान्द्र–नक्षत्र का विशेष प्रभाव पड़ता है।

---

* **सूर्य**– वास्तव में पृथ्वी. चन्द्र, मंगल, बुध आदि सभी ग्रह सूर्य को केन्द्र मानकर उसके इर्द–गिर्द परिभ्रमण कर रहे हैं। चूंकि हमें ग्रहों का पृथ्वी पर प्रभाव ज्ञात करना है। इसी कारण पृथ्वी को केन्द्रीभूत तथा सूर्य को परिक्रमा करने वाला मान लिया जाता है। वस्तुस्थिति एक सी है।

चन्द्रमा अति शीघ्र गति के कारण एक नक्षत्र अर्थात् १३ अंश २० कला की दूरी को लगभग एक दिन–रात में तय कर लेता है ज़बकि अन्य ग्रह अल्पतर गति के कारण एक नक्षत्र की दूरी को अधिक समय में तय कर पातें है। जैसे–सूर्य एक नक्षत्र (१३°–२० अंश) की दूरी को लगभग १३ या १४ दिनों में, मंगल लगभग १८ से ३४ दिन, बुध ७ से १२ दिन, गुरु लगभग २ मासों में, शुक्र ११ से १३ दिन, शनि लगभग १ वर्ष में तथा राहु प्रायः ८ महीनों में एक नक्षत्र की दूरी तय करता है। मंगल, बुधादि वक्री मार्गी होते रहने वाले ग्रहों की गति में अधिक अन्तर आते रहने से नक्षत्र परिभ्रमण के दिनों में प्रायः न्यूनाधिकता आती रहती है। परन्तु प्रत्येक स्थिति में नक्षत्र का मान १३ अंश २० कला ही रहेगा।

सत्ताईस (२७) नक्षत्रों के नाम तथा उनसे सम्बन्धित विभिन्न ताराओं की संख्या का विवरण इस प्रकार से है–

सत्ताईस (२७) नक्षत्रों के नाम तथा तारा संख्या

क्रम	हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम	तारा संख्या
1	अश्विनी	Beta Arietis	शरती	३
2.	भरणी	41 Arietis	बर्तान	३
3.	कृतिका	Beta Tauri	सुरैया	७
4.	रोहिणी	Aldebaran (Alfa Tauri)	दवरा	५
5.	मृगशिर	Lambda Orionis	हकुआ	३
6.	आर्द्रा	Gamma Geminorum (Alfa Orionis)	हनझा	१
7.	पुनर्वसु	Pollux Castor (Beta Pollux)	झिरा	४
3.	पुष्य	Delta Cancri	नसरा	३
9.	आश्लेषा	Zeta Hydrae	तुर्फा	५
10	मघा	Regulus	जवहा	५
11	पूर्वाफाल्गुनी	Delta Leonis	झाहेरा	२
12	उत्तरा फाल्गुनी	Denebola	सफा	२
13	हस्त	Delta Corvi	अवा	५
14	चित्रा	Spica	समाक	१
15	स्वाती	Arcturus	गफरा	१
16	विशाखा	Alpha Librae	झवा	४
17	अनुराधा	Delta Scorpii	अकली	४
18	ज्येष्ठा	Antares	कल्ब	३
19	मूला	Lambada	सोला	११
20	पूर्वाषाढ़ा	Delta Sagiltarii	नआ	२

21	उत्तराषाढ़ा	Phi Sagittari	वलदा	२
21	(ii) अभिजित	Vega	झावे	३
22	श्रवण	Altair	वला	३
23	धनिष्ठा	Alpha Delphinus	सोउद	४
24	शतभिषा	Lambada Aquarii	अखवा	१००
25	पूर्वाभाद्रपद	Markab	मुकई	२
26	उत्तराभाद्रपद	Algenib	मुअरब	२
27	रेवती	Zeta Piscium	रिशा	३२

टिपण्णी–21 (ii) अभिजित नक्षत्र की गणना २७ नक्षत्रों में नहीं होती : क्योंकि यह नक्षत्र क्रान्ति चक्र (Ecliptic) से बाहर पड़ता है। इसकी गणना उ. षा. की १५ घड़ियां और श्रवण की प्रारम्भिक ४ घड़िया लेकर करते हैं। मुहूर्त्तादि कार्यों में इसे शुभ माना गया है। भचक्र (राशिचक्र) पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता परिलक्षित होता है, जिससे मेष, वृष, मिथुन, इत्यादि राशियां क्रमानुसार आकाश मण्डल में उदित होती दिखाई देती हैं परन्तु पृथ्वी (सूर्य) शनि भौमादि ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर परिभ्रमण करते हैं।

यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि प्राचीन भारतीय आचार्यों द्वारा विभिन्न नक्षत्रों के नामों को उनकी आकृतियों के अनुरूप, आधुनिकविज्ञान की वेधशालाओं ने भी सही पाया है।

नक्षत्रों का स्वरूप तथा उनसे सम्बन्धित देवता–

उपरोक्त तारां समूहों की आकृतियों के आधार पर ही विभिन्न नक्षत्रों का नामकरण किया गया है। तथा साथ ही उसने सम्बन्धित देवता का निर्धारण किया गया है। यथा–

नक्षत्र	तारा संख्या	दृश्यमान आकृति	देवता
1 अश्विनी	३	अश्वमुख के समान	अश्विनी कुमार
2 भरणी	३	योनि के समान	यम
3 कृतिका	६	छुरे के समान	अग्नि
4 रोहिणी	५	शकट के समान	ब्रह्म
5 मृगशिर	३	हिरण मुख समान	चन्द्रमा
6 आर्द्रा	१	मणि के समान	रुद्र (शिव)
7 पुनर्वसु	४	गृह के समान	आदित्य
8 पुष्य	३	वण के समान	बृहस्पति
9 आश्लेषा	५	चक्र के समान	सर्प
10. मघा	५	भवन के समान	पितर

11.	पूर्वाफाल्गुनी	२	चारपाई के समान	भग
12.	उत्तराफाल्गुनी	२	शय्या के समान	अर्यमा
13.	हस्त	५	हाथ के समान	सूर्य
14.	चित्रा	१	मोती के समान	विश्वकर्मा
15.	स्वाती	१	मूंगे के समान	वायु
16.	विशाखा	४	तोरण के समान	इन्द्राग्नि
17.	अनुराधा	४	चावल (धान) समान	मित्र (सूर्य)
18.	ज्येष्ठा	३	कुण्डल के समान	इन्द्र
19.	मूल	११	सिंह की पूछल समान	निर्ऋति (राक्षस)
20.	पूर्वाषाढ़ा	२	हाथी दांत के समान	जल
21.	उत्तराषाढ़ा	२	मञ्च के समान	विश्व देवा
22.	अभिजित	३	त्रिकोण के समान	ब्रह्मा
23.	श्रवण	३	वामन के ३ चरण समान	विष्णु
24.	धनिष्ठा	४	मृदंग के समान	वसु
25.	शतभिषा	१००	वृत्त के समान	वरुण
26.	पूर्वाभाद्रपद	२	मञ्च के समान	अजैकपाद
27.	उत्तराभाद्रपद	२	युगल तारे	अहिर्बुध्न्य
28.	रेवती	३२	मृदंग माला सदृश	पूषा

निरयण अश्विनी नक्षत्र के प्रथम बिन्दु से अंश कला की दृष्टि में प्रत्येक नक्षत्र का गणितीय विस्तार १३ अंश, २० कला ही रहता है। यह नक्षत्र का भोग्य राश्यांशादि भी कहलाता है। प्रत्येक नक्षत्र का भोग्य राश्यांशादि में प्रारम्भ व समाप्ति काल अलग-अलग होता है।

नक्षत्रों का राश्यंशों आदि में भोग्य भ्रमण काल

क्रम	नाम नक्षत्र	राशि	अंश	कला	से	राशि	अंश	कला	तक
१.	अश्विनी	०	०	०	,,	०	१३	२०	,,
२.	भरणी	०	१३	२०	,,	०	२६	४०	,,
३.	कृतिका	०	२६	४०	,,	१	१०	००	,,
४.	रोहिणी	१	१०	०	,,	१	२३	२०	,,
५.	मृगशिरं	१	२३	२०	,,	२	६	४०	,,
६.	आर्द्रा	२	६	४०	,,	२	२०	०	,,
७.	पुनर्वसु	२	२०	०	से	३	३	२०	तक

क्रम	नाम नक्षत्र	राशि	अंश	कला	से	राशि	अंश	कला	तक
८.	पुष्य	३	३	२०	,,	३	१६	४०	,,
९.	आश्लेषा	३	१६	४०	,,	४	००	०	,,
१०.	मघा	४	०	०	,,	४	१३	२०	,,
११.	पूर्वाफाल्गुनी	४	१३	२०	,,	४	२६	४०	,,
१२.	उत्तरा फाल्गुनी	४	२६	४०	,,	५	१०	०	,,
१३.	हस्त	५	१०	००	,,	५	२३	२०	,,
१४.	चित्रा	५	२३	२०	,,	६	६	४०	,,
१५.	स्वाती	६	६	४०	,,	६	२०	०	,,
१६.	विशाखा	६	२०	०	,,	७	३	२०	,,
१७.	अनुराधा	७	३	२०	,,	७	१६	४०	,,
१८.	ज्येष्ठा	७	१६	४०	,,	८	०	०	,,
१९.	मूला	८	०	०	,,	८	१३	२०	,,
२०.	पूर्वाषाढ़ा	८	१३	२०	,,	८	२६	४०	,,
२१.	उत्तराषाढ़ा	८	२६	४०	,,	९	१०	०	,,
२२.	श्रवण	९	१०	०	,,	९	२३	२०	,,
२३.	धनिष्ठा	९	२३	२०	,,	१०	६	४०	,,
२४.	शतभिषा	१०	६	४०	,,	१०	२०	०	,,
२५.	पूर्वाभाद्रपद	१०	२०	००	,,	११	३	२०	,,
२६.	उत्तराभाद्रपद	११	३	२०	,,	११	१६	४०	,,
२७.	रेवती	११	१६	४०	से	१२	०	०	तक

फलित ज्योतिष अनुसार किसी नक्षत्र विशेष में उत्पन्न जातक अपने नक्षत्र स्वामी के गुण स्वभावानुसार ही फल प्रदान करते हैं।

आकाश मण्डल में नक्षत्रों की स्थिति

1. अश्विनी, भरणी, स्वाती, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा–फाल्गुनी, मघा, पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद–इन ९ नक्षत्रों के तारे आकाश मण्डल में उत्तरी दिशा में दिखाई देते हैं।

2. कृतिका, रोहिणी, पुष्य, आश्लेषा, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एवं रेवती–इन नक्षत्रों के तारे आकाश के मध्य में दिखाई देते हैं।

3. मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढ़ा एवं उत्तराषाढ़ा –इन ९ नक्षत्रों के तारे आकाश मण्डल में दक्षिण की ओर दिखाई देते हैं।

प्राचीन भारतीय ज्योतिष विशेषतया नक्षत्रों पर आधारित रहा है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त–सभी क्रिया कलापों में शुभाशुत्व एवं मुहूर्त्त का ज्ञान नक्षत्रों द्वारा ही किया जाता रहा है। इसी हेतु विभिन्न कार्य विधाओं में नक्षत्रों का वर्गीकरण किया गया है। फलित ज्योतिष में भी इनका विशेष महत्त्व है–

पंचक संज्ञक नक्षत्र–धनिष्ठ, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती–इन नक्षत्रों में कुछ विशेष कृत्यों को आरम्भ करने का निषेध माना गया है। जैसे दक्षिण दिशा की यात्रा, झोंपड़ी, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई, पलंग आदि बनाना, लकड़ी, बांस या ईंटों की दीवार बनाना शुरू करना, तांबा, लोहा, पीतल, लकड़ी आदि को इकट्ठा करना, गृहारम्भ रख कर छत डालना, मुर्दा जलाना आदि कृत्यों को करना अशुभ माना जाता है।

काल पुरुष के विभिन्नांगों पर नक्षत्रों की स्थिति

वाराहामिहिर आदि प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विदों ने काल्पनिक काल पुरुष के विभिन्न अंगों पर २७ नक्षत्रों की स्थिति की कल्पना की है। यदि जन्म काल में अथवा गोचरवश कोई अशुभ अथवा पापी ग्रह किसी जातक के सम्बन्धित नक्षत्र पर संचार या वेध करता हो तो तत् सम्बन्धी शरीर अंग में कष्ट होने के योग बनेंगे। काल पुरुष में नक्षत्रों का क्रम कृतिका से किया जाता है। यथा–कृतिका को शिर में, रोहिणी को मस्तक में, मृगशिर को भौहों में, आर्द्रा को आंखों में, पुनर्वसु को नाक में, पुष्य को मुख में, आश्लेषा को कानों में, मघा को ठोडी एवं होंठों में, पूर्वाफाल्गुनी को दाएं हाथ, उत्तराफाल्गुनी को बाएं हाथ में, हस्त को अंगुलियों में, चित्रा को गर्दन में, स्वाती को छाती में, विशाखा को हृदय में, अनुराधा को उदर में, ज्येष्ठा को दाएं अमाशय में, मूला को बाईं कुक्षि में, पूर्वाषाढ़ा को पीठ में, उषा को रीढ़ में, श्रवण कमर में, धनिष्ठा को गुदा में, शतभिषा को दाईं जांघ में, पू. भा. को बाईं जांघ में, उ. भा. को पिंडलियों में, रेवती को टखनों में, अश्विनी को पांव के ऊपरी भाग में तथा भरणी को काल पुरुष के तलुवों (पांव के) में वास होने की कल्पना की जाती है।

उदाहरणार्थ–किसी जातक के जन्मकाल में अनुराधा नक्षत्र एक या अधिक पाप ग्रहों से ग्रसित होगा तो जातक पेट सम्बन्धी रोगों का शिकार रहेगा। इस प्रकार जन्म कालीन अथवा गोचरवश जब कोई क्रूर या पापी ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता है. तो तत् सम्बन्धी शरीर अंग में कष्टकारी होता है।

नक्षत्रों के स्वामी ग्रह

सत्ताईस नक्षत्रों के नौ (९) स्वामी ग्रह माने जाते हैं। जातक के जन्म समय जो नक्षत्र होगा, उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की दशा का प्रारम्भ तदनुसार ही किया जाता है। **उदाहरणार्थ**–यदि किसी जातक का जन्म नक्षत्र पुनर्वसु है, तो जन्म समय से उसे गुरु की

दशा प्रारम्भ होगी।

नक्षत्रों के स्वामी ग्रह एवं दशा चक्र

नक्षत्र	स्वामी	दशा वर्ष	नक्षत्र	स्वामी	दशा वर्ष
अश्विनी	केतु	७ वर्ष	स्वाती	राहु	१८ वर्ष
भरणी	शुक्र	२० वर्ष	विशाखा	गुरु	१६ वर्ष
कृतिका	सूर्य	६ वर्ष	अनुराधा	शनि	१९ वर्ष
रोहिणी	चन्द्र	१० वर्ष	ज्येष्ठा	बुध	१७ वर्ष
मृगशिर	मंगल	७ वर्ष	मूला	केतु	७ वर्ष
आर्द्रा	राहु	१८ वर्ष	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	२० वर्ष
पुनर्वसु	गुरु	१६ वर्ष	उत्तराषाढ़ा	सूर्य	७ वर्ष
पुष्य	शनि	१९ वर्ष	श्रवण	चन्द्र	१० वर्ष
आश्लेषा	बुध	१७ वर्ष	धनिष्ठा	मंगल	७ वर्ष
मघा	केतु	७ वर्ष	शतभिषा	राहु	१८ वर्ष
पू. फाल्गुनी	शुक्र	२० वर्ष	पूर्वाभाद्रपद	गुरु	१६ वर्ष
उ. फाल्गुनी	सूर्य	६ वर्ष	उत्तराभाद्रपद	शनि	१९ वर्ष
हस्त	चन्द्र	१० वर्ष.	रेवती	बुध	१७ वर्ष
चित्रा	मंगल	७ वर्ष			

पुरुष–स्त्री आदि संज्ञक नक्षत्र

1. **पुरुष संज्ञक नक्षत्र**–अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद।

2. **स्त्री संज्ञक**–भरणी, कृतिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूफा, उ.फा., चित्रा, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, पू. षा., उ. षा., और रेवती।

3. **नपुंसक नक्षत्र**–मृगशिर, मूला और शतभिषा॥

नक्षत्रों का सत्त्वादि विचार

1. **सात्त्विक नक्षत्र**–पुनर्वसु, आश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद एवं रेवती।

2. **रजस् नक्षत्र**–भरणी, कृतिका, रोहिणी, पूर्वा. फा., उत्तरा. फा., हस्त, श्रवण, पूर्वाषाढ़ा एवं उत्तराषाढ़ा।

3. **तामसी नक्षत्र**–अश्विनी, मृग, आर्द्रा, पुष्य, मघा, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूला, धनिष्ठा, शतभिषा एवं उ. भाद्रपद।

गण्डमूल कारक नक्षत्र

रेवती–अश्विनी, आश्लेषा–मघा, तथा ज्येष्ठा–मूला— ये गण्डमूल संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों के विशेष चरण में उत्पन्न बालक/बालिका को स्वयं अपनी आयु के लिए अथवा कुल में माता–पिता आदि की आयु, सेहत एवं सौभाग्यादि को अरिष्ट होता है। यदि जातक पुण्य कर्मों के फलस्वरूप बच जाए, तो वह भूमि, सवारी, बहुधन आदि सुखों से संयुक्त राज तुल्य सुख पाता है। यथा–

जातो न जीवति नरो मातुरपथ्यो भवेत् स्वकुलहन्ता।

यदि जीवति गण्डान्ते बहुगज तुरंगो भवेद् भूपः॥ सारावली

गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जीव की शान्ति उसी नक्षत्र में लगभग २७ दिनों के पश्चात् विधिपूर्वक करवा लेनी चाहिए। यदि जन्म कालीन नक्षत्र शान्ति न करवाई जा सकी हो तो, तो आगामी जन्मदिन के निकटस्थ पड़ने वाले उसी नक्षत्र में पूजा–शान्ति विधिवत् करवानी चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र में विशेष अरिष्टकर घटिकाएं–रेवती नक्षत्र की अन्तिम २ घड़ियां और अश्विनी नक्षत्र की प्रारम्भिक २ घड़ियां तथा आश्लेषा की अन्तिम २ घड़ी व मघा की प्रथम २ घड़ी गण्डारिष्ट हैं एवं च ज्येष्ठा की अन्तिम २ घड़ी और मूला की आरम्भिक २ घड़ी विशेष तौर पर गण्डारिष्ट मानी जाती हैं। गण्डान्त नक्षत्रों की सभी २–२ घड़ियां, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृहप्रवेश, यात्रा, विवाहादि शुभ कार्यों में त्याज्य मानी जाती हैं।

चरणभेदानुसार गण्डांत फल–

१. रेवती नक्षत्र का चतुर्थचरण माता–पिता के अरिष्टकर–अन्य चरण शुभ हैं।

२. अश्विनी का प्रथम चरण पिता को अरिष्ट, २–३रे चरण में सामान्य फल तथा चौथे चरण में स्वयं अपने शरीर के लिए अरिष्टकारी होता है।

३. आश्लेषा का प्रथम चरण विशेष दोषकारी नहीं परन्तु २रे चरण में पितृ धन की हानि, ३रे में माता–पिता या सासु के लिए तथा चौथे चरण में पिता को अरिष्टकर होता है।

४. मघा का प्रथम चरण माता को अरिष्ट, दूसरे चरण में पिता को अरिष्ट तथा ३ एवं ४ चरण में जन्म शुभफली होता है।

५. ज्येष्ठा–प्रथम चरण में बड़े भाई को, २रे में छोटे भाई को, ३रे में माता–पिता को एवं ४थे चरण में स्वयं को अरिष्ट होता है।

६. मूल–प्रथम चरण में पिता को अरिष्ट, २रे में माता को, ३रे में पितृ धन की हानि तथा ४थे चरण में जन्म हो तो शुभ होता है।

गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक को अरिष्टफल की आशंका हो, तो यथोचित

समय पर नक्षत्र स्वामी की श्रद्धा भक्तिपूर्वक पूजा, दान, जपादि का अनुष्ठान करवा लेने से अवश्य अरिष्ट शान्ति हो जाती है।

नक्षत्र तारा विचार

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा के नल का तथा कृष्ण पक्ष में तारा के बल का विचार करना चाहिए।

तारा बल जानना–जन्म नक्षत्र से अभीष्ट दिन नक्षत्र तक गिनें और उसमें ९ का भाग देने पर जो शेष बचे, उसी को तारा जानना चाहिए। तारा अपने नामानुरूप ही शुभाशुभ फल प्रदान करती है।

९ ताराओं के नाम इस प्रकार हैं (१) जन्म, (२) सम्पत्, (३) विपत्, (४) क्षेम, (५) प्रत्यरि, (६) साधक, (७) वध, (८) मैत्र, और (९) अतिमैत्र॥

नामानुरूप (३), (५), (७)वीं तारा का फल अशुभप्रदा होता है। अशुभ तारा की स्थिति में गेहूं, चावलादि, अनाज व तिल–गुड़ का दान करने से शुभफल होता है।

नक्षत्रों की ध्रुव, चरादि संज्ञा

मुहूर्त्त ग्रन्थों में नक्षत्रों की उपादेयता की दृष्टि से उनका ध्रुव, चर, उग्रादि विविध वर्गों में वर्गीकरण किया गया है। जिससे उनके फलकथन एवं मुहूर्त्तों के विषय विशेष उपयोग होता है।

१. ध्रुव नक्षत्र–रोहिणी, उ. फाल्गुनी, उ. षाढ़ा, उ. भाद्रपद–यह ध्रुव एवं **'स्थिर' संज्ञक हैं।** इन नक्षत्रों में बीज बोना, गृहप्रवेश, ग्राम वास, व्यवसाय, गायनादि, विद्यारम्भ, नव–वस्त्र एवं आभूषण धारण, काम क्रीड़ा, मैत्री आदि करना शुभ हैं।

२. 'चर' नक्षत्र–पुनर्वसु, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा–ये 'चर' संज्ञक हैं। इनमें हाथी, घोड़ा, स्कूटर; कारादि की सवारी करना, दुकान खोलना, आभूषण बनवाना, नवीन विद्या सीखना, बागवानी करना, वस्तुओं की बिक्री करना आदि प्रशस्त हैं।

३. 'उग्र' नक्षत्र–भरणी, मघा, पू. फा., पू. षाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों को उग्र एवं क्रूर नक्षत्र कहा जाता है। इनमें अग्नि प्रज्वलन, शत्रुसंहार, विष देना, पशु आदि का घात करना विहित कहा गया है।

४. मिश्र नक्षत्र–कृतिका, विशाखा, मिश्र संज्ञक हैं इनमें अग्निकार्य, यज्ञ–हवनादि कृत्य, विभिन्न वस्तुओं का मिश्रण करना, किसी को बन्धन में या वशीकरण करना प्रशस्त होता है।

५. 'क्षिप्र'नक्षत्र–अश्विनी, पुष्य, हस्त एवं अभिजित आदि नक्षत्र समूह को क्षिप्र एवं 'लघु' नाम दिए गए हैं।

इन नक्षत्रों में 'चर' नक्षत्रों के कृत्य जैसे सवारी करना, स्त्री संसर्ग करना, संगीत कला का ज्ञान, औषधि प्रयोग आदि शुभ हैं।

६. **मृदु नक्षत्र**–मृग, चित्रा, अनुराधा और रेवती–यह मृदु या मैत्र नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें संगीत वाद्यादि कार्य, स्त्री संग–रमण या मित्रता करना, अलंकार प्रयोग, नवीन वस्त्र धारण करना आदि प्रशस्त कहे हैं।

७. **तीक्ष्ण नक्षत्र**–आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों की तीक्ष्ण या 'दारूण संज्ञा' हैं। इनमें अभिचार कर्म (मारण, उच्चाटण, स्तम्भन) आदि, पशु प्रशिक्षण, शत्रु उत्पीड़न, मुकद्दमा आदि दायर करना अच्छा होता है।

८. **ऊर्ध्व मुखी नक्षत्र**–रोह, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रव., धनि., शतभिषा–इनमें देवालय प्रारम्भ, ध्वजारोहण, बगीचा निर्माण, राज्याभिषेक, प्रकोष्ठादि बनाना शुभ है।

९. **अधोमुखी नक्षत्र**–भरणी, कृतिका, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशा.. मूल–अधोमुखी नक्षत्र हैं। इनमें कूआं, तालाब आदि बनाना, गणित एवं ज्योतिष विद्या का अध्ययन, शिल्प–कला लेखन, प्रेतादि साधना, तृणादि संचय करना उपयोगी होता है।

१०. **तिर्यक् मुखी नक्षत्र**–अश्विनी, मृग, पुर्न, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्येष्ठा और रेवती–ये पार्श्वमुख या तिर्यक्मुखी नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें हाथी, घोड़ा, बैल, कुत्ता आदि चौपाय खरीदना, हल चलाना, स्कूटर, कारादि चलाना, जल स्थल एवं आकाशीय यात्रा करना शुभ होता है।

११. अन्धाक्ष नक्षत्र–रोह., पुष्य, उ.फा., विशा., पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, और रेवती नक्षत्र–इनमें गुम हुई वस्तु पूर्व दिशा में होती है। प्रयास करने पर शीघ्र मिल जाती है।

१२. मध्याक्ष नक्षत्र–भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपद और अभिजित– इनमें गुम हुई वस्तु पश्चिम दिशा में अति दूर चली जाती है। पता लगने पर भी प्राप्त नहीं होती।

१३. मन्दाक्ष नक्षत्र–अश्विनी, मृगशिर, आश्लेषा, हस्त, अनु, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा–ये मन्दाक्ष नक्षत्र हैं। इनमें चोरी गई वस्तु दक्षिण दिशा की ओर जाती है तथा बहुत प्रयत्न करने पर ही मिल पाती है।

१४. 'सुलोचन' नक्षत्र–कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण, उ. भाद्रपद नक्षत्र–इनमें गुम हुई वस्तु का न तो कोई पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

मास शून्य नक्षत्र–विभिन्न कर्मों के भेद के अनुरूप ही विहित नक्षत्रों का उल्लेख किया गया है। परन्तु 'शून्य' नक्षत्र में किसी कर्म विशेष में शुभ होने पर भी त्याज्य माने जाते हैं। **यथा–**

मास—शून्य नक्षत्र

मास	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्विव	कार्ति.	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गु.
शून्य नक्षत्र	अश्वि रोह	चित्रा स्वा.	पुष्य उ.षा.	पू.फा. धनि	उ.फा. श्रव.	शत. रेव	पू.भा. ×	कृति मघा	चित्रा विशा	आर्द्रा हस्त	श्रव. मूल	भर. ज्ये.

सर्वार्थ सिद्ध नक्षत्र योग

नीचे लिखे वारों में नक्षत्र विशेष आ जाने से सर्वार्थ सिद्ध योग बनते हैं ॥

रविवार में—हस्त, मूला, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी।

सोमवार में—श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा।

मंगलवार में—अश्विनी, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, आश्लेषा।

बुधवार में—रोहिणी, अनु, हस्त, कृतिका, मृगशिर।

बृहस्पतिवार में—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य।

शुक्रवार में—रेवती, अनुराधा, अश्विनी, श्रवण, पुनर्वसु।

शनिवार में—श्रवण, रोहिणी, स्वाती।

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न बनता हो तो क्रयविक्रय, ज़मीन जायदाद, आवेदन, नगादि धारण करने में सर्वार्थ सिद्धादि शुभ योगों में कार्यारम्भ करके अभीष्ट सिद्धि की जा सकती है। पंचांग दिवाकर में स. सि. योगों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल दिया रहता है।

जन्म नक्षत्र एवं चरण (पाद) भेदानुसार नाम रखना—

किसी बालक या बालिका के जन्म कालीन चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है, वही उसका जन्म नक्षत्र कहलाता है। जैसे कि पहले लिख चुके हैं कि राश्यंशों में प्रत्येक नक्षत्र १३° अंश, २०' कला का होता है। चार द्वारा भाग देने से प्रत्येक नक्षत्र का चरण ३ अंश, २० कला का होता है। तथा एक नक्षत्र की दूरी को पूरा करने में (मध्यम मान से) ६० घड़ी तथा नक्षत्र के प्रत्येक चरण को लगभग १५ घड़ी का समय लगता है। (यद्यपि चन्द्रगति में एकरूपता न होने के कारण नक्षत्र एवं चरण का मान एक समान न रहकर न्यूनाधिक होता रहता है।)

मध्यम मान से १ से १५ घड़ी तक प्रथम चरण, १५ से ३० घड़ी तक द्वितीय चरण, ३० से ४५ घटी तक तृतीय चरण तथा ४५ से ६० घड़ी तक चतुर्थ चरण होता है। अपने इष्टकाल (जन्मकाल) पर जन्म नक्षत्र एवं चरण निकालने की प्रक्रिया आगामी पृष्ठों में पढ़ें।

प्रत्येक नक्षत्र के चारों चरणों में अलग—अलग नामाक्षरों का समावेश किया गया है।

नक्षत्रानुसार नामकरण

किसी बालक अथवा बालिका का नामकरण बच्चे के जन्म नक्षत्र एवं उसके

चरणानुसार रखने की परिपाटी रही है। नक्षत्रों के चरण हिन्दी वर्णमाला के अनुसार ही अभिव्यक्त किए जाते हैं, –अर्थात् नक्षत्र के जिस चरण पर बच्चे का जन्म होगा, उसी के अनुसार उसका नाम रखा जाता है।

नक्षत्र के चरणानुसार वर्णाक्षर

१. अश्विनी = (मेष) चू, चे, चो, ला
२. भरणी = ली, लू, ले, लो
३. कृतिका = अ (वृष) इ, उ, ए
४. रोहिणी = ओ, वा, वी, वू
५. मृगशिर = वे, वो, (मिथुन) का, की
६. आर्द्रा = कू, घ, ङ, छ
७. पुनर्वसु = के, को, ह, (कर्क) हि
८. पुष्य = हु, हे, हो, डा
९. आश्लेषा = डी, डु डे, डो
१०. मघा = (सिंह) मा, मी, मू, मे
११. पूर्वाफाल्गुनी = मो, टा, टी, टू
१२. उत्तराफाल्गुनी=टे (कन्या) टा, पा, पी
१३. हस्त = पू., ष., ण, ठ
१४. चित्रा = पे, पो (तुला) रा, री
१५. स्वाती = रू, रे, रो, ता
१६. विशाखा = ती, तू, ते, (वृश्चिक) तो
१७. अनुराधा = ना, नी, नू, ने
१८. ज्येष्ठ = नो, या, यी, यू
१९. मूला = (धनु) ये, यो, भा, भी
२०. पूर्वाषाढ़ा = भू, ध, फ, ढ़
२१. उत्तराषाढ़ा = भे, (मकर) भो, जा, जी
२२. अभिजित = जू, जे, जो, खा
२३. श्रवण = खी, खू, खे, खो
२४. शतभिषा = ग, गी, (कुंभ) गू, गे
२५. शतभिषा = गो, सा, सी, सू
२६. पूर्वाभाद्रपद = से, सो, दा, (मीन) दी
२७. उत्तराभाद्रपद = दू, थ, झ, ञ
२८. रेवती = दे, दो, चा, ची

२७ नक्षत्रों में जन्म का फल

अश्विनी– (०० से ३°. २०' अंश तक)

प्रथम चरण–मेष राशि के एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर रूप वाला, बुद्धिमान, लोकप्रिय, व्यवहार कुशल, परन्तु जल्दबाज़, श्रृंगारप्रिय तथा कलात्मक प्रकृति के होते हैं। यह गण्डमूलक नक्षत्र है, जो कि पिता को अरिष्टकारी होता है। प्रारम्भिक जीवन प्रायः संघर्षपूर्ण रहता है।

अश्विनी–(३°.२०' अंश से १० अंश तक)–में उत्पन्न जातक पठन–पाठन एवं लेखन कार्य में रूचि रखने वाला, विचारशील, धनाढय एवं धनी वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, निजी कार्य–क्षेत्र में अग्रणी, तर्कशील, स्वाभिमानी एवं कार्यकुशल, भ्रमणप्रिय, विदेशी कार्यों से सम्बन्धित एवं विदेश में भाग्योदय होता है। भूमि सम्बन्धी कार्यों से विशेष लाभान्वित होगा।

अश्विनी–(१०° से १३.२० अंश तक) उत्पन्न जातक चंचल परन्तु दृढ़निश्चयी, बाल्यकाल में कृश–शरीर, उच्चाकांशी, पिल्ले, चौपाय एवं कार–सवारी आदि के शौकीन, उच्चपद प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध, राजनीति से सम्बन्धित, शीघ्र ही उत्तेजित हो जाने की स्वाभिमानी प्रकृति वाला जातक होता है। सूर्य प्रति वर्ष इस नक्षत्र पर वैशाख मासारम्भ से लगभग सवा दिन पर्यन्त भ्रमण करता है।

2. भरणी–(१३°–२०° से २६°–४० तक) मेष राशि एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र हैं। इस नक्षत्र में उत्पन्न अधिकांश जातक चतुर, आरम्भ किए हुए कार्य के परिणाम तक जाने वाले, विरोधियों को नीचा दिखाने वाले, अकस्मात्–आक्रमण करने की योजना में प्रवीण, धार्मिक कार्यों में रूचि रखने वाले, भाग्यवादी, कभी–कभी अनिश्चित विचारों वाले, चंचल, कामी एवं धोखा देने में तत्पर होते हैं। ऐसे जातक सदा सौंदर्य अथवा सुखानुभूति के अभिलाषी, मदिरा या रसीले पदार्थों के शौकीन, मनोरंजक, खेलकूद, संगीत, कलादि, फोटोग्राफी आदि कार्यों से धनार्जित करने वाले, होटल, कानून, इंजीनियरिंग, सर्जरी, गुप्तरोग विशेषज्ञ, क्रय–विक्रय अथवा खेती कर व्यवसाय से सम्बन्धित रहते हैं। सूर्य प्रतिवर्ष २७ अप्रैल से १० मई के मध्य इस नक्षत्र पर भ्रमण करता है। इस नक्षत्र का देवता यम (काल) है।

३. कृतिका–(२६°–४० से ३० अंश तक) मेष राशि व सूर्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक के मुख पर जन्म से चिन्ह युक्त, असहिष्णु, शीघ्र ही क्रोधित हो जाने वाला, क्रुध हो जाने पर रक्त वर्ण, उच्च रक्तचाप का भय होता है।

द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ चरण–(वृष राशि १° से १० अंश तक) में उत्पन्न व्यक्ति दन्तरोगी, उग्र प्रकृति, स्निग्ध भोजन के प्रेमी, शीतल जल में स्नान के इच्छुक, सदा मित्र गण के अभिलाषी, अतिथि सत्कार करने भें कुशल, आराम पसन्द और विलास–प्रिय, उदारहृदय, प्रसन्न हृदय और प्रभावशाली व्यक्तित्त्व, रचनात्मक कार्य एवं शान्तिपूर्वक कार्य करने के अभिलाषी होते हैं। राज्य सरकार से लाभ प्राप्त करने में कुशल होते हैं। विद्या एवं उच्चतर ज्ञान प्राप्ति में इनकी विशेष क्षमता रहती है। मौलिक तर्क प्रस्तुत करने में सशक्त होते हैं, अभिनय, नाटक क्षेत्र, दूरदर्शन एवं राजनीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। कभी–कभी वृथा यात्रा भी रहती है।

शुक्र की राशि और सूर्य के नक्षत्र में उत्पन्न इस जातक को व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों एवं अधिकाधिक धन–ऐश्वर्य के साधनों को जुटाने में अधिक संघर्ष करना पड़ता है। सरकारी क्षेत्रों से भी लाभ प्राप्त करते हैं। विदेशों से सम्बन्धित कार्यो से अधिक उन्नति प्राप्त कर सकेंगे। शिल्प, चित्रकला, विद्युत, फोटोग्राफी, मैडीकल डिपार्टमैंट, वस्त्रविक्रेता, शिक्षा एवं चिकित्सा क्षेत्र में भी सफल होने की क्षमता रखते हैं। सूर्य इस नक्षत्र पर प्रतिवर्ष

प्रायः ११ मई से २४ मई तक भ्रमणशील रहता है। इस नक्षत्र का देवता अग्नि है।

४. रोहिणी– (वृष राशि के १० अंश १३°–२० तक) **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक सुन्दर आकृति वाला, सौंदर्य प्रेमी, संगीत, कला, साहित्य, नाट्य, लेखनादि कार्यो में विशेष रूचि रखने वाला, मधुर भाषी, विपरीत योनि–अर्थात् स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षित रहता है। वस्त्र–आभूषणादि एवं सुगन्धित पदार्थों का प्रिय होता है।

रोहिणी के **द्वितीय चरण** में उत्पन्न जातक अपने परिवार के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। परन्तु बाह्य जीवन में आत्मकेन्द्रित रहते हैं।

तृतीय एवं चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक के हाथ, टांगें प्रायः छोटी होती है। धार्मिक प्रवृत्ति, चतुर परन्तु संयत प्रकृति, विपरीत योनि के स्त्री–पुरुषों के मध्य से अधिक प्रसन्नचित रहते हैं। कल्पनाशील, मिलनसार एवं व्यवहार कुशल स्वभाव के होते हैं।

शुक्र की राशि व चन्द्रमा के नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति प्रायः आकर्षक व्यक्तित्व, स्वच्छता प्रिय, संगीत में रूचि रखने वाले, प्रसन्नचित्त, सार्वजनिक क्षेत्र में सफल, ईमानदार एवं मधुरभाषी होते हैं। प्रायः सौंदर्य प्रसाधन, पेय पदार्थ, बेकरी, होटल, पैट्रोल, तेल, साबुन आदि तरल पदार्थों, वस्त्रों, नेवी, एजेंट एवं सार्वजनिक हितों की पूर्ति करने वाले व्यवसाय से सम्बन्धित रहते हैं। अन्य लोगों को अच्छे सलाहकार एवं मार्गदर्शक भी होते हैं। रात्रि में जन्म हो तो कठोर हृदय किन्तु प्रसिद्ध होते हैं। विदेश भ्रमण के प्रिय होते हैं तथा ३० वर्ष की अवस्था के बाद उन्नति करते हैं। रोहिणी के ३ एवं ४ चरण में उत्पन्न कन्याएं खूबसूरत एवं नृत्य कला में प्रवीण होती हैं। इस नक्षत्र का देवता ब्रह्मा है।

५. मृगशिर–नक्षत्र के पूर्वार्ध भाग में वृष राशि–स्वामी शुक्र तथा नक्षत्र स्वामी मंगल होता है। शुक्र की राशि और मंगल के नक्षत्र में उत्पन्न हुए ऐसे जातक अधिकांशतः धनवान, अनैतिक कार्यों से भी धन प्राप्त करने वाले, अविश्वासी, उच्चाभिलाषी, आडम्बर एवं ऐश्वर्ययुक्त जीवन के इच्छुक, तीव्र स्मरणशक्ति वाले, दूसरों की बात शीघ्र समझने में कुशल, तर्क देने में निपुण, स्वार्थी, नेतृत्व कार्य करने, सेना अथवा संस्था के प्रमुख बनने में प्रयत्नशील, व्यवहार कुशल तथा विनम्र स्वभाव के होते हैं। विपरीत योनि (Opposite Sex) के प्रति विशेष आकर्षण रखेंगे। भूमि, भवन, वाहन, कास्मैटिक, दूरदर्शन एवं फिल्म उद्योग, व्यापारी, आयकर या बिक्री कर विभाग, टेलरिंग, शराब, संगीत, कलादि से सम्बन्ध रखने वाले व्यवसायों में विशेष सफल होते हैं। विदेश में भाग्योदय होता है। इस नक्षत्र का देवता चन्द्रमा हैं।

मृगशिर के उत्तरार्द्ध (अन्तिम दो चरणों) में मिथुन राशि–स्वामी बुध और नक्षत्र स्वामी मंगल ही है। नक्षत्र के इस भाग में उत्पन्न जातक व्यवहार कुशल, वाक्पटु, धनी एवं उचित या अनुचित ढंगों से भी धन संचय कर लेते हैं। सट्टा या शेयरों आदि से भी धन

लाभ प्राप्त करते हैं। क्रय–विक्रय एवं व्यापार में अधिक सफल होते हैं। कभी–कभी मिथ्याडम्बर एवं बढ़ा–चढ़ा कर, डींग मारने की प्रवृत्ति भी होती है। ऐसे जातक बड़ी शीघ्रता से दूसरों को अपने प्रभाव में ले आते हैं। रोष में अत्यन्त कटु हो जाते है। वासनाप्रिय, स्वार्थ की भावना से युक्त, चंचल, जल्दी ही नाराज हो जाते हैं। टैलीफोन, तार (दूर संचार) गणितज्ञ, लेखाकार, मुद्रक, प्रकाशक, सेल्समैन, संगीतकार, कम्पयूटर आदि का कार्य करने वाले, अधिकांश लोग इसी नक्षत्र से सम्बन्धित होते हैं।

६. आर्द्रा– बुध की राशि मिथुन और राहु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक मधुरभाषी, सबसे प्रेम व्यवहार करने वाले, वैद्य अथवा मंत्रशक्ति के ज्ञाता, स्वच्छहृदय, बीते कृत्यों पर चिन्ता करने वाले, दुर्बल हृदय, साधारण आर्थिक स्थिति, अदूरदर्शी, कुटुम्बियों से मतभेद, नशीली वस्तुओं के सेवन में रूचि, कुछ गर्वयुक्त आचरण वाले, यदि मिथुन राशि अशुभ ग्रहों से भी वीक्षित हो, तो जातक निन्दनीय कार्य करने वाला, कमजोर, अल्पवीर्य, तथा वृथाभ्रमण करता है। आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक पुस्तक विक्रेता या क्रय–विक्रय करने वाला, दूर व संचार विभाग, मदिरा का व्यवसाय करने वाला अथवा कम्पयूटर, विज्ञापनादि के व्यवसाय से सम्बन्धित होते हैं। सूर्य इस नक्षत्र में लगभग २१ जून को प्रतिवर्ष प्रवेश करता है। मानसून–वर्षा का निर्धारण भी प्रायः इसी नक्षत्र द्वारा किया जाता है। आर्द्रा नक्षत्र में पैदा हुए जातक प्रायः गले, श्वास, कान, अस्थमा आदि रोगों से पीड़ित रहते हैं। इस नक्षत्र का देवता रुद्र है। अपने पैदायशी स्थान से अतिरिक्त स्थान पर भाग्योदय होता है।

७. पुनर्वसु–बुध की राशि (मिथुन) तथा बृहस्पति के नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक विचारशील, मेधावी, ससुराल से धन प्राप्त करने वाले, दन्तरोगी, वृद्धावस्था में सुख भोगने वाले होते हैं। वह सुन्दर वस्त्रों के शौकीन, उच्चाभिलाषी, महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करने वाले, तीव्र बुद्धि, अच्छी स्मरणशक्ति, व्यवहारिक, देखने में सुन्दर, बुद्धिमान, धनी, उच्चकुलोत्पन्न, संतुष्ट एवं धार्मिक व्यक्ति होते हैं। अच्छी संतान एवं बहु मित्रों से युक्त होते हैं। देश–विदेश की अनेक यात्राओं के अवसर प्राप्त होते हैं।

पुनर्वसु के चतुर्थ चरण (कर्क राशि) में उत्पन्न जातक कला, एवं संगीत के भी शौकीन होते हैं। वह प्रसन्नचित्त, लोकप्रिय, और थोड़े में ही सन्तुष्ट, धनाढ्य, शिक्षित एवं परोपकारी होता है। सरकारी कार्यों से विशेष लाभान्वित रहते हैं। इस नक्षत्र का देवता अदिति है।

पुनर्वसु में उत्पन्न जातक, पत्रकारिता, सम्पादन, प्रकाशन, निरीक्षण, कानून, साहित्य, बीमा, एजेंसी, लेखा–परीक्षक, कम्पयूटर, दन्त विशेषज्ञ, पण्डित, ज्योतिषी, गणित आदि व्यवसायों में विशेष सफल रहते हैं।

इन्हें पेट विकार, गैस, अपचन, कर्णरोग, शक्कररोग आदि से पीड़ित होने का भय रहता है।

सूर्य इस नक्षत्र पर आषाढ़ के लगभग अन्तिम दस दिनों में तथा श्रावण के तीन दिन तक भ्रमणशील रहता है।

८. पुष्य–शनि के नक्षत्र और चन्द्रमा की राशि (कर्क) में उत्पन्न जातक प्रायः शान्त स्वभाव, सुन्दर रूप, पण्डित (बड़ा चतुर) धनवान और धार्मिक स्वभाव वाला होता है।

"शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंयुतः पुष्ये"

ऐसे जातक बुद्धिमान, सावधान, धीर, सुरक्षित रहकर कार्य करने वाले, मन्त्री, राज्याधिकारी, ईमानदार, लोक–प्रशंसित, स्पष्टवादी, भ्रमणप्रिय, कठिन–कार्यों को भी चातुर्यपूर्वक निपटाने में कुशल होते हैं। तथा कठिन परिस्थितियों में भी साहस को नहीं छोड़ते। आर्थिक स्थिति साधारण ही कही जा सकती है। ईश्वर भक्त, दार्शनिक विचारधारा के। पुष्य नक्षत्र उत्पन्न जातक प्रायः दीर्घायु एवं सामाजिक कार्यों में सफल माने जाते हैं। प्रायः भाग्यशाली रहते हैं। ३५ वर्ष की अवस्था के बाद ही लाभ प्राप्त कर पाते हैं। प्रायः विदेश में भाग्योदय होगा।

खान उत्पादन, पैट्रोलियम, कोयला वितरक, जल सम्बन्धी वस्तुएं, कृषि या भूमि वितरक, न्यायालय, गुप्तचर–विभाग, कम्पयूटर, निरीक्षक, जहाजरानी, वायुयान, करविभाग सम्बन्धी कार्यों से विशेष लाभ प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। इस नक्षत्र का देवता गुरु है।

पुष्य जातक को एक्जीमा, शुष्क खांसी, पित्त विकार, गैस्ट्रिक, रोगों का भय रहता है। सूर्य इस नक्षत्र पर प्रतिवर्ष मध्य श्रावण तक संचारित रहता है।

९. आश्लेषा–बुध के नक्षत्र और चन्द्रमा की राशि (कर्क) में उत्पन्न जातक शीघ्र ही प्रसन्न हो जाने वाले, चतुर बुद्धि, शीघ्र ही बदल जाने वाले, दूसरों की अनुकृति करने वाले, कलात्मक अभिरूचियों वाले होते हैं। प्रायः धनवान्, स्त्री प्रेमी, दूसरों का कार्य करने में तत्पर, खाने–पीने के शौकीन, हंसमुख, साहित्य एवं संगीत के जानकार एवं भ्रमणप्रिय होते हैं। बड़े परिवार से युक्त, स्वष्टवक्ता, ३३वें वर्ष की आयु में इनका भाग्योदय होता है। यदि यह नक्षत्र (राशि) पापाक्रान्त हो, तो जातक लापरवाह, सर्व प्रकार के पदार्थों (भक्ष्याभक्ष्य) का सेवन करने वाला, मजदूर, कृतघ्न, अपराधवृति वाला, और स्वार्थी तथा शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति का होता है।

"शठः सर्वभक्षी, कृतांतश्चः कृतघ्न, वंचकः खलः । आश्लेषायां नरो जातः ।"

व्यवसाय–प्रतिनिधि विक्रीकर्ता, सेल्समैन, अकाऊंटस, फुटकर वस्तुओं के कुशल व्यापारी, बैंकिंग, लेखक, पेण्ट्स आदि के कार्य, रबड़ अथवा प्लास्टिक के कार्य करने वाले, ज्योतिष, गणितज्ञ, चिकित्तक अध्यापन, कामर्स, कम्पयूटर इंजीनियरिंग आदि के कार्यों से सम्बद्ध रहते हैं। मक्षत्र पाप ग्रह से आक्रान्त हो तो पेट विकार, अपचन, वायु,

विकार, विटामिन बी की कमी, कफ, लीवर आदि रोगों से पीड़ित होने का भय रहता है। आश्लेषा नक्षत्र के दूसरे चरण में पिता के धन को अरिष्टकारी, तीसरे में माता या सास के लिए अरिष्टकर तथा चतुर्थ चरण में पिता को कष्टकारी होता है। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। सूर्य इस नक्षत्र पर श्रावण मास के लगभग अंतिम १३ दिनों तक संचरणशील रहता है।

१०. **मघा**–सूर्य की राशि (सिंह) एवं केतु के नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति स्पष्टवादी, मुंहफट, जल्दी ही क्रोधित और जल्दी ही मान जाने वाली प्रकृति के होते हैं। ऐसे जातक उद्यमी, धनवान, देवता–पित्तरों के भक्त और भोग वृत्ति के होते हैं। मघा में उत्पन्न जातक अपूर्व विचार शक्ति वाले, दूरदर्शी, निर्भीक, साहसी, कामी, भावुक, और कभी गर्वयुक्त (अंहकारी) जल्दबाज और गर्म मिजाज भी हो जाते हैं। उच्चाभिलाषी, कार्य निपुण, सरकारी अथवा निजी क्षेत्र में विश्वसनीय पद पर सुशोभित तथा गुप्त कार्यों में विशेष रूचि रखते हैं। ये जातक नेता, अभिनेता, आर्थिक मामलों में अपने परिश्रम अथवा गुप्त लाभ द्वारा सम्पन्न, लेखक, खाने पीने के शौकीन, व्ययशील, यदि नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो, तो कर्णरोगी, चर्मरोग से पीड़ित, चिन्ताग्रस्त–मनः स्थिति, एवं तेज़ आवाज और उन्नति में बार–बार बाधाएं आती हैं। ऐसे जातक प्रायः ठेकेदार, फौजदारी वकील, सर्जन, मैडीकल विभाग, सरकारी नौकरी, या गहनों आदि के व्यवसाय से सम्बद्ध होते हैं। इन्हें पीठ या रीढ़ की ह

मघा गण्डमूलक नक्षत्र है। प्रथम पाद में जातक उत्पन्न हो, तो माता या नानके पक्ष की हानि, दूसरे पाद में पिता को भय, तीसरे एवं चतुर्थ पाद में शुभ होता है। सूर्य प्रतिवर्ष लगभग १६ अगस्त से ३० अग. तक इसी नक्षत्र पर संचार करता है।

११. **पूर्वाफाल्गुनी**–सूर्य की राशि (सिंह) तथा शुक्र के नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक प्रायः मधुरभाषी, चतुर, अनेक कलाओं में कुशल, विद्वान्, सुन्दर आकृति एवं उदार चित्त तथा कोमल हृदय के स्वामी होते हैं। स्वभावतः ऐसे जातक कवि, विलास और आराम के शौकीन, ईमानदार, सत्यवादी, आत्मकेन्द्रित, संगीतज्ञ, बहुमूल्य वस्तुओं, वस्त्रों और आभूषणों के प्रेमी, शीघ्र ही प्रसन्न हो जाने वाले, क्रय–विक्रय में कुशल, नम्रतापूर्वक बोलने वाले, सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने वाले, धार्मिक संस्थाओं से सम्बन्धित और मान–सम्मान को अधिक महत्त्व देने वाले होते हैं। इनकी राशि पाप युक्त या पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक घमण्डी, इन्द्रिय–जनित रोगग्रस्त रहते हैं।

पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न व्यक्ति सामान्यतः विद्यावान, शत्रुजित् भ्रमणप्रिय विपरीत योनि के प्रति विशेष आकर्षित, सरकारी क्षेत्रों से लाभान्वित तथा अपनी आयु के २८ से ३२ वर्ष के मध्य भाग्योन्नति को प्राप्त करने में सफल रहते हैं। कई बार बिना विचारे काम करने वाले, तथा एक ही समय में अनेक क्रियाओं को पूरा करने की चेष्टा में अपनी

अशान्ति का कारण स्वयं ही बन जाते हैं। जीवन के अन्तिम वर्षों में एकान्त प्रिय हो जाते हैं। जबकि जीवन का पूर्वार्द्ध संघर्षपूर्ण रहता है।

व्यवसाय–सरकारी सर्विस, रेडियो या दूरदर्शन से सम्बन्धित कार्य, पुरातत्व वस्तुओं के संग्रहकर्त्ता, चित्रकार, कामरोग विशेषज्ञ, शिक्षा, चिकित्सक, फोटोग्राफी, सम्पादक, कम्पयूटर, लेखक, क्लर्क, होटल, वस्त्र एवं कृषि सम्बन्धी इंजीनियरिंग एवं महिलाओं से सम्बन्धित कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं।

नक्षत्र पाप ग्रह से प्रभावित होने पर उच्चरक्तचाप, शूगर, गर्भपात, रक्तक्षीणता, मेरूदण्ड नाड़ी सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त रहने का भी भय होता है। सूर्य प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में (३० अग. से १३ सित. तक) इस नक्षत्र पर लगभग सवा १४ दिन तक संचरित रहता हैं।

१२. उतराफाल्गुनी–प्रथम चरण में, सूर्य की राशि (सिंह) एवं सूर्य के नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले जातक आत्मिक बल से युक्त, उदारचित उद्याभिलाषी, आत्मप्रंशसा करवाने वाले, अधिकारपूर्ण वाणी वाला, साहसी, तड़क–भड़क में विश्वास रखने वाले, स्पष्टवक्ता, दानी, उच्च पद से लाभान्वित, धनी वर्ग से सम्बन्धित, सर्व प्रिय, अपनी बुद्धि के कौशल से धनार्जन करने वाले, सरकारी क्षेत्र से विशेषतया सम्मानित, कार्यकुशल, प्रियभाषी एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होते हैं। विपरीत योनि की तरफ विशेष आकर्षित रहते हैं। सरकारी क्षेत्र, प्रशासन, प्रतिरक्षा–विभाग, लेखक, राजनीतिज्ञ, नेत्र चिकित्सा, मुख्याध्यापकादि वर्ग इसी नक्षत्र में विशेषतया सम्बन्धित होते हैं।

द्वितीय से चतुर्थ चरण तक इस नक्षत्र का स्वामी सूर्य तथा राशि (कन्या) का स्वामी बुध है। उतराफाल्गुनी के अन्तिम तीन चरणों में उत्पन्न जातक विद्वान, उद्यमी, अध्यनशील, ज्योतिष विद्या में रूचि, वाक्पटु, व्यापारिक बुद्धि वाले, निष्कपटी, कुशाग्र बुद्धि एवं प्रतिभावान होते हैं। गणित, साहित्य एवं भाषाविज्ञ होते हैं। कार्यकुशल एवं मधुरभाषी तथा सुशील स्वभाव के होते हैं। ऐसे जातक स्वावलम्बी और अपने पुरुषार्थ से धनोपार्जन करने वाले होते हैं। कभी–कभी जिद्दी मिजाज़ और मनमानी करने का स्वभाव होता है। अपनी आयु के २८ से ३१वें वर्षों के मध्य विशेष भाग्योदय होता है। कामर्स, लेखाकर, प्राध्यापक, पत्रकारिता, कम्पयूटर–इंजीनियरिंग, शिक्षण, ज्योतिष, संचार, प्रकाशन, दूरदर्शन, व्यापार आदि में विशेष सफल हो पाते हैं। सिर, पेट, एवं पीठ दर्द, उच्चरक्तचाप, उदरविकार आदि रोगों से ग्रस्त होने का भय रहता है। सूर्य इस नक्षत्र पर प्रतिवर्ष आश्विन (१३ से २६ सितं. के मध्य) में लगभग चौदह दिवस तक संचरित रहता है।

१३. हस्त–बुध का राशि (कन्या) और चन्द्रमा के नक्षत्र (हस्त) में उत्पन्न हुए जातक उत्साही, निर्दयी, कुशल कार्यकर्त्ता पेय–मदिरा आदि तरल पदार्थों के शौकीन, कारीगर, कुशल व्यापारी, लापरवाह, अपने परिश्रम से उन्नति करने वाले, व्यवहारिक,

विपरीत योनि (Opposite-sex) के प्रति विशेष आकर्षित, स्वच्छ हृदय वाले, बुद्धिमान, चतुर और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अनुचित मार्ग भी अपनाने वाले और तेज़ स्वभाव के होते हैं। अपनी आयु के ३० से ३२वें वर्ष विशेष लाभ उठाने वाले होते हैं।

व्यवसाय–कामर्स, सेलसमैन, कलीयरिंग एजेंट, वकील, आयात–निर्यात, प्रतिनिधि, टाईपिस्ट, कम्पयूटर, लेखन, प्रकाशन, कृषि, वस्त्र आदि के व्यवसाय में विशेष लाभ उठा सकते हैं। पापग्रह से पीड़ित हस्त नक्षत्र वाले को वायु विकार, विटामिन बी की कमी, उदर विकार, आंतों में गड़बड़ी, सांस, मूत्ररोग, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। सूर्य प्रति वर्ष लगभग २७ सितम्बर से १० अक्तूबर तक इसी नक्षत्र पर भ्रमणशील रहता है।

१४. **चित्रा**–प्रथम दो चरणों में (कन्या राशि के अन्तर्गत) राशि स्वामी बुध एवं मंगल के नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक सुन्दर नेत्र एवं आकर्षक आकृति, बातचीत करने में चतुर, विनोद प्रिय, व्यवहारिक, स्पष्टवादी, उद्यमी, कभी–कभी अधीर हो जाने वाला, एवं तेज मिजाज तथा छोटी–छोटी बातों में रूठ जाने वाला, सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण प्रिय, आर्थिक स्थिति साधारण, ईमानदार प्रकृति, लाल एवं हरे रंग का प्रिय होता है। प्रैस, प्रकाशन, कर्मचारी, अदालती मामलों, विद्युत उद्योग, सुरक्षा विभाग, गणित, चिकित्सा, कम्पयूटर, लेखनादि कार्यों से सम्बन्ध रहता है। नक्षत्र पाप पीड़ित होने से उदर विकृति, खाज–खुजली त्वचा रोग आदि की सम्भावना रहती है। सूर्य इस नक्षत्र भाग पर आश्विन मास के अंतिम लगभग साढ़े छः दिन संचरित रहता है।

चित्रा–(अन्तिम दो चरण) तुला राशि के अन्तर्गत पड़ने से राशि स्वामी शुक्र तथा नक्षत्र स्वामी मंगल है। इस भाग में उत्पन्न जातक कलात्मक अभिरूचियों वाला, संगीत प्रेमी, उच्चाभिलाषी महत्त्वकांक्षी, श्रृंगारप्रिय, आने वाले समय का प्रत्यक्षानुमान लगाने में सक्षम, आदर्शवादी एवं आकर्षक व्यक्तित्त्व के प्राणी होते हैं। तकनीकी और कलात्मक दोनों प्रकार के कार्यों में कुशल होते हैं। विपरीत योनि (Opposite sex) के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। यदि जन्म कुण्डली में मंगल–शुक्र का भी सम्बन्ध रहे, तो सैक्स के मामलों में भावुक प्रकृति के होते हैं। रेडियो, टी.वी., कम्पयूटर, आदि, ज्योतिष एवं नाट्य सम्बन्धी व्यवसाय, सुगन्धित, श्रृंगार (Beauty Parlour), वकालत, विवाह, संगीत, महिलाओं सम्बन्धी डाक्टर, कास्मैटिक, खिलौने, आभूषण, खेल सामग्री, प्रकाशन सम्बन्धी व्यवसाय इसी नक्षत्र के अन्तर्गत आते हैं।

नक्षत्र अशुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक को बहुधा सिरदर्द, गुरदे की पत्थरी, उच्चरक्तचाप, कामुकता, मूत्राशय, सम्बन्धी रोगों का भय रहता है। सूर्य इस नक्षत्र भाग पर (१७ अक्तू. से २४ अक्तू.) तक भ्रमणशील होता है। इनका भाग्योदय ३३ से ३८ वर्ष

की आयु के मध्य होता है।

१५. **स्वाती**–राहु के नक्षत्र एवं शुक्र की राशि (तुला) में उत्पन्न होने वाले जातक संवेदनशील, दयावान, ईमानदार, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, रुक–रुक कर बोलने वाले, स्पष्टवादी, उच्चाभिलाषी, भावुक, मधुर स्वभाव, भविष्यवक्ता एवं पूर्वानुमान लगाने में कुशल, मदिरा आदि नशीली वस्तुओं के प्रिय, तीव्र स्मरण शक्ति, व्यापार में कुशल तथा ३० से ३५ वर्ष की आयु में विशेष लाभ कमाने वाले, सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करने वाले, मित्र मण्डली में प्रिय व्यक्ति होते हैं। भाग्यशाली, किन्तु क्रोधावेश में स्वयं की भी हानि करने वाले, उन्नति में कई बार बाधाओं के शिकार होते हैं। कुछ हठी प्रकृति लिए युक्तिपूर्वक अपना काम निकालने का ढंग निकाल लेते हैं। कभी दुर्घटना में भयंकर चोट भी आती है। ऐसे जातक विद्युत का सामान, क्रय–विक्रय, पर्यटन, नाटक, मदिरा, दुग्ध डेरी फार्म, फैंसी स्टोर, कम्पयूटर, वस्त्र विक्रेता, आटोमोबाइल आदि के व्यवसाय से सम्बन्धित रहते हैं। इन्हें मूत्राशय, हर्निया, गुरदे, गर्भाशय, त्वचा रोगों की अधिक सम्भावना रहती है। इस नक्षत्र का देवता वायु है।

१६. **विशाखा**–प्रथम तीन चरणों में शुक्र की राशि (तुला) और बृहस्पति के नक्षत्र में उत्पन्न हुआ जातक आकर्षक प्रभावशाली, प्रसन्न वदन, महत्त्वाकांक्षी, स्वतन्त्र विचारों वाला, न्यायप्रिय, बोलने में कुशल, ईश्वर में आस्थावान, विदेशों में भ्रमणकारी उच्च शिक्षित, व्यापार आदि में रूचि रखने वाले, अच्छे वक्ता, मनोरंजन के शौकीन, धन लाभ मध्यम, चरित्र की दृष्टि से मिश्रित गुणों वाले, ज्योतिषादि विषयों में रूचि रखने वाले तथा जीवन के उतरार्ध भाग में विशेष भाग्योदय होता है। इस नक्षत्र का देवता इन्दाग्नि है।

व्यवसाय–विशाखा के इस भाग में उत्पन्न जातकों का सम्बन्ध दीर्घ यात्राओं, ट्रैवलिंग–एजेण्टस, बैंकिंग कमीशन एजेण्ट, आडिटर, अध्यापन, ग्रंथकार, सम्पादक, सिनेमा, अदालत, बेकरी प्रकाशन, दूरदर्शन, पेपर, मैडिकल साईंस, शिक्षा आदि से रहताहै।

नक्षत्र पीड़ित हो तो मधुमेह, मूत्राशय, गुरदे, रक्तचाप आदि रोगों की सम्भावना बनी रहती है।

विशाखा (चतुर्थ चरण)–मंगल की राशि (वृश्चिक) और बृहस्पति के नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए जातक प्रायः व्यवहारिक ज्ञान में रूचि रखने वाले, साहसिक, अध्ययनशील, स्वतन्त्र विचारों वाला, धार्मिक, स्पष्टवादी, ईमानदार, कूटनीतिज्ञ, उदार, दयालु, दूसरों को समझने में कुशल, सादगी पसन्द तथा अपने कार्य अथवा अपने ही सामर्थ्य पर भरोसा करने वाले उद्यमी व्यक्ति होते हैं। २७ से ३५वें वर्ष की आयु के मध्य

विशेष उन्नति प्राप्त करते हैं। यदि इनकी जन्म कुण्डली में मंगल नीच राशिस्थ या बृहस्पति पीड़ित हो, तो इन्हें रक्त सम्बन्धी दोष अथवा गुप्त रोगों की सम्भावना रहती है।

व्यवसाय–बैंक, वकील, बीमा, कम्पनी, रसायनिक, दवाईयां, शेयर व्यापारी, उद्योग, पुस्तक–प्रकाशन, सर्जन, ज्योतिष, तैल पदार्थ, मिलिट्री, पुलिस–उच्चाधिकारी वर्ग आदि से इनका सम्बन्ध बना रहता है।

१७. अनुराधा–मंगल की राशि (वृश्चिक) और शनि के नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक संघर्षशील, परिश्रमी, कला निपुण, काम निकालने में चतुर, भ्रमणप्रिय, धनवान, अपने कुटुम्ब एवं मित्रवर्ग का सहायक, दृढ़ निश्चयी, हठी, अधिकार पूर्ण वाणी युक्त, कभी अप्रिय एवं रुक्ष वाणी बोलने वाला, स्वार्थी, हिंसात्मक प्रवृत्ति, कठोर, उत्साही, निर्भीक, ईमानदार, पराक्रमी, भूख न सहन कर सकने वाला, शीतप्रिय, मांस, तम्बाकू, वाहन आदि का शौकीन, पुराण एवं विज्ञानादि तकनीकि कार्यों में विशेष रूचि रखने वाला, उन्नतिशील तथा कठिन परिश्रम से धन आदि साधन प्राप्त करने में सक्षम होता है।

पुरुषार्थ–साधन हेतु विदेश में जाने वाला, प्रतिशोधात्मक प्रकृति, २७वें वर्ष में विशेष भाग्य परिवर्तन होता है। ऐसे जातक अविष्कारक, रहस्यपूर्ण (Secretive), अपने मन की बात गुप्त रखने वाले, तथा दूसरों की बात को समझने और उनको समझाने में विशेष कुशल होते हैं। प्रायः क्रियात्मक (Practical) एवं गुप्त कार्यों में विशेष निपुण होते हैं।

व्यवसाय–कानूनवेता, औषधी विज्ञान, सर्जन, कम्पयूटर–इंजीनियरिंग, भूमि सम्बन्धी कार्यकर्त्ता, सरकारी कर्मचारी, चर्मव्यापार, दंत या अस्थिविशेषज्ञ, गुप्तरोग विशेषज्ञ, जासूस, न्यायाधीश, लकड़ी, कोयला, लौह सम्बन्धी व्यवसाय, ठेकेदार, तैल, इंजन व यान–चालक, परिश्रमी मजदूर आदि के व्यवसाय इसी नक्षत्र के अन्तर्गत आते हैं। अनुराधा पापाक्रान्त हो, तो गुप्तरोग वायुप्रकोप, कब्ज, गठिया, मेरूदण्ड पीड़न, रक्तक्षीणता, स्त्रियों को मानसिक तनाव, मासिक–धर्मादि सम्बन्धी गुप्त रोगों की सम्भावना रहती है। इस नक्षत्र का देवता सूर्य है।

१८. ज्येष्ठा–मंगल की राशि (बृश्चिक) एवं बुध के इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक कार्यतत्पर, जल्दी–जल्दी काम करने वाला, सरल हृदय, अध्ययनशील, तेज मिजाज, स्पष्टवादी, क्रोधी, तर्कशील, वाक्युद्ध में प्रवीण, धार्मिक–प्रकृति, मित्रों का सहयोगी, बहुमित्रों से युक्त, तीक्ष्ण बुद्धि, दयालु, कुछ अंहकार युक्त, विलास प्रिय, आरम्भिक अवस्था संघर्षपूर्ण होगा। यह गंडमूलक नक्षत्र है। प्रथम पाद में जन्म हो, तो बड़े भाई को, द्वितीय में छोटे भाई को, तृतीय में माता या नानी को तथा चतुर्थ पाद में पिता को अनिष्टकारी होता है। ज्येष्ठा मूलक जातक प्रायः क्रोधी स्वभाव के, उन्नति के कार्यों में अनेक विघ्न

बाधाएं पाने वाले, पशुओं के प्रति दयावान, धर्मपरायण, बढ़ा–चढ़ा कर बात करने की प्रवृति, अस्थिर मान्यताएँ, धनी एवं उच्च परिवार से सम्बन्धित प्राणी होता है। १३, २७, ३१ एवं ४९वें वर्ष शरीर कष्ट। इनका सम्बन्ध लेखन, पत्रकारिता, मुद्रण, प्रकांशन, सम्पादन, अभिनय, गणित, विज्ञान, प्रतिनिधि, कलर्क, विज्ञापन, टी.वी. एवं रेडियो, मकैनिक, मशीनमैन, उद्योग समूह, बीमा, सर्जिकल, विद्युत, पुलिस, जलाशय, सेना, नेवी विदेश कार्य आदि से सम्बन्धित कार्यों से होताहै। इस नक्षत्र का देवता इन्द्र है।

इन्हें गुप्तांग सम्बन्धी रोग, रक्तस्रसव, आंतों का विकार, उदर विकार आदि रोगों की सम्भावना रहती है।

१९. **मूला**–केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक प्रायः धार्मिक कार्य करने वाला; उदार हृदय, ईमानदार, मिलनसार, नीति का पालन करने वाला, परोपकारी, आत्माभिमानी, धनी, वाहनादि सुखों से युक्त, सामाजिक कार्यों में व्यस्त, दृढ़निश्चयी एवं सुशिक्षित संस्कारों से युक्त होता है। यह गण्डमूलक है यदि नक्षत्र के मध्य दिन में जन्म हो तो, पिता को कष्टकारी, रात्रि में जन्म हो, तो माता को अरिष्टकर होता है। अतः जन्म से २७वें दिन इसी नक्षत्र में शान्ति अवश्य करवा लेनी चाहिए। मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक भ्रमणशील, सुन्दर वस्त्रालंकार प्रिय, जादू–टोने अथवा प्राचीन परम्परा में विश्वास रखने वाले, शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम, अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाले, विद्वान, ऐश्वर्यवान एवं अच्छा वक्ता होता है। एक से अधिक साधनों से धनोपार्जन करते हैं।

मूला नक्षत्र में पैदा हुए जातक प्रायः, प्राध्यापक, वकील, जज, पुरोहित, लेखक, गुप्तचर, भूमि सम्बन्धी कार्यों में संलग्न, कल पुर्जे, सम्पादक, व्यापारी, क्लर्क, बैंकिंग, प्रोविजन व्यापारी, ज्योतिष प्रेमी, सचिव, वैद्य, डाक्टर, आयात निर्यात, व्यवस्थापक, इलैक्ट्रानिक, सार्वजनिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं। २७ से ३१ वर्ष की मध्यायु में विशेष लाभ प्राप्त करते हैं। मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक को उदर विकार, मानसिक तनाव, उत्तेजना एवं गुप्तरोगों की सम्भावना रहती है। गोचरवश जब भी इस नक्षत्र पर केतु एवं बृहस्पति संचार करेंगे, जातक को किसी कार्य विशेष में सफलता एवं धन प्राप्ति होती हैं।

२०. **पूर्वाषाढ़ा**–गुरु की राशि (धनु) और शुक्र के नक्षत्र में पैदा हुए जातक भाग्यवान, लोकप्रिय, आत्माभिमानी, अच्छे मित्रों से युक्त और मनोअनुकूल खुशी देने वाली स्त्री वाला होता है। ऐसे जातक शिक्षित, उदार चित, हंसमुख स्वभाव, ईमानदार, दूसरों से प्रेम करने वाले, न्यायशील आशावादी, सच्चाई पसंद, सवारी, एवं अन्य आधुनिक

पदार्थों के सुखों से सम्पन्न, खर्चीले, कार्यकुशल, समाज में प्रतिष्ठित, एकान्तप्रिय, न्यायप्रिंय एवं संवेदनशील, मिलनसार तथा कलात्मक एवं कामुक प्रकृति के होते हैं। विविध प्रकार के भोजन के शौकीन होते हैं। पूर्वाषाढ़ा में उत्पन्न जातक प्रायः बैंक (Computer) दूरदर्शन, वकील, लेखा परीक्षक, रेल, विभाग, विद्युत, बेकरी, कलाकार, विदेशी विभाग, फैक्टरी, देशी चिकित्सा, श्रृंगार सामग्री, वायुयान, यात्रा, सिनेमा, संगीत, मिठाई आदि के व्यवसायों से सम्बन्धित होते हैं। गुरु की दशा ऐसे जातक को सौभाग्य दायक सिद्ध होती है। राशि–नक्षत्र दोषयुक्त होने से त्रिदोष विषयक रोगों, तनाव, पेट गैस, आदि रोगों से पीड़ित रहने की सम्भावना रहती है।

२१. उत्तराषाढ़ा (प्रथम चरण)–सूर्य के नक्षत्र और बृहस्पति की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्त्व वाला, बुद्धिमान, कानून का ज्ञाता, धार्मिक प्रकृति, प्रसन्न चित्त, अध्ययनशील, संतुलित भाषा का प्रयोग करने वाला, कुशल वक्ता, अनेक भाषाओं को जानने वाला, पुष्ट शरीर, तीव्र स्मरण शक्तियुक्त, दृढ़ इच्छा शक्ति वाला, भविष्य के प्रति सतर्क, धार्मिक, सर्वप्रिय, बहुमित्रों से युक्त, आशावादी, एवं समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। प्रायः अधिकार पूर्ण वाणी का प्रयोग करने वाला होता है।

इस नक्षत्र में उत्पन्न अधिकांश व्यक्ति प्राध्यापक, डाक्टर, योगाभ्यासी, तर्कशास्त्री (वकील,) धर्मार्थ संस्थाएं, सम्पादन, प्रकाशन संस्थान, प्रशासनिक, आयुर्वेदिक, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, राजनेता, बैंक, परामर्शदाता, जजादि आज्ञा देने वाले अधिकारी वर्ग एवं सरकारी क्षेत्र से सम्बन्धित व्यवसाय इसी नक्षत्र के अन्तर्गत आते हैं। इस नक्षत्र के जातक को बलगम, उदरविकार, नेत्र सम्बन्धी रोगों की अधिक सम्भावना रहती है।

२१. उत्तराषाढ़ा (अन्तिम तीन चरण)–सूर्य के नक्षत्र और शनि की राशि में (मकर) उत्पन्न जातक समझदार, आलोचक, बुद्धिमान, विश्वसनीय, बहस करने में कुशल, तकनीकि कार्यों में विशेष प्रवीण, हठी प्रकृति, कई बार विवादों के कारण संकटग्रस्त हो जाते हैं। विज्ञान एवं हिसाब–किताब के कार्यों में कुशल व गम्भीर प्रकृति के होते हैं।

नक्षत्र के इन चरणों में उत्पन्न जातक प्रायः सरकारी विभाग कर्मचारी, जमीन जायदाद, आयकर अधिकारी, वैज्ञानिक संस्थान, वित्तीय विभाग, तकनीकि कार्य, लेखक, होमियोपैथी एवं अनुसंधानात्मक कार्यों में विशेष सफल रहते हैं।

इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को प्रायः नेत्र पीड़ा, श्वास सम्बन्धी, हृदय, चर्मरोग, पेट गैस अथवा पाचन क्रिया सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है।

२२. श्रवण–चन्द्रमा के नक्षत्र और शनि की राशि (मकर) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, शिक्षित, मननशील, सतर्क, शंकालु, हास्यप्रिय, साहस की कमी, कार्यों को

टालने वाला, व्यर्थ कामों में उलझा रहने वाला, सुन्दर नेत्र एवं पतली कमर वाला, आलस्ययुक्त, अति सर्दी एवं अति गर्मी न सहन कर सकने वाला, अच्छी धारणा शक्तिवाला, सुन्दर एवं उदार पत्नी वाला, धनी, ज्योतिष, संगीत और गणित में रूचि रखने वाला, कठिन परिश्रम से धनार्जित करने वाला, सत्यनिष्ठ, संवेदनशील, धर्मपरायण, मातृ–पितृ भक्त, आत्माभिमानी, कुछ स्वार्थी प्रवृत्ति से युक्त तथा प्रत्येक कार्य को बहुत सोच विचार के बाद करने वाला, तथा कभी–कभी दोष–दर्शी एवं कुछ जिद्दी स्वभाव के कारण घनिष्ठ मित्र को भी शत्रु बना बैठता है। ऐसे लोग खाने–पीने के बेहद शौकीन अनियमित भोजन करते हैं। चिन्तनशील प्रकृति एवं अनुकूल समय पर कार्य न करने के कारण कई बार हानि भी उठानी पड़ती है। सामान्यतः उदात्त, विश्वसनीय, विनयशील प्रकृति के प्राणी होते हैं। १९ से २८वें वर्ष विशेष लाभान्वित होते हैं। श्रवण नक्षत्र वालों को क्रय–विक्रय (व्यापार), भूमि सम्बन्धी कार्य, राजनीति, कृषि, बैंकिंग, तेल पदार्थ, सर्विस–सम्बन्धी, स्वास्थ्य सम्बन्धी या सामाजिक कार्यो, पम्पसैंट, कोल्ड ड्रिंक्स, आईसक्रीम या अन्य खाने–पीने की वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसायों में विशेष सफलता प्राप्त होती है। इस नक्षत्र वालों को पाचन क्रिया सम्बन्धी, एक्जीमा, चर्मरोग, उदर विकार सम्बन्धी रोगों की अधिक सम्भावना रहती है।

२३. धनिष्ठा (प्रथम दो चरण)–शनि की राशि (मकर) और मंगल के नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने परिश्रम से उन्नति पाने वाला, स्त्री प्रेमी, ईमानदार, क्रोधी, महत्त्वाकांक्षी, लोहे के कार्य से लाभान्वित तथा हिंसक कार्यों में हानि उठाने वाला, साहसी, प्रतिशोधी, स्वार्थी, हिंसक, कभी–कभी असंयत व्यवहार वाला, व्यवहारिक, संगीत अथवा खेल प्रेमी, वाचाल और मुंह फट तथा कूटनीतिज्ञ होता है। दृढ़ निश्चयी और वचनबद्ध रहने की प्रवृति होती है। ऐसे जातक गुप्तचर, निरीक्षक, सरपंच, सीमेंट, मदिरा उद्योग, साधु–सन्यासी, मुखिया, बर्तन एवं लोहे के कलपुर्जे कम्पयूटर–इंजीनियर, दार्शनिक, हिंसक कार्य करने वाले, सर्जन–डाक्टरी आदि के व्यवसायों से सम्बन्धित होते हैं। धनिष्ठा के इस भाग में पैदा जातक को बलगम, फोड़ा, शुष्क खांसी, जोड़ों में पीड़ा, रक्त क्षीणता आदि रोगों का भय रहताहै। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है।

धनिष्ठा (अन्तिम दो चरणों)–के नक्षत्र का स्वामी मंगल तथा शनि की राशि (कुम्भ) में उत्पन्न जातक की सामान्य विशेषताएं धनिष्ठा के पूर्वार्द्ध भाग की ही भांति होंगी, परन्तु कुम्भ राशि के इस भाग में उत्पन्न जातक साहसी, हठी, अधिक कन्या संतति वाला, आजीविका के क्षेत्र में भाग्यशाली, कार्यतत्पर, संघर्षपूर्ण, धार्मिक, प्रेम अथवा मित्रता के सम्बन्ध में विश्वसनीय आत्मश्लाघा से युक्त, तकनीकि कार्यों में निपुण, परिश्रमी, न्यायप्रिय, शीघ्र ही प्रत्युत्तर देने में चतुर, तथा शीघ्र ही उत्तेजित हो जाने की

प्रवृत्ति होती है। ऐसे जातक कृषि, चाय, फैक्टरी, प्रैस, जमीन, तेल, ठेकेदार, टैलीविज़न दूरभाष, आयात-निर्यात, निरीक्षण, कोयला, बर्तन, क्लर्क, टाईपिस्ट, कम्प्यूटर आदि से सम्बन्धित व्यवसायों में अधिक सफल हो पाते हैं। इन्हें उच्च रक्तचाप, हृदय, रक्त विकार, जुकाम, शुष्क खांसी आदि के रोगों की सम्भावना अधिक रहती है।

२४. शतभिषा-शनि की राशि (कुम्भ) एवं राहु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक प्रायः सत्यनिष्ठ, स्वतन्त्र विचारों वाले, हठी, आराम के इच्छुक, छुट्टियां अधिक बिताने के शौकीन, मशीनरी एवं तकनीकि कार्यों में रूचि रखने वाले, सेवाभावी, उदारहृदय, तीव्रबुद्धि, शिक्षित, धार्मिक, तेज एवं चंचल स्वभाव, महत्त्वाकांक्षी, साधु-सन्तों के सेवक, कूटनीतिज्ञ, कला प्रेमी, शत्रुनाशक एवं बिना विचारे काम करने वाले, समयानुसार कार्य-क्षेत्र बदलते रहने वाले, एकान्त सेवी, कार्य को टालने वाले, विपरीत योनि से विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। एवं २८वें वर्ष की आयु में विशेष भाग्योदय होगा। विदेश में भाग्योदय होता है ऐसे जातक प्रायः प्रयोगात्मक कार्य करने वाले, वैज्ञानिक, चिकित्सक, कम्पयूटर, विद्युत ज्योतिषी, खगोलज्ञ, अनुसंधान कार्यकर्त्ता, तेल विभाग,फांऊडरी कर्ता, अनुवाद एवं टैक्नीशियन आदि कार्यों में विशेष सफल रहते हैं। इन्हें रक्तचाप, अनिद्रा, चर्मरोग, श्वासादि रोगों की सम्भावना रहती है। कोई-कोई व्यसन का भी शिकार होते हैं। सूर्य इस नक्षत्र पर प्रतिवर्ष फाल्गुण में लगभग (१९ फर. से ३ मार्च) १३ दिन तक संचार करता है।

२५. पूर्वाभाद्रपद (प्रथम तीन चरण)-शनि की राशि (कुम्भ) और बृहस्पति के नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक प्रायः उदारचित्त, सौम्यप्रकृति, चौड़ा चेहरा, दार्शनिक, सत्यवादी, मित्रों का हितैषी, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, ज्योतिष प्रेमी, आलोचक, दूसरों से काम निकालने में चतुर, ईश्वर भक्त, स्त्रियों से संकोच करने वाला, यात्राप्रिय, वृद्धावस्था में अकस्मात धन प्राप्त करने वाला तथा स्वावलम्भी होता है। यदि लग्न में अथवा इस नक्षत्र पर कोई पापग्रह हो, तो व्यक्ति निम्न स्तर के कार्यों में रूचि रखने वाला, वैश्यागामी, हिंसक कार्य करने वाला क्रोधी एवं नास्तिक होता है।

ऐसे जातक बैंकिंग, प्रतिरक्षा, प्रकाशन, मुद्रण, परिवार नियोजन, कम्प्यूटर, गुप्तचर विभाग, आयकर, शिक्षा विभाग, पायलट, अनुसंधानकर्त्ता, नगर निगम, वायुयान विभाग, आयुर्वेद, चिकित्सा, कानून, विज्ञान एवं तकनीकि क्षेत्रों में विशेष सफल होते हैं। पूभा-नक्षत्र में उत्पन्न जातक को प्रायः निम्न-रक्तचाप, घुटनों की सूजन, उदरविकार आदि रोगों का भय रहता है।

२५. पूर्वाभाद्रपद (चतुर्थ चरण)-गुरु के नक्षत्र और गुरु की ही राशि (मीन) में उत्पन्न जातक दयालु स्वभाव, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व, व्यवहार कुशल, सत्यनिष्ठ, महत्त्वाकांक्षी, शुभ विचारों से युक्त, उदार-हृदय, परोपकारी, संगीत कला

और साहित्य को जानने वाला–विद्वान, अधिकार पूर्ण वाणी से युक्त, पुराण, दर्शन, शास्त्रादि में रूचि रखने वाला, समाज में प्रतिष्ठित, धनाढ्य, वाहन–संतानादि सुखों से युक्त, विद्वान, सैक्स के सम्बन्धों में संकोचशील रहने वाला होगा। यदि गुरु पापाक्रान्त हो जातक ढीठ, कृपण, धूर्त, निर्बल, भीरू हृदय और स्त्री के वशीभूत होता है। इस नक्षत्र भाग में उत्पन्न जातक प्रायः प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, प्रौफेसर, राजनीतिज्ञ, मंत्री, प्रशासन सम्बन्धी विभाग वकील, धार्मिक एवं वित्तीय कार्यों से सम्बन्धित योजना–आयोग, अध्यक्ष, फिजिशियन, बैंक अधिकारी एवं शिक्षा सम्बन्धी योजना–आयोग अध्यक्ष, फिजिशियन, बैंक अधिकारी, कम्पयूटर एवं शिक्षा सम्बन्धी व्यवसायों में विशेष सफल हो पाते हैं। इन्हें उदर विकार, बलगम, पांव में पसीना, सूजन आदि रोगों की अधिक सम्भावना रहती है।

२६. **उत्तराभाद्रपद**–गुरु की राशि (मीन) और शनि के नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक सुन्दर आकृति, परोपरकारी, प्रिय वक्ता, विद्वान, अच्छी संतान, युक्त धार्मिक, प्रसन्न वदन, पवित्रात्मा, शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, धन सम्पत्ति एवं वाहनादि सुखों से युक्त, कुशाग्रबुद्धि, मित्रों में प्रिय, दुखी प्राणी की सहायता करने वाला, दार्शनिक, शान्तिप्रिय, स्वतन्त्र और मौलिक विचारों वाला, उच्च एवं कुलीन आचरणवाला, विद्या प्रेमी, समाज में प्रतिष्ठित, उदार चित्त, सोच–विचार कर कार्य करने वाला, तकनीकी कार्यों में सिद्धहस्त एवं स्त्रियों द्वारा विशेष सम्मानित होता है। यदि शनि, सूर्य, या अन्य अशुभ ग्रह से पीड़ित हो, तो जातक अकस्मात् हानि का शिकार और शत्रुओं से दुखी होता है। तथा कभी–कभी अत्यन्त क्रोधी, दैनिक कार्यों में आलस्य युक्त रहता है। उभा. में पैदा जातक इंजीनियरिंग, आयात–निर्यात, परम्परागत व्यवसाय, अस्पताल, कम्पनी, सार्वजनिक संस्थान, धर्मार्थ चिकित्सा, कानून, बीमा, गुप्तचर सेवा, शिक्षा विभाग, तैल कृषि, बैंक अधिकारी, फाऊंडरी वर्क्स, शैक्षणिक एवं तकनीकि कार्यों से विशेषतयः सफल होते हैं। उतराभाद्रपद जातक को उदर, वायु विकार, क्षीण पाचन शक्ति, गले, कानादि रोगों की अधिक सम्भावना रहती है। सूर्य इस नक्षत्र पर चैत्र मास में लगभग सवा तेरह दिन संचार करता है।

२७. **रेवती**–बुध के नक्षत्र एवं गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक पुष्ट अंगों वाला, सर्व प्रिय, विद्या प्रेमी, गुणवान, कुशाग्रबुद्धि, तर्क–वितर्क, परामर्श देने में कुशल, कामातुर, पुत्र, मित्रों एवं कुटुम्ब से युक्त, धनवान, बुद्धिमान, ईमानदार, विद्वान, दूरदर्शी, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार वाला, धार्मिक, चालाक, अध्ययनशील, कोई निर्णय लेने से पूर्व कई बार विचारने वाला, सरलचित्त, आध्यात्मिक प्रवृत्ति, निर्णय में रूचि लेने वाला। जीवन के १७, २१ एवं २४वें वर्ष में कोई परेशानी पड़े तथा २८ से ३२वें वर्ष भाग्योदयकारक होंगे। ऐसे जातक लेखन कार्य, प्रकाशन, सम्पादन, धार्मिक संस्था, कानूनवेत्ता, ज्योतिष प्रेमी, बैंक कर्मचारी, प्राध्यापक, दर्जी, ग्रन्थी, पुजारी, पंडित, सरकारी या गैर सरकारी

कर्मचारी, राजगुरु, रेडियो, टैलीविजन, एकाऊंटैंट, प्रैस समाचार पत्र, प्रचारक, वकालत, सिविल इंजीनियरिंग, दूर संचार, आदि से सम्बन्धित व्यवसायों में अधिक सफल हो पाते हैं। यह गण्डमूलक नक्षत्र है। इसके प्रथम तीन चरणों में जन्म हो तो शुभ किन्तु चतुर्थ चरण में जन्म हो, तो अरिष्टकारी होता है। इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को प्रायः कर्ण रोग, उदर विकार, पांव की सूजन, थकानादि रोगों की सम्भावना रहती है।

आनन्दादि योग

वार और नक्षत्र के संयोजन से तात्कालिक आनन्दादि २८ योगों का प्रादुर्भाव होता है। इन योगों को ज्ञात करने के लिए वार विशेष को निर्दिष्ट नक्षत्र से विद्यमान नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना की जाती है। जैसे रविवार की अश्विनी से, सोमवार को भरणी से, मंगल को आश्लेषा से, बुध को हस्त से, गुरु को अनुराधा से, शुक्र को उ.षा. से, शनि को शतभिषा से नक्षत्रों का क्रम गिनने से निम्नानुसार आनन्दादि योगों का प्रादुर्भाव क्रमानुसार होता है। निम्न योगों के नामानुसार ही उनका शुभाशुभ फल जानें।

आनन्दादि योग चक्र

क्रम योग	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१ आनन्द	अश्वि.	मृग	श्ले	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अर्थसिद्धि
२ कालदण्ड	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	मृत्युभय
३ धूम्र	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रव.	उ.भा.	दुःख
४ प्रजा.(धाता)	रोह.	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	सौभाग्य
५. सुधा. (सौम्य)	मृग.	श्ले.	हस्त	अनु.	उषा.	शति.	अश्वि.	बहुसुख
६. ध्वाङ्क्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भर.	अर्थनाश
७ ध्वजा (केतु)	पुन.	पूफा.	स्वाती.	मूल	श्रव	उभा.	कृति	सौभाग्य
८. श्रीवत्स	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	रोह	ऐश्वर्य
९. वज्र	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग	धनक्षय
१० मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	धननाश
११ छत्र	पूफा.	स्वाती	मूला	श्रव.	उभा.	कृति	पुन.	राजसम्मान
१२ मित्र	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	रोह	पुष्य	सौख्य
१३ मानस	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्ले.	सौभाग्य
१४ पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा	धनागमन

क्रम योग	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१५ लुम्बकर	स्वाती	मूल	श्रव.	उभा.	कृति	पुन.	पूफा.	लक्ष्मीनाश
१६ उत्पात	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	रोह	पुष्य	उफा.	प्राणनाश
१७ मृत्यु	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग	आश्ले	हस्त	मरणभय
१८.काण	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा.	चित्रा	क्लेशवृद्धि
१९ सिद्धि	मूल	श्रव.	उभा.	कृति	पुन.	पूफा.	स्वाती	अभीष्टसिद्धि
२० शुभ	पूषा.	धनि	रेव.	रोह	पुष्य	उफा.	विशा.	कल्याण
२१ अमृत	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	राजसम्मान
२२ मुसल	अभि.	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अर्थक्षय
२३.अन्तक	श्रव.	उभा.	कृति	पुन.	पूफा.	स्वाती	मूल	रोग, बुद्धिक्षय
२४ कुञ्जर(मातङ्ग)	धनि.	रेव.	रोह	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	कुलवृद्धि
२५.राक्षस	शत.	अश्वि.	मृग.	श्ले.	हस्त	अनु.	उषा.	बहुपोड़ा
२६ चर	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	कार्यलाभ
२७ सुस्थिर	उभा.	कृति	पुन.	पूफा.	स्वाती	मूल.	श्रव.	गृह सुख
२८ वर्धमान	रेव.	रोह	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	सुमंगल

विष्कम्भादि योग

सूर्य और चन्द्रमा के राश्यंश, कलादि के जोड़ को योग कहते हैं। नक्षत्रों की भान्ति योग कोई तारा समूह का नाम नहीं, बल्कि यह एक वस्तु स्थिति है, जो सूर्य एवं चन्द्र के राश्यंशों के जोड़ (कलाओं में) को आगामी दिवसीय सू., च. में जोड़ के तुलनात्मक अन्तर द्वारा भाग देने पर सन्धि के रूप में प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में सूर्य और चन्द्रमा को संयुक्त रूप में १३° अंश, २० कला (अर्थात् ८०० कला) को पूरा करने में जितना समय लगता है, उसे योग कहते हैं। विष्कम्भादि योगों की संख्या भी २७ मानी जाती है। सूर्य चन्द्रमा की गोल आवृत्तीय गति के कारण ३६० अंशों के २७ समान भाग करने पर प्रत्येक योग की कोणीय दूरी का मान भी नक्षत्र की भान्ति १३° अंश, २० कला माना जाता है। योग का दैनिक भोग्य मध्यम मान ६० घड़ी १३ पल होता है तथा योग के मध्यम मान में भी सूर्य–चन्द्र की गतियों में प्रतिदिन भिन्नता के कारण न्यूनाधिकता बनी रहती है। पंचांग में दिए नक्षत्रों एवं योगों के घड़ी पल अथवा घण्टे मिंट, नक्षत्र एवं योग के समाप्ति काल को दर्शाते हैं।

फलित ज्योतिष में नक्षत्रों की भान्ति योगों के शुभाशुभ फल का वर्णन भी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में पाया जाता है। विष्कम्भदि योग नैसर्गिक कहलाते हैं।

विष्कम्भ आदि २७ योग तथा उनके स्वामी इस प्रकार से हैं–

क्रम	योग	स्वामी	शुभाशुभ	क्रम	योग	स्वामी	शुभाशुभ
१.	विष्कम्भ	यम	अशुभ	१५.	वज्र	वरुण	अशुभ
२.	प्रीति	विष्णु	शुभ	१६.	सिद्धि	गणेश	शुभ
३.	आयुष्मान	चन्द्र	शुभ	१७.	व्यतीपात	रूद्र	अशुभ
४.	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ	१८.	वरीयान	कुबेर	शुभ
५.	शोभन	बृहस्पति	शुभ	१९.	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
६.	अतिगण्ड	चन्द्र	अशुभ	२०.	शिव	मित्र	शुभ
७.	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ	२१.	सिद्ध	कार्तिकेय	शुभ
८.	धृति	जल	शुभ	२२.	साध्य	सावित्री	शुभ
९.	शूल	सर्प	अशुभ	२३.	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
१०	गण्ड	अग्नि	अशुभ	२४.	शुक्ल	पार्वती	शुभ
११.	वृद्धि	सूर्य	शुभ	२५.	ब्रह्म	अश्विनी कु.	शुभ
१२.	ध्रुव	भूमि	शुभ	२६.	ऐन्द्र	पितर	अशुभ
१३.	व्याघात	वायु	अशुभ	२७.	वैधृति	दिति	अशुभ
१४.	हर्षण	भग	शुभ				

उपरोक्त योगों में विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ, ऐन्द्र, वैधृति योगों में उत्पन्न जातक को गण्डमूल की भान्ति अशुभ फल माना जाता है।

अशुभ योगों में वर्जित काल–विष्कम्भ, वज्र, व्यतीपात, परिघ (पूर्वार्द्ध), वैधृति, इन योगों की प्रथम ३ घड़ियां, व्याघात की प्रथम ९ घड़ियां, शूल की प्रथम ५ घड़ियां तथा गण्ड एवं अतिगण्ड योग की प्रथम ६–६ घड़ियां शुभ कार्यो में विशेषतया त्याज्य मानी जाती हैं। मतान्तर से वैधृति और व्यतीपात के चारों चरण, परिघ योग के प्रथम २ चरण तथा अन्य अशुभ योगों का प्रथम चरण ही अरिष्टकारी माना जाता है।

करण विचार

करण–तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं, अर्थात् आधी तिथि जितने समय में बीतती है, उसे करण कहते हैं। **करण ११ होते हैं।** (१) बव (२) बालव (३) कौलव (४) तैतिल (५) गर (६) वणिज (७) विष्टि (८) शकुनि (९) चतुष्पद (१०) नाग और (११) किंस्तुघ्न ।

इनमें से पहले ७ चर करण तथा अंतिम ४ स्थिर करण कहलाते हैं। बवादि प्रथम ६ करणों में मांगलकि कर्म शुभ तथा अन्तिम पाँच करणों में पितृ कर्म करने प्रशस्त माने जाते हैं।

करण—प्रत्येक तिथि में दो करण बीतते हैं। शुक्ल प्रतिपदा से बव नामक करण का प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् द्वितीया के पूर्वार्द्ध से बालव करण तथा उत्तरार्द्ध से कौलव करण का प्रारम्भ होता है। चतुर्थी तक विष्टि करण रह कर पंचमी से पुनः बवादि ७ करणों की पुनरावृत्ति होती है। शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष के तिथ्यर्द्ध भाग में कौन सा करण अवतिष्ठित रहता है? निम्न तालिका से स्पष्ट हो जाएगा।

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध	तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
१	किंस्तुघ्न	बव	१	बालव	कौलव
२	बालव	कौलव	२	तैतिल	गर
३	तैतिल	गर	३	वणिज	विष्टि
४	वणिज	विष्टि	४	बव	बालव
५	बव	बालव	५	कौलव	तैतिल
६	कौलव	तैतिल	६	गर	वणिज
७	गर	वणिज	७	विष्टि	बव
८	विष्टि	बव	८	बालव	कौलव
९	बालव	कौलव	९	तैतिल	गर
१०	तैतिल	गर	१०	वणिज	विष्टि
११	वणिज	विष्टि	११	बव	बालव
१२	बव	बालव	१२	कौलव	तैतिल
१३	कौलव	तैतिल	१३	गर	वणिज
१४	गर	वणिज	१४	विष्टि	शकुनि
१५	विष्टि	बव	३०	चतुष्पद	नाग

करणों के स्वामी

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तुघ्न
स्वामी	इन्द्र	ब्रह्मा	मित्र	विश्व	भूमि	लक्ष्मी	यम	कलियु.	रूद्र	सर्प	मरूत्

करणों में उपादेय कर्म— १. बव में पौष्टिक कर्म २. बालव में स्वाध्याय यज्ञ, दानादि धार्मिक कृत्य, ३. कौलव में मैत्रीकरण एवं स्त्रीकर्म, ४. तैतिल में सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म, ५. गर में हल, प्रवहण व बीजारोपण, ६. वणिज में व्यापार करना ७. विष्टि (भद्रा) में अग्नि, युद्ध, विषादि, क्रूर, कर्म, ८. शकुनि में मंत्र—साधना, औषध कर्मादि, ९.

चतुष्पद में राज्य प्रशासनिक कर्म, १०. नाग में विषादि रसायानिक कर्म ११. किंस्तुघ्न में मांगलिक कर्म करने प्रशस्त होते हैं। शकुनि, चतुष्पद, नागदि अन्तिम चार करणों में पितृ कर्म करने प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा विचार

भद्रा–विचार–'विष्टि' नामक करण (तिथि के अर्धभाग) को ही भद्रा कहते हैं। भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, यज्ञोपवीत, रक्षाबन्धन, नवीन व्यवसायदि शुभ कार्यों का प्रारम्भ करना वर्जित माना जाता है। भद्रा में शत्रु का उच्चाटन करना, यज्ञ करना, शस्त्र का प्रयोग करना, आप्रेशन, मुकद्दमा करना, भैंस, ऊंट, घोड़ा आदि पशु सम्बन्धी कृत्य करने प्रशस्त माने जाते हैं। **एक पक्ष** में लगभग ४ बार भद्रा की आवृत्ति होती है। **शुक्ल पक्ष** की अष्टमी और पूर्णिमा तिथि के पूर्वार्द्ध में तथा चतुर्थी एवं एकादशी तिथि के उत्तलार्द्ध में भद्रा होती है। जबकि **कृष्णपक्ष** की ३ और १०वीं तिथि के उत्तरार्द्ध में तथा सप्तमी एवं १४ तिथि के पूर्वार्द्ध में भद्रा की व्याप्ति रहती है। पंचांग दिवाकर (कृत पं. पन्ना लाल, जालन्धर) में भद्रा का आरम्भ और अन्त का समय दिया रहता है।

भद्रा परिहार–पीयूषधारा ग्रंथानुसार दिन की भद्रा रात्रि को तथा रात्रि की भद्रा दिन में भी व्याप्त हो जाए, तो भद्रा दोष रहित हो जाती है।

इसी भान्ति स्वर्ग में तथा पाताल में वास करने वाली भद्रा शुभ फला एवं धन धान्य प्रदायिनी होती है। तथा भू लोक (मृत्यु लोक) में वास करने वाली भद्रा का फल अरिष्टकारी माना जाता है।

राश्यानुसार भद्रा–निवास

मेष, वृष, मिथुन, एवं वृश्चिक का चन्द्रमा होने पर भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धन व मकर का चन्द्रमा होने से भद्रा **पाताल** में तथा कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि का चन्द्रमा होने पर भद्रा **मृत्यु लोक** में (भू लोक) अर्थात् सम्मुख में रहती है। भू–लोक वासी भद्रा अशुभ प्रदा एवं कार्यारम्भ में त्याज्य मानी जाती है।

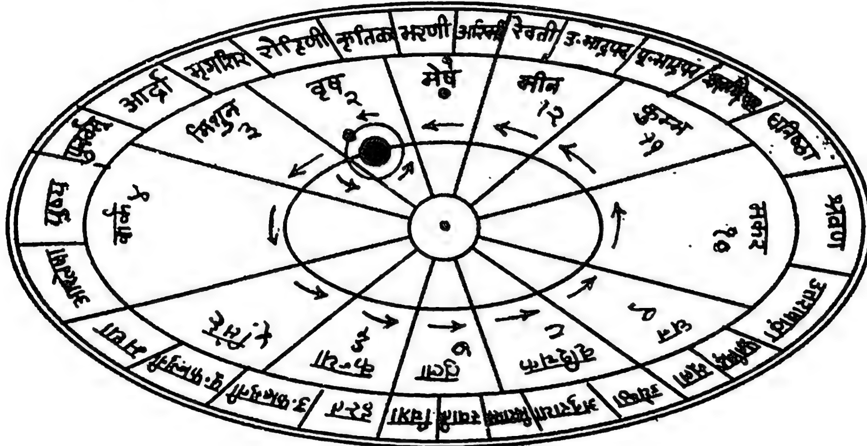
लोक वास	**स्वर्ग**	**पाताल**	**भू–लोक**
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रामुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुखी	सम्मुख

तिथि भद्रा वास–किसी विशेष शुभ कार्य हेतु यात्रा में भद्रा का होना अशुभ है। परन्तु आवश्यक स्थिति होने पर **जिस दिशा में भद्रा का का वास हो, उसी दिशा में यात्रा विशेषतया त्याज्य होती है**। अत्यावश्यक हो, तो उस दिन वार से सम्बद्ध वस्तु का सेवन करके एवं उस दिन–वार के देवता की पूजा व ध्यान कर के सम्बद्ध वस्तु को मुंह लगा लें।

राशियों का स्वरूप

(Twelve sign of the Sky)

विभिन्न नक्षत्रों एवं ताराओं के समूह को राशि कहते हैं। 'क्रान्तिवृत्त'* के पास पड़ने वाले भचक्र के वृत्तीय ३६० अंशों के १२ समान विभाग करने पर प्रत्येक विभाग के ३० अंश होते हैं। ये वारह (१२) विभाग, **बारह राशियों के नाम** से जाने जाते हैं। इसी भान्ति, जैसा कि पिछले अध्याय में लिख चुके हैं कि भचक्र के सत्ताईस समान भाग करने पर २७ नक्षत्र होते हैं। इस प्रकार सवा दो नक्षत्र अर्थात् ९ नक्षत्र चरण की एक राशि होती है। नक्षत्र/चरणों के अनुसार समस्त भचक्र को १०८ समान भागों में विभाजित किया जा सकता है।



सूर्य, चन्द्र, मंगलादि, सभी ग्रह अपनी–अपनी गत्यनुसार राशियों एवं नक्षत्रों के प्रभाव क्षेत्र में आते रहते हैं, तथा तदनुसार पृथ्वी पर विचरणशील प्राणियों को प्रभावित करते रहते हैं। **ध्यान रहे,** क्रान्तिवृत्त की भान्ति भचक्र (Zodiac) एवं राशिचक्र भी गोलाकार न होकर **अण्डाकार वृत्त** है। यद्यपि इसका आदि या अन्त नहीं है, परन्तु सुविधा के लिए रेवती के अन्तिम चरण–अर्थात् अश्विनी नक्षत्र (०–०–०) के **प्रारम्भ से मेष राशि का प्रारम्भ** माना जाता है।

---

* १. **क्रान्ति वृत्त (Ecliptic)**–आकाश में सूर्य सहित सभी ग्रह जिस मार्ग पर परिभ्रमण करते दिखाई देते हैं, उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं। वास्तव में **क्रान्ति वृत्त** पृथ्वी सहित सभी ग्रहों का सूर्य की परिक्रमा करने के मार्ग का नाम है। पृथ्वी लगभग एक वर्ष में ३६० अंशों अर्थात् १२ राशियों का परिभ्रमण करती है।

चूंकि पृथ्वी चन्द्रमा सहित तथा अन्य ग्रह सूर्य के गिर्द पश्चिम से पूर्व दिशा में परिभ्रमण करते हैं, जबकि राशि चक्र (Zodiac) जो कि स्थिर प्रायः है, हमें पूर्व से पश्चिम की ओर प्रतिक्रमण होता दिखाई देता है, तथा मेष, वृषादि राशियां हमें पूर्वोदित होती दिखाई देती हैं।

राशियां बारह हैं, जिनका वर्णन आगे किया गया है।

आकाश मण्डल में नक्षत्र एवं तारा समूह एक विशेष प्रकार का आकार बनाते दिखाई देते हैं। हमारे प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने उन आकृतियों का तादात्म्य पृथ्वी पर विचरणशील जीव जन्तुओं के साथ करते हुए उन्हें मेष, वृष, सिंहादि संज्ञाओं से अभिहित किया। जैसे अश्विनी, भरणी व कृतिका (प्रथम भाग) का स्वरूप 'मेढ़े' जैसा होने से उसका नाम मेष राशि, वृष का स्वरूप बैल जैसा है। मघा, पूफा, उफा (१) नक्षत्रों का स्वरूप सिंह अथात् शेर जैसा है। राशियों के गुण एवं स्वभावानुसार हमारे ऋषियों ने उनके स्वामी ग्रहों (Lords) का भी निर्धारण किया है।

मेषादि राशियों के नाम तथा उनके स्वामी ग्रहों का विवरण निम्नलिखित अनुसार जानें।

बारह राशियों के नाम तथा उनके स्वामी

(Twelve signs & thier lordship)

राशि क्रम	नाम राशि	अंग्रेजी नाम	अरबी नाम	स्वामी ग्रह (Lords)
१.	मेष	Aries	हमल	मंगल (Mars)
२.	वृष	Taurus	सूर	शुक्र (Venus)
३.	मिथुन	Gemini	जोझा	बुध (Mercury)
४.	कर्क	Cancer	सतनि	चन्द्र (Moon)
५.	सिंह	Leo	असद	सूर्य (Sun)
६.	कन्या	Virgo	सुबंला	बुध (Mercury)
७.	तुला	Libra	मीज़र	शुक्र (Venus)
८.	बृश्चिक	Scorpio	अकरब	मंगल (Mars)
९.	धन	Sagittarius	कौस	गुरु (Jupiter)
१०.	मकर	Capricorn	ज़दी	शनि (Saturn)
११.	कुम्भ	Aquarius	दलु	शनि (Saturn)
१२.	मीन	Pisces	हूत	गुरु (Jupiter)

ऊपरलिखित १२ राशियों के नाम तथा उनके स्वामी ग्रह क्रमानुसार कण्ठस्थ कर लेने चाहिएं, क्योंकि आगे जन्म कुण्डली एवं जन्मपत्री निर्माण की प्रक्रिया में उनका बार-बार प्रयोग होगा।

राशियों का उदय—पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते समय अपनी धुरी पर घूमती हुई २४ घण्टों में एक परिक्रमण पूरा करती है। पृथ्वी के दैनिक परिभ्रमण के कारण, हमें पृथ्वी के पूर्वी क्षितिज पर बारहों राशियों का सामना होता है। इसे ही क्षितिज में द्वादश राशियों का उदय होना कहते हैं। २४ घण्टों में द्वादश राशियां क्रमशः उदय होती रहती हैं तथा एक चक्र पूरा होने पर पुनः उनकी आवृत्ति होती है। यद्यपि *पृथ्वी के झुकाव और अंक्षांश भेद के कारण प्रतिदिन राशियों के उदय काल में अन्तर होता है। इसका विस्तृत विवेचन आगे 'लग्न ज्ञान' प्रकरण में किया जावेगा।

राशि ज्ञान और नक्षत्र चरण—जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि प्रत्येक राशि के अन्तर्गत सवा दो नक्षत्र अथवा ९ नक्षत्र-चरण एवं अक्षर निश्चित किए गए हैं। उनका विभाजन इस प्रकार से है-

राशि एवं नक्षत्र चरण चक्र नक्षत्र चरणाक्षर

१. **मेष**-(अश्वि, भर, कृति १ चरण) = चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

२. **वृष**-(कृति. ३ चरण, रोह, मृग २ चरण) = इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

३. **मिथुन**-(मृग २ चरण, आर्द्रा, पुर्न ३ चरण) = का, कि, कु, घ, ङ, छ, के को, ह

४. **कर्क**-(पुर्न. ४था चरण, पुष्य, आश्लेषा) = हि, हु, हे, हो, डा, डि, डु, डे, डो

५. **सिंह**-(मघा, पूफा., उफा. १ चरण) = म, मी, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे

६. **कन्या**-(उफा. ३ चरण, हस्त, चित्रा २) = टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

७. **तुला**-(चित्रा २ चरण, स्वा., विशा. ३) = र, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते।

८. **वृश्चिक**-(विशा. ४था, अनु., ज्येष्ठा) = तो, न, नि, नु, ने, यो, या, यि, यु

९. **धनु**-(मूला, पूषा., उषा. १) = य, यो, भा, भि, भ, ध, फा, ढ, भे

१०. **मकर**-(उषा. अन्तिम ३, श्रव, धनि २) = भो, ज, जि, खि, खु, खे, खो, ग, गि

११. **कुम्भ**-(धनि. २ शत., पूभा ३) = गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द

१२. **मीन**-(पूभा. ४था, उभा. रेव.) = दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि

---

* नोट-पृथ्वी की धुरी का झुकाव उसके लम्ब से साढ़े तेईस ($23^1/_2$) अंश है, और इस प्रकार झुकते हुए उसकी धुरी की उत्तरी सीमा ध्रुव तारे की ओर होती है।

नोट–अभिजित नक्षत्र को मकर राशि के अन्तर्गत ही माना जाता है।

अभिजित में जु, जे, ज़ो, ख–ये अक्षर आते हैं।

जन्मराशि एवं नामकरण–किसी जातक या जातिका का जन्म नक्षत्र के जिस चरण में होता है, तदनुसार ही ऊपर आने वाले वर्णाक्षर पर उसका नाम रखा जाता है, अर्थात् जन्म नक्षत्र एवं चरण जिस राशि के अन्तर्गत आएगा, वही उसकी जन्म राशि होगी। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी जातक का जन्म अनुराधा के प्रथम चरण में हो, तो उसका नाम न (N) अक्षर से प्रारम्भ करके नरेन्द्र कुमार आदि रख सकते हैं। चूंकि 'न' वर्णाक्षर वृश्चिक राशि के अन्तर्गत पड़ता है। अतः जातक की जन्म एवं नाम राशि वृश्चिक ही होगी।

राशि का महत्त्व–आकाशस्थ मेषादि राशियों का मनुष्य से अटूट सम्बन्ध है। मनुष्य में जिस राशि के गुण मिलते हों, वही उसकी 'राशि' कहलाती है। इसका निर्णय जन्मकालिक चन्द्र स्थिति पर निर्भर करता है। जन्म राशि के अनुसार नाम रखने पर मनुष्य की आन्तरिक वृत्तियों की पूर्ण अभिव्यक्ति हो पाती है तथा व्यक्तित्व में निखार आता है।

जन्म समय मालूम न होने की स्थिति में मनुष्य का नाम जिस नक्षत्र चरणाक्षर से प्रारम्भ होता है, उसी के अनुसार उसकी राशि का निर्णय किया जाता है। इसको प्रसिद्ध (प्रचलित) नाम राशि भी कह सकते हैं।

जन्म राशि एवं नाम राशि के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही पूर्वज्योतिषाचार्यों ने उपादेयता की दृष्टि से उनमें सम्पादित किए जाने वाले कृत्यों का पृथक–पृथक वर्णन किया है। यथा

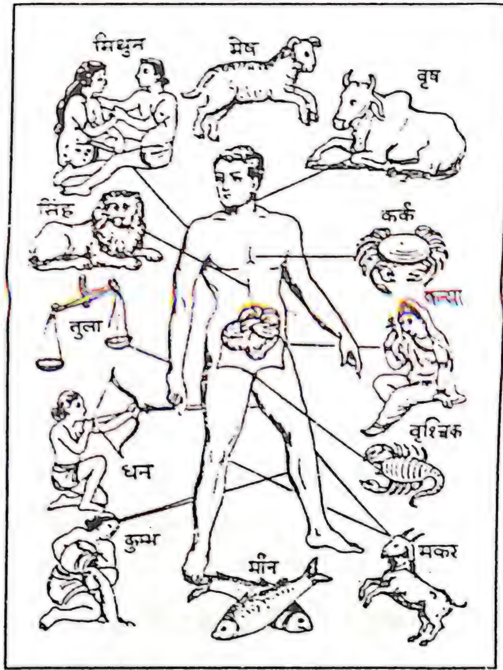
जन्म राशि–जन्म नक्षत्र एवं राशि में विवाह में वर–वधू का मिलान, यज्ञोपवीत संस्कार, मुण्डन संस्कार, जन्म दिन, अन्नप्राशन, राज्यभिषेक, ज्येष्ठ सन्तानेतर का विवाह संस्कार तथा शनि आदि गोचर ग्रहों के फल प्रतिपादन में प्रशस्त मानी जाती है।

नाम राशि–गृहारम्भ, गृह प्रवेश, व्यापार, देश कार्य, व्यवहारिक कार्य, मन्त्र सिद्धि, दान, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति एवं स्वामी व सेवक के पारस्परिक सम्बन्धों का विचार नाम (प्रचलित) राशि द्वारा करना चाहिए।

काल पुरुष और द्वादश राशियां

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् पुरुषाकार है। जिसमें आकाशस्थ द्वादश राशियों की परिकल्पना की गई। काल पुरुष के शिर में मेष राशि की, मुख में वृष की, भुजाओं एवं स्तन मध्य भाग में मिथुन राशि की, हृदय में कर्क की, पेट में सिंह राशि की, कमर में कन्या की, नाभि तथा वस्ति (पेडू) में तुला राशि की, गुप्तांग में वृश्चिक की, जंघा में धन की, दोनों घुटनों में मकर की, दोनों पिंडलियों में कुम्भ की, तथा दोनों पांवों में मीन राशि की कल्पना की गई है। जो राशि शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा स्थित हो। वह अंग पुष्ट तथा जो राशि पापी

ग्रहों से पीड़ित होगी वह अंग क्षीण एवं रूग्ण होने की सम्भावना रहती है।



द्वादश राशियों का सम्बन्ध शरीर के भीतरी अवभवों से भी है। जैसे–१. मेष का मस्तिष्क संरचना, चित्त एवं जीवन शक्ति से २. वृष का नेत्र, जिह्वा कण्ठादि से, ३. मिथुन राशि का सम्बन्ध हाथ, कन्धों, फेफड़े एवं श्वास प्रक्रिया से, ४. कर्क राशि का फेफड़े, पेट और पाचन प्रक्रिया से, ५. सिंह का पीठ, मेरूदण्ड, रक्त, जिगर से, ६. कन्या राशि का पेट के नीचे एवं अंतड़ियों से, ७. तुला राशि का नाभि के नीचे, मूत्राशय एवं गुर्दों से, ८. वृश्चिक राशि का सम्बन्ध मूत्रेन्द्रिय, गुदा व जननेन्द्रिय से, ९. धनु राशि का जंघाओं, नसों, तथा नितंब–स्थान से, १०. मकर राशि का हड्डियों तथा अंगों के जोड़ों सें, ११. कुम्भ राशि का नसों, जोड़ों श्वास एवं रक्त संचालन प्रक्रिया से, तथा १२. मीन राशि का कफ, नसों, तलवे एवं पैरों की अंगुलियों से सम्बन्ध है।

जन्म कालीन जो राशि शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा स्थित हो, उससे सम्बन्धित शरीरांग पुष्ट तथा जो राशि पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट होगी, उससे सम्बद्ध अंग पीड़ित एवं रोग युक्त होता है। जिस विभाग की राशि दीर्घ हो वह अंग लम्बा, जो राशि ह्रस्व होगी, वह अंग ह्रस्व होगा। पाप ग्रह द्वारा पीड़ित राशि हो तो उस अंग में कष्ट जानें।

द्वादश राशियों का स्वरूप

प्रत्येक राशि में अपनी–अपनी विशेषता है, विभिन्न राशियों के स्वरूप, स्वभाव, तत्त्वों एवं गुणों आदि के अनुरूप ही इन राशियों में उत्पन्न स्त्री–पुरुषों का स्वभाव वैसा ही बन जाता है।

मेष राशि



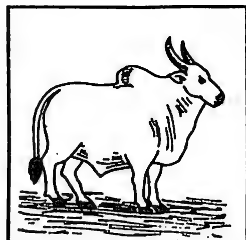
मेष राशि (भचक्र में ० से ३० अंश तक)

यह राशि मेढ़े जैसी आकृति वाली नेतृत्व का प्रतीक है। यह पुरुष जाति, अग्नितत्त्व, लाल वर्ण वाली, चरसंज्ञक, क्षत्रिय वर्ण, युवा, रजोगुणी, पूर्व दिशा की स्वामिनी, रात्रि बली, पृष्ठोदयी, मस्तक का बोध कराने वाली, समान अंगों वाली,

रूक्षक कान्ति, अल्प सन्तति, विषम संज्ञा, चंचल एवं उग्र प्रकृति और पित्त कारक है। इसका मूलगत स्वभाव साहसी, उग्र और कुछ अभिमान युक्त है। मित्रों के प्रति सहृदयशील होगी। इस राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। सूर्य इस राशि के १० अंश पर उच्चस्थ होता है। इसका प्रिय रत्न मूंगा है। भाग्यांक १ है।

वृष राशि—(३० से ६० अंश तक)

वृष राशि



यह राशि वृषभ एवं बैल की आकृति लिए हुए सेवा और आज्ञाकारिता की प्रतीक है यह राशि ह्रस्व शरीर, श्वेत वर्ण, स्त्री जाति, युवावस्था, पृथ्वी तत्त्व, स्थिर सँज्ञक, सौम्य एवं वात प्रकृति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, रात्रि बली, मध्यम संतति, एवं पृष्ठोदयी, शान्त स्वभाव, दृढ़ शरीर, वैश्य जाति, सम राशि है। यह स्वार्थी, सूझ—बूझ से काम करने वाली सांसारिक कार्यों में दक्ष होती है। इसका स्वामी ग्रह शुक्र है। चन्द्रमा इस राशि के ३ अंश पर परमोच्च होता है। इसका प्रिय रत्न हीरा है। और भाग्यांक ६ है।

मिथुन राशि (भचक्र में ६० से ९० अंश पर स्थित)

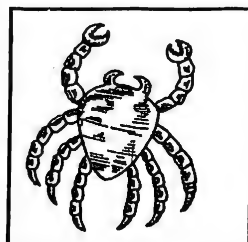
मिथुन राशि



इस राशि का आकार एक स्त्री—पुरुष के जोड़ (युग्म) जैसा है। जिसमें स्त्री के हाथ में एक वाद्य यन्त्र और पुरुष का एक हाथ स्त्री की कटि प्रदेश पर है। यह राशि स्त्री—पुरुष के पारस्परिक आकर्षण का प्रतीक है। यह राशि द्विस्वभाव, हरित रंग वाली, वायु तत्त्व एवं शीर्षोदयी राशि है। इसका निवास पश्चिम दिशा में द्यूत—क्रीड़ा स्थलों तथा रति एवं यह रात्रि बली है। इसका सम्बन्ध वक्षस्थल, स्तनों, कन्धों, भुजाओं, हाथों आदि से भी है। इसका स्वामी बुध ग्रह है तथा इसमें राहु की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसका प्रिय रत्न पन्ना है। इसका भाग्यांक ५ है।

कर्क राशि—(आकाश में ९० से १२० अंश तक)

कर्क राशि



आकाश में इस राशि का आकार केंकड़े के समान है। यह स्त्री राशि चर, सौम्य, और कफ प्रकृति, जल तत्त्व, रात्रिबली, रजोगुणी, उत्तर दिशा की स्वामिनी, गुलाबी वर्ण, इसकी जाति ब्राह्मण तथा यह पृष्ठोदय, समराशि हैं। यह लज्ज़ाशील, अपनी उन्नति में सदा प्रयत्नशील और अनुशासन प्रिय है। इसका अधिपति ग्रह चन्द्रमा है। इसका प्रियरत्न मोती एवं चन्द्रकांत मणि हैं। गुरु इस राशि के ५ अंश पर परमोच्च होता है। इसका भाग्यांक २ है।

सिंह राशि–(१२० से १५० अंश तक)

सिंह राशि



इस राशि का स्वरूप सिंह (शेर) की भान्ति है। यह आत्म विश्वास, स्वाभिमानी, शौर्य, उदारता एवं प्रचण्डता आदि गुणों की प्रतीक है। यह दीर्घाकार, पुरुष राशि, अग्नितत्त्व, दिन में बली, उष्ण स्वभाव, पित्त प्रकृति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, स्थिर स्वभाव, तमोगुणी, क्षत्रिय जाति, पांडुगौर वर्ण, वनचारी, शीर्षोदय, विषम राशि है। यह भ्रमणप्रिय, क्रूर धर्म को अपनाने वाली, शान्त लक्षणों से युक्त निर्जल राशि है। इस राशि का स्वामी सूर्य ग्रह है। प्रिय धातु सुवर्ण, पीतल व इसका प्रिय रत्न माणिक्य (Ruby) है। इसका भाग्यांक १ व ५ है। इसके २० अंश तक सूर्य मूलत्रिकोणी होता है।

कन्या राशि–(१५० से १८० अंश तक)

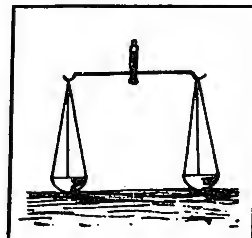
कन्या राशि



यह स्त्री राशि नौका में बैठ कर एक हाथ में धान्य और दूसरे हाथ में अग्नि (दीपक) ग्रहण किए हुए कुमारी कन्या के स्वरूप जैसी है। यह कोमल एवं सौम्य, चंचल एवं शांत (दोनों प्रकार के लक्षणों से युक्त) द्विस्वभाव, बाल्यावस्था, विविध वर्णा, सत्त्वगुणी, पृथ्वी तत्त्व युक्त, दिवस बली, वात प्रकृति वाली, वैश्य जाति वाली, शीर्षोदय, समराशि है। यह कृश–काय, अल्प संतति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, हरे भरे खेतों, बगीचों, युगल क्रीड़ास्थलों एवं शिल्प स्थलों पर विचरण करने वाली है। यह अपनी उन्नति के प्रति पूर्णतः सजग रहती है। इसका स्वामी बुध है। तथा बुध इसके १५° अंश पर परमोच्च होता है। इसका सम्बन्ध कटि प्रदेश, पेट एवं आंतों से है। प्रिय रत्न पन्ना है।

तुला राशि–(१८० से २१० अंश तक)

तुला राशि

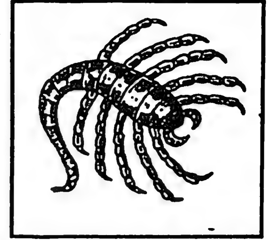


यह राशि कन्या राशि से दक्षिण पूर्व भाग में स्थित है। इसका स्वरूप तराजू हाथ में धारण किए हुए एक श्वेत वस्त्रधारी पुरुष की भान्ति है। यह बृहत्काय पुरुषजाति, चरसंज्ञक, दिवस बली, त्रिधातु प्रकृति वाली, मध्यम संतति विषम, शीर्षोदयी, पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। यह राशि वैभवशाली महानगरों, व्यापारिक स्थलों, न्यायलयों एवं मनोरंजक स्थलों में वास करती है। यह शुक्र ग्रह की स्वराशि तथा शनि इस राशि के २० अंश पर परमोच्च होता है। इसका प्रिय रत्न हीरा है। इसका भाग्यांक ६ है। इसके ५ अंश तक शुक्र मूलत्रिकोण होता है।

बृश्चिक राशि–(२१० से २४० अंश तक)

यह दीर्घाकार स्त्री राशि तीक्ष्ण डंक वाले बिच्छू के समान आकृति वाली, गुप्त विष से युक्त, अजाने मार करने वाली, स्थिर संज्ञक सुनहले वर्ण वाली जल राशि है। यह शीर्षोदय, सम राशि, दिवा बली, कफ प्रकृति, बहु संतति, ब्राह्मण जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, तमोगुणी, शान्त एवं स्थिर स्वभाव की है। परन्तु छेड़े जाने पर यह प्रतिशोध की भावना नहीं त्याग पाती। इस राशि का स्वाभाविक गुण हठ, दम्भ, निर्मलता, दृढ़ प्रतिज्ञता एवं स्पष्टवादिता है। इससे शरीर में रीढ़ की हड्डी, कद, लिंग, योनि आदि गुप्तांगो का विचार किया जाता है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है। तथा रत्न मूंगा है। इसे आध्यात्मिक राशि भी कहते हैं।

वृश्चिक राशि



धन राशि–(२४० से २७० अंश तक)

यह राशि इन्द्रधनुषीय कामनाओं और आशाओं की प्रतीक है। यह विषम राशि मध्यमाकार, पुरुष राशि, धनुष धारण किए कटि से ऊपर मनुष्य और नीचे अश्व के समान आकार की, अल्प प्रसवी, उग्र प्रकृति सतोगुणी राशि है। यह अग्नितत्त्वी, द्विस्वभावा, बाल्यावस्था, रात्रि बली, पित्त प्रकृति, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पूर्व दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव मर्यादा पालन करना, आदर्श एवं अधिकार प्रियता है। वाहनों के प्रति विशेष लगाव रहता है। इसका प्रिय रत्न पुखराज है। इसका भाग्यांक ९ है।

धन राशि



मकर राशि–(२७० से ३०० अंश तक)

नक्षत्र मण्डल में इसकी आकृति हरिण जैसे मस्तक वाले मकर (मगरमच्छ) के सदृश है। यह राशि मध्यम देही, स्त्री प्रकृति, चरसंज्ञक, पृथ्वीतत्त्व, वात प्रकृति, पिंगल पीत श्वेत वर्ण, रात्रि बली, वैश्य जाति, पृष्ठोदय, शीत स्वभाव, रजोगुणी, सौम्य परन्तु चंचल प्रकृति, रूक्ष शरीर, वृद्धावस्था और दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। यह वैर और प्रतिशोध की भावना से संयुक्त होने पर भी गम्भीर, धैर्यवान, मननशील और सेवा भाव से संयुक्त रहती है। इसका स्वामी ग्रह शनि है। तथा रत्न नीलम है। मंगल इस राशि के २८ अंश पर उच्चस्थ होता है। इसका भाग्यांक ८ है।

मकर राशि



कुम्भ राशि–(३०० से ३३० अंश तक)

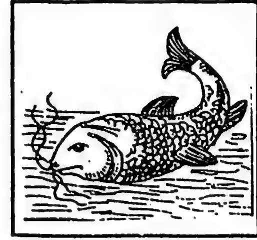
भचक्र में इसकी आकृति कन्धे पर कलश लिए पुरुषाकार की है। यह राशि क्रूर प्रकृति, पुरुष संज्ञक, वायु तत्त्व, स्थिर संज्ञक, तमोगुणी, त्रिधातु प्रकृति, मूंगिया वर्ण, दिवस बली, शीर्षोदयी, मध्यम संतति वाली, पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। इसका ऊष्ण स्वभाव, स्निग्ध प्रकृति, विचारशील, धर्म पारायण, और नई–नई बातें जानने का जिज्ञासु होगा। इस राशि का स्वामी शनि ग्रह तथा इसका रत्न नीलम है। इसका भाग्यांक ८ है। इस राशि के प्रथम २० अंश तक शनि मूलत्रिकोणी होता है। इस राशि वालों को वाहनों के प्रति विशेष लगाव होता है।

कुम्भ राशि



मीन राशि–(३३० से ३६० अंश तक)

मीन राशि



आकाश में इनकी आकृति दो मछलियों जैसी है। यह करूणा और दया की प्रतीक है। यह मध्यम देह, स्त्री राशि, पिंगल वर्ण, ब्राह्मण जाति, जल तत्त्व, द्विस्वभावा, सौम्य प्रकृति, दिवा वली, सतोगुणी, कफ प्रकृति, सम संज्ञक, बहु प्रसव, उभयोदयी, स्निग्ध शरीरा, जलचर, उत्तर दिशा की स्वामिनी है। शुक्र इस राशि के २७ अंश पर उच्च का रहता है। इसका स्वामी गुरु तथा शुभ नग पुखराज है।

राशियों में तत्त्वादि विचार–

आकाशस्थ मेषादि राशियों का मनुष्य के स्वरूप, अंगों आदि से अनन्य सम्बन्ध है। मनुष्य का जन्म जिस राशि के प्रभाव में होता है, वैसा ही उसका आकार एवं व्यवहार बन जाता है। किन्हीं दो व्यक्तियों, पार्टियों व राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों का विचार तथा तद् आगत तत्त्वों आदि में शत्रुता एवं मित्रता आदि का विचार भी राशियों के निरूपण द्वारा ही किया जाता है। यथा–पृथ्वीतत्त्व और जल तत्त्व अग्नि तत्त्व और वायु तत्त्व राशियों के मध्य मित्रता तथा पृथ्वी और अग्नि तत्त्व के बीच तथा जल और अग्नि तत्त्व राशियों के मध्य परस्पर शत्रुभाव रहता है। अर्थात् इन राशियों से सम्बन्धित लोगों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध चिरस्थायी नहीं रहते। तत्त्व की दृष्टि से राशियों का विवरण–

अग्नि तत्त्व	मेष	सिंह	धनु
पृथ्वी तत्त्व	वृष	कन्या	मकर
वायु तत्त्व	मिथुन	तुला	कुम्भ
जल तत्त्व	कर्क	बृश्चिक	मीन

चर, स्थिर, शीर्षोदय आदि राशियों का महत्त्व–

उपरोक्त राशियों के गुण स्वभाव, तत्त्व दिशादि का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है, चंचल (चलायमान) अर्थात् जिसमें कार्य शीघ्र हो। यात्रा करे, तो शीघ्र वापिस आ जाए। स्थिर राशि में कार्यारम्भ का प्रभाव विलम्ब से परन्तु स्थायी होता है। जैसे–मकान, दुकान, व्यवसाय आदि का आरम्भ करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्विस्वभाव राशि में मिला–जुला प्रभाव होता है। इसी भान्ति राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। उदाहरण के लिए किसी की जन्म कुण्डली मे लग्नेश, दशमेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय दक्षिण दिशा में होगा– ऐसा कहना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि किसी जातक का कन्या लग्न हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। भाग्येश शुक्र यदि नवम भाव में लग्नेश–कर्मेश बुध से संयुक्त होगा तो जातक का भाग्योदय दक्षिण दिशा में होगा। क्योंकि वृष राशि दक्षिण दिशा की स्वामिनी है।

शीर्षोदयादि राशियां–

सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक और कुम्भ राशियां शीर्षोदयी कहलाती हैं। आकाश मण्डल में इनका उदय आगे की ओर से होता है। इनमें स्थित ग्रह शीघ्र फल प्रकट करते हैं। मेष, वृष, कर्क, धनु एवं मकर–ये पृष्ठोदय राशियां कहलाती हैं। इनमें स्थित ग्रह विलम्ब से कार्य फल प्रकट करते हैं। * मिथुन व मीन राशियों को उभयोदयी कहते हैं। इनमें स्थित ग्रह राशि के मध्य में एवं मिश्रित फल प्रदान करते हैं। अपरं च शीर्षोदय राशियों में स्थित ग्रह अत्यन्त शुभ फल प्रदान करते हैं जबकि पृष्ठोदय राशियों में पापग्रह और भी अधिक अशुभ फल प्रदान करते हैं। राशियों के ह्रस्व या दीर्घादि से भाव है कि यदि राशि दीर्घ है और उसका स्वामी भी दीर्घ राशि में है, तो भाव से सम्बन्धी शरीर का अंग बड़ा होगा। उदाहरण के लिए सिंह लग्न हो, लग्नेश सूर्य बृश्चिक में हो, तो बृश्चिक और सिंह–दोनों दीर्घ राशि होने से जातक का सिर बड़ा होगा, क्योंकि लग्न से सिर का विचार होता है। इसी भान्ति अन्य अंगों का भी लघु–दीर्घादि जान सकते हैं।

राशि परिचय चक्र

राशि	वर्ण	चरादि	सौम्यादि	तत्त्व	दीर्घादि	नरादि	रंग	मूलादि	गुण	दिशा	रत्न	स्वामी	उदय
मेष	क्षत्रिय	चर	क्रूर	अग्नि	ह्रस्व	नर	लाल	धातु	रज	पूर्व	मूंगा	मंगल	पृष्ठ
वृष	वैश्य	स्थिर	सौम्य	पृथ्वी	ह्रस्व	स्त्री	सफेद	मूल	तम	दक्षि.	हीरा	शुक्र	पृष्ठ
मिथुन	शूद्र	द्विस्व	क्रूर	वायु	सम	नर	हरा	जीव	सत्व	पश्चि.	पन्ना	बुध	उभय
कर्क	विप्र	चर	सौम्य	जल	सम	स्त्री	श्वेत	धातु	रज	उत्तर	मोती	चन्द्र	पृष्ठ

* **नोट–** बृहज्जातकानुसार मिथुन राशि शीर्षोदयी राशि के अन्तर्गत आती है।

सिंह	क्षत्रिय	स्थिर	क्रूर	अग्नि	दीर्घ	नर	लाल	मूल	तम	पूर्व	मानक	सूर्य	शीर्ष
कन्या	वैश्य	द्विस्व.	सौम्य	पृथ्वी	दीर्घ	स्त्री	मिश्रित	जीव	सत्व	दक्षि.	पन्ना	बुध	शीर्ष
तुला	शूद्र	चर	क्रूर	वायु	दीर्घ	नर	नील	धातु	ग्ज	पश्चि.	हीरा	शुक्र	शीर्ष
बृश्चि.	विप्र	स्थिर	सौम्य	जल	दीर्घ	स्त्री	ताम्र	मूल	तम	उत्तर	मूंगा	मंग.	शीर्ष
धनु	क्षत्रिय	द्विस्व	क्रूर	अग्नि	सम	नर	पीला	जीव	सत्व	पूर्व	पुखराज	गुरु	पृष्ठ
मकर	वैश्य	चर	सौम्य	पृथ्वी	सम	स्त्री	भूरा	धातु	रज	दक्षि.	नीलम	शनि	पृष्ठ
कुंभ	शूद्र	स्थिर	क्रूर	वायु	ह्रस्व	नर	भूराकृ.	मूल	तम	पश्चि.	नीलम	शनि	शीर्ष
मीन	विप्र	द्विस्व	सौम्य	जल	सम	स्त्री	पीला	जीव	सत्व	उत्तर	पुखराज	गुरु	उभय

राशियों का उदयमान–

सामान्यतः राशियों का अंशमान ३०–३० अंश ही माना जाता है। परन्तु किसी विभिन्न स्थलों एवं अक्षांशों पर राशियों का उदयमान एक समान नहीं होता। इसके मुख्यता निम्न कारण हैं।

१. पृथ्वी का सूर्य के गिर्द परिभ्रमण मार्ग गोलाकार न होकर अण्डाकार मार्ग होना।

२. पृथ्वी अपनी धुरी पर सीधी (लम्बवत्) नहीं है। ध्रुव तारे की ओर इसका उत्तरी भाग सदैव ६७$^{१}/_{२}$ अंश पर झुके रहते हुए अपने अक्ष पर घूमते रहना।

३. पृथ्वी की गति में असमानता होना।

४. विभिन्न अक्षांशों में परस्पर असमानता होना इत्यादि कुछ मुख्य कारणों से राशियों के उदयमान में अन्तर होता है।

भूमध्य रेखा (निरक्ष देश = ० अक्षांश) एवं उसके निकटस्थ पड़ने वाले नगरों का राशिमान लगभग समान होता है। वहां से उत्तर या दक्षिण स्थित देशों के राशिमान में अन्तर होता जाता है। ज्यों–ज्यों उत्तरी अक्षांशों की ओर बढ़ते जाते हैं, **मेष–मीन, वृष–कुम्भ, एवं मिथुन–मकर** राशियों के मान घटते जाते हैं तथा **कर्क**–धनु, सिंह–बृश्चिक व कन्या–तुला राशियों के मान बढ़ते जाते हैं। पाठकों की जानकारी के लिए भूमध्य रेखा (अर्थात् शून्य 0° अक्षांश) पर राशियों का मान लिख रहे हैं।

भूमध्य (० अक्षांश) पर सायन राशियों का उदयमान

राशि	घड़ी	पल	वि.	पलात्मक	राशि	घड़ी	पल	वि.	पलात्मक
मेष	४	३९	०	= २७९	तुला	४	३९	००	= २७९
वृष	४	५९	१०	= २९९	बृश्चिक	४	५९	१०	= २९९
मिथुन	५	२१	५०	= ३२२	धनु	५	२१	५०	= ३२२
कर्क	५	२१	५०	= ३२२	मकर	५	२१	५०	= ३२२
सिंह	४	५९	१०	= २९९	कुम्भ	४	५९	१०	= २९९
कन्या	४	३९	००	= २७९	मीन	४	३९	००	= २७९

इस प्रकार ० अक्षांश पर मेष, कन्या, तुला, मीन राशियों का उदयमान समान है। वृष, सिंह, बृश्चिक और कुम्भ का मान एक समान है तथा मिथुन, कर्क, धनु, व मकर राशियों का राशिमान एक जैसा है।

उदाहरणार्थ–यदि हमने * ३१° उत्तर अक्षांश पर स्थित नगरों की राशियों के उदयमान ज्ञात करें तो, वे इस प्रकार से होंगे–

मेष व मीन	=	२०७ पल	कर्क व धनु	=	२४६ पल
वृष व कुम्भ	=	२४९ पल	सिंह व वृश्चिक	=	३५७ पल
मिथुन व मकर	=	२९८ पल	कन्या व तुला	=	३५१ पल

इस प्रकार आप देखेंगे कि उत्तर अक्षांशों में वृद्धि के साथ–साथ मेष व मीन, वृष व कुम्भ एवं मिथुन व मकर राशियों के मान घटते जाते हैं तथा कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक व धनु राशियों के मान बढ़ते जाते हैं। राशियों के उदयमान निकालने की प्रक्रिया आप आगामी पृष्ठों पर 'लग्न व जन्म कुण्डली ज्ञान'–अध्याय में पढ़ेंगे॥

सायन एवं निरयण राशियां

वर्तमान काल में विश्व में राशियों एवं स्पष्ट ग्रहों की गणना का आधार मुख्यतः दो प्रकार से किया जाता है:

१. सायन पद्धति (Moveable Zodiac) द्वारा अथवा

२. निरयण पद्धति (Fixed Zodiac) को आधार मान कर इसे नाक्षत्र पद्धति (Siderial System) भी कहते हैं।

पाश्चात्य देशों (Western Countries) में सायन पद्धति के द्वारा राशि एवं ग्रह गणना की जाती है, जबकि भारत में अधिकांशतः निरयण ग्रह गणना पद्धति का अनुसरण किया जाता है। जब कोई अयनांश सहित राशियों, लग्न एवं ग्रहगणितादि की गणना की जाती है, तो यह ग्रहों की सायन गणना पद्धति कहलाती है। जब लग्न राशियों एवं ग्रहों आदि स्पष्ट में अयनांश घटाकर गणना की जाती है, तो इसे निरयण पद्धति कहते हैं। इसे स्थिर भगण चक्र (Fixed Zodiac) भी कहते हैं। सायन पद्धति में ग्रह गणना का आधार चलित सम्पात बिन्धु हैं। इसे equinoxial (tropical) पद्धति भी कहते हैं।

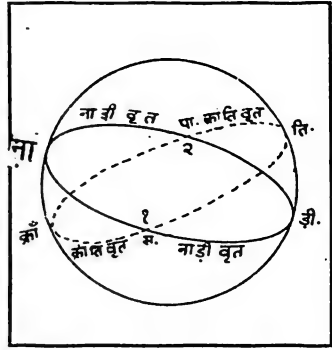
सम्पात्–बिन्दु और अयनांश वर्णन

सूर्य का दैनिक, क्रान्तिपथ विषुवत् रेखा पर लम्बवत न होकर २३°. २६ अंश पर झुका हुआ है।

---

* नोट–ध्यान रहे ३१° अक्षांश उत्तर में निकटस्थ पड़ने वाले मुख्य नगर इस प्रकार से हैं– शिमला, सोलन, नालागढ़, कोटखाई, फिरोज़पुर, आनन्दपुर, ऊना, लुधियाना, रोपड़, फगवाड़ा, कुराली, नवांशहर इत्यादि।

विषुववृत्त (नाड़ी वृत्त) और क्रान्तिवृत्त दोनों एक दूसरे को दो स्थानों पर काटते हैं। उन्हें **सम्पात बिन्दु** कहते हैं। इनमें एक को **बसन्त सम्पात्** (Vernal Equinox) और दूसरे को **शरद् सम्पात्** (Autumnal equinox) कहते हैं। इन्हीं दोनों बिन्दुओं को अयन भी कहते हैं। जब सूर्य क्रान्ति वृत्त में घूमते हुए नाड़ी वृत्त को स्पर्श करता है, तब प्रथम सम्पात् बिन्दु को उत्तर सम्पात कहते हैं। उस समय, रात और दिन बराबर होते हैं। यह स्थिति २१ मार्च को होती है। सायनं मेषारम्भ इसी बिन्दु से माना जाता है। तथा इसी स्थान से ग्रहों का भोगांश और विषुवांश नापा जाता है। सायन मेष संक्रमण बसन्त ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है। इस समय सूर्य की ठीक पूर्व से उदय होता है। तथा २१ मार्च के बाद सूर्य उत्तर गोलार्द्ध की ओर जाने लगता है।



शरद सम्पात्—क्रान्ति वृत्त और नाड़ीवृत्त के एक दूसरे को काटने का यह दूसरा स्थान है। इसे दक्षिण सम्पात् एवं सायन तुला भी कहते हैं। यह स्थिति लगभग २३ सितम्बर को आती है। तथा इस सम्पात् काल में भी रात और दिन बराबर होते हैं। २३ सितं. से सूर्य की दक्षिण की यात्रा आरम्भ होती है। अर्थात् सूर्य उत्तरगोल में सायन मेष में सायन तुला तक रहता है और दक्षिण गोल में सायन तुला से सायन मेष तक। क्रान्तिवृत्त की वक्रता के कारण ही सूर्य ६ मास उत्तर और ६ मास दक्षिण गोलार्द्ध में होता है।

ध्यान रहे, सम्पात बिन्दुओं की वक्र गति होती है। अर्थात् सम्पात बिन्दु पश्चिम की ओर लगभग ५०.२६ विकला प्रतिवर्ष के अनुसार स्थिर बिन्दु से पश्चिम की ओर पीछे खिसक रहे हैं। इसलिए नक्षत्र मण्डल उतना ही आगे खिसका हुआ दिखाई देता है। इसी सम्पात की गति को **अयनांश (Precession)** भी कहते हैं। इस सम्पात का पूर्ण चक्र लगभग २६ हजार वर्षों में पूरा होता है। इस प्रमाण से इसकी गति १ अंश चलने को ७२ वर्ष लगते हैं। सम्पात् से चल कर सूर्य को पुनः सम्पात तक आने में जो समय लगता है, उसे साम्पातिक सौर वर्ष कहते हैं।

निरयण वर्ष सायन वर्ष से बड़ा होता है। निरयण वर्ष ३६५ दिन, ६ घण्टें ९ मिन्ट एवं १० सैकिंड का होता है जबकि सायन वर्ष ३६५ दिन, ५ घण्टे, ४८ मिन्ट व ४५ सैकिंड का होता है। पाश्चात्य सायन पद्धति में ग्रहों, राशियों का भोगांश सम्पात् बिन्दु से प्रारम्भ किया जाता है।

अयनांश—सम्पात् बिन्दु से मेषादि के आरम्भ स्थान तक के अन्तर को अयनांश कहते हैं। **अयनांश** का उपयोग निरयण प्रणाली में कई बार होता है। जैसे स्वदेशीय लग्न मानों में पहिले सायन लग्न लिया जाता है। इत्यादि।

भारतीय मान्यतानुसार क्रान्तिवृत्त पर काल्पनिक स्थिर बिन्दु है जिसकी स्थिति चित्रा नक्षत्र के ठीक सामने लगभग 180 अंश पर है। इस स्थिर मेषादि बिन्दु से बंसत सम्पात तक की दूरी को अयनांश कहते हैं। यह दूरी चित्रा नक्षत्र से शरद संपात बिन्दु की दूरी भी होने से इसे **चित्रापक्षीय** अयनांश भी कहते हैं।

अतएव **भारतीय पद्धति** के अनुसार ग्रहादि के निरयण भोगांश को नापने और उनके राशि एवं नक्षत्रों के गणनार्थ एक स्थिर आरंभिक बिन्दु स्वीकृत किया गया है जो क्रान्ति वृत्त पर सर्वथा निश्चल है। मेषादि आरम्भिक बिन्दु पर बसंत सम्पात सन २८५ में शून्य अयंनांश था। जैसा कि पहिले बताया जा चुका है कि अयन गति ५०" २ प्रतिवर्ष के हिसाब से निरयण ग्रहों का अन्तर बढ़ता जाता है। स्पष्टता के लिए आगे 1940 से ई. २०२० ई. तक की अयनांश सारिणी लिख रहे हैं। पाश्चात्य पद्धति आधारित सायन ग्रह स्पष्ट निकालने के लिए हमारी पंचांग दिवाकर (जालन्धर) में दिए गए निरयण सूर्यादि ग्रह स्पष्टों में अभीष्ट वर्ष का अयनांश जमा कर देने से आपको सायन ग्रह स्पष्ट प्राप्त हो जाएंगे।

जनवरी १९९० ई० को अयनांश २३।४३ माना गया है। जबकि जन. २००१ ई० में २३।५२ होगा। सूर्य एक दिन में लगभग १ अंश की गति से संचरित होता है। अत एव सायन और निरयन भोगांशों-आजकल में लगभग २३–२४ अंशों का अन्तर पड़ जाता है। यह अयनांश का अन्तर उत्तरोत्तर निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

सायन और निरमण दोनों पद्धतियों से बनाई गई जातक की जन्म कुण्डलियों में अधिकांश ग्रहों की राशियों में भिन्नता आ जाती है। इसी भान्ति नवांशदि कुण्डलियों में ग्रहों की स्थिति में भी अन्तर पड़ जाता है। **निरयण पद्धति** का अनुसरण अधिकांशतः भारत, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि देशों में ही होता है तथा निरयण ग्रह पद्धति द्वारा ही अनेक भारतीय ज्योतिषी सफलतम् एवं चामत्कारिक भविष्यवाणियां करते आए हैं।

यूरोप, अमरीका एवं विश्व के अन्य देश सायण ग्रह गणित का अनुसरण करते हैं। चलायमान अयनांश को जमा करके ग्रहों के भोगांश ग्रहण करने के कारण ही सायन पद्धति कहलाती है। फलित दृष्टि से दोनों पद्धतियों में कौन–सी पद्धति सटीक ओवं यथार्थता की कसौटी में खरी उतरती है यह स्वयं में गहन अनुसन्धान एवं विश्लेशण का विषय है।

जैसे कि ऊपर लिखा गया है कि आजकल सायन व निरयण ग्रहों के भोगांशों ने २३°–२४° अंशों का अन्तर पड़ रहा है। इसी भान्ति साधन संक्रान्ति के लगभग २४–२५ दिन के बाद निरयण संक्रान्ति होती है।

---

* **नोट**–प्राचीन पद्धति अनुसार लग्न, दशमादि भावस्पष्ट करने के लिए सायन सूर्य स्पष्ट की विशेष आवश्यकता पड़ती है।

चित्रा पक्षीय अयनांश सारिणी

जनवरी ई. १९४० से सं. ई. २०२० तक

ईसवी.	अयनांश अ. क. वि.	ईसवी	अयनांश अ. क. वि.	ईसवी	अयनांश अ. क. वि.
१९४०	२३.१.०७	१९६७	२३°.२३'.४५"	१९९४	२३°.४६'.२३"
१९४१	२३.१.५७	१९६८	२३.२४.३६	१९९५	२३.४७.१४
१९४२	२३.२.४९	१९६९	२३.२५.२६	१९९६	२३.४८.०४
१९४३	२३.३.३८	१९७०	२३.२६.१६	१९९७	२३.४८.५४
१९४४	२३.४.२८	१९७१	२३.२७.०६	१९९८	२३.४९.४५
१९४५	२३.५.१८	१९७२	२३.२७.५६	१९९९	२३.५०.२६
१९४६	२३.६.०९	१९७३	२३.२८.४७	२०००	२३.५१.१२
१९४७	२३.६.५९	१९७४	२३.२९.३७	२००१	२३.५२.०२
१९४८	२३.७.४९	१९७५	२३.३०.२८	२००२	२३.५२.५३
१९४९	२३.८.५०	१९७६	२३.३१.१८	२००३	२३.५३.४३
१९५०	२३.९.३१	१९७७	२३.३२.०७	२००४	२३.५४.३३
१९५१	२३.१०.२२	१९७८	२३.३२.५९	२००५	२३.५५.२४
१९५२	२३.११.१३	१९७९	२३.३३.४९	२००६	२३.५६.१४
१९५३	२३.१२.०३	१९८०	२३.३४.४०	२००७	२३.५७.०४
१९५४	२३.१२.५३	१९८१	२३.३५.३०	२००८	२३.५७.५५
१९५५	२३.१३.४३	१९८२	२३.३६.२०	२००९	२३.५८.४५
१९५६	२३.१४.३३	१९८३	२३.३७.१०	२०१०	२३.५९.३५
१९५७	२३.१५.२४	१९८४	२३.३७.५९	२०११	२४.००.२६
१९५८	२३.१६.१४	१९८५	२३.३८.४९	२०१२	२४.०१.१६
१९५९	२३.१७.०४	१९८६	२३.३९.३९	२०१३	२४.०२.०६
१९६०	२३.१७.५४	१९८७	२३.४०.३१	२०१४	२४.०२.५६
१९६१	२३.१८.४५	१९८८	२३.४१.२१	२०१५	२४.०३.४७
१९६२	२३.१९.३५	१९८९	२३.४२.११	२०१६	२४.०४.३७
१९६३	२३.२०.२४	१९९०	२३.४३.०२	२०१७	२४.०५.२७
१९६४	२३.२१.१४	१९९१	२३.४३.५३	२०१८	२४.०६.१८
१९६५	२३.२२.०५	१९९२	२३.४४.४३	२०१९	२४.०७.०८
१९६६	२३.२२.५४	१९९३	२३.४५.३३	२०२०	२४.०७.५८

मेषादि राशियों का फलादेश

आगे मेषादि १२ राशियों का फल संक्षेप में लिख रहे हैं। अधिक विस्तार पूर्वक एवं सूक्ष्म फलादेश के लिए हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली फलित पर इसी पुस्तक के द्वितीय भाग की प्रतीक्षा करें।

मेष राशि (Aries)—मेष राशि में उत्पन्न जातक/जातिका मध्यम कद वाला, उत्साहयुक्त एवं साहसी प्रकृति होगी। इस राशि का स्वामी मंगल होने से जातक के मुख का रंग लाल (ताम्रवर्ण) अथवा गेहूआं वर्ण होगा। यदि भरणी नक्षत्र होगा तो, रंग गोरा एवं लालिमा युक्त होगा। बदन गठीला एवं बाल घुंघराले होंगे। इस राशि की महिलायों के बाल प्रायः लम्बे और घने होते हैं। आंखें चंचल, सुन्दर एवं आकर्षक होती है।

मेष राशि के जातक परोपकारी, कोमल स्वभाव, तेजस्वी, सुशील, सभी के चित्त को प्रसन्न करने वाला, साहसी, उद्यमी एवं परिश्रमी होगा। सतर्क बुद्धि और स्वतन्त्र विचार रखेगा। स्मरणशक्ति तेज होगी। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण जातक/जातिका भावुक प्रकृति वाला, परिवर्तनशील, तथा अस्थिर स्वभाव होगा। क्षणिक क्रोधित हो जाने पर शीघ्र ही मान जावे। भ्रमणप्रिय प्रकृति अर्थात् घूमने फिरने का विशेष शौक रखे। जीवन में अपने परिश्रम एवं उद्यम के बल पर आय एवं धन प्राप्ति के साधन जुटा लेते हैं। बहन भाई होने पर भी उनका सहयोग नहीं मिल पाता। मंगल शुभ हो तो जातक बड़े से बड़े शत्रु से टकराने से नहीं डरता तथा अपने निश्चय पर अडिग रहता है। नई नई योजनाएं बनाने में कुशल होगा। मेष राशि की स्त्री गृहस्थ जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए व्यवसायिक क्षेत्र में कार्यरत रहना अधिक पसन्द करती है। पति के पराधीन रहने की अपेक्षा संगिनी बनना अधिक पसंद करती हैं। कला आदि का विशेष शौक रहता है। इस राशि वालों को मूंगा अथवा मानक नग शुभ रहता है। मंगलवार, रविवार, शुक्रवार शुभ रहते हैं।

वृष राशि (Taurus)—इस राशि का स्वामी शुक्र है। वृष राशि वाला व्यक्ति अपने हठ पर दृढ़ रहता है। आराम पसन्द रहना यह अपना धर्म समझता है। यह व्यक्ति तेजस्वी, संघर्षशील, स्वाभिमानी, श्रेष्ठ मित्रों से युक्त, तेजस्वी, माता—पिता तथा गुरु का भक्त, आयुष्मान होता है, छोटे—छोटे कामों पर भी लम्बे लम्बे विचार करता रहता है। शत्रु अधिक होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति को आकस्मिक धन लाभ के अवसर भी मिलते हैं, ये लोग सुखमय तथा अधिकार पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। जीवन का पूर्वार्द्ध संघर्षपूर्ण किन्तु उत्तरार्द्ध सुखमय एवं उन्नतिशील होता है। इस राशि के जातक/जातिका प्रायः बैकिंग, तैल एवं इत्रादि व्यवसाय, भवन निर्माण, विज्ञापन अथवा कलादि से सम्बन्ध रखने वाला होता है। कन्या, वृश्चिक, राशि वालों से सांझेदारी अथवा मित्रता शुभ सूचक

होती है। भाग्योदय वर्ष 25,28,36 एवं 42 होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति उत्तेजक पदार्थों का सेवन कम करते हैं। इन्हें नियमित व्यायाम सम्बन्धी अभ्यास करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी रहता है। इन्हें पुत्र, स्त्री, वाहन, भूमि एवं गृहादि का सुख पूर्ण रूप से मिलता है। इनके लिए 5, 13, 26, 37, 45वां वर्ष कुछ कष्टदायी होते हैं। वृष राशि वाली स्त्रियां बड़ी अच्छी गृहिणी सिद्ध होती है। उन्हें परम्परागत विषयों की अपेक्षा नवीन विषयों के अध्ययन में विशेष रूचि होती है। वृष राशि के जातक एक सफल माता–पिता बनते हैं। विवाह उपरान्त विशेष भाग्योदय होता है। इस राशि वालों को सफेदमूंगा, मोती, या हीरा पहनना शुभ होगा। विशेष विचार जन्मपत्री में ग्रहों के अनुसार करें।

मिथुन (Gemini)–मिथुन राशि का स्वामी बुध है। इस राशि का जातक प्रायः लम्बे कद, गौर वर्ण, सुन्दर बाल तथा बड़ी नाक वाला होता है। चेहरे से ही बुद्धिमानी झलकती है। यह जातक मधुरभाषी, चतुर, दयाली, दृढ़, प्रतिज्ञ, विद्वान, धनी, प्रत्येक कार्य करने में तत्पर, अत्यन्त विवादी, कुशाग्र बुद्धि, भोगी, विलासी, चंचल चित्त, मर्मज्ञ सर्वप्रिय अधिक भोजन करने वाला होता है। इसे आकस्मिक धन का लाभ भी होता है। नर्म स्वभाव होने के कारण इसे कमजोर समझा जाता है परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि तथा तर्क वितर्क करने में कुशल होता हैं। घरेलू झगड़ों एवं कारोबारी उलझनों के कारण सदा चिंतातुर रहता है। फिर भी संकट के समय वे अपने हितों की रक्षा करने में जुट जाते हैं। यदि वे कोई ऐव भी करते हैं अपने हाथ पैर बचाकर करते हैं। और यदि कोई अनिष्ट होता दिखाई दे, तो तुरन्त सम्भल जाते हैं। क्रय–विक्रय लेखन–पत्र कार्य, Accounts, बैंकिंग, एवं तकनीकि कार्यों में विशेष सफल हो जाते हैं।

यह भ्रमण तथा परिवर्तनप्रिय है। ये लोग व्यवसाय के स्थान पर नौकरी में कुछ सफल हो पाते हैं। इस राशि के लोगों को अनिद्रा, पेट की बीमारी का भय रहता है। इन्हें हरे रंग का पन्ना, या मोती पहनना शुभ रहता है। सोम, मंगल, बुध व शुक्रवार शुभ हैं।

कर्क राशि– (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र–मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, न्यायप्रिय व दयालु स्वभाव होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च काल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौंदर्य, कला–संगीत व साहित्य में विशेष रूचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय–दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही

लेता है। आय के साधन एक से अधिक होते हैं। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों का मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। शुभ नग सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज है। भाग्योदय कारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह राशि–(राशि) का स्वामी सूर्य है। इस राशि में जन्म लेने वाला जातक/जातिका सुन्दर–पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्त्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र उत्तेजित हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि–चातुर्य से स्थिति को संभाल लेने वाला होगा। छोटी–छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाले होगा तथा बड़े–बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने में तत्पर हो जाएगा। भाई–बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य–व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन–यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस राशि वाली कन्या का बाह्य रूप में आकर्षक रूप अच्छा स्वास्थ्य रहता है। जन्म कुण्डली में शनि अशुभ हो, तो परिवारिक सुख में कमी होती है। इस राशि वालों को मेष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धन व कुम्भ राशि वालों से मैत्री या सांझेदारी शुभ रहती होती है। प्रतिनिधित्व, मैनेजर सैल्जमैन व उच्च स्तरीय कार्यों द्वारा लाभान्वित होते हैं।

कन्या राशि–कन्या राशि वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आंखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Sensitive) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक भाषाओं एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध–शुक्र का शुभ योग होने से लेखा–गणित (Account) संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय–विक्रय रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। शुभ नग पन्ना है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२, तथा ३५, ३६, ४२वें वर्ष होते हैं।

तुला राशि–तुला राशि का स्वामी शुक्र है। तुला (राशि) में उत्पन्न जातक/जातिका

श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए–नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन–सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। चन्द्र–शुक्र शुभ हो, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे, तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश–विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति झुकाव रखें। इनको हीरा (Diamond) अथवा श्वेत मोती शुभ नग है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शनुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक राशि–वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है। इस राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार–कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने से शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने में पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। शुभ नग मूंगा है। शुभ रंग लाल संतरी, पीला, हल्का पीला (Pink) है । अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु राशि–धनु राशि का स्वामी गुरु है। इस राशि में उत्पन्न जातक का ऊंचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। गुरु–बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य, एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस राशि से प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल होती है। साथ–साथ अश्व जैसी

धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस राशि से प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति प्रबल होती है। साथ–साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाए और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है देर तक उद्वेलित रहते हैं। **अग्नि तत्त्व** प्रधान होने के कारण इस राशि के स्त्री–पुरुष कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब्र, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि–जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल–गुरु** शुभ हों तो उच्च व्यवसायिक विद्या प्राप्त होगी। शिक्षक, धर्म–प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य–डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। इस राशि वालों का **शुभ नग पुखराज** हैं। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर राशि–मकर राशि का स्वामी शनि है। इस राशि में जन्म लेने वाला जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गंभीर, भावुक हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार–कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु–शनि** शुभ हो तो, जातक स्वभाव (विनम्र) विनयशील, व्यवहार–कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली–बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनींय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क–वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम हैं।** भाग्योन्नतिकारक वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२ होते हैं।

कुम्भ राशि–जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला, प्रभावशाली एवं मिलनसार व्यक्ति होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए–नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटे। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश–विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वाकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न–बाधाओं व कठिनाईयों के बाद ही जीवन में उच्च स्थिति, धन

पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ में यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील उच्च पदवी या धनी - व्यापारी होगा, परन्तु आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए, पुखराज** शुभ होगा। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, २८, ३६, ४२, ४५ होते हैं।

मीन राशि—मीन राशि का स्वामी गुरु है। मीन राशि में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरूचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मार्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्रं बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र व्यवसाय, ख़ाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८ वर्ष होते हैं।



ग्रहों के स्वरूपादि का संक्षिप्त परिचय

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने फलित ज्योतिष में नव ग्रहों के महत्त्व को ही विशेषतया स्वीकार किया है–

सूर्यः सोमो महीपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहु केतुश्चैते ग्रहाः स्मृताः ॥

अर्थात् १. सूर्य, २. चन्द्र, ३. मंगल, ४. बुध, ५. बृहस्पति, ६. शुक्र, ७. शनि राहु और केतु–ये नव (९) ग्रह माने जाते हैं।

परन्तु आधुनिक आचार्यों द्वारा अन्य तीन बृहद् ग्रहों के महत्त्व को स्वीकारते हुए नैपचून (वरुण) , हर्षचल (प्रजापति) और प्लूटो (कुबेर) ग्रहों को भी फलित ज्योतिष शास्त्र में सम्मिलित कर लिया है। इसका संकेत यह नहीं समझना चाहिए कि हमारे प्राचीन खगोल शास्त्रियों को इन ग्रहों के सम्बन्ध में ज्ञान नहीं था। जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र में तो अंगार, लोहिताक्ष, शनैश्चर, प्राधुनिक, कणक, शंख, हरि, सोम, पुष्पकेतु आदि ८८ ग्रहों के नाम गिनाएं हैं। परन्तु फिलहाल हम प्रचलित १२ ग्रहों के सम्बन्ध में ही चर्चा करेंगे। किंवा, पृथ्वी के चन्द्रमा की भान्ति उपरोक्त अन्य ग्रहों के भी अपने अलग–अलग चन्द्रमा हैं जिन्हें उपग्रह कहा जाता है। परन्तु फलित में उनको विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है।

जैसा कि पुस्तक के आरम्भ में स्पष्ट किया गया है कि आकाश मण्डलीय क्रान्तिवृत्त में पृथ्वी, मंगल, बुध, शुक्रादि समस्त ग्रह सूर्य के गिर्द अण्डाकार वृत्त में अपनी–अपनी गति अनुसार पश्चिम से पूर्व की ओर भ्रमण रहे हैं। जबकि राशि चक्र (Zodiac) जो कि स्थिर प्रायः है, हमें पूर्व से पश्चिम की घूमता दिखाई देता है। इसी कारण मेष वृषादि राशियां हमें पूर्वोदित होती दिखाई देती हैं। तथा किसी जातक के जन्म कालीन अथवा विशेष घटना कालिक जिस राशि का उदय पूर्वीय क्षितिज में हुआ हो, वही लग्न राशि कहलाती है।

राशियों की भान्ति, उपरोक्त सभी ग्रहजीव एवं प्राणी मात्र के आकार, व्यवहार, सुख–दुखादि सम्वेदनाओं, बाह्य एवं आन्तरिक प्रकृति तथा वर्तमान एवं भविष्य के फलादेश को प्रभावित करते हैं। इसका विस्तृत विवेचन हम प्रारम्भिक अध्याय में लिख चुके हैं।

सूर्यादि ग्रहों का संक्षिप्त वर्णन

सूर्य—सूर्य स्थावर—जगंमादि समस्त विश्व की आत्मा है **(सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च)** सूर्योपनिषद् के अनुसार सूर्य देव से ही सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति होती है, पालन होता है, एवं उन्हीं में विलय हो जाता है। सौर मण्डल में सूर्य देव से ही सम्पूर्ण जगत को तेज, बल, शक्ति एवं जीवन प्राप्त हो रहा है। अतएव सूर्य देव को सब ग्रहों का राजा, अधिष्ठाता, और जगत् का पिता भी कहते हैं, क्योंकि सूर्य ने अपने प्रकाश द्वारा पृथ्वी, स्वर्ग तथा अन्तरिक्ष सभी को व्याप्त कर रखा है।

सूर्य सदैव मार्गी तथा उदित रहने वाला ग्रह है। पृथ्वी का अपनी धुरी में घूमते रहने के कारण सूर्य कहीं उदित और कहीं अस्त हुआ लगता है। सूर्य अत्यन्त दैदिप्यमान तारा है, जो कभी अस्त नहीं होता। वास्तव में पृथ्वी की स्वयं की दैनिक एवं वार्षिक गति के कारण ही दिन—रात एवं ऋतुओं मे परिवर्तन होते रहते हैं। पृथ्वी अपनी वार्षिक गति से ३६५ दिन, ६ घण्टे ९$^{१}/_{६}$ मिन्टों में सूर्य का परिभ्रमण करती है। परन्तु ज्योतिष शास्त्र में गणितीय सुविधा के लिए पृथ्वी को केन्द्र तथा सूर्य को परिभ्रमण करने वाला मान लेते हैं। पुस्तक के आरम्भ में सौर मण्डल के वर्णन में इसका उल्लेख किया गया है।

सूर्य के अन्य नाम—हेलिः, तपन, दिनकर, भानु, भास्कर, दिवाकर, पूषा, अर्क, अंशुमान, अरुण, सविता, प्रभाकर, इत्यादि अन्य नामों से भी सूर्य को अभिहित किया जाता है।

कारकत्वादि का विचार—फलित ज्योतिष में सूर्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।निसर्ग—बल में सब ग्रहों से बलवान् व पराक्रमी ग्रह है।इसे आत्मा, पिता, नेत्र, पराक्रम, तेज़, माणक, राजा, प्रताप, शासनादि कार्यों का विशेष कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त सूर्य से शारीरिक गठन, शाक्ति, बड़ा भाई, वैद्यक, शौर्य, उच्च वर्ग, प्रतिष्ठा, ग्रीष्म ऋतु, सोना, ताम्र शरीर सुखादि का विचार भी होता है।

ज्योतिषीय—विशेषता—इसकी जाति क्षत्रिय, गोल मुख चतुरस्र (चौकोर) देह, मधु के समान पीले नेत्र, पित्त प्रकृति, सत्त्व गुण प्रधान एवं पुरुष संज्ञक तथा स्वल्प केश, रक्त एवं ताम्र वर्ण, अग्नि तत्त्व प्रधान तथा पूर्व दिशा का स्वामी और दिवस बली है। शरीर के ऊपरी अवयवों जैसे मस्तिष्क, नेत्र, कण्ठ तथा मेरुदण्ड, अस्थियों, रक्तादि का विचार भी सूर्य से किया जाता है। सूर्य की स्वराशि सिंह है। मेष राशि के १० अंश पर परमोच्च एवं तुला राशि १० अंश पर परमनीच होता है तथा सिंह के २० अंश तक मूल—त्रिकोण होता है। सूर्य मकर से मिथुन राशि पर्यन्त चेष्टाबली कहलाता है तथा सूर्य द्वारा एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश काल को ही संक्रांति कहते हैं। सूर्य एक राशि में

लगभग ३० दिन संचार करता है। १, ९, १० वें भावों का कारक भी सूर्य होता है। इसका प्रिय रत्न मानक (Ruby) है।

चन्द्रमा (Moon) चन्द्रमा मनसो जातः कहकर वेदों में चन्द्रमा को मन (अन्तः करण) का प्रतीक माना गया है। ज्योतिष शास्त्र में सूर्य के पश्चात् सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रह है। चन्द्रमा की संचार गत्युसार ही नक्षत्रों–तिथियों का निर्धारण किया जाता है। चन्द्रमा की संचार गति सब ग्रहों से अधिक एवं तीव्र है। यह एक राशि को लगभग सवा दो दिनों में पूरा कर लेता है। मन के संकल्प–विकल्प का प्रतिनिधित्व भी चन्द्रमा ही करता है। इसकी आकृति गोल, सुन्दर नेत्र, वात–कफ एवं चंचल प्रकृति, श्वेत वर्ण, वैश्य जाति, जलीय तत्व, मधुर वाणी, वायव्य (पश्चिमोत्तर) दिशा का स्वामी है। यह सत्वगुण प्रधान, स्त्री ग्रह, सरीसृप (कीट) आकृति, रात्रिबली एवं वर्षाऋतु का प्रतिनिधी है। चन्द्रमा कर्क राशि का स्वामी, वृष राशि के ३ अंश पर उच्च का, शेष २७ अंश मूल–त्रिकोण तथा वृश्चिक के ३° अंश पर नीचराशिस्थ होता है।

कारकत्व–चन्द्रमा मन, बुद्धि, माता और धनादि का कारक होता है। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से स्त्री–सुख, सौन्दर्य, ज्योतिष विद्या में रुचि, यात्रा, सम्पत्ति, राज्य–कृपा, चावल, लवण, श्वेत, वस्त्रादि का विचार भी चन्द्रमा से किया जाता है। यह चतुर्थ भाव का कारक है। पूर्ण चन्द्रमा शुभ एवं बली तथा क्षीण चन्द्रमा को पापग्रह एवं निर्बली माना जाता है। इसकी धातु चांदी व रत्न श्वेत मोती है। अशुभ होने पर नेत्र रोग, मस्तिष्क, उन्माद, मूत्र कृच्छ, व्यर्थ भ्रमण, स्त्री जन्य रोग, उदर एवं कैलशियम सम्बन्धी रोगों का विचार चन्द्रमा से किया जाता है। चन्द्रमा के अन्य नाम सोम, शीत रश्मि, इन्दु, उड्डुपति, मृगांकादि हैं। चन्द्रमा अशुभ ग्रह के योग से जातक चंचल, उतावला, स्त्रीलोलुप, स्वार्थी, विलासी एवं अस्थिर मन वाला होता है। अशुभ चन्द्रमा के लिए श्वेत मोती अथवा चन्द्रकान्त मणि का प्रयोग किया जाता है।

मंगल (Mars) यह सत्व बल, धैर्य और पराक्रम का प्रतीक माना जाता है। यह पुरुष ग्रह, रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, अग्नि तत्व वाला, तथा पित्त प्रकृति का है। यह तमोगुणी, युवावस्था वाला, साहसी, क्षीण कटि, अति चपल, उग्र स्वभाव, क्षत्रिय जाति रात्रि बली एवं पापग्रह माना जाता है। इसकी आकृति चतुष्कोण, मध्यमाकार एवं पुष्ट अंग वाली है। मंगल मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मकर राशि के २८ अंश पर परमोच्च होता है तथा कर्क राशि के २८° अंश पर नीचराशिस्थ होता है। मंगल पराक्रम, लघुभ्राता, भूमि, सेना, शत्रु आदि का विशेष कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त साहस, धैर्य, सेनापति, भाई बहन, धातु विद्या, रक्त पात, सामर्थ्य, क्रोध, पित्त विकार, आप्रेशन, पुत्र, संतान, ताम्र आदि का विचार भी मंगल से किया जाता है। अशुभ

होने पर पित्त कारक, शस्त्राघात, अग्निभय, ज्वर, रक्त विकार, चोट, व्रण दुर्घटनादि रोगों का भय होता है। इसका प्रभाव २८ से ३२ वर्ष की अवस्था तक विशेष तौर पर होता है। यह एक राशि में प्रायः ४५ दिन तक रहता है। मंगल को भूमिपुत्र, भौम, अंगारक, रुधिर आदि भी कहते हैं। यह ३, ६ भावों का कारक होता है। दशम–भाव में यह दिक्बली होता है। मंगल के प्रभाव को बढ़ाने लिए मूंगा (coral) नग का प्रयोग किया जाता है।

बुध (Mercury)–ग्रहमण्डल में यह ग्रह युवा राजकुमार का प्रतीक है तथा वाणी, बुद्धि, विद्या, मित्र सुख, मातुल (मामादि) का कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यवसाय, बन्धुसौख्य, लेखन–वाक्, कला–कौशल, गणित, अध्यापन, सम्पादन, प्रकाशन, मौसी, चित्र, क्रीड़ा, चाची, मामी आदि का विचार भी बुध से किया जाता है। इसकी गोलाकृति, प्रसन्न वदन एवं कृश शरीर वात–पित कफ–त्रिधातु, प्रकृति, अनेकार्थ वाक्य बोलने वाला, दूर्वा की भान्ति हरित वर्ण का, स्पष्ट वक्ता, रजोगुणी, पृथ्वी तत्व, जाति से शूद्र एवं नपुंसक ग्रह, उत्तर दिशा का स्वामी है। यह शरद् ऋतु एवं सुगन्धित तेल, हाथी दांत, कांस्य धातु, का प्रतिनिधित्व करता है। बुध कन्या एवं मिथुन राशियों का स्वामी है। कन्या के २० अंश तक मूलत्रिकोण होता है। यह एक राशि को लगभग १८ दिनों में पूरा कर लेता है। कन्या के १५° पर उच्च एवं मीन के १५ अंश पर नीच कहलाता है।

बुध यदि शुभ ग्रहों के साथ हो तो शुभ माना जाता है। पाप ग्रह के साथ हों अथवा अस्त हो, तो पाप ग्रह माना जाता है। चतुर्थ भाव का कारक है। इसको इन्द्र पुत्र, ज्ञ, सौम्य, बोधन आदि भी कहते हैं। इसके अधिदेवता भगवान् विष्णु है।

शुभ नग पन्ना(Emareld) है।

गुरु (Jupiter)–यह सत्व गुणी पुरुष जाति, ज्ञान, बुद्धि, पुत्रादि का कारक ग्रह है। यह दीर्घ और स्थूल शरीर भूरे एवं पिंगल वर्ण केश, आकाश तत्व वाला, पूर्वोत्तर (ईशान) दिशा का स्वामी है। इसकी कफ–प्रकृति, ब्राह्मण जाति, धर्म एवं नीति का महान् पण्डित, बृहद् उदर, पीत वर्ण, परमार्थी ग्रह है। इसका अधिदेवता इन्द्र है। इसको मीठे रस, एवं हेमन्त ऋतु का अधिष्ठाता माना जाता है। यह धन और मीन राशि का स्वामी तथा कर्क राशि के ५ अंश में उच्च एवं मकर राशि के ५ अंश पर नीचस्थ माना जाता है। गुरु एक राशि को लगभग १३ महीनों में पूरा कर लेता है। वक्रातिचार गति की स्थिति में राशि संचार की अवधि में न्यूनाधिकता भी आ जाती है। गुरु से पुत्र, सन्तान, सम्पत्ति, ज्ञान, आध्यात्मिक एवं पारलौकिक सुख, विवेक, बुद्धि न्याय, पति सुख, धर्म, शास्त्र, विद्या, सुवर्ण, उदारता, बड़े भाई, राज्य सम्मान आदि का भी विचार किया जाता है। इसे २, ५,९ एवं ११ वें भाव का कारक माना जाता है। गुरु १६,२२ एवं ४० वें वर्ष की अवस्था में विशेष फल प्रदान करता है। इसका प्रिय नग पुखराज है।

शुक्र (Venus)–यह ग्रह प्रेम, सौन्दर्य एवं आकर्षण का प्रतीक माना जाता है। यह शुभ ग्रह शुभ्र वर्ण, जलीय तत्व, आग्नेय (दक्षिण–पूर्व) दिशा का स्वामी है। इसका

शरीर आकर्षक, सुन्दर नेत्र, श्वेत वर्ण, घुंघराले श्याम केश, मध्यम आकार, रजोगुणी, मृदु स्वभाव, किशोर आयु, ब्राह्मण जाति एवं स्त्री ग्रह है। यह वृष एवं तुला राशि का स्वामी तथा मीन में २७ अंश पर उच्च का और कन्या में २७ अंश पर नीच राशि का माना जाता है।

शुक्र स्त्री, वाहन, काम–सुख, वीर्य, आभूषण, चाँदी आदि का कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त शुक्र से कवित्व, संगीत–गायन, चित्रकला सौन्दर्य श्रृंगार विषय वासना, कला, विवाह–सुख, व्यापार, अम्ल रस, व्यभिचार, वाहन–सुख, सुगन्धित द्रव्य, शयन गृह, मैथुन, वशीकरण, श्वेत वस्त्र आदि विषयों का विचार भी शुक्र से किया जाता है। इससे मूत्राशय, शूगर एवं मैथुन वीर्य सम्बन्धी रोगों का विचार भी किया जाता है। यह सातवें भाव का कारक तथा छठे भाव में निष्फली होता है। एक राशि में लगभग २८ दिन रहता है। इसका प्रिय नग हीरा एवं धातु चांदी है।

शनि (Saturn)–इसको भानुपुत्र, कोण, आर्कि, असित, मन्द भी कहते हैं। इसका लम्बा किन्तु दुबला शरीर, स्थूल दांत,रूक्षकेश, सुन्दर कातर नेत्र, कफ एवं वात प्रकृति तमोगुणी, कृष्ण वर्ण का, आलस्य युक्त, अन्त्य जाति, चतुष्पद रूपवाला नपुसंक ग्रह माना जाता है। यह पश्चिम दिशा एवं शिशिर ऋतु का स्वामी, वायु–तत्व प्रधान पापी ग्रह माना जाता है।

शनि की मकर व कुम्भ स्वराशि, कुम्भ मूलत्रिकोण,तथा तुला के २० अंश पर उच्च राशि है। मेष राशि के २०° पर में नीच का होता है। रात्रि में, कृष्ण पक्ष में एवं राश्यन्त में वक्री शनि बलवान माना जाता है। इसी भान्ति स्वद्रेष्काण, एवं दक्षिणायन्त व सप्तम भाव में भी बली माना जाता है। बुध–शुक्र शनि के मित्र हैं, गुरु सम और सूर्य, चन्द्र एवं मंगल ग्रह शत्रु होते हैं।

शनि को रोग, आयु, मृत्यु, सेवक, व्यापार, लोहा, दुख, विपत्ति का विशेष कारक माना जाता है। इसके अतिरिक्त शनि से कुटिलता, लोभ, मोह, राजदण्ड, संन्यास गूढ़ रहस्य, उद्योग हानि, नौकर–चाकर, पराधीनता, दुर्घटना, विश्वासघात, कानून, श्रम, नपुंसकता, जुआ, मदिरा, जल, कृष्ण वस्त्र, नीलम, शल्य चिकित्सा, शूल रोग, निराशा लोहे द्वारा धन लाभ, दारिद्रय आदि का विचार भी किया जाता है। नमक, उड़द, तैल, महिषी (भैंस), तिल,कृष्ण वस्त्र, मशीनरी, कलपुर्जे श्रमिक, भूमि सम्बन्धी कार्य ऋण, कर्मचारी वर्ग आदि इसी के क्षेत्र में आते हैं। शनि का विशेष फल प्रायः ३६ से ४२ वें वर्ष मिलता है। शनि सम्बन्धी कार्यों से लाभान्वित होने के लिए पंचधातु की अंगूठी में नीलम नग का प्रयोग किया जाता है। शनि लगभग अढ़ाई वर्षों में एक राशि का संक्रमण करता है।

राहु (Dragon's head)—राहु को फणि, सर्प, तमो ग्रह भी कहते हैं। यह ग्रह तमोगुणी,मलिन एवं कृष्ण वर्ण का, दक्षिण पश्चिम दिशा का स्वामी, वायु तत्व प्रधान पाप ग्रह माना जाता है। इसकी स्वराशि कन्या, उच्च राशि मिथुन तथा धनु नीच राशि मानी जाती है। यह दीर्घसूत्री किन्तु तीक्ष्ण बुद्धि ग्रह है। यह सर्प, लाटरी, सट्टा, अकस्मात् धन प्राप्ति, गुप्त धन एवं पितामह का विशेष कारक हैं। इसके अतिरिक्त अन्वेषण, माया, वैधव्य, विज्ञान, शराब, स्नायुमण्डल जासूसी, आकस्मिक घटना, भूतबाधा, छत्रभंग, तस्करी, नीलवस्त्र, तिल, तैल, कम्बलादि विषयों का विचार राहु से किया जाता है। इसके अतिरिक्त मशीनरी, फोटोग्राफी, चित्रकारी तथा मुद्रण सम्बन्धी विषयों का भी राहु से सम्बन्ध है। राहु का विशेष प्रभाव ४२ से ४८ वर्ष की अवस्था में होता है। शुभ ग्रह के साथ रहने पर उसके शुभत्व को कम करता है। संतान पक्ष में राहु विघ्नकारी हो तो कम्बल व सप्तधान्य का दान या कन्यादान करना चाहिए। राहु के लिए प्रिय नग गोमेध है।

केतु (Drgon's Tale)—इसका मलिन रूप व मिश्रित वर्ण है। यह तमोगुणी, वर्णसंकर जाति का अशुभ ग्रह है। यह गुप्त शक्ति गुप्त विद्या, कठिन कार्य, घाव, दुख—पीड़ा एवं नाना का कारक ग्रह है। इसके प्रभावगत जातक, गुप्त तंत्रादि विद्या में निपुण, मंत्र, तत्वादि ज्ञान से युक्त, शैव भक्त, होता है। इसके अतिरिक्त केतु से विष, ज्वर, कलह, विप्लव, नाना, नानी, कम्बल, सप्तधान्य, शस्त्रादि का विचार भी किया जाता है। स्नायु सम्बन्धी, चर्म रोग, शूल, व्रण पांव एवं गुप्त षडयंत्रादि का विचार भी केतु से किया जाता है। इसकी स्वराशि मीन, उच्चराशि धनु या वृश्चिक है। केतु का विशेष फल २७ से ५४ वर्ष तक होता है। इसकी शान्ति के लिए लहसनियां नग धारण करना तथा सतनाजा डालना शुभ रहता है। जन्म कुणडली में केतु राहु से सदैव १८० अंश की स्थिति पर अर्थात् सातवें भाव में रहता है।

यूरेनस या हर्षचल (Uranus)

आधुनिक ज्योतिर्विशारद इसे सौरमण्डल के अनेक महत्वपूर्ण ग्रहों में से एक मानते हैं। इसकी स्वराशि कुम्भ, उच्च राशि वृश्चिक तथा नीच राशि वृष मानी जाती है। यह ग्रह वायु तत्व राशियों—जैसे मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशियों पर उत्तम फल प्रदायक होता है। यह मस्तिष्क एवं नाड़ीमंडल पर विशेष प्रभावकारी शीतल एवं परिवर्तनशील ग्रह है। यदि जन्म कुण्डली में यह शुभ ग्रहों द्वारा वीक्षित एवं शुभ भावस्थ हो, तो जातक को मौलिक बुद्धि एवं आकस्मिक लाभ प्रदान करता है। मेष, मिथुन, कन्या, धन, एवं कुम्भ राशि का यूरेनस जातक को अन्वेषक, बुद्धिमान, स्वाभिमानी, धनी एवं महत्वकांक्षी बनाता है।

यह ग्रह शनि के पश्चात् आता है। यह ग्रह साढ़े चार मील प्रति सैकिंड की गति से सूर्य की परिक्रमा पूर्ण करने में लगभग ८४ वर्ष लेता है। एक राशि को यह ग्रह लगभग

७ वर्ष में तय करता है। इसकी खोज १३ मार्च १७८१ में पाश्चात्य खगोल वेत्ता विलियम हर्शल ने की थी। भारतीय विद्वान इसका प्राचीन नाम प्रजापति नाम उल्लिखित करते हैं, फलित दृष्टि से यह ग्रह आकस्मिक एवं चामत्कारिक घटनाओं एवं अनुसंधान का कारक हैं। यदि कुण्डली में अशुभ हो, तो अनेक प्रकार के कष्ट, स्त्री सम्बन्धी दुख, व्यर्थ भ्रमण एवं भ्रातृ सुख में न्यूनता लाता है।

नेपचून (Naptune)–यह जल तत्वप्रधान अस्थिर ग्रह है, इसको वरुण भी कहते हैं। बार–बार विचार बदलना, विश्वास करने अयोग्य अस्थिरता आदि गुण प्रकट करता है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि में यह बली माना जाता है तथा इन्हीं राशियों में श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। यदि कुण्डली में बुध, शुक्र एवं चन्द्र आदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो व्यक्ति में तीव्र बुद्धि, अर्न्तदृष्टि, काव्य गायन, या दैवी प्रेरणा एवं आध्यात्मिक अभिरुचियों का जागरण होता है। यह ग्रह दुष्ट स्थानों में अथवा नीच ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य कुविचारों से ग्रसित लोभी, क्रोधी एवं व्यसनी होता है। ऐसा व्यक्ति उपद्रवी, धूर्त, एवं जादू टोना में विश्वास रखता है। यह लगभग १४ वर्ष एक राशि में रहता है। तथा १६४ वर्षों में १२ राशियों का परिभ्रमण पूरा करता है। मेष, मिथुन, वृश्चिक, धन, कुम्भ एवं मीन राशि में शुभ फल दायक होता है। क्षीण चन्द्र एवं अन्य राशियों में अशुभ फल प्रदान करता है।

प्लूटो (Pluto)–शनि ग्रह जितने समय में लगभग १० राशियां भोगता है, उतने समय में यह ग्रह एक ही राशि भोग पाता है। विभिन्न राशियों में इसके फलित का अभी विद्वानों द्वारा अनुसंधान किया जा रहा है। इसकी कक्षा नैपचून से ऊपर है। अतः यह पृथ्वी से सर्वाधिक दूरवर्ती ग्रह है। यह ग्रह एक राशि को भोगने में लगभग २६ वर्ष का समय लेता है। इस प्रकार सम्पूर्ण भचक्र को भोगने में इसे ६१२ वर्ष लगते हैं। पाश्चात्य ज्योतिषियों के अनुसार इस ग्रह का गुण–धर्म–स्वभाव मंगल ग्रह के अनुरूप माना जाता है। अतः यह ग्रह मेष वृश्चिक राशियों पर शुभ फलदायक होगा। प्लूटो भीतरी दुनियां अथवा पाताल लोक का स्वामी माना जाता है। इसी कारण भारतीय ज्योतिषियों ने इसका नाम 'यम' रखा है।

ग्रहों के विषय में कुछ वैज्ञानिक तथ्य

सूर्य–सब ग्रहों में मूर्धन्य परम तेजस्वी ग्रह हैं। पृथ्वी से इसकी दूरी ९,३० करोड़ मील (अर्थात १५ करोड़ किलोमीटर) है तथा इसका व्यास १४ लाख किलोमीटर है। पृथ्वी से १३ लाख गुणा बढ़ा है। राशि चक्र का परिभ्रमण ३६५ दिन ६ घण्टे, १२ मिनट व ४८ सैंकिडों में कर लेता है। दैनिक मध्यम गति ५९ कला, ८ विकला है।

चन्द्रमा–पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी २, ३८, ८४० मील लगभग (४ लाख कि.मी.) है। यह पृथ्वी की परिक्रमा २९ दिन, १२घण्टे, ४४ मिनट और ३ सै. में पूरी करता है। चन्द्रमा का व्यास ३४५६ कि. मी. (2160 मील) है। वास्तव में चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है, जो पृथ्वी की परिक्रमा करता है। अण्डाकार परिक्रमा होने से पृथ्वी से दूरी में परिवर्तन आता रहता है। समीप की स्थिति की शीघ्रोच्च (Perigee) तथा दूर की स्थिति को मन्दोच्च (Apogee) कहते हैं। यह ग्रह जल तत्व प्रधान है।

मंगल–पृथ्वी से इसकी दूरी ५ करोड़ ४२ लाख ८५ हजार ६०० कि.मी. (लगभग ३ करोड़ ३९ लाख, १६ हजार मील) है। यह अपनी धुरी पर २४ घण्टे, ३७ मिनट, २३ सै. में घूम जाता है। इसका व्यास ४२०० मील है। यह १५ मील प्रति सै. की गति से ६८७ दिनों में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। इसके २ उपग्रह है। १५–१६ वर्षों बाद पृथ्वी और मंगल सर्वाधिक निकट हो जाते हैं ।

बुध (Merchrey)–बुध सभी ग्रहों में सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास ४८४० कि. मी. (लगभग ३०३० मील) है। पृथ्वी से ९ करोड़,२८ लाख किलोमीटर है। तीव्र गति के कारण यह सूर्य की परिक्रमा ८८ दिन में पूरी कर लेता है। यह ग्रह प्रायः सूर्योदय से लगभग २ घण्टे पहिले या सूर्यास्त के २ घण्टे बाद तक ही दिखाई देता है। अपनी तीव्र गति के कारण कभी पूर्व में तो कभी पश्चिम में दिखाई देता है। यह सूर्य से अधिक से अधिक २८ अंश तक दूर रहता है। वक्री होकर पुनः अल्पांश के अन्तर में आ जाता है।

बृहस्पति (Jupiter)–यह अन्य सभी ग्रहों में सबसे बड़ा है। इसका व्यास १,४२७०० कि. मी. है। जो हमारी पृथ्वी से लगभग १० गुणा है। यह पृथ्वी से लगभग ४८ करोड़, ५० लाख मील दूर है। यह लगभग ११ वर्षों, १० महीनों, १६ दिनों में राशि चक्र का भ्रमण पूरा कर लेता है। यह अपनी धुरि पर ९ घंटे, ५३ मिंटों में घूम जाता है। विंशोतरी मतानुसार इस ग्रह की महादशा १६ वर्ष होती है। इसके उपग्रहों (चन्द्रमा) की संख्या लगभग १५ मानी जाती है।

शुक्र (Venus)–बुध के बाद दूसरा लघु ग्रह है। यह अन्य ग्रहों की अपेक्षा सबसे अधिक चमकीला दिखाई देता है। इसका व्यास १२३२० कि.मी. (लगभग ७७०० मील) है। जो कि पृथ्वी के व्यास के लगभग बराबर है। पृथ्वी से इसकी दूरी ३ करोड़ ८५ लाख कि.मी. (२ करोड़, ४६ लाख मील) है। जबकि सूर्य से ७ करोड़ ७२ लाख मील है। यह लगभग २२५ दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है। इसका कोई उपग्रह नहीं। शुक्र की विंशोत्तरी महादशा २० वर्ष की होती है।

शनि (Saturn)–यह ग्रह पृथ्वी से लगभग ८९ करोड़ मील दूरी पर है। इसका व्यास १२०८०० कि. मी. है अर्थात् पृथ्वी के व्यास से ९.५ गुणा बड़ा है। यह अपनी

धुरी पर १० घण्टे, १४ मिनट में घूम जाता है। यह ग्रह सूर्य की परिक्रमा २९.५ वर्षों में पूरी करता है। एक राशि पर २.५ वर्ष रहता है तथा २९ वर्ष, ५ मास, १७ दिन एवं ५ घण्टों में सम्पूर्ण राशि चक्रका परिभ्रमण कर लेता है। दूरबीन से देखने में इसके चारों और विचित्र वलय (Rings) दिखाई हैं। इसके ९ उपग्रह (चन्द्रमा) हैं। विंशोत्तरी महादशा में इसके दशा वर्ष १९ होते हैं।

यूरेनस (Uranus)—वेदों में इसका नाम अर्यमा उल्लिखित है। जबकि आजकल हिन्दी में अरूंण कहते हैं। यह सूर्य से २८५, २८, ००००० कि. मी. दूर है। इसका व्यास ४९८८० किलोमीटर है। यह अपनी धुरी पर १० घण्टे, ४२ मिनट में घूमता है तथा सूर्य की परिक्रमा ८४ वर्षों में पूर्ण करता है। इसके ६ उपग्रह हैं।

नैपचून (Neptune) (वरुण)—इसका व्यास ४४३२० किलोमीटर है तथा यह सूर्य से लगभग ४ अरब ४९ करोड़ किलोमीटर दूर है। इसका व्यास ५०२०० किलोमीटर है। यह १६४०८ वर्षों में सूर्य का परिक्रमण करता है। इसके २ उपग्रह हैं। अपनी धुरी पर २३ घण्टों में घूम जाता है।

प्लूटो (Pluto)—इसको कुबेर या यम ग्रह भी कहते हैं। यह ग्रह सूर्य से ५९१ करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है तथा सूर्य की परिक्रमा में इसे लगभग २५० वर्ष लगते हैं। अपनी धुरी पर ६ दिन ९ घण्टे में घूम जाता है। इसका व्यास ५९०० किलोमीटर हैं।

ग्रहों के विषय में कुछ अन्य जानकारी

आगे ग्रहों के सम्बन्ध में कुछ अन्य विशिष्ट जानकारी लिख रहे हैं। ज्योतिष के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को इन्हें ध्यानस्थ एवं कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। कुण्डली अध्ययन एवं फलित ज्योतिष में इनका विशेष उपयोग होता है।

ग्रहों का शुभत्व अशुभत्व

सूर्य, मंगल व शनि क्रूर ग्रह कहलाते हैं। चन्द्रमा कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से अमा. तक अशुभ, शुक्ल द्वितीया से चन्द्र शुभ होता है। गुरु–शुक्र शुभ ग्रह एवं बुध शुभ ग्रहों के साथ शुभफली होता है। तथा राहु–केतु पापी ग्रह कहलाते हैं।

ग्रहों का राशि स्वामित्व

मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल होता है। वृष और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह राशि का सूर्य, धनु और मीन का बृहस्पति (गुरु), मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि है। राहु को कन्या का तथा केतु को मीन राशि का स्वामी माना जाता है।

राशियों के स्वामी ग्रह

स्वा. ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	कर्क	मेष बृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुंभ	मिथु. कन्या	मीन कुम्भ

ग्रहों का राश्यंशों पर उच्च–नीचादि

द्वादश राशियों में प्रत्येक राशि ३० अंशों की होती है तथा प्रत्येक ग्रह राशियों के विशेष अंशों पर उच्च, नीच, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण होता है। फलित ज्योतिष में इनका विशेष उपयोग होता है। वह अलग–अलग राश्यंशों के अनुसार ही जातक को शभाशुभ फल प्रदान करता है। सूर्य मेष के १० अंश पर, चन्द्र वृष के ३ अंश पर, मंगल मकर के २८ अंश पर, बुध कन्या के १५ अंश,गुरु कर्क के ५ अंश, शुक्र मीन के २७ अंश एवं शनि तुला के २० अंश पर परमोच्च होता है। इसके विपरीत सातवीं राशि के उन्हीं अंशों पर परमनीच होता है।

ग्रहों की मूलत्रिकोणादि संज्ञा—मूलत्रिकोण राशियों में ग्रहों की अधिकांशतः स्वगृही राशियां ही शामिल हैं परन्तु उनके अंशों में भिन्नता पाई जाती है। स्पष्टता के लिए निम्नलिखित चक्र देखें–

ग्रहों का परमोच्च–नीचांश एवं मूलत्रिकोणांश चक्र

ग्रह	राशि–उच्चांश	नीच राश्यंश	मूलत्रिकोण राश्यंश
सूर्य	मेष १०°	तुला १०°	सिंह २०° अंश तक (प्रथम)
चन्द्र	वृष ३ (अंश)	वृश्चिक ३°	वृष २७° अंश (अंतिम)
मंगल	मकर २८°	कर्क २८°	मेष १२° अंश (प्रथम)
बुध	कन्या १५°	मीन १५°	कन्या १५ से २०° तक
गुरु	कर्क ५	मकर ५°	५ धनु १० अश (पहिले)
शुक्र	मीन २७°	कन्या २७°	तुला १५ अंश (पहिले)
शनि	तुला २०°	मेष २०°	कुम्भ २० अंश (पहिले)

सूर्य सिंह राशि में २० अंश तक मूल त्रिकोणी, किंतु बाद के १० अंश पर स्वगृही कहलाता है। चन्द्रमा वृष के ३ अंश पर उच्च, शेष २७ अंश तक मूलत्रिकोणी । मंगल मेष के १२ अंश तक मूलत्रिकोणी, बाद के १८ अंश स्वगृही। बुध कन्या के १५ से २० अंश तक मूल त्रिकोण तथा अंत के १० अंश पर स्वगृही। गुरु धन के प्रथम १० अंश तक मूल त्रिकोणी बाद के २० अंशों पर स्वगृही। शुक्र तुला के पहिले १५ अंश मूल त्रिकोणी बाद के १५ अंश स्वगृही और शनि कुम्भ के पहिले २० अंश मूलत्रिकोण एवं बाद के १० अंश पर स्वगृही कहलाता है।

राहु कुम्भ राशि का मूलत्रिकोणी, मिथुन का उच्च तथा कन्या राशि का स्वगृही होता है तथा केतु सिंह राशि का मूलत्रिकोणी धनु का उच्च एवं मीन राशि का स्वगृही होता है।

मतान्तर से राहु को वृष राशि में उच्चस्थ मानते हैं।

राहु–केतु–ये तमोगुणी ग्रह।इनका कोई बिम्ब न होने के कारण दूसरों का प्रभाव ग्रहण कर शुभाशुभ फल देते हैं। जिस भाव या भावेश के साथ हों, प्रायः उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल प्रदान करते हैं।

ग्रहों का स्वाभाविक (नैसार्गिक) मैत्री सम्बन्ध

जन्म कुण्डली में ग्रहों का परस्पर मित्र एवं शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध होना विशेष महत्त्व रखता है। यदि कोई शुभ ग्रह किसी अन्य मित्र ग्रह के साथ शुभ भाव में स्थित हो, तो उस भाव एवं ग्रह सम्बन्धी सुख की वृद्धि होती है। शत्रु ग्रहों के साथ होने से सम्बन्धित ग्रहफल की हानि होती है। सम होने की स्थिति में बली ग्रह का फल होता है।

ग्रहों का स्वाभाविक मैत्री–शत्रु चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंग गुरु	सूर्य, बुध	सू. च. गुरु	सूर्य शु.	सूर्यचन्द्र मंगल	बुध, शनि	शुक्र बुध	श.शु. बु.	बुध, गुरु
सम	बुध	मं. गु. शु. श	शु.श.	मं.गु. शनि	शनि	मं. गु.	गुरु	गुरु, के.	रा.मं. शुक्र
शत्रु	शु.श.	००	बु. रा.	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सू. मं. च.	सू. च. मं.	सू. च. श.

ग्रहों के तात्कालिक मित्र–शत्रु : ग्रहों के स्वाभाविक (नैसर्गिक) मैत्री आदि के अतिरिक्त तात्कालिक मैत्री शत्रु भी होती है। जिसके आधार पर पंचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है। अर्थात् कुण्डली में सूक्ष्म रूप से ग्रहों में अधिमित्र, मित्र, अधिशत्रु, सामान्य शत्रु आदि का निर्धारण किया जाता है।

कुण्डली में जिस ग्रह का तात्का.–मित्रादि विचार करना हो, उससे द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, दशम, एकादश एवं द्वादश (२, ३, ४, १०, ११, १२) वें स्थान में जो ग्रह होते हैं, वे उसके तात्कालिक मित्र होते हैं। तथा किसी ग्रह विशेष से जो ग्रह प्रथम १ (उसी राशि में) ५वें, छठे, ७वें, ८ वें और ९ वें स्थान में स्थित होते हैं वह ग्रह उसके तात्कालिक शत्रु होते हैं।

उदाहरणार्थ दाईं ओर की कुण्डली में लग्नस्थ सूर्य से बाईं तरफ भावों को गिनने से दूसरे बुध, तीसरे राहु

७ बु.
६
५
८ रा.
सू. शु. मं.
४
३ शु.
९
१
१२ च.
२ के.
११ गु.
१

एवं दशम में शनि होने से सूर्य के बुध, राहु एवं शनि ग्रह तात्कालिक मित्र होंगे तथा अन्य ग्रह शुक्र, मंग पहिले (१), छठे गुरु, चन्द्र सातवें और केतु आठवें होने से तात्कालिक शत्रु ग्रह होंगे। इसी भान्ति अपने –अपने भाव (स्थान) से गणना आरम्भ करके सभी ग्रहों का तात्कालिक सम्बन्ध निम्न प्रकार से बनेगा।

ग्रहों का तात्कालिक मैत्री चक्र (उदाहरण)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	बु.श. रा.	के.श. बृ.	बु.रा. श.	रा.सू. श.मं.	च.के. रा.	बु.श. रा.	सू.शु.मं. च.के.	बु.बृ.श. सू.मं.शु.	श.च.बृ.
शत्रु	शु.बृ. च. म.के.	सू.शु. मं बु.रा.	सू.च. शु. बृ.के.	बृ.च. के.श.	श.सू. शु. मं.बु.	सू.मं. बृ.च.के	बु.रा.बृ.	च.के.	सू.शु.मं. रा.बु

पंचधा मैत्री चक्र—जो ग्रह नैसर्गिक और तात्कालिक दोनों प्रकार से मित्र हों वह अधिमित्र, जो नैसर्गिक में सम और तात्कालिक में मित्र हो, वह मित्र और जो नै. शत्रु और तात्कालिक मित्र हो, वह सम हो जाता है। जो नै. सम और ता. शत्रु हो वह शत्रु होता है और जो दोनों प्रकार से शत्रु हो वह अधि शत्रु होता है। उपरोक्त दोनों प्रकार के चक्रों (नै. तथा तात्कालिक) द्वारा पंचधा मैत्री चक्र इस प्रकार से बनेगा। दोनों मैत्री चक्रों का तुलनात्मक विश्लेषण करने के पश्चात् ही पंचधा मैत्री चक्र की रचना होती है। जिससे ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट एवं फलसूचक हो जाता है।

इस प्रकार स्थानवश शुभग्रहों में भी अशुभत्व और अशुभ ग्रहों में भी शुभत्व आ जाता है। अतः शुभ उच्च स्थान (अधिमित्रादि क्षेत्र) में अति शुभ और पाप ग्रह नीच स्थानों में अति अशुभ हो जाता है।

उपरोक्त नैसर्गिक एवं तत्कालिक ग्रह मैत्री चक्रों के आधार पर ग्रहों का अधिमित्रादि पंचधा चक्र इस प्रकार से बनेगा।

पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	बुध.	बृह.	शुक्र.	शनि	राहु	केतु
अधिमित्र	....	....	....	सू.शु.	चन्द्र	बु.श.	शुक्र.	श.शु.बु.	....
मित्र	बुध.	के.श.बृ.	शनि	मंगल	....	राहु	×	×	बृह.
सम	चं.मं.श. बृ.रा.	सू.बु.	बु.रा.सू. बृ.च.	....	मं. सू.	चन्द्र	बु.सू.मं. चन्द्र	सू.मं.	बु.च.मं.
शत्रु	××	मं.शु.रा.	शु.के.	बृ.श.	शनि	मं.बृ.	रा.बृ.	केतु	शु.रा.
अधिशत्रु	शु.के.	××	××	चन्द्र	बु.शु.	सूर्य	×	चन्द्र	सूर्य

ग्रहों का दृष्टि ज्ञान

फलित में ग्रहों की दृष्टि का विशेष प्रभाव होता है। कुण्डली में यदि किसी भाव या ग्रह पर किसी अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि होगी, तो उस भाव या ग्रह के शुभ फल में वृद्धि हो जाती है। प्रत्येक ग्रह अपने (प्रथम) से सप्तम भाव को सप्तम, अर्थात् पूर्ण दृष्टि से देखता है, तथा उसके फल में वृद्धि करता है तथा अपने स्थान से ३, १०वें स्थान (भाव) को एक पाद (चरण) दृष्टि से, ५–९वें भावों २ पाद (चरण) दृष्टि से, तथा ४, ८ स्थान को तीन पाद दृष्टि से देखता है।

इसके अतिरिक्त मंगल ४–८ स्थानों को, गुरु ५–९ स्थानों तथा शनि ३–१० स्थानों को विशेष दृष्टि से देखते हैं।

जो ग्रह किसी भाव को विशेष या पूर्ण दृष्टि से देखता है, तो उसको पूर्ण फल प्रदान करता है। एक पाद (चरण) या द्विपाद दृष्टि होने से ग्रह फल में भी न्यूनाधिकता हो जाती है।

ग्रहों का दृष्टि चक्र

नाम ग्रह	एक चरण $^1/_4$ दृष्टि भाव	दो चरण $^1/_2$ दृष्टि भाव	तीन चरण $^3/_4$ दृष्टि भाव	चार चरण पूर्ण दृष्टि भाव
सूर्य	३, १०	५, ९	४, ८	७
चन्द्र	३, १०	५, ९	४, ८	७
मंगल	३, १०	५, ९	०००	४, ७. ८
बुध	३, १०	५, ९	४, ८	७
गुरु	३, १०	०००	४, ८	५, ७, ९
शुक्र	३, १०	५, ९	४, ८	७
शनि	०००	५, ९	४, ८	३, ७, १०
राहु	३, ६	५, ९	४, ८	५, ७, ९
केतु	३, ६	५, ९	४, ८	५, ७, ९

ग्रह—गुण स्वभाव चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि स्वा.	सिंह	कर्क	मेष—वृश्चि.	मिथु.—कन्या	धन—मीन	वृष—तुला	मकर—कुम्भ	कन्या	मीन
उच्च रा.	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	२, ३	८, ९
नीच रा.	तुला	वृशि.	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	८, ९	२, ३
मूल. त्रि.	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	क्षिप्र	मृदु	दारुण	विक्षिप्त	तीक्ष्ण
स्त्री पुरुष	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	ब्राह्मण	वैश्य	शूद्र	शूद्र	शूद्र
रंग	ताम्र	श्वेत	रक्त	हरा	पीला	सफेद	नीलकृ.	धूम्र	धूम्र
तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.	जल	वायु	छाया	छाया
आत्मादि	आत्मा	मन	पराक्रम	वाणी	ज्ञान	काम स्त्री	दुख	विक्षोभ	पीड़ा
दिशा	पूर्व	(प.उ.)	दक्षिण	उत्तर	ईशान	दक्षि—पू	पश्चिम	प. दक्षि.	उत्तर
शरीर धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जा	त्वचा	चर्बी	वीर्य	स्नायु	वायु	चर्म
आकृति	चौकोर	गोल	चतुष्कोण	गोल	स्थूल	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्वि. स्व.	स्थिर	चर	स्थिर	चर	चर
पित्तादि	पित्त	वातश्ले	पित्त	त्रिधातु	कफ	वातकफ	वातश्ले	वायु	वायु
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	तिक्त
धातु	सुवर्ण	चांदी	ताम्र	कांस्य	सुवर्ण	चांदी	लोहा	लोहा	मिश्रित
क्रूरादि	क्रूर	शुभ	क्रूर	मिश्र	शुभ	शुभ	क्रूर	क्रूर	क्रूर
विद्या	राज्य	ज्योतिष	सैनिक	गणित	ज्ञान	संगीतादि	व्यापार	कटुता	तन्त्र
कारक	पिता	माता	भाई,पुत्र	बन्धुमित्र	संतान	स्त्री	अनुचर	दादा	नाना
कालबली	दिवस	रात्रि	रात्रि	सर्वकाल	दिवस	मध्यान्ह	रात्रि	रात्रि	दिन
शरीरांग	नेत्र	रक्त	गज्ञा	त्वचा	चर्बी	वीर्य	स्नायु	हड्डी	चर्म

ग्रहों का उदयास्त

ग्रहों का उदय—अस्त दो प्रकार का है।

(१) ग्रहों का दैनिक (क्षितिजीय). उदय—अस्त होना। ग्रहों का दैनिक उदयास्त पृथ्वी की परिक्रमण गति के कारण होता है।

(२) जब कोई ग्रह परिभ्रमण करता हुआ सूर्य के अत्यन्त निकट (अल्पांश अन्तर में) हो जाता है, तो वह अस्तंगत (लुप्त) हुआ माना जाता है। तथा वही ग्रह सूर्य से अत्यल्प अंशों के प्रभाव से निकल कर पुनः दिखाई देने लगता है, तो ग्रह उदित हुआ कहलाता है। मंगल, गुरु एवं शनि सदा पश्चिम में अस्त तथा पूर्व से उदित होते दिखाई देते है। जबकि बुध व शुक्र दोनों दिशाओं से उदित अथवा अस्त होते दिखाई देते हैं। ग्रहों के अस्त होने के सम्बन्ध में प्राचीन विद्वानों ने निम्नलिखित कालांश निर्धारित किए हैं–यद्यपि आधुनिक काल में ग्रहों के कालांश हेतु सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति को अपनाया जाता है।

ग्रहों के अस्त होने के कालांश

ग्रह	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कालांश	१२°	१७°	१३°	११°	९°	१५°

* बुध एवं शुक्र यदि वक्री हों, तो कालांश में १ अंश कम कर लेंवें।

सूर्य के समीप अस्त हुआ ग्रह विकल कहलाता है। अस्त ग्रह निष्फली निर्बल एवं अशुभ फलदायक होता है। उदित ग्रह सुख देता है जब कि अस्त ग्रह रोग कारक एवं धन–मानादि की हानि करता है।

राहु केतु–अस्त नहीं होते परन्तु सूर्याशों के समीप रहने से सूर्य के प्रभाव को क्षीण करते हैं।

ग्रहों की दैनिक गति–सौरमण्डल में पृथ्वी, मंगल, बुध, गुरु आदि ग्रह, सूर्य के इर्द–गिर्द पश्चिम से पूर्व अपनी–अपनी गत्यनुसार परिभ्रमण कर रहे हैं। प्रत्येक ग्रह अपने कक्ष में अलग–अलग गति से परिभ्रमण करता है, तथा सूर्य के प्रभाव स्वरूप ग्रहों की सामान्य गति में न्यूनाधिकता होती रहती है। स्थूल रूप से ग्रहों की विभिन्न प्रकार की मध्यम गति ग्रह लाघवानुसार इस प्रकार से हैं–

ग्रहों की मध्यम दैनिक गति–सूर्य की मध्यम गति ६०–०० कला, चन्द्रमा की ७९०–३५, मंगल की ३१–२६, बुध की ५९–०८ कला, गुरु की ५ कला, शुक्र की ५९–१८ कला, शनि की २ कला तथा राहु–केतु की वक्र–गति सदा ३ कला ११ विकला रहती है। ग्रहों की स्पष्ट गति, मध्यम गति से न्यूनाधिक होती रहती है। ग्रह गति की विभिन्न अवस्थाओं को अलग–अलग नामों से अभिहित किया जाता है।

१. **वक्रगति (वक्री)**–जब किसी ग्रह (सूर्य–चन्द्र के अतिरिक्त) की गति अपनी मध्यम गति से क्रमशः कम होती जावे और ग्रह आगे अग्रसर होने की अपेक्षा पीछे जाते हुए दिखाई दे, तो वक्री (Retrograt) कहलाता है।

२. **मार्गी गति**–जब कोई ग्रह वक्रगति त्यागकर सामान्य गति से क्रमशः आगे बढ़ता जाए, तो मार्गी (Direct) ग्रह कहा जाता है। सूर्य चन्द्र सदा मार्गी रहते है, वक्री नहीं होते हैं, जबकि अन्य ग्रह वक्री–मार्गी होते रहते हैं। राहु–केतु सदा वक्री रहते हैं।

शुभ ग्रह वक्री हो तो अधिक शुभफल तथा क्रूर ग्रह वक्री हो, तो अत्यन्त अशुभ फल प्रदान करता है। सामान्यतः वक्री ग्रह परदेश भेजता है, जबकि मार्गी ग्रह आरोग्य एवं सफलता प्रदान करता है।

सूर्य से भावगत ग्रहों की शीघ्रादि गति–

सूर्य से दूसरे स्थान में कोई ग्रह हो तो शीघ्र गति, तीसरे समगति, चौथे मंद गति, ५वें–६ठे कुछ–कुछ वक्रगति, ७–८वें अति वक्रगति, ९वें ग्रह हो तो कुटिल गति, एवं सूर्य से १०वें स्थान ग्रह हो तो मार्गी गति, ११वें भाव कोई ग्रह हो तो शीघ्र गति तथा सूर्य से द्वादश स्थान में ग्रह हो, तो ग्रह की अतिशीघ्र गति होती है। गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रहों का मध्यम गति से अधिकतर अतिशीघ्र प्राप्त करके राशि परिवर्तन करना अशुभ माना जाता है।

ग्रहों का कारकत्व

सूर्य–आत्मा, पिता, मान–सम्मान, राज–प्रतिष्ठा, नेत्र, आरोग्यता, प्रशासन, मस्तिष्क, सुवर्ण, गेहूं, शक्ति मानकादि लाल वस्तुओं का कारक है।

चन्द्रमा–माता, मन, बुद्धि, स्त्री, धन, चावल, कपासादि श्वेत वस्त्र, मोती, गला, दाईं आंख (पुरुष), बाईं आंख (स्त्री), नाड़ी तन्त्रादि।

मंगल–पराक्रम, बल, भूमि, भाई, सेना, पुत्र, शुभ, अग्नि, गुड़, मूंगा, ताम्र, चोट–दुर्घटना आदि का कारक है।

बुध–यह विद्या, वाणी, बुद्धि, मित्र, सुख, मातुल, (मामादि) बधु–बांधव, गणित, शिल्प, ज्योतिष, चाची, मामी, हरितवस्त्र, घृत, पन्ना रत्न आदि का कारक है।

गुरु–यह विवेक, बुद्धि, शरीरपुष्टि, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र–धर्म, बड़े भाई, उदारता, पुष्प–राग, पीतवर्ण, सुवर्ण, ब्राह्मण, मन्त्री, सत्वगुण, पति–सुख, पौत्र, पितामह आदि का कारक है।

शुक्र–स्त्री, वाहन, आभूषणादि, सांसारिक सुख, व्यापार, कामसुख, वीर्य, चांदी, काव्य–रुचि, संगीत, श्वेत–वस्त्र, चांदी, हीरा, दुग्धादि पदार्थों का कारक है।

शनि–आयु, जीवन, मृत्युकारण, सेवक, दुख, रोग, विपत्ति, शिल्प, भैंस, केश, तिल, तैल, नीलम, लोहादि पदार्थों का कारक है।

राहु–सर्प, लाटरी, गुप्त–धन, भूत–बाधा, प्रयाण, तस्करी, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, गुल्मेद आदि पदार्थो का कारक है।

केतु–यह गुप्त–शक्ति, कठिन कार्य, दुख, धूम्र–रंग, अति पीड़ा, चर्म रोग, व्रण, तन्त्र–विद्या, बकरा, नीच जाति, कृष्णवस्त्र, कम्बलादि पदार्थों का कारक है।

नोट–जन्म कुण्डली में यदि कोई कारक ग्रह शुभ भाव में पड़ा हो या शुभ ग्रह द्वारा

दृष्ट हो, तो कारक ग्रह से सम्बन्धित सुख की प्राप्ति होगी। जब कोई ग्रह अशुभ भाव में पड़ा हो, अथवा पापी ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो उस ग्रह के कारकत्व से सम्बन्धित सुख में कमी आएगी।

ग्रह और पारिवारिक सम्बन्ध

सूर्य से पिता का, चन्द्रमा से माता, एवं स्त्री के मन का, मंगल से लघु भ्राता एवं पुत्र, बुध से मातुल पक्ष मामा, मौसी, चाची, बहन की संतान एवं बन्धु–सौख्य। गुरु से पुत्र, विवाह एवं पति का सुख। शुक्र से स्त्री सम्बन्धी सुख, शनि से नौकर एवं कर्मचारी वर्ग, राहु से पितामह (दादा) का तथा केतु से मातामह (नाना) का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के तत्त्वादि का विचार–पंचभूतों में सूर्य और मंगल अग्नि तत्त्व, बुध पृथ्वी तत्त्व, गुरु आकाश तत्त्व, शुक्र जल तत्त्व, और शनि वायु तत्त्व का प्रतिनिधित्व करता है।

इष्ट काल एवं भयात्–भभोग साधन

भारतीय ज्योतिष में इष्टकाल का विशेष महत्त्व है। जन्म कुण्डली का गणित मुख्य रूप से इष्टकाल पर आधारित है। इष्टकाल जितना सूक्ष्म और शुद्ध होगा, जन्मपत्री का फलादेश भी उतना ही प्रामाणिक निकलेगा। इष्ट काल का उपयोग भयात्–भभोग एवं दशादि का ज्ञान करने में भी विशेषतया होता है।

इष्ट काल–किसी विशेष दिन–वार को स्थानीय सूर्योदय से लेकर जन्म समय या अभीष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे–मिन्टों में या घटी–पलों में हो सकती है। जन्मपत्री में प्रायः इष्टकाल घटी–पलों में ही लिखा होता है। सामान्यतः (घण्टों–मिन्टों) में दिए गए स्टैण्डर्ड टाईम में से स्थानीय सूर्योदय को घटा कर उस समय (घं. मिं.) को अढ़ाई से गुणा से कर देने से घटी–पलों में इष्टकाल बन जाता है।

अथवा अभीष्ट काल (Desired Time) में से सूर्योदय घटा देने के बाद प्राप्त घण्टा मिन्टों को ५ से गुणा करके २ से भाग देने पर भी घटी पलों में इष्ट काल प्राप्त हो जाता है।

इष्ट काल बनाते समय निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें–

(१) जिस स्थान एवं अभीष्ट काल का इष्ट काल बनाना हो, उसी स्थान विशेष का ही सूर्योदय लेकर अभीष्ट स्टै. टाईम में से घटा कर एवं २$^{१}/_{२}$ गुणा करके इष्टकाल बनाएं।

(२) मध्य रात्रि १२ बजे के बाद किसी भी समय का इष्टकाल बनाने के लिए, दिए गए समय में २४ घण्टा जमा कर देने पर, जो संख्या प्राप्त होगी, उसी में सूर्योदय हीन करके इष्ट बनाएं।

(३) दुपैहर १२ बजे के बाद के समय को १३, १४, १५ इत्यादि की संख्या से

अभिव्यक्त करें। अर्थात् यदि दुपैहर के पौने चार लिखने हों, तो उसे १५ घं., ४५ मिनट लिखना चाहिए।

(४) सूर्योदय से १ मिनट पहिले का भी जन्म हो, तो पिछले दिन का ही जन्म माना जाएगा। तथा गत दिन का सूर्योदय काल ही हीन किया जाएगा। ध्यान रहे, भारतीय ज्योतिष में सूर्योदय से लेकर आगामी दिवसीय सू. उ. तक वार प्रवृत्ति मानी जाती है।

(५) यदि पंचांग दिवाकर में आपके अभीष्ट (Desired) नगर का सूर्योदय न दिया गया हो, तो आप पंचांग दिवाकर में दिए गए विभिन्न अक्षांशों के मध्यम सूर्योदय सारिणी से अपने नगर के अक्षांश के नीचे और जन्म तारीख के सामने मध्यम सूर्योदय ज्ञात कर लें, तदुपरान्त उसमें देशान्तर संस्कार ± करके अपनी अभीष्ट नगर (स्थान) का स्पष्ट सूर्योदय ज्ञात कर सकते हैं।

(६) सूर्योदयात् इंष्ट कालादि में शास्त्रीय काल—अर्थात् किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय ही ग्रहण करना चाहिए।

किसी भी स्थान का सूर्योदय एवं इष्ट काल ज्ञात करना—

उदाहरण—मान लीजिए, आपने जम्मू शहर में ३ अक्तूबर १९९९ ई. के दिन का सूर्योदय तथा सांय ३ बजकर ४५ मिनट का इष्ट काल जानना है, तो सर्वप्रथम हमने पंचांग दिवाकर संवत २०५६ के पृष्ठ 148 पर जम्मू का अक्षांश ३२° । ४३ उत्तर तथा स्टै. अन्तर (−३०'.२४") देखा। मध्यम सू.उ. सारिणी पृष्ठ 156 पर ३ अक्तूबर के सामने तथा ३०° एवं ३५° अक्षांश के बीच हमें मध्यम सूर्योदय ५.५५ प्राप्त हुआ। इसमें देशान्तर के (३०'.२४") अर्थात् ३१ मिनट तथा ३ मिनट किरण वक्री भवन संस्कार के जमा कर देने से हमें सू.उ. ६ घं. २९ मिं. प्राप्त हुआ जो कि पृष्ठ १६५ पर दिए गए जम्मू के सूर्योदय से मिलता है। अब जातक के जन्म काल दुपै. ३.४५ अर्थात १५ घं. ४५ मिनट में से जम्मू का सूर्योदय ६ घं. २९ मिं. घटा देने से हमें ९ घण्टे, १६ मिंट प्राप्त हुए।

		घण्टे		मिनट
जन्मकाल		१५	−	४५
सूर्योदय जम्मू	(−)	६	−	२९
स्थानीय समय =		९	−	१६

अब ९ घण्टे, १६ मिनट को अढ़ाई से गुणा करने पर हमें २३ घड़ी, १० पल प्राप्त होंगे।

यही सूर्योदयात् इष्टकाल कहलाता है ॥

$$\frac{९ \times ५}{२} = \frac{४५}{२} = २२ \text{ घटी, } ३० \text{ पल} + \frac{१६ \times ५}{२} = \frac{८०}{२} = ४० \text{ पल}$$

२२ घटी. ३० पल + ० – ४० = २३ घटी. १० पल

इष्टकाल = २३ – १० घड़ी पल

भयात् और भभोग ज्ञात करना

जन्मेष्ट के पश्चात् ज्योतिष गणना में भयात् और भभोग का विशेष महत्त्व है। क्योंकि भयात् और भभोग की सहायता से ही नक्षत्र के चरण का ज्ञान किया जाता है। इसके अतिरिक्त चन्द्रादि स्पष्ट एवं विंशोत्तरी दशा में ग्रहों का भुक्त भोग्य काल जानने के लिए भी भयात् भभोग का ज्ञान होना आवश्यक है। किसी जातक के जन्म काल का भयात्–भभोग ज्ञात करने के लिए. उसी वर्ष के पंचांग की आवश्यकता होगी। सर्वप्रथम, अभीष्ट वर्ष के पंचांग में जातक का जन्म नक्षत्र देखें। जिस नक्षत्र में किसी जातक का जन्म होता है, उसे वर्तमान नक्षत्र तथा उससे पिछला (व्यतीत हुआ) नक्षत्र, गत नक्षत्र कहलाता है। गत नक्षत्र को ६० घड़ी में से घटा कर शेष घटी–पल को जन्म के वर्तमान नक्षत्र के घटी पलों में जमा कर देने से जन्म नक्षत्र का कुल मान अर्थात् भभोग बनेगा। गत नक्षत्र को ६० घटी में से घटाकर जो घटी पल शेष बचें हों, उनमें इष्ट काल जमा कर देने से हमें जन्म नक्षत्र का भयात् काल प्राप्त हो जाएगा।

इस प्रकार किसी जातक के जन्म समय कोई नक्षत्र जितने काल बीत चुका है, उसे भयात् कहते हैं। तथा किसी जातक के जन्म नक्षत्र के कुल भोग मान को भभोग अथवा सर्वक्षं कहते हैं।

१. उदाहरण स्वरूप हमने ३ अक्तूबर, १९९९ ई. रविवार को दुपै. ३.४५ बजे का इष्ट काल २३ घटी, १० पल निकाला था। अब इसी इष्ट पर भयात् भभोग निकालेंगे। पंचांग दिवाकर पृष्ठ 68 पर ३ अक्तूबर रविवार के सामने पुनर्वसु नक्षत्र से गत नक्षत्र आर्द्रा ३०/४० घटी मिलता है। इसको ६० घटी में से घटा देने से हमें २९ घटी, २० पल प्राप्त हुए। इनको जन्मेष्ट २३ घटी, १० पल में जोड़ (जमा) कर देने से हमें पुनर्वसु के ५२ घड़ी, ३० पल प्राप्त हुए तथा गत नक्षत्र को ६० घटी में से घटाने पर प्राप्त संख्या २९ घ.–२० प. को वर्तमान नक्षत्र पुनर्वसु २८/२५ (घटयादि) में जमा कर देने से हमें पुनर्वसु ५७।४५ घट्यादि भभोग (सर्वक्षं) प्राप्त हो जाएगा।

	६०.००	६०.००	
आर्द्रा गत नक्षत्र	–३०.४०	३०.४० –	गत नक्षत्र
	२९.२० शेष	२९.२०	पुनर्वसु
इष्टकाल (+)	२३.१०	२८.२५ +	वर्तमान नक्षत्र
भयात् घ. प.	५२.३० पुनर्वसु	५७.४५	पुर्न. भभोग

नक्षत्र के भभोग काल में से भयात् (भुक्त) नक्षत्र काल को घटा देने से हमें नक्षत्र का भोग्य काल प्राप्त हो जाता है। कई बार परिस्थितिवश भयात् नक्षत्र के घटी पल भभोग से बढ़ जाते हैं, उस स्थिति में भयात में से ६० घड़ी घटा देनी चाहिएं।

नक्षत्र का भयात् और भभोग पलात्मक बना कर चन्द्र स्पष्ट एवं विंशोतरी आदि दशाओं का भोग्य काल ज्ञात किया जाता है। इसकी विधि उदाहरण सहित आगामी पृष्ठों में दी जाएगी।

नक्षत्र का चरण ज्ञात करना

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। भभोग (कुल नक्षत्र मान) को चार द्वारा भाग देने से नक्षत्र का एक चरण निकल जाता है। यही प्रथम चरण का मान होगा। प्रथम चरण के मान में १ चरण जोड़ देने से दूसरे चरण का मान–अर्थात् समाप्ति काल होगा, इसमें १ चरण और जोड़ने से तृतीय चरण का समाप्ति काल तथा ३रे चरण में १ चरण जोड़ देने से चतुर्थ चरण का मान निकल आएगा। उपरोक्त उदाहरण में पुनर्वसु नक्षत्र का भभोग ५७/४५ घटयादि निकला था। इसमें ४ का भाग देने से हमें १ चरण में १४ घटी, २६ पल मिले। इसको प्रथम चरण का मान कहेंगे। इसमें १४/२६ ही जोड़ देने से नक्षत्र २८।५२ घट्यादि, अर्थात् दूसरे चरण का समय काल होगा। २८।५२ में १ चरण के मान (१४/२६) को पुनः जमा करने से ४३/१८ – अर्थात् ३रे चरण का समा. काल तथा इसी संख्या योग में फिर १४।२७ जमा कर देने से हमें ५७।४५ अर्थात् चौथे चरण का समाप्ति काल निकल आएगा।

उपरोक्त उदाहरण न. (१) में पुर्न. नक्षत्र का भयात् ५२ । ३० घट्यादि निकला था। चूंकि पुर्न. नक्षत्र का भयात् ४३।१८ घटयादि (तीसरे–चरण) से अधिक है, इससे जातक को पुनर्वसु नक्षत्र का चतुर्थ (४) चरण होगा।

जन्म कुण्डली कैसे बनाएं ?

फलित ज्योतिष में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जन्म कुण्डली है। जन्म कुण्डली किसी शिशु (जातक) के जन्म कालीन आकाश का वह नक्शा है, जो बारह विभागों (भावों) में स्थित १२ राशियों एवं ९ ग्रहों की विशेष स्थिति को अभिव्यक्त करता है। जन्म कुण्डली में पड़ी द्वादश राशियों एवं ग्रहों की स्थिति व बलाबल आदि के आधार पर ही सामान्यतः मनुष्य जीवन के सुख–दुख, उन्नति–अवनति, सफलता–असफलता आदि का निरूपण किया जाता है। प्रत्येक जन्म कुण्डली में १२ कोष्ठक (भाव) होते हैं। तथा इन्हीं १२ भावों में क्रमानुसार मेषादि बारह राशियों एवं ९ ग्रहों की स्थापना की जाती है। प्रथम भाव की

राशि को ही लग्न भाव * की राशि कहते हैं प्रथम भाव से बाईं तरफ (Anti-Clock Wise) गणना करने से द्वितीय, तृतीय आदि १२ भाव होते हैं। भावों एवं राशियों के नाम न लिखकर १, २, ३ इत्यादि प्रतीकात्मक अंकों में ही लिखा जाता है।

द्वादश भावों के नाम व उनके पर्याय
(Name of the Twelve Houses)

हिन्दी नाम	अंग्रेज़ी नाम (English)	हिन्दी नाम	अंग्रेज़ी नाम (English)
१. प्रथम भाव	I Ascendant	७. सप्तम भाव	VII House
२. द्वितीय भाव	II House	८. अष्टम भाव	VIII House
३. तृतीय भाव	III House	९. नवम भाव	IX House
४. चतुर्थ भाव	IV House	१०. दशम भाव	X House
५. पंचम भाव	V House	११. एकादश भाव	XI House
६ षष्ठ भाव	VI House	१२. द्वादश भाव	XII House

द्वादशभावों के अन्य पर्यायवाची नाम

१. प्रथम भाव = लग्न, कल्प, तनु, केन्द्र, होरा आदि।

२. द्वितीय = धनु, कुटुम्ब, वाणी, कोश, वाक् आदि।

३. तृतीय = भ्रातृ, सहज, पराक्रम, सहोदर, कर्ण, उपचय।

४. चतुर्थ = सुख, सुहृद, हिबुक, पाताल, विद्या, मातृ, केन्द्र।

५. पंचम = सुत, पुत्र, त्रिकोण, बुद्धि, मन्त्र, आत्मज आदि।

६. षष्ठ = शत्रु, त्रिक्, रोग, नष्ट, मातुल, शस्त्र, आपोक्लिम

७. सप्तम = कलत्र, स्त्री, जामित्र, द्यून, भार्या, काम, अस्त

८. अष्टम = मृत्यु, रन्ध्र, आयु, त्रिक्, पणफर।

९. नवम भाव = पुण्य, भाग्य, धर्म, मुक्ति, गुरु।

१०. दशम = कर्म, राज्य, व्यापार, पिता, आकाश, 'ख', व्योम।

११. एकादश = लाभ, आय, भव

१२. द्वादश = व्यय, रिष्फ, हानि, अन्त्य, त्रिक

---

* **लग्न**—जन्म कुण्डली में लग्न भाव का सर्वाधिक महत्त्व है। राशि के उदय काल को लग्न कहते हैं—"**राशिनामुदयो लग्नम्।**" दूसरे शब्दों में किसी जातक के जन्म समय पूर्वी क्षितिज पर जो राशि विद्यमान रहती है, उसी को जातक का **जन्म लग्न** माना जाता है। पृथ्वी की दैनिक गति के कारण एक अहोरात्र (दिन–रात), अर्थात् २४ घण्टों में पूर्वी क्षितिज पर बारह राशियों का क्रमशः उदय होता रहता है। उदयीमान १२ राशियाँ ही क्रमानुसार मेषादि १२ लग्न कहलाते हैं।

जन्म कुण्डली में लग्न ज्ञात करना

प्राचीन काल में लग्न–स्पष्ट करने के लिए मुख्यता सायनार्क विधि का उपयोग किया जाता था जिसके अनुसार तात्कालिक * सायन सूर्य के भुक्त एवं भोग्य अंशादि को स्वदेशीय राशि उदयमान से गुणा करके ३० द्वारा भाग देने पर लब्ध पलादि भुक्त या भोग्यकाल होता है। इसको इष्टकालिक घड़ी पलों में से घटा कर जो बचे, उसमें भुक्त–भोग्य राशियों के उदयमानों को (जहां तक घट सकें) घटाना चाहिए। शेष को ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान (जो राशि घटी नहीं है, उसके उदयमान) से भाग देने पर जो अंशादि लब्ध आएं, उनको क्रम से अशुद्ध[२] राशि में घटाने और शुद्ध राशि में जोड़ देने में सायन स्पष्ट लग्न होता है। इसमें जन्मकालिक अयनांश घटाने पर स्पष्ट निरयण लग्न आ जाता है। उपरोक्त सायनार्क विधि में अभीष्ट स्थानस्थ राशियों के स्वदेशीय उदयमानों का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

राशियों एवं लग्नों का स्वदेशीय मान

विभिन्न नगरों (स्थलों) पर राशियों एवं लग्नों का स्वदेशीय मान एक जैसा नहीं होता। निरक्ष देश अर्थात् शून्य अक्षांश पर लग्नों के मान में विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। परन्तु ज्यों–ज्यों हम उत्तरी अक्षांशों की ओर बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों मेष–मीन, वृष–कुम्भ, एवं मिथुन–मकर राशियों के मान घटते जाते हैं, तथा कर्क–धन, सिंह–बृश्चिक, कन्या व तुला राशियों के मान बढ़ते जाते हैं। प्रत्येक नगर के अक्षांश–रेखांश पर जिस प्रकार सूर्योदयास्त मध्यान्ह कालादि भिन्न–भिन्न होता है, उसी प्रकार विभिन्न अक्षांशों पर लग्नों के उदयास्त के मान में भी अन्तर रहता है। उदाहरणार्थ, जैसे–

मद्रास अक्षांश १३°।४' पर मेष लग्न का निरयणमान	१ घण्टा ४८ मिन्ट
बम्बई अक्षांश १८।५५ पर मेष लग्नका निरयणमान	१ घंण्टा ४४ मिन्ट
कलकत्ता अक्षांश २२°।२३ पर मेष लग्न का निरयणमान	१ घण्टा ४० मिन्ट
देहली अक्षांश २८।३९ पर मेष लग्न का निरयणमान	१ घण्टा ३६ मिन्ट
अमृतसर अक्षांश ३१।३७ पर मेष लग्न का निरयणमान	१ घण्टा ३३ मिन्ट

राशियों के स्वदेशीय मानों में विभिन्नता–

राशियों के स्वदेशीय उदयमानों में विभिन्नता के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं–

1. पृथ्वी का अपनी धुरि पर ६७१/२° अंश झुकते हुए परिभ्रमण करना।
2. अक्षांश भेद।

---

*(१) जिस समय का लग्न बनाना हो, उस समय के निरयण स्पष्ट सूर्य में तात्कालिक स्पष्ट अयनांश जोड़ देने से तात्कालिक सायन सूर्य होता है। प्रत्येक वर्ष की अयनांश सारिणी इसी पुस्तक के गत पृष्ठों में दी गई है। (२) जो राशि घट न सके, उसे अशुद्ध और जिस राशि के उदयमान इष्टकाल में से घट जाएं, वह शुद्ध राशि कहलाती है।

3. अक्षांश भेद के कारण प्रत्येक स्थल की पलभा में अन्तर।

4. चरखण्डों में विभिन्नता।

राशियों के निरक्षोदय मान में स्थानीय चरखण्ड संस्कार करने के उपरांत स्वदेशीय राशियों एवं लग्नों के मान प्राप्त हो जाते हैं।

निरक्ष देश अर्थात् शून्य (०) अक्षांश पर सायन लग्न राशि के उदय होने में जो समय लगता है, उसे 'निरक्षोदय मान' या राशियों का लंकोदयमान कहते हैं। इन्हीं की सहायता से किसी भी अन्य नगर (स्थान) का स्वदेशीय मान बनाया जाता है।

ज्योतिर्गणित एवं वेधोपलब्ध मतानुसार मेषादि राशियों का लंकोदयमान निम्न प्रकार से है :-

नाम राशि	पलात्मक	नाम राशि	पलात्मक
मेष एवं मीन लग्न	= २७९	कर्क एवं धन लग्न	= ३२२
वृष एवं कुम्भ लग्न	= २९९	सिंह एवं वृश्चिक लग्न	= २९९
मिथुन एवं मकर लग्न	= ३२२	कन्या एवं तुला लग्न	= २७९

उपरोक्त(०° अक्षांश) निरक्षीय सारिणी में उल्लेखनीय है कि मेष व मीन का लग्न मान, वृष व कुम्भ का, मिथुन व मकर का, कर्क एवं धन का लग्न मान, सिंह व वृश्चिक के लग्न मान तथा कन्या व तुला के लग्न मान एक समान होंगे।

स्वदेशी मान ज्ञात करना–किसी विशेष स्थान या नगर में राशियों (लग्नों) के स्वदेशीय मान जानने के लिए सर्वप्रथम अपने अभीष्ट नगर का *अक्षांश ज्ञात करना चाहिए। फिर उसी अक्षांश से सम्बन्धित पलभा का ज्ञान करें। तदुपरान्त पलभा को तीन स्थानों पर अलग–अलग रखकर क्रमशः १०, ८ तथा $\frac{१०}{३}$ से गुणा कर देने से हमें तीन चरखण्ड प्राप्त होंगे। इन चरखण्डों को मेष–मीन (१, १२), वृष–कुम्भ (२–११), मिथुन व मकर (३–१०) राशियों के लंकोदय मान में से घटाने तथा ४–८, ५–८, और ६–७ राशियों के लंकोदय मान में जमा कर देने से हमें राशियों के स्वदेशीय मान प्राप्त हो जायेंगे। आगे हम प्रत्येक अक्षांश की पलभा सारिणी लिख रहे हैं। ध्यान रहे, भारत वर्ष का विस्तार लगभग ८° अंश से ३६°।४८' उतरी अक्षांशों के मध्य में पड़ता है।

अक्षांश भेद से पलभा एवं चरखण्ड बनाना

पलभा–सायन मेष या तुला संक्रान्ति के दिन, मध्यान्ह काल को १२ अंगुल शंकु

---

* अपने नगर का अक्षांश जानने के लिए आगामी पृष्ठों पर देखें। यदि अभीष्ट नगर का अक्षांश न मिले, तो उसके निकटस्थ नगर का अक्षांश ग्रहण कर सकते हैं। अथवा अपने नगर के अक्षांश की जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पंचांग दिवाकर (कृत पं. पन्ना लाल) का अवलोकन करें।

की छाया के प्रमाण को पलभा कहते हैं। प्रत्येक नगर की पलभा अपने स्थान के अक्षांश पर निर्भर करती है। यदि किसी नगर का अक्षांश निम्नांकित अक्षांश से कुछ कला न्यूनाधिक हो, तो अपने अभीष्ट नगर के समीपस्थ को पलभा त्रैराशिक (इकाई) नियम अनुसार + (जमा) या – (हीन) कर सकते हैं।

पलभा सारिणी

अक्षांश	पलभा अंगुल व्यंगुल	अक्षांश	पलभा अंगुल–व्यंगुल
१°	०–१२–३४	२७°	६–६–५०
२°	०–२५–०९	२८°	६–२२–४८
३°	०–३७–४४	२९°	६–३९–०४
५°	१–३–००	३०°	६–५५–४१
७°	१–२८–२३	३१°	७–१२–३६
९°	१–५४–००	३२°	७–२९–५३
१०°	२–०६–५४	३३°	७–४७–३१
११°	२–१९–५५	३४°	८–०५–३८
१२°	२–३३–००	३५°	८–२४–७
१३°	२–४६–१२	३६°	८–४३–०५
१४°	२–५९–२८	३७°	९–०२–३५
१५°	३–१२–५४	३८°	९–२२–३०
१६°	३–२६–२४	४०°	१०–४–०९
१७°	३–४०–०५	४२°	१०–४८–१८
१८°	३–५३–५६	४४°	११–३५–२४
१९°	४–०७–५५	४६°	१२–२५–३७
२०°	४–२२–०१	४८°	१३–१९–३८
२१°	४–३६–२२	५०°	१४–१८–०३
२२°	४–५०–५२	५१°	१४–४९–०८
२३°	५–५–३८	५२°	१५–२९–३२
२४°	५–२०–३१	५३°	१५–५५–०३
२५°	५–३५–४२	५४°	१६–३१–०१
२६°	५–५१–७	५५°	१७–०८–१३

पलभा द्वारा चरखण्ड एवं स्वदेशीय लग्न बनाना–

जैसे कि पहले लिख चुके हैं कि पलभा को तीन अलग–अलग स्थानों पर रख कर क्रमशः १०, ८ एवं $^{१०}/_{३}$ द्वारा गुणा करने के पश्चात हमें तीन चरखण्ड प्राप्त होंगे। इनकों क्रमशः मेष–मीन, वृष–कुम्भ, मिथुन–मकर राशियों के लंकोदय मानों में से घटाने से तथा अन्य ६ राशियों में जमा कर देने से हमें अभीष्ट स्थान के स्वदेशीय मान प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण–मान लो, हमने दिल्ली के चरखण्ड तथा वहां की राशियों के स्वदेशीय लग्न मान बनाने हैं, तो सर्वप्रथम दिल्ली के अक्षांश २८° ।३९' उत्तर पर (२८° और २९° अक्षांश के लगभग मध्यान्तर पर) हमें ६ ।३३ ।२६ अंगुल–प्रत्युंगल पलभा प्राप्त हुई। इस पलभा को तीन स्थानों पर रखकर, क्रमशः १०, ८ तथा $^{१०}/_{३}$ से गुणा करने पर हमें दिल्ली के चरखण्ड प्राप्त होंगे यथा–

1. (६ । ३३ । २६) × १० = ६० । ३३० । २६० = ६५ । ३४ । २०
2. (६ । ३३ । २६)× ८ = ४८ । २६४ । २०८ = ५२ । २७ । २८
3. (६ । ३३ । २६) × १० = (६० । ३३० । २६०) ÷ ३ = २१ ।५१ ।२७

उपरोक्त दाईं तरफ के चरखण्डों की प्रथम संख्या (पलात्मक) को ग्रहण करेंगे तथा अर्धाधिके ग्राह्यं अर्ध्याल्पं च त्याजम् के नियम अनुसार ३० से अधिक विपलों का १ पल तथा ३० से अल्प विपलों को त्याग देने के उपरान्त हमें दिल्ली नगर के चरखण्ड ६६, ५२ व २२ पलात्मक प्राप्त होंगे। २८°–२९° अक्षांशों के आस पास पड़ने वाले नगरों के चरखण्ड भी लगभग यही (६६ ।५२ ।२२) ही होंगे। अब इन चरखण्डों को मेषादि राशियों के लंकोदय मान में से क्रमशः घटा देने एवं क्रमशः जमा कर देने से हमें दिल्ली के स्वदेशीय–मान इस प्रकार प्राप्त होंगे–

दिल्ली के लग्नों के स्वदेशीय मान

लंकोदय मान (पला.)		चरखण्ड दिल्ली		दिल्ली के स्वदेशीय मान		लग्न राशियां
२७९	–	६६	=	२१३	=	मेष व मीन
२९९	–	५२	=	२४७	=	वृष व कुम्भ
३२२	–	२२	=	३००	=	मिथुन व मकर
३२२	+	२२	=	३४४	=	कर्क व धनु
२९९	+	५२	=	३५१	=	सिंह व वृश्चिक
२७९	+	६६	=	३४५	=	कन्या व तुला

दिल्ली के उपरोक्त स्वदेशीय मान दिल्ली के सायन राशि लग्न मान हैं। इनमें अयनांश

संशोधन करके निरयण लग्न–मान जान सकते हैं। सायनार्क विधि के अनुसार दिल्ली में लग्न स्पष्ट का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

उदाहरण स्वरूप–मान लो हमने दिल्ली में १८ मई १९९९ ई. को प्रातः ८.३२ बजे अर्थात् ७.३० घट्यादि इष्टकाल पर लग्न स्पष्ट सायनार्क विधि द्वारा निकालना है। अध्याय के प्रारम्भ में लिखी सायनार्क विधि अनुसार सर्वप्रथम हमें १८ मई के इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट में १८ मई के ही अयनांश (पंचांग दिवाकर पृष्ठ ९१) को जमा करेंगे

निरयण सूर्य स्पष्ट	=	१ । २° । ५५' । १३"
+ अयनांश जमा किया	+	२३ । ५० । ४१
सायन सूर्य स्पष्ट =		१ । २६ । ४५ । ५४

यहां पर वृष राशि का भुक्तांश २६ । ४५ । ५४ है, इसको गत वृष राशि में से घटाएंगे यथा

	१ । ० । ० । ००
	– २६ । ४५ । ५४
वृष के भोग्यांश =	३ । १४ । ६

अब वृष के भोग्यांशों को दिल्ली के वृष राशि के उदयमान से गुणा किया

= ३ । १४ । ०६ × २४७

= ७४१ । ३४५८ । १४८२

= ७९८ । ०२ । ४४

इस संख्या की प्रथम संख्या में ३० से भाग दिया, तो २६.६ फल अर्थात् २७ भोग्य पल आए। आगे वाली २ । ४४ विपलादि संख्या को ग्रहण नहीं किया गया है।

अब अभीष्ट इष्टकाल ७ । ३० घट्यादि के ४५० पल बने।

इनमें से भोग्यपल २७ घटाने पर ४२३ पल आए =४५० –२७ = ४२३ पल

ऊपर वृष के उदयमान से गुणा कर के = ४२३

फल निकाला गया था, अतः अब उससे आगे (–) ३०० मिथुन का उदयमान

वाली राशियों का उदयमान घटाते जाएंगे = १२३

यहां चूंकि मिथुन तक राशि का उदयमान इष्टकाल के पलों में से घट गए हैं, अतः मिथुन शुद्ध राशि, तथा कर्क अशुद्ध राशि कहलाएगी।

शेष १२३ को ३० से गुणा करके, १२३ × ३० =३६९०, इसको

अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग दिया ३६९० ÷ ३४४ = १०° । ४३' । ३६"

ऊपर गणना में चूंकि मिथुन राशि घट गई थी,

अतएव लग्न राशि के स्थान पर ३ का अंक लिखेंगे = ३ । १० । ४३ । ३६

यह हमें सायन लग्न स्पष्ट प्राप्त हुआ, इसमें से उसी मास एवं तारीख का अयनांश (पंचांग दिवाकर २०५६, पृष्ठ 91) घटा देने पर हमें निरयण लग्न स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा, यथा –

	३ ।१०° ।४३ ।३६
अयनांश घटाया	२३ ।५० ।४१
निरयण लग्न स्पष्ट	= २ ।१६ ।५२ ।५५

इस प्रकार १८ मई, १९९९ ई. को दिल्ली में प्रातः ८ बजकर ३२ मिनट पर उत्पन्न जातक का लग्न स्पष्ट मिथुन राशि पर १६ अंश ५२ कला एवं ५५ विकला होगा।

आगामी पृष्ठों पर हम लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की प्रक्रिया लिख रहे हैं, जो अपेक्षाकृत अधिक सरल एवं प्रचलित भी है।

अब भारत कुछ मुख्य नगरों के अक्षांश रेखांश एवं स्टैण्डड अन्तर लिख रहे हैं–

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर ८२१/२ रेखांश में उतने मिन्ट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिन्ट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ., सू.अ. में (–) ऋण करें।

और अधिक नगरों के अक्षांश–रेखांश जानने के लिए पँचांग दिवाकर २०५६ कृत. प. पन्ना लाल पृष्ठ 148 देखें।

नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.	नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	३१.३७	७४.५५	–३०.२०	आनन्दपुर (पंजा.)	३१.१५	७६.३२	–२३.५२
अलीगढ़ (उ. प्र.)	२७.५४	७८.०६	–१७.३६	अनन्तनाग (काश.)	३३.४३	७५.१७	–२८.५२
अलाहाबाद (उ. प्र.)	२५.२८	८१.५४	–०२.२४	आज़मगढ़ (उ. प्र.)	२६.०३	८३.१३	+०२.५२
अगरतला (त्रिपुरा)	२३:.४९	९१.१८	+३५.१२	अयोध्या (उ. प्र.)	२६.४८	८२.१४	–०१.०४
अहमदाबाद (गुज.)	२३.०३	७२.४०	–३९.२०	अबोहर (पंजा.)	३०.०८	७४.१२	–३३.१२
अहमदनगर (महा.)	१९.०५	७४.४८	–३०.–४८	आगरा (उ. प्र.)	२७.१०	७८.०५	–१७.४०
अज्मेर (राज.)	२६.२७	७४.४२	–३१.१२	आबू (राज.)	२४.४०	७२.४५	–३९.००
अलमोड़ा (उ. प्र.)	२९.३७	७९.४०	–११.२०	इम्फाल (मणि.)	२४.४४	९३.५८	+४५.५२
अलवर (राज.)	२७.३४	७६.३८	–२३.२८	इटारसी (म. प्र.)	२२.३०	७७.५५	–१८.२०
अम्बाला (हर.)	३०.२१	७६.५२	–२२.३२	इन्दौर (म. प्र.)	२२.४४	७५.५०	–२६.४०
अमेठी (उ. प्र.)	२६.०८	८१.५०	–०२.४०	उदयपुर (राज.)	२७.४२	७५.३३	–२७.४८

नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.	नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.
उज्जैन (म. प्र.)	२३.०९	७५.४३	-२७.०८	गुरदासपुर (पं.)	३२.०३	७५.२७	-२८.१२
ऊना (हि. प्र.)	३१.३२	७६.१८	-२४.४८	गुड़गांव (हरि.)	२८.२९	७७.०४	--२१.४४
ऊधमपुर(ज. का.)	३२.५५	७५.०७	--२९.३२	गोरखपुर (उ. प्र.)	२६.४५	८३.२४	+०३.३६
औरंगावाद (महा.)	१९.५३	७५.२३	-२८.२८	गोहाटी (आसाम)	२६.११	९१.४७	+५२.२६
कटक (उड़ी)	२०.२८	८५.५४	+१३.३६	गोईदवाल (पं.)	३१.२२	७५.०८	-२६.५२
कच्छ (गुज.)	२२.३५	६९.४०	-५१.२०	गोराया (पं.)	३१.०६	७५.४७	-२६.५२
कठुआ (ज. का.)	३२.१७	७५.३६	-२७.३६	गंगानगर (राज.)	२९.४९	७३.५०	-३४.४०
किश्तवाड़ (ज. का.)	३३.१९	७५.४८	-२६.४८	गोंडा (उ. प्र.)	२७.२८	८२.०१	०१.५६
कटरा (ज.)	३३.०१	७४.५८	-३०.०८	गढ़शंकर (पं.)	३१.१३	७६.११	-०१.५६
करनाल (हरि.)	२९.४२	७७.०२	--२१.५२	गाजियावाद (उ. प्र.)	२८.४०	७७.२८	२५.१६
कलकत्ता (बंगा.)	२२.३४	८८.२४	+२३.३६	गुलमर्ग (ज. क.)	३४.१५	७४.२५	-३२.२०
कपूरथला (पंजा.)	३१.२३	७५.२५	-२८.२०	गोवा	१५.२७	७३.५९	-३४.०४
कांगड़ा (हि. प्र.)	३२.०५	७६.१८	-२४.४८	गोलकुण्डा (हैदरा.)	१७.४७	८२.२०	-००.३९
कानपुर (उ. प्र.)	२६.२८	८०.२४	-०८.२४	चम्वा (हि. प्र.)	३२.३०	७६.१०	-२५.२०
कालका (हरि.)	३०.४९	७६.५७	-२२.१२	चित्तौड़गढ़ (राज.)	२४.५४	७४.४२	-३१.१२
कुल्लू (हि. प्र.)	३१.५८	७७.१०	-२१.२०	चंडीगढ़ (के. प्र.)	३०.४४	७६.५३	-२२.२८
कुराली (पं.)	३०.५०	७६.३५	-२३.४०	चिरापुञ्जी (मे.)	२५.२७	९१.४७	+३७.०८
कोटकपुरा (पं.)	३०.३४	७४.५२	-३०.३२	चिंतपूर्णी (हि. प्र.)	३१.४७	७६.०४	-२५.४४
कादियां (पं.)	३१.४९	७५.२३	-२८.२८	जालन्धर (पंजा.)	३१.१९	७५.०४	-२८.२४
करसोग (हि. प्र.)	३१.२३	७७.१४	-२१.०४	जम्मू (ज. का.)	३२.४३	७४.०४	-३०.२४
किन्नौर (हि. प्र.)	३१.३२	७८.२०	-२६.४०	जैसलमेर (राज.)	२६.५५	७०.५८	-४६.२८
कोटखाई (हि. प्र.)	३१.०८	७७.३६	-१९.३६	जयपुर (ज. का.)	२६.५५	७५.५२	-२६.३२
कोहिमा (ना.)	२५.४१	९४.०७	+४६.२८	जीन्द (हरि.)	२९.१९	७६.२१	-२४.३६
कुरुक्षेत्र (हरि.)	२९.५९	७६.४८	-२२.४८	जण्डियाला (पंजा.)	३१.५१	७५.३७	-२७.३२
करतारपुर (पं.)	३१.२७	७५.३२	-२७.५२	जमशेदपुर (बिहार)	२२.५०	७६.१-	+१४.४०
कैथल (हर.)	२९.४८	७६.२६	-२४.१६	जामनगर (हि. प्र.)	२२.२७	७०.०५	-४९.४०
कोट्खाई (हि. प्र.)	३१.०८	७७.३६	-१९.३६	जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	३१.५८	८६.४५	-२३.००
कोटा (राज.)	२५.१०	७५.५२	-२६.३२	जोधपुर (राज.)	२६.१८	७३.०४	-३७.४४
खन्ना (पं.)	३०.४२	७६.१३	-२५.०८	जवलपुर (म. प्र.)	२३.१०	७९.५९	-१०.०४
खुरजा (उ. प्र.)	२८.१५	७७.५०	-२८.४०	ज़लगांव (गुज.)	२२.२७	७५.४०	-२७.२०
खण्डवा (म. प्र.)	२१.५०	७८.०७	-२४.२८	जैतों (पं.)	३०.२८	७४.५३	-३०.२८
गढ़वाल (उ. प्र.)	३०.१५	७९.३०	-१२.००	ज़ीरा	३०.५७	७४.५९	-३०.०४
गया (बिहार)	२४.४९	८५.०१	+१०:०४	जगाधरी (हरि.)	३०.१०	७७.१६	-२०.५६
ग्वालियर (म. प्र.)	२६.१४	७८.१०	-१७.२०	ज्वालामुखी (हि. प्र.)	३१.५३	७६.२०	-२४.४०

नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.	नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.
जाखल (हरि.)	२९.४९	७५.४९	-२६.४४	पटियाला (पं.)	३०.२०	७६.२५	-२४.४०
झांसी (म. प्र.)	२५.२७	७८.३७	-१५.३२	पट्टी (पं.)	३१.१७	७४.५१	-३०.३६
झरिया (विहार)	२३.५०	८६.३३	+२६.१२	पंचकूला (हरि.)	३०.४५	७६.५३	-२२.२८
टाटा नगर (विहार)	२५.५०	८६.१०	+१४.४०	पानीपत (हरि.)	२९.२३	७७.०१	-२१.५६
टांडा उड़मड़ (पं.)	३१.४०	७५.४१	-२७.१६	पिहोवा (हरि.)	२९.५६	७६.३६	--२३.३६
टेहाना (हरि.)	२९.४३	७५.५३	-२६.२८	पिंजौर (हरि.)	३०.४९	७६.५५	-२२.२०
डोडा (ज. का.)	३३.११	७५.३४	-२७.४४	पुँछ (ज. का.)	३३.५१	७४.०८	-३३.२८
डलहोज़ी (हि. प्र.)	३२.३१	७६.००	-२६.००	पहलगाँव (ज. का.)	३४.०१	७५.२४	-१०.५२
तिरुपति (आंध्र)	१३.४०	७९.२०	-१२.४०	पटना (विहार)	२५.३७	८५.१३	+०२.१६
त्रिवेन्द्रम (के.)	०८.२९	७६.५७	-२२.१२	प्रयाग (उ. प्र.)	२५.३०	८१.५६	-०१.१६
थानेसर (हरि.)	२९.५८	७६.५६	-२२.१६	पीलीभीत (उ. प्र.)	२८.३८	७९.५१	-२०.३६
दिल्ली	२८.३९	७७.१२	-२१.१२	पालमपुर (हि. प्र.)	३२.०६	७६.३३	-२३.४८
देहरादून (उ. प्र.)	३०.१९	७८.०४	-१७.४४	पपरौला (हि. प्र.)	३२.०४	७६.३४	-२३.४४
दसूहा (पं.)	३१.४९	७५.३९	-२७.२४	प्रतापगढ़ (म. प्र.)	२४.०२	७४.४०	-३१.२०
दीनानगर (पं.)	३२.०८	७५.३१	-२७.५६	पुरी (उड़ीसा)	१९.४८	८५.५२	+१३.२८
दतारपुर (पं.)	३१.५३	७५.४५	-२७.००	पुष्कर (राज.)	२८.३०	७४.३४	-३१.४४
दार्जिलिंग (बं.)	२७.०३	८८.१८	+२३.१२	फैजावाद (उ. प्र.)	२६.४७	८२.१२	-०१.१२
दुर्गापुर (बंगा.)	२३.३०	८७.२०	+१९.२०	फरुखावाद (उ. प्र.)	२७.२४	७९.३७	-११.३२
द्वारिका (गुज.)	२२.१४	६९.०१	+५३.५६	फगवाड़ा (पं.)	३१.१३	७५.४७	-२६.५२
देवरिया (उ. प्र.)	२३.३३	८३.४५	+०५.००	फरीदकोट (पं.)	३०.४०	७४.५७	-३०.१२
देवप्रयाग (उ. प्र.)	३०.०९	७८.३७	-१५.३२	फाज़िल्का (पं.)	३०.२४	७४.०४	-३३.४४
धनवाद (वि.)	२३.४७	८६.३०	+१६.००	फिरोजपुर (पंज.)	३०.५५	७४.४०	-३१.२०
धर्मशाला (हि. प्र.)	३२.१६	७६.२३	-२४.२८	फिल्लौर (पं.)	३१.०१	७५.४८	-२६.४८
नवलगढ़ (राज.)	२२.५१	७५.१८	-२८.४८	फरीदावाद (हरि.)	२८.२५	७७.२२	-२०.३२
नासिक (महा.)	२०.०२	७३.५०	-३४.४०	फतेहावाद (हरि.)	२९.३१	७५.३०	-२८.००
नरवाना (हरि.)	२९.३६	७६.०८	-२५.२८	वटाला (पं.)	३१.४९	७५.१४	-२९.०४
नागपुर (म. प्र.)	२१.०९	७९.०९	-२३.२४	वंगा (पं.)	३१.११	७५.५९	-२६.०४
नंगल (पं.)	३१.२३	७६.२३	-२४.०८	वलाचौर (पं.)	३१.०३	७६.१९	-२४.४४
नवांशहर (पं.)	३१.०७	७६.०८	-२५.२८	वद्रीनाथ (उ. प्र.)	३०.४४	७९.०२	-११.५२
नाभा (पं.)	३०.२५	७६.०९	-२५.२४	बुलन्दशहर (उ. प्र.)	२८.२४	७७.५४	-१८.२४
नाहन (हि. प्र.)	३०.३३	७७.२१	-२०.३६	बनारस (उ. प्र.)	२५.२०	८३.००	+०२.००
नालागढ़ (हि. प्र.)	३०.५७	७६.२२	-२४.३२	वरेली (उ. प्र.)	२८.२२	७९.२७	-१२.१२
नैनीताल (उ. प्र.)	२९.२३	७९.३०	-१२.००	वारावंकी (उ. प्र.)	२६.५६	८१.१३	-०५.०८
पठनकोट (पं.)	३२.१७	७५.४२	-२७.१२	वल्लभगढ़ (हरि.)	२८.२२	८८.२०	-२०.४०

नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.	·नाम नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टै. अन्तर मि. सैं.
वीकानेर (राज.)	२८.०१	७३.२२	–३६.३२	राजपुरा (पं.)	३०.२९	७६.३४	–२३.४४
वैजनाथ (हि. प्र.)	३२.०३	७६.३६	–२३.३६	रिवाड़ी (हरि.)	२८.१२	७६.४०	–२३.२०
विलासपुर (हि. प्र.)	३१.१९	७६.५०	–२२.४०	रामवन (ज. का.)	३३.१४	७५.१५	–२९.००
विलासपुर (म. प्र.)	२२.०५	८२.१३	–०१.०८	रियासी (ज. का.)	३३.०४	७४.५३	–३०.२८
वेंगलौर (क.)	१२.५८	७७.३८	–१९.२८	राजौरी (ज. का.)	३३.२३	७४.१८	–३२.४८
भटिंडा (पं.)	३०.११	७५.००	–३०.००	रायवरेली (उ. प्र.)	२६.१४	८१.१६	–०४.५६
भद्रवाह (का.)	३३.०४	७५.५०	–२६.४०	रामपुर (उ. प्र.)	२८.४८	७९.०५	–१३.४०
भिवानी (हरि.)	२८.४६	७६.१८	–२४.४८	राँची (बिहार)	२३.२३	८५.२३	+११.३२
भुवनेश्वर (हरि.)	२०.१०	८५.५०	+१३.२०	राजकोट (गुज.)	२२.१८	७०.५६	–४६.१६
भरतपुर (राज.)	२७.०५	७७.३०	–२०.००	रामेश्वरम् (ता.)	०९.१७	७९.२२	–१२.३२
भीलवाड़ा (राज.)	२५.२१	७४.४०	–३१.२०	लुधियाना (पं.)	३०.५५	७५.५४	–२६.२४
मलेरकोटला (पं.)	३०.३१	७५.५९	–२६.०४	लाहौर (पाक.)	३१.३५	७४.१८	–३२.४८
मोगा (पं.)	३०.४८	७५.१०	–२९.२०	लखनऊ (यू. पी:)	२६.५५	८०.५९	–०६.०४
मनसादेवी (हरि.)	३०.४४	७६.५२	–२२.३२	वृन्दावन (उ. प्र.)	२७.३३	७७.४४	–१९.०४
मकराना (राज.)	२७.०३	७४.४३	–३१.०८	विशाखापट्टनम	१७.४२	८३.२०	+०३.२०
मेरठ (उ. प्र.)	२९.०१	७७.०५	–१९.००	शिमला (हि. प्र.)	३१.०६	७७.१३	–२१.०८
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	२५.१०	८२.०७	+००.२८	शाहाबाद (हरि.)	३०.१०	७६.५५	–२२.२०
मुरादाबाद (उ. प्र.)	२८.५१	७८.४९	--१४.४४	श्रीनगर (ज. का.)	३४.०६	७४.५१	–३०.३६
मुगलसराय (उ. प्र.)	२५.१७	८३.११	+०२.४४	संगरूर (पंजाब)	३०.१२	७५.५३	–२६.२९
मंसूरी (उ. प्र.)	३०.२७	७८.०६	–१७.३६	सरहिन्द (पंजाब)	३०.३८	७६.२७	–२४.०८
मथुरा (उ. प्र.)	२७.२८	७७.४१	–१९.१६	सुल्तानपुर (पंजाब)	३१.५८	७७.०७	–२१.३२
मुज़फ्फर न. (उ. प्र.)	२९.२८	७७.४४	–१९.०४	सुन्दरनगर (हि.प्र.)	३१.३३	७६.५४	–२२.२४
मुम्वई (महा.)	१८.५७	७२.५५	–३८.२०	सोलन (हि.प्र.)	३०.५५	७७.०९	–२१.२४
मैसूर (कर्ना.)	१२.१८	७६.४२	–२३.१२	सोनीपत (हरि.)	२८.५८	७६:६९	–२२.०४
मण्डी (हि. प्र.)	३१.४३	७६.५८	–२२.०८	सहारनपुर (उ.प्र.)	२९.५८	७७.२३	–२०.२८
मनीकरण (हि. प्र.)	३२.०१	७७.२०	–२०.४०	होशियारपुर (पं.)	३१.३२	७५.५७	–२६.१२
मनाली (हि. प्र.)	३२.१७	७७.१९	–२०.४४	हमीरपुर (हि. प्र.)	४१.४२	७६.३०	–२४.००
मद्रास (चेन्नई)	१३.०४	८०.१७	–०८.५२	हिसार (हरि.)	२९.१०	७५.४६	–२६.५६
यमुनानगर (हरि.)	३०.०८	७७.१६	–२०.५६	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९.५८	७८.१३	–१७.०८
रामपुर वुशै. (हि. प्र.)	३१.२८	७७.३९	–१९.२४	हापुड़ (उ.प्र.)	२८.४३	७७.५०	–१८.४०
रोहड़ू (हि. प्र.)	३१.१२	७७.४४	–१९.०८	हैदरावाद (आ.प्र.)	१७.२०	७८.३०	–१६.००
रोपड़ (पं.)	३०.५७	७६.३२	–२३.५२	हावड़ा (बंगाल)	२२.३५	८८.२३	+२३.३२

जन्म कुण्डली में लग्न ज्ञात करना

जैसे कि पूर्व पृष्ठों में स्पष्ट किया गया है कि फलित ज्योतिष में जन्म लग्न का विशेष महत्त्व होता है। जन्म कुण्डली के सभी द्वादश भाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लग्न भाव से जुड़े रहते हैं। 'लग्नं हि मूलाधारम्' की लोकोक्ति अनुसार लग्न निकालने में यदि थोड़ी सी भी भूल हो जाए, तो फल कथन में बड़ी भारी विसंगतियां एवं त्रुटियां पैदा हो जाएंगी ।

दूसरे, उल्लेखनीय है कि भारतीय ज्योतिष एवं पंचाँगों में **'निरयन लग्न प्रणाली'** का अनुसरण किया जाता है, जबकि विदेशी पंचांगों में 'सायन लग्न पद्धति' को ग्रहण किया जाता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में लग्न साधन एवं लग्न शोधन करने के लिए अनेक विधाओं का वर्णन किया है। पूर्व पृष्ठों पर सायनार्क पद्धति द्वारा निरयण व सायन लग्न निकालने की प्रक्रिया उदाहरण सहित दी गई है।

आजकल लगभग सभी प्रमाणिक पंचाँगों में अपने–अपने नगर की दैनिक लग्न सारिणी दी जाती है। हमारे "पंचाँग दिवाकर" में दैनिक लग्न सारणी यद्यपि जालन्धर शहर की दी गई है परन्तु इसके साथ ही भारत के प्रसिद्ध ११० नगरों के **लग्नारम्भ एवं समाप्ति काल के संस्कार** भी दे दिए गए हैं जिनके आधार पर भारत का किसी भी प्रमुख नगर का लग्नारंभ एवं लग्न समाप्तिकाल ज्ञात कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप–मान लो आपने १७ नवम्बर दुपै. २.२० बजे को दिल्ली में लग्न देखना हो, तो पंचाँग २०५६ के पृष्ठ 191 सारिणी में २.२४ तक कुंभ लग्न है। अब पृष्ठ 194 पर लग्न संस्कार सारणी से दिल्ली में कुंभ का संस्कार –७ मिनट देखा तथा इसे २.२४ में से घटा देने पर दिल्ली में कुम्भ लग्न का समाप्ति काल दुपैहर २ बजकर १७ मिन्ट तक रहेगा, तथा मीन लग्न का आरम्भ भी दुपै. २.१७ बजे से होगा। अतएव दिल्ली में १७ नवम्बर ९९ को दुपैहर २.२० बजे पर मीन लग्न होगा। लग्न कुण्डली में और अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए लग्न स्पष्ट करने की आवश्यकता रहती है।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करना–पूर्व पृष्ठों में सायनार्क विधि द्वारा लग्न स्पष्ट करने की प्रक्रिया बतलाई थी परन्तु उसका अनुसरण कम ज्योतिषी ही करते हैं। आजकल ज्योतिषी अभीष्ट अक्षांश पर आधारित निरयण लग्न सारिणी के द्वारा ही लग्न स्पष्ट करते हैं। यह विधि–अपेक्षाकृत कुछ सरल भी है। इस पद्धति में तीन मुख्य तत्त्व वाँछनीय (Required) हैं–

1. जातक का जन्मेष्ट काल

---

* पाठक कृपया ध्यान दें कि "पंचाँग दिवाकर" पं. पन्नालाल ज्योतिषा चार्य जालन्धर द्वारा ही प्रयोग में लाएं। दिल्ली में छपने वाला पंचाँग दिवाकर अनेक अशुद्धियों एवं विसंगतियों से भरा होता है ।

2. तात्कालिक सूर्य स्पष्ट

3. अभीष्ट स्थान की लग्न सारिणी

जिस तारीख, समय एवं मासादि में जातक का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्व प्रथम उसी दिन एवं[1] * नगर का सूर्योदय[2]* ज्ञात करें। फिर अभीष्ट काल का इष्ट[3]* बना लें। तदुपरान्त इष्टकालिक (जन्म समय) का सूर्य स्पष्ट करके, अपने नगर के अक्षांश पर आधारित निर्मित लग्न सारिणी में सूर्य की राशि के दाईं तरफ (सामने) और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक संख्या मिले, उसे अपने इष्टकाल के घड़ी–पलों में जोड़ देने से जो घटी–पल संख्या प्राप्त हो, उस को लग्न सारिणी में देखें, वह संख्या जिस राशि अंक के सामने और जिस अंश के नीचे पड़ेगी, वही अभीष्ट तारीख एवं इष्ट काल पर का लग्न राशि, अंशादि स्पष्ट होगा।

ध्यान रहे, लग्न सारिणी उसी अक्षांश या निकटस्थ की होनी चाहिए जहां पर का जातक का जन्म हुआ हो।

उदाहरण–गत पृष्ठों में लिए गए १८ मई १९९९ ई. को दिल्ली में उत्पन्न काल्पनिक प्रातः ८–३२ को जन्मे जातक के ७/३० घट्यादि इष्टकाल पर लग्न स्पष्ट करेंगे। १८ मई की प्रातः ८–३२ पर सूर्य स्पष्ट १/२°/५५/१३ होगा। देखें पंचांग दिवाकर पृष्ठ (69)। अब पृष्ठ 144 पर दिल्ली की २९° अक्षांश की सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि के सामने और २°/५५' अंशादि अर्थात् ३° अंश के नीचे हमें ७/१३ की संख्या प्राप्त हुई। चूंकि वास्तव में स्पष्ट सूर्य ३ अंश की अपेक्षा २°/५५' है। तदनुसार सारणी में गणितानुसार १ पल कम होगा अर्थात् ७/१२ में जन्मेष्ट ७/३० को जमा कर देने से १४/४२ घ० प० संख्या प्राप्त होगी। दिल्ली की लग्न सारिणी में यह संख्या २ राशि के सामने, और १७° अंश के नीचे प्राप्त हुई। इस प्रकार जातक का इष्टकालिक लग्न स्पष्ट २/१७/०० प्राप्त हुआ, जो कि सायनार्क विधि द्वारा निकाले गए लग्न स्पष्ट के अत्यन्त निकट है ॥

ध्यान रहे, लग्न स्पष्ट तथा प्रत्येक ग्रहस्पष्ट में प्रथम अंक गत राशि का प्रतीक होता है। तदनुसार ऊपर वृष राशि गत होकर मिथुन लग्न राशि के १७° अंश पर लग्न स्पष्ट होगा।

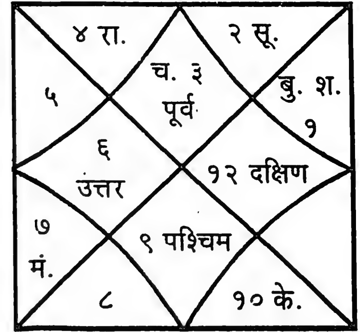
---

* 1. पंचांग दिवाकर २०५६ में भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त जानने की सरल विधि दी गई है।

* 2. इष्ट बनाने की सरल विधि गत पृष्ठों में वर्णित कर आएं हैं।

* 3. यदि प्राप्त संख्या पूरे राश्यंशों पर सटीक न बैठे और न्यूनाधिक हो, तो अनुपात अथवा त्रैराशि विधि द्वारा अंश कलादि बना लें। पंचांग दिवाकर में लगभग सभी प्रमुख नगरों के अक्षांशों की सारिणियां दी गई हैं।

* जन्मकुण्डली बनाना



लग्न स्पष्ट ही प्रथम भाव स्पष्ट कहलाता है। अब हम उपरोक्त उदाहरण के अनुसार जन्मकुण्डली बनाएँगे। चूंकि मिथुन राशि तीसरी राशि कहलाती है, अतएव कुण्डली के प्रथम भाव में ३ का अंक लिख कर आगे बाईं ओर ४, ५, ६ इत्यादि क्रमानुसार लिखते जाएँगे तथा १२ (मीन) तक लिखकर फिर १ (मेष), २ (वृष) राश्यंकों की स्थापना करेंगे।

ध्यान रहे, किसी दिन जिस राशि में सूर्य होता है, उसके जितने अंश भुक्त होते हैं, उस दिन सूर्योदय के समय उसी राशि (लग्न) का राश्यंश तुल्य भाग सूर्योदय से पूर्व बीत चुका होता है। इसी लिए इष्ट कालिक समय की कुण्डली आकाशीय ग्रह स्थिति का नक्शा कहलाती है।

(१) लग्न भाव पूर्वीय क्षितिज है। (३) सप्तम (भाव) पश्चिमी क्षितिज, (३) दशम (भाव) आकाश का शिरोपरी भाव अथवा दक्षिणी भाव तथा (४) चतुर्थ भाव पाताल (उत्तर) या पृथ्वी के नीचे जो आकाश का भाग है उसे कहते हैं।

ग्रह-स्थापन करना–अब उपरोक्त उदाहरण कुण्डली में १८ मई प्रातः ८/३२ बजे के ग्रह स्थापित करने की प्रक्रिया बताते हैं। यह बात स्मरण रहे कि कुण्डली में ग्रह स्थापन करने से पूर्व अपने अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर लेने चाहिएँ। अन्यथा भूल होने की सम्भावना हो जाती है। अभी स्थूल रूप से दैनिक ग्रह स्पष्ट के आधार पर कुण्डली में ग्रहस्थापन की प्रक्रिया बताते हैं। २०५६ की पंचांग दिवाकर पृष्ठ 91 पर १८ मई को प्रातः ८.३२ के ग्रहस्थापन करने हैं। ध्यान रहे, आजकल पंचांग दिवाकर में दिए गए ग्रहस्पष्ट प्रातः साढ़े पांच (५.३०) के लिखे होते हैं। चूंकि अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष के पृष्ठ 59 में १८ मई के सामने देखा, तो उस दिन में कोई भी ग्रह राशि परिवर्तन नहीं कर रहा है, अतएव पृष्ठ 91 पर प्रातः साढ़े पांच के ग्रहों में प्रातः ८.३२ तक कोई ग्रह राशि परिवर्तन न होने की स्थिति में, उन्हीं ग्रहों का स्थापन करेंगे। पंचांग के पृष्ठ 91 पर १८ मई के सम्मुख ग्रह स्पष्ट इस प्रकार दर्ज हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	१	२	६	०	११	२	०	३	९
अंश	०२	८	०२	२३	२८	१६	१५	२३	२३
कला	४७	१२	३५	३७	११	२४	३०	१७	१७
विकला	३९	४७	४४	४९	०१	५७	३३	२१	२१
	५७	१४/	१३	१२४	१३	६५	७	३	३
गति	४६	३५	२४	१२	६	४	२६	११	११
	०	०	०	मा	मा	मा	मा	व	व

ग्रह स्पष्ट को पढ़ने की विधि का भी ज्ञान होना चाहिए। जैसे ऊपर लिखित सूर्य स्पष्ट को १/२/४७/३९ लिखा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि सूर्य १ राशि गत, अर्थात वृष राशि के २ अंश ४७ कला एवं ३९ विकला पर संचार कर रहा है। अतएव जन्मकुण्डली में सूर्य २ नंबर राशि पर अर्थात् वृष राशि में रखेंगे। चन्द्र स्पष्ट २/८/१२/४७ लिखा है, अतएव चन्द्र गत राशि २ से आगे ३ राशि (मिथुन) में लगाएंगे। इसी भान्ति सभी ग्रहों की स्थापना गत राशि को छोड़कर आगामी राशि में करेंगे। सर्वत्र इसी प्रक्रिया का अनुसरण होता है। उदाहरण के लिए, गत पृष्ठ में ही कुण्डली में स्थापित ग्रहों का अवलोकन करें॥

नवग्रह स्पष्ट करना

फलित ज्योतिष में सूर्यादि ग्रहों को स्पष्ट करने का विशेष महत्त्व है। स्पष्ट ग्रहों के द्वारा ही कुण्डली में ग्रहों के बलाबल का ज्ञान होता है। बिना ग्रह स्पष्ट किए फलकथन करने से कई बार ज्योतिषी महोदय को उपहास का पात्र बनना पड़ता है

स्पष्टैः ग्रहैर्विना किंचित् ये वदन्ति कुबुद्धयः ।
ते दशान्तर्दशादीनां फले यान्त्युपहास्यताम् ॥

ग्रहों के स्पष्ट करने के उपरान्त किए गए फल–कथन में अधिक स्पष्टता एवं सूक्ष्मता आ जाती है।

प्राचीन सिद्धान्त ग्रंथों में ग्रह स्पष्ट के लिए चालन पद्धति का प्रचलन था। प्राचीन पंचांगों में प्रायः आठ–आठ दिनों के अर्थात साप्ताहिक ग्रह स्पष्ट दिए रहते थे। इसे पंक्ति या प्रस्तार कहते थे। प्रस्तार यदि इष्टकाल से आगे हो, तो प्रस्तार के घटी पल में से इष्टकाल के वार–घटी पलादि घटा दें, जो शेष रहे वह वारादि ऋ:ण चालन होता है। और जो इष्टकाल आगे हो और प्रस्तार(पंक्ति) पीछे हो, तो इष्टकाल के वार–घटी पल में से प्रस्तार के बार घटी पलादि घटा देने से शेष अंक वारादि धन चालन होता है।

धन चालन या ऋण चालन से ग्रहगति को गुणा करें, फिर **गोमूत्रिका** रीति से ६० का भाग दें, तो अंश कला–विकलात्मक लब्ध होगा। इसे पंचांग के पंक्तिस्थ ग्रह स्पष्ट में से घटा देने या जोड़ देने से इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट होगा। यहां यह ज्ञातव्य रहे कि वक्री ग्रह होने पर ऋण चालन को जोड़ना और घन चालन को घटाना चाहिए।

चालन में अनुपातिक रीति से किए गए ग्रह स्पष्टों में कुछ स्थूलता एवं अशुद्धि बनी रहती थी, क्योंकि आठ दिनों में चन्द्र, बुध, शुक्रादि ग्रहों की शीघ्रगति में दो–तीन दिनों में ही अन्तर पड़ जाता है।

ग्रह स्पष्ट करने की सुगम विधि–आजकल लगभग सभी प्रामाणिक पंचांगों में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिए रहते हैं। हमारे पंचाँग दिवाकर में विगत लगभग ५० वर्षों से दैनिक ग्रहस्पष्ट दिए जा रहे हैं। इनमें २४ घण्टों की ग्रह गति आसानी से जानी जा सकती है। पंचाँगों में दैनिक ग्रह स्पष्ट प्रातः साढ़े पांच (५.३०) बजे भा. स्टै. टाईम के दिए होते हैं । अपने अभीष्ट काल के ग्रह स्पष्ट जानने के लिए प्रत्येक ग्रह की २४ घण्टे

की दैनिक गति (कलात्मक में) निकाल लें,, फिर त्रैराशिक(इकाई) विधि द्वारा प्रति घण्टा की गति निकाल लें। आपका अभीष्ट–काल प्रातः ५.३० बजे से जितने घण्टे अधिक होगा, उतने घण्टे की गति आगे लिखी संस्कार तालिका में देखकर गत दिन तथा ग्रहस्पष्ट में + जमा या – कर देवें। यदि (ग्रह) मार्गी हो, तो प्राप्त गति को जमा कर देंवे तथा ग्रह वक्री होने की स्थिति में गत दिवसीय ग्रहस्पष्ट में घटा देने से अभीष्ट काल के ग्रहस्पष्ट निकल आएँगे। उदाहरण हेतु आगामी पृष्ठों पर देखें।

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार इष्टकालिक ग्रहस्पष्ट करना

आगे लिखी तालिका के आधार पर आप चन्द्रमा के अतिरिक्त सभी ग्रहों के इष्टकालिक स्पष्ट साधारण घटाव–बढ़ाव ± संस्कार करके ही जान सकते हैं। चन्द्रमा के स्पष्ट करने की प्रक्रिया आगे ग्रहस्पष्ट के उदाहरणों के पश्चात् दी गई है।

ग्रह गति (२४ घण्टे)	गति (१० मिन्ट)	गति (३० मिन्ट)	गति (१ घण्टा)	गति (२ घण्टे)	गति (३ घण्टे)	गति (४ घण्टे)	गति (५घण्टे)	गति (६ घण्टे)	गति (७ घण्टे)	गति (८ घण्टे)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.01	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00
5'	0.02	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.2	1.15	1.27	1.40
7'	0.03	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20
9'	0.04	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00
11'	0.05	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40
13'	0.15	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20
15'	0.06	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00
17'	0.07	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40
19'	0.08	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20
21'	0.09	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00
23'	0.10	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40
25'	0.10	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20
27'	0.11	0.34	1.07	2.15	3.32	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00
29'	0.12	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40
31'	0.13	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20
33'	0.14	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00
35'	0.14	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40
37'	0.15	0.46	1.32	3.05	4.37	6.20	7.42	9.15	10.47	12.20
39'	0.16	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00

ग्रह गति (२४ घण्टे)	गति (१० मिन्ट)	गति (३० मिन्ट)	गति (१ घण्टा)	गति (२ घण्टे)	गति (३ घण्टे)	गति (४ घण्टे)	गति (५घण्टे)	गति (६ घण्टे)	गति (७ घण्टे)	गति (८ घण्टे)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
41'	0.17	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40
43'	0.18	0.54	1.47	3.35	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00
45'	0.19	0.56	1.52	4.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00
47'	0.19	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40
49'	0.20	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20
51'	0.21	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00
53'	0.22	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40
55'	0.23	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	1820
57'	0.24	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00
59'	0.25	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40
60'	0.25	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00
61'	0.25	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20
63'	0.26	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00
65'	0.27	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40
67'	0.28	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20
69'	0.29	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00
71'	0.30	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20
73'	0.30	1.31	3.02	6.05	9.07	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00
75'	0.31	1.34	3.08	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00
77'	0.32	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40
79'	0.33	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20
81'	0.34	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	2700
83'	0.35	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40
85'	0.35	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20
87'	0.36	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00
89'	0.37	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40
90'	0.37	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00
92'	0.38	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40
94'	0.39	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20
96'	0.40	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00
98'	0.41	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40
99'	0.41	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00
100'	0.41	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20

ग्रह गति (२४ घण्टे)	गति (१० मिन्ट)	गति (३० मिन्ट)	गति (१ घण्टा)	गति (२ घण्टे)	गति (३ घण्टे)	गति (४ घण्टे)	गति (५घण्टे)	गति (६ घण्टे)	गति (७ घण्टे)	गति (८ घण्टे)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
102'	0.42	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00
104'	0.43	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40
106'	0.44	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20
108'	0.45	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00
110'	0.46	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40
112'	0.47	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20
114'	0.47	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00
116'	0.48	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40
118'	0.49	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.02
119'	0.49	2.29	4.57	9.55	14.52	19.50	24.47	29.45	34.42	39.40
120'	0.50	2.30	5.00	10.00	15.00	20-00	25.00	30.00	35.00	40.00

ग्रहों की २४ घण्टों की गति निकालना

उदाहरण–गत पृष्ठों में लिखे काल्पनिक बालक जो कि १८ मई १९९९ ई. प्रातः ८/३२ घ. मि. पर उत्पन्न माना गया था– के उदाहरण अनुसार ही सभी ग्रह स्पष्ट करते हैं। सर्वप्रथम हम पंचाँग २०५६ के पृष्ठ 91 से १८ मई और १९ मई के मध्य सूर्यादि ग्रहों की २४ घण्टों की गति निकालेंगे। तदुपरान्त ३ घण्टे २ मिनट की गति १८ मई के ग्रह स्पष्टों में जमा ± करने से हमें प्रातः ८.३२ बजे ग्रहस्पष्ट प्राप्त होंगे। ध्यान रहे, ग्रह वक्री हो, तो गत ग्रह स्पष्ट में से गति को घटाएंगे।

१९ मई, १९९९ ई. प्रातः ५१/२ बजे		१८ मई १९९९ ई. प्रातः ५१/२ बजे		२४ घण्टों की गति अंश कला विकला
सूर्य = (१/३/४५/२५)	–	१/२/४७/३९)	=	० – ५७' – ४६"
चन्द्रमा = (२/२२/४८/३७)	–	(२/८/१२/४७)	=	१४ – ३५ –५०"
मंगल = (६/२/२२/२०)	±	(६/२/३५/४४)	=	वक्री – (१३'–२४")
बुध = (०/२५/४२/०१)	–	(०/२३/३७/४९)	=	२–४–१२
गुरु = (११/२८/२४/०७)	–	(११/२८/११/०१)	=	०–१३–०६
शुक्र = (२/१७/३०/०१)	–	(२/१६/२४/५७)	=	१–५–४ (६५[illegible]४)
शनि = (०/१५/३७/५९)	+	(०/१५/३०/३३)	=	मार्गी – ७ – २६
राहु = (३/२३/१४/१०)	±	(३/२३/१७/२१)	=	वक्री – ३ – ११
केतु = (९/२३/१४/१०)	±	(३/२३/१७/२१)	=	वक्री – ३–११=गति

चूंकि हमने १८ मई ९९ की प्रातः आठ बत्तीस (८–३२) के ग्रहस्पष्ट करने है। जबकि हमें १८ मई प्रातः साढ़े पांच ५.३० बजे के प्राप्त हैं। अतएव साढ़े पांच के ग्रहों में ३ घण्टे, २ मिनट की ग्रह गति जमा कर देने से हमें प्रातः ८.३२ के ग्रह स्पष्ट प्राप्त हो जाएँगे। मंगल, राहु–केतु वक्री होने के कारण–इनकी गति गत ग्रह स्पष्ट में से घटाएंगे।

उपरोक्त तालिका में हमें सभी ग्रहों की २४ घण्टे की गति प्राप्त हुई। अब गत पृष्ठों में दी गई संस्कार तालिका द्वारा हमें सूर्यादि ग्रहों की ३ घण्टे एवं २ मिनट की गति निम्न प्रकार से प्राप्त होगी–

ग्रहों की प्राप्त २४ घण्टे की गति	कला विकला	ग्रहों की ३ घण्टें, २ मिनट की गति	कला विकला
सूर्य	= ५७'/४६	सूर्य	= ७.१८"
मंगल	= १३'/२४" वक्री	मंगल	= १.४५'
बुध	= १२०'/४	बुध	= १५.४०"
गुरु	= १३/०६	गुरु	= १:३८
शुक्र	= ६५/०४	शुक्र	= ८.१२"
शनि	= ७/२६	शनि	= ०.५७"
राहु	= ३/११ वक्री	राहु	= ०.२४"
केतु	= ३/११ वक्री	केतु	= ०.२४"

अब ग्रहों की उपरोक्त ३ घण्टे २ मिन्ट की प्राप्त गति को, १८ मई १९९९ के प्रातः कालीन साढ़े पांच (५.३०) के मार्गी ग्रह स्पष्टों में जमा तथा वक्री ग्रहों में से घटा देने से हमें १८ मई ९९ की प्रातः ८.३२ बजे के ग्रह स्पष्ट प्राप्त हो जाएँगे। जैसे –

१८ मई प्रातः ५.३० बजे के सूर्य में ३ घण्टे, २ मिन्ट की गति जमा करेंगे तथा–

	रा. अ. क. वि.	
सूर्य	१/२/४७/३९	
	७/१८	+ (३ घण्टे, २ मिन्ट की गति)
	१/२/५४/५७	सूर्य स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे, १९९९ ई.
मंगल वक्री	६/२/३५/४४	
	१/४५	– (३ घण्टे, २ मिन्ट की गति)
	६/२/३३/५३	मंगल स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे १९९९ ई.

बुध	०/२३/३७/४९	
	१५/४०	+ (३ घण्टे, २ मिन्ट की गति)
	०/२३/५३/२९	बुध स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे, ९९ ई. को
गुरु	११/२८/११/०१	
	१/३८	+ (३ घं., २ मिं. की गति)
	११/२८/१२/३९	गुरु स्पष्ट, प्रातः ८.३२ बजे, ९९ ई. को
शुक्र	२/१६/२४/५७	
	८/१२	+ (३ घं., २ मिं. की गति)
	२/१६/३३/०९	शुक्र स्पष्ट, प्रातः ८.३२ पर
शनि	०/१५/३०/३३	
	००/५७	+ (३ घं., २ मिंट की गति)
	०/१५/३१/३०	शनि स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे, १८ मई ९९
राहु (वक्री)	३/२३/१७/२१	
	००/२४	– (३ घं., २ मिं. की गति)
	३/२३/१६/५७	राहु स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे १८ मई, ९९

राहु के प्रथम अंक (राशि) में ६ जमा कर देने से केतु स्पष्ट निकल आता है

केतु (वक्री)	९/२३/१७/२१	
	००/२४	– (३ घण्टे, २ मिंट की गति)
	९/२३/१६/५७	केतु स्पष्ट प्रातः ८.३२ बजे, १८ मई ९९

नोट–उपरोक्त विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट करने से किंचित अशुद्धि रह जाती है चन्द्र स्पष्ट करने की प्रक्रिया कुछ अलग से होती है। वह विधि नीचे पृष्ठों में लिख रहे हैं।

चन्द्र स्पष्ट करने की विधि

चन्द्रस्पष्ट करने की सरल विधि यह है कि सर्वप्रथम इष्टकालिक नक्षत्र का भयात बना लें। भयात के पलात्मक बनाकर उनको ८०० से गुणा करें। फिर पलात्मक भभोग द्वारा भाग दे कर जो अंश, कला, विकलादि प्राप्त हों, उन्हें गत नक्षत्र के राशि, अंश–कलादि में जमाकर देने से इष्ट कालिक चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा। यदि भयात वाली संख्या पूरी घटित न हो, तो ६० से गुणा करके १० से भाग देकर कला विकला बना लें। इस प्रकार चन्द्र स्पष्ट करने का सूत्र निम्न प्रकार से होगा –

$$\frac{\text{भयात} \times ८००}{\text{भभोग}} = \text{प्राप्त कला, विकला + गत नक्षत्र का स्पष्ट)}$$

उदाहरण –अन्य ग्रहों की भांति चन्द्र स्पष्ट में भी १८ मई जन्मेष्ट ७/३० घट्यादि का उदाहरण ही लेंगे। पंचाँग २०५६ के पृष्ठ 59 से १८ मई को गत नक्षत्र

आर्द्रा को ६० में से घटा कर शेष को इष्टकाल को जमा कर देने से भयात बनाएँ तथा शेष में वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा जमा कर देने से भभोग प्राप्त होगा

जैसे	६० – ०		६० – ०
गत मृग.	५३ – ३३	गत मृग. नक्षत्र	५३/३३
शेष	६ – २७	शेष	०६/२७
इष्टकाल	+ ७ – ३०	वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा	४८/०५
भयात	= १३ – ५७	भभोग	= ५४/३२
पलात्मक	= ८३७	पलात्मक	= ३२७२

अब उपरोक्त सूत्र के अनुसार पलात्मक भयात को ८०० से गुणा कर देवें, फिर

गुणित संख्या को भभोग द्वारा भाग देने पर = $\frac{८३७ \times ८००}{३२७२}$ = २०४६' कलाएं

कैंलकूलेटर (Calculator) द्वारा भाग देने पर–

$\frac{२०४६' \text{ कला}}{६०}$ = ३°.४१' (कैलकूलेटर द्वारा प्राप्त संख्या)

३ अंश से आगे दशमलव के दाईं ओर के प्रथम अंक को ६ से गुणा करके २४ कला तथा १ विकला प्राप्त होगी

	राशि	अंश	कला	विकला	
	= ०	–३	– २४	–१	
गत नक्षत्र मृग	+ २	–६	–४०	–०	पंचाँग २०५६ के पृष्ठ 184 से .....
चन्द्रस्पष्ट	= २	– १०	– ०४	–१	दिल्ली में १८ मई की प्रातः ८.३२ पर

इस प्रकार कैलकूलेटर (Calculator) एवं उपरोक्त सूत्र की सहायता से चन्द्रस्पष्ट तुरन्त पता चल जाता है।

चन्द्र स्पष्ट की सहायता से विशोंतरी दशा–अन्तर दशा का भी शीघ्र पता चल जाता है। इसके लिए पंचाँग दिवाकर २०५६ के पृष्ठ 166 का अवलोकन करें।

चन्द्रगति ज्ञात करना–२८ लाख ८० हजार की संख्या को पलात्मक भभोग द्वारा भाग देने से लब्धि–चन्द्रगति कलाओं में तथा लब्धि को ६० द्वारा भाग देने पर चन्द्रगति अंश–कला में प्राप्त होगी। (Calculator द्वारा प्रयोग करने पर)

= $\frac{२८८००००}{३२७२}$ = ८८०.१२ ÷ ६० = १४°.३९' = चन्द्र गति

उपरोक्त ग्रहों के इष्टकालिक स्पष्ट को निम्नलिखित तालिका अनुसार व्यक्त करना चाहिए। ग्रहों के नीचे उनकी दैनिक गति तथा वक्रीं–मार्गी भी लिखना चाहिए> सूर्य–चन्द्र सदैव मार्गी रहते हैं। उनके नीचे मार्गी लिखने की आवश्यकता नहीं होती।

–उदाहरण नव ग्रह स्पष्ट चक्रम्–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	लग्न स्प.
राशि	१	२	६	०	११	२	०	३	९	२
अंश	२	१०	२	२३	२८	१६	१५	२३	२३	१७
कला	५४	४	३३	५३	१२	३३	३१	१६	१६	०
विकला	५७	०१	५९	२९	३९	०९	३०	५७	५७	
दै. गति	५७'	८८०'	१३'	१२०'	१३'	६५'	७'	३'	३'	–
	४६	–	२४	४	६	४	२६	११	११	–
वक्री मार्गी	–	–	वक्री	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	वक्री	वक्री	–

लग्न कुण्डली

रा. ४ | सू. २ | ३ च. शु. | ५ | श. १ बु. | ६ | १२ गु. | ७ मं. | ९ | ११ | ८ | १० के.

ग्रहस्थापन करना–जन्म एवं लग्न कुण्डली में लग्न राशि तथा फिर सूर्यादि ग्रहों की स्थापना करने की विधि उदाहरण सहित हम गत पृष्ठों में लिख आएं हैं। यहां हम पुनः निवेदन करना चाहेंगे कि लग्न राशि की स्थापना लग्न स्पष्ट के बाद तथा ग्रहों की स्थापना ग्रहस्पष्ट के बाद ही करनी चाहिए, अन्यथा भूल होने के संभावना हो जाती है। ग्रहस्पष्ट में राशि के अंक, गत राशि के प्रतीक होते हैं। अर्थात जिस ग्रह के आगे जो राशि–अंक लिखा होता है, ग्रह स्थापन उससे आगामी अंक में करना चाहिए। जैसे सूर्य के नीचे १/२/५२/३२ लिखा है, तो तात्पर्य हुआ कि सूर्य को १ से आगे २ राशि में स्थापना करेंगे तथा वह वृष (२) राशि के २ अंश, ५२ विकला और ३२ कला पर संचार कर रहा है। इसी भान्ति अन्य ग्रहों की स्थापना करेंगे॥

चन्द्र कुण्डली

रा. ४ | सू. २ | ३ च. शु. | ५ | बु. १ शु. | ६ | ३ गु. | ७ मं. | ९ | ११ | ८ | १० के.

चन्द्रकुण्डली–चन्द्रकुण्डली का उपयोग १२ वर्ष की आयु पर्यन्त, विशेष कर बालारिष्ट आदि योगों के विचार हेतु विशेषतया किया जाता है। इसमें चन्द्रमा स्थित राशि को लग्न मानकर शेष सभी ग्रहों को जन्म कुण्डली के अनुसार ही स्थापित कर देने चाहिएं। वर्तमान गोचर ग्रहों का विचार भी चन्द्र–कुण्डली के आधार पर किया जाता है।

द्वादश भाव स्पष्ट करना

जन्म कुण्डली में ग्रहों की वास्तविक स्थिति प्रकट करने के लिए ग्रहस्पष्ट एवं भाव स्पष्ट किए जाते हैं। भावादि स्पष्ट के उपरान्त ही चलित कुण्डली आदि चक्रों का निर्माण किया जाता है। जिससे भावों एवं ग्रहों सम्बन्धी फलादेश में और भी अधिक स्पष्टता एवं सूक्ष्मता आ जाती है। जैसे लिखा भी है–

भाव प्रवृत्तौ हि फल प्रवृत्ति पूर्ण फल भाव समांशकेषु ।

हासः क्रमाद् भाव विरामकाले फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

प्राचीन काल में ज्योतिष ग्रंथों में भाव स्पष्ट करने के लिए नत काल आदि अनेक विधियों का वर्णन मिलता है। परन्तु पाठकों की सुविधा के लिए आगे हम सरल एवं प्रचलित विधि का विवरण लिख रहे हैं।

इसके अनुसार भावस्पष्ट करने के लिए अभीष्ट स्थान की **लग्न सारिणी** तथा **दशम लग्न सारिणी** दोनों का प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम पहिले बताई विधि अनुसार सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों एवं जन्मेष्ट दोनों को जमा करके **प्राप्त संख्या** को लग्न सारिणी से देखकर लग्न स्पष्ट करेंगे, फिर उसी **प्राप्त संख्या** (सूर्य के राश्यंशों तथा इष्टकाल को जमा करके प्राप्त संख्या) को दशम लग्न सारिणी (पंचांग २०५६ के पृष्ठ 148) में देखने पर जो राशि, अंशादि प्राप्त होंगे, वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

अन्य भाव स्पष्ट करने की प्रक्रिया–दशम भाव के स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव स्पष्ट आता है। चतुर्थ भाव में से लग्न भाव को घटाने से जो शेष बचे, उसमें ६ का भाग देने पर जो अंश कलादि में षष्ठांश प्राप्त होगा, उसे लग्न स्पष्ट में जोड़ने से लग्न भाव की सन्धि होगी, लग्न की सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव, द्वितीय भाव में इस षष्ठांश को जोड़ने से धन (द्वितीय) भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय (सहज) भाव तथा तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करने से तृतीय भाव की सन्धि तथा सन्धि में षष्ठांश जोड़ देने से पुनः चतुर्थ भाव स्पष्ट आ जाता है।

तदुपरान्त ३० अंश में से इस षष्ठांश को घटाकर शेष को चतुर्थ भाव स्पष्ट में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि होगी, इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से पंचम भाव, पंचम में इसी शेष को जोड़ने से षष्ठ भाव और इस षष्ठ भाव में उसी शेष को जोड़ने से छठे भाव की सन्धि होगी। इस सन्धि में शेष जोड़ने से सप्तम भाव होगा।

इसी भान्ति लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम भाव की सन्धि में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। द्वितीय भाव में ६ राशि जोड़ देने से अष्टम भाव, द्वितीय भाव की सन्धि, में ६ राशि जोड़ देने से अष्टम भाव की सन्धि, तृतीय भाव में ६ राशि जोड़ने से नवम भाव, तृतीय की सन्धि में ६ राशि जोड़ने से नवम भाव की सन्धि, ... इसी क्रम से चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ भावों तथा उनकी

सन्धियों ६–६ राशि जोड़ने से क्रमानुसार दशम, एकादश एवं द्वादश भाव तथा उनकी सन्धियां प्राप्त हो जाएँगी।

उदाहरण–१८ मई १९९९ ई. दिल्ली में इष्ट ७/३० के उदाहरण में हमने लग्न स्पष्ट २/१७/०० निकाला था। इसमें सूर्य स्पष्ट १/२/५४/५७ ग्रहण किया गया था। दिल्ली की लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट १ राशि के सामने ३ अंश के नीचे घटी पल ७/१२ मिले थे। इनको जन्मेष्ट ७/३० में जमा करने पर १४/४२ संख्या प्राप्त हुई। इस संख्या को २०५६ संवंत की पंचांग दिवाकर (कृत पं. पन्नालाल ज्यो.) के पृष्ठ 138 पर छपी दशम लग्न सारणी में देखा, तो हमें दशम भाव स्पष्ट ११/५/०६ प्राप्त हुआ।

दशम भाव ११/५/०६ + ६ राशि जोड़ने से = ५/५/०६ = चतुर्थभाव

(चतुर्थ भाव – लग्न भाव) = शेष ÷ ६ = षष्ठांश

चतुर्थ भाव (५/५/०६) – (२/१७/००) लग्न भाव = २/१८°/०६'

$$२/१८°/६' = \frac{७८/०६}{६} = १३ \ ।०१$$ षष्ठांश(६ से भाग देने पर)

लग्न भाव में	२/१७/००	प्रथम भाव स्पष्ट
षष्ठांश जोड़ा	+ ०/१३/०१	
	३/००/०१	लग्न (प्रथम) भाव की सन्धि
षष्ठांश जोड़ा	+ १३/०१	
	३/१३/०२	द्वितीय भाव स्पष्ट
षष्ठांश जोड़ा	+ १३/०१	
	३/२६/०३	द्वितीय भाव की सन्धि
षष्ठांश	+ १३/०१	
	४/०९/०४	तृतीय भाव स्पष्ट
षष्ठांश	+ १३/०१	
	४/२२/०५	तृतीय भाव की सन्धि
षष्ठांश	+ १३/०१	
	५/०५/०६	चतुर्थ भाव स्पष्ट

अब ३० अंश में से १३°/०१ (षष्ठांश) को घटाया = १६/५९ शेष

चतुर्थ भाव	५/०५/०६	चतुर्थ भाव स्पष्ट
शेष को जमा किया	+ १६/५९	
	५/२२/०५	चतुर्थ भाव स्पष्ट
शेष को पुनः जमा किया	+ १६/५९	
	६/०९/०४	पंचम भाव

पंचम भाव स्प. = ६/०९/०४
शेष को जमा किया +१६/५९

६/२६/०३ पंचम की सन्धि
शेष को फिर जमा किया + १६/५९

७/१३/०२ षष्ठ भाव
शेष को जमा किया + १६/५९

८/००/०१ षष्ठ भाव की सन्धि
शेष को फिर जमा किया + १६/५९

८/१७/०० सप्तम भाव स्पष्ट

लग्न की सन्धि ३/००/०१ + ६ राशि = ९/००/१ (सप्तम भाव की सन्धि)
द्वितीय भाव ३/१३/०२ + ६ राशि = ९/१३/०२ अष्टम भाव
द्वितीय भाव की सन्धि ३/२६/०३+६ राशि = ९/२६/०३) अष्टम भाव की सन्धि
तृतीय भाव = ४/०९/०४ + ६ राशि = १०/९/०४ नवम भाव स्पष्ट
तृतीय भाव की सन्धि ४/२२/०५ + ६ राशि = १०/२२/०५ नवम भाव की सन्धि
चतुर्थ भाव = ५/०५/०६ + ६ राशि = ११/०५/०६ दशम भाव स्पष्ट
चतुर्थ भाव की सन्धि ५/२२/०५ + ६ राशि = ११/२२/०६ दशम की सन्धि
पंचम भाव = ६/०९/०४ + ६ राशि = ०/९/०४ एकादश भाव स्पष्ट
पंचम भाव की सन्धि ६/२६/०३ + ६ राशि = ०/२६/०३ एका. भाव स्पष्ट की सन्धि
षष्ठ भाव = ७/१३/०२ + ६ राशि = १/१३/०२ द्वादश भाव स्पष्ट
षष्ठ भाव की सन्धि ८/०/०१ + ६ राशि = २/०/०१ द्वादश भाव की सन्धि

द्वादश भावों के नाम—१ तनु, २ धन, ३ सहज, ४ सुख, ५ सुत, ६ शत्रु, ७ स्त्री, ८ आयु, ९ भाग्य, १० कर्म, ११ लाभ, १२ व्यय, ये क्रमशः बारह भावों के नाम हैं। द्वादश भाव स्पष्ट और प्रत्येक भाव के पश्चात उससे सम्बन्धित सन्धि का मान लिखते हैं –

द्वादश भाव स्पष्ट चक्र

भाव	तनु १	सन्धि ०	धन २	सन्धि ०	सहज ३	सन्धि ०	सुख ४	सन्धि ०	सुत ५	सन्धि ०	शत्रु ६	सन्धि ०
राशि	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	८
अंश	१७	०	१३	२६	९	२२	५	२२	९	२६	१३	०
कला	०.	१	०२	०३	४	०५	६	०५	४	३	२	१

भाव	स्त्री ७	सन्धि ०	आयु ८	सन्धि ०	भाग्य ९	सन्धि ०	कर्म १०	सन्धि ०	लाभ ११	सन्धि ०	व्यय १२	सन्धि ०
राशि	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	०	१	२
अंश	१७	००	१३	२६	९	२२	५	२२	९	२६	१३	०
कला	०	१	०२	०३	४	०५	०६	०६	४	०३	०२	०१

ग्रह सन्धि से कम हो, तो पूर्वभाव के फल को तथा यदि सन्धि से अधिक हो तो आगामी भाव के फल को प्रदान करता है। इसी भान्ति भाव के अंशादि के समान जो ग्रह होता है, वही ग्रह भावोत्पन्न पूर्णफल को देता है। यदि भाव के आगे पीछे ग्रह हो तो त्रैराशिक द्वारा फल विचार करना चाहिए।

भावांश तुल्यः खलु वर्तमानं भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते ।
भावोनके स्यादधिके च खेटे त्रैराशिकेनात्र फलं विचार्यम् ॥

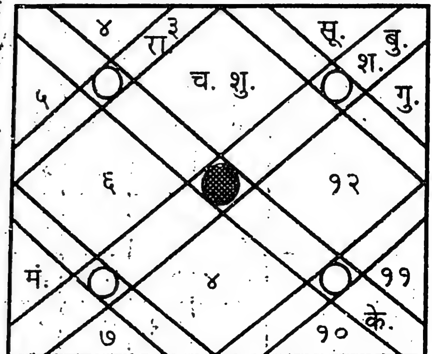
किसी भाव की पूर्वतः सन्धि को आरम्भ सन्धि तथा आगामी सन्धि को विराम सन्धि कहते हैं। यदि सन्धि के समान ही ग्रह के अंशादि हों, तो ग्रह निष्फली रहता है। यदि आरम्भ सन्धि से ग्रह कम हो, तो पूर्वभाव का फल या विराम सन्धि से अधिक ग्रह हो तो अगले भाव का फल देता है।

चलित भाव चक्र

भारतीय पद्धति अनुसार लग्न स्पष्ट को भाव का मध्य बिन्दु कहते हैं। द्वादश भावों में ग्रहों की ठीक–ठीक स्थिति जानने के लिए चलित भाव कुण्डली बनाई जाती है। चलित के बिना ग्रहों की स्थिति का ठीक ज्ञान नहीं होता और न ही फलकथन में पूर्ण सूक्ष्मता आ पाती है। जैसे लिखा है –

विना चलित चक्रेण, वृथा वै भावजं फलम् ।
यथा संयौवना नारी, पति हीना न शोभते ॥
भाव तुल्ये गृहे रूपं, सन्धि तुल्ये तु निष्फलम् ॥

चलित भाव कुण्डली



चलित भाव कुण्डली बनाने के लिए द्वादश भाव स्पष्ट और नव ग्रह स्पष्ट दोनों को ध्यान में रखना चाहिए। यदि कोई ग्रह राश्यंशादि किसी भाव के राश्यंशादि से कम होगा, तथा उस भाव का आरम्भ सन्धि से कम होगा, तो वह ग्रह उसी भाव में एवं च यदि आरम्भ सन्धि से कम होगा, तो पिछले भाव में तथा यदि कोई ग्रह विराम सन्धि से

अधिक होगा, तो वह ग्रह आगामी भाव में लगाया जायेगा॥

उदाहरण—गत पृष्ठों में १८ मई, ९९ के ग्रह स्पष्टों व भाव स्पष्टों का उदाहरण ग्रहण करते हैं—

सूर्य स्प. १/२/५४/५७ है, जबकि ११वें भाव की सन्धि ०/२६/३, सूर्य स्प. से कम है तथा सूर्य स्प. व्यय भाव से कम है। अतएव सूर्य व्यय भाव में स्थापित करेंगे। चन्द्रमा प्रथम भाव २/१७ से कम तथा द्वादश भाव की सन्धि से अधिक है अतः चन्द्र लग्न में रखेंगे। बुध स्प. ०/२३/४८, एकादश भाव से अधिक तथा एका. सन्धि से कम होने से एकादश भाव की सन्धि में रहेगा। इसी प्रकार सभी ग्रहों की स्थापना की गई है।

भावों में विश्वादि बल—भाव के पूर्णफल को २० विश्वा तथा हीनफल को शून्य (०) विश्वाबल से जाना जाता है। इसको 'विंशोपक बल' भी कहते हैं।

आरम्भ सन्धि (० विश्वा) से भाव (२० विश्वा) तक ग्रह सम्बद्ध भाव के फल को एकत्र करता है, तथैव भाव से विराम सन्धि तक रहने वाला ग्रह 'फल—क्षय' करता है। अर्थात् २० विश्वा (भाव) से शून्य विश्वा (सन्धि) तक भावफल क्रमशः क्षीण होता जाता है।

विश्वा साधन—की विधि इस प्रकार से है—यदि ग्रह स्पष्ट भाव से कम हो, तो ग्रह स्पष्ट में से भाव की आरम्भ सन्धि को घटावें। यदि भाव से ग्रहस्पष्ट अधिक हो, तो भाव की विराम सन्धि में से ग्रह को घटावें, शेष को २० से गुणा करें। फिर जिस सन्धि के द्वारा ग्रह घटाया हो उस सन्धि और भाव का अन्तर करें। इस अन्तर को २० गुणित संख्या में भाग देने पर लब्धि में विश्वादि प्राप्त होंगे। ग्रह अमुक भाव में कितने प्रमाण फल देगा यह विंशोपक—बल द्वारा ही ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण—पिछले उदाहरण में सूर्य व्यय भाव से कम है। अतः १२वें भाव रूप में से ११वें भाव की सन्धि को घटाएँगे—

व्यय भाव में आरम्भ सन्धि को घटाया = १/१३/०२
0/२६/०३
१६/५९
×६०
= ९६०
+ ५९
= १०१९

सू. स्पष्ट = १/२/५२/३२
११वें भाव की आरम्भ संन्धि = ०/२६/०३/००
६/४९/३२
अथवा = ६/५०
६/५० × ६० = ३६०+५०=४१०
४१० × २० = ८२००
८२०० ÷ १०१९ = ८.२
सूर्य की विश्वा = ८.२

इस प्रकार सूर्य की विश्वा ८.२ प्राप्त हुई, जो अत्यल्प है। इसी भान्ति अन्य ग्रहों की विश्वा ज्ञात कर सकते हैं। केतु–राहु आदि ग्रहों के विश्वाबल आनयन में कुछ सावधानी बरतनी चाहिए। क्योंकि भावों के राश्यंशों में वृद्धि होती जाती है, जबकि राहु–केतु एवं वक्री ग्रहों के स्पष्ट में कमी होती है। वैसे विश्वा साधन की विधि अन्य ग्रहों के समान ही है।

जो कोई ग्रह भाव मध्य के जितने पास होगा, उतना ही उस भाव का अधिक फल करेगा। ग्रह जिनता भाव मध्य से दूर होगा, उतना ही उस भाव या फल कम करेगा। आगे फलित खण्ड में इसका विस्तृत विवरण करेंगे।

षड्वर्ग या सप्तवर्ग द्वारा फलादेश विचार

जन्म कुण्डली यद्यपि फलित ज्योतिष का मुख्य आधार है। परन्तु फलादेश में और भी अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए षडवर्गी एवं सप्तवर्गी भाव कुण्डलियों का आश्रय लिया जाता है। षड्वर्ग अथवा सप्तवर्ग कुण्डलियों में विशेषतया निम्न वर्ग कुण्डलियों का विचार किया जाता है। १. लग्न २. होरा, ३. द्रेष्काण, ४. सप्तमांश, ५. नवांश, ६. द्वादशांश, एवं ६. त्रिशांश ॥

जातकाभरण में लिखा है कि लग्न से देह एवं देह सम्बन्धी सभी विषयों का, होरा से धन सम्पदा एवं सुख–दुख का, द्रेष्काण से मान सम्मान एवं भातृ सुख का, सप्तमांश कुंडली से संतान एवं बन्धु सुख का, नवांश कुण्डली से विवाह एवं सौभाग्यादि सुखों का, द्वादशांश कु. से माता पिता, स्त्री आदि सुखों का, तथा त्रिशांश कुं. से जातक का व्यवहार–आचरण, शरीर कष्ट आदि का विचार करना चाहिए।

षड्वर्गी एवं सप्तवर्गी कुण्डिलयों द्वारा फलादेश सम्बन्धी अधिक विस्तार हेतु ज्योतिष तत्त्व का फलित सम्बन्धी द्वितीय भाग पढ़ें ।

जन्म कुण्डली, होरा, द्रेष्काण, नवांश आदि सभी वर्ग कुण्डलियों का महत्त्व एक जैसा नहीं है।

'बृहत्पाराशरी' के अनुसार लग्न, होरा, द्रेष्काण आदि वर्ग कुण्डलियों को निम्नलिखित क्रमानुसार महत्त्व प्रदान करना चाहिए। जैसे–

लग्न =५, होरा=२, द्रेष्काण=३, सप्तमांश=२.५, नवांश =४.५, द्वादशांश = २, त्रिशांश = १ = कुल विंशोपक २०

आजकल हस्त लिखित अथवा कम्पयूटरीकृत सभी बृहद् जन्मपत्रियों में होरा, द्रेष्काण, नवांश आदि कुण्डलियाँ तो बहुधा दी रहती हैं। परन्तु अधिकांश ज्योतिषीगण उन पर गम्भीरता से विचार नहीं करते। परन्तु मेरा सविनय निवेदन है कि फलादेश में और अधिक सटीकता एवं सूक्ष्मता के लिए जन्म कुण्डली के साथ द्रेष्काण, नवांश आदि

कुण्डलियों पर भी अवश्य विचार करना चाहिए। जो ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ भावस्थ हो, तथा होरा, द्रेष्काण, नवांश आदि कुण्डलियों में भी स्व–वर्गी अथवा शुभ राशिस्थ (उच्च, स्वक्षेत्री, मित्र–क्षेत्र आदि), वह ग्रह अपने भाव सम्बन्धी उत्तम फल देता है। यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह नीच अथवा अशुभ स्थिति में हो परन्तु नवांश–कुण्डली में उच्च स्थिति में हो, तो विवाह एवं सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

उदाहरण के लिए जन्म–कुण्डली में विवाह सुख का विचार सप्तम भाव एवं सप्तमेश की स्थिति से किया जाता है। यदि नवांश कुण्डली में (जन्म कु. के) सप्तमेश ग्रह की स्थिति तथा नवांश कुण्डली के सप्तम भाव तथा सप्तमेश ग्रह की स्थिति का विश्लेषण करना भी विशेष महत्त्वपूर्ण होगा।

षड्वर्ग या सप्तवर्ग बनाना—होरा, द्रेष्काण, नवांश आदि षड्वर्ग कुण्डलियों के निर्माण के लिए सर्वप्रथम लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट का ज्ञान होना आवश्यक है। उन्हीं के आधार पर षड्वर्ग या सप्तवर्गी कुण्डलियों की रचना की जाती है।

होरा कुण्डली—एक राशि में दो होरा होती हैं। चूंकि एक राशि में ३० अंश होते हैं। अतएव प्रत्येक राशि में दो होरा, १५–१५ अंश की होती है। मेष, मिथुन आदि विषम राशियों में १५ अंश तक सूर्य की होरा, और १६ से ३० अंश तक चन्द्रमा की होरा होती है।

सम राशि (वृष, कर्क, कन्या आदि) में १५ अंश तक चन्द्रमा की होरा और १६ से ३० अंश तक सूर्य की होरा होती है। लग्न स्पष्ट जिस राशि, अंश पर होगा तदनुसार ही होरा का लग्न ५ या ४ होता है। होरा–कुण्डली में ग्रहों की स्थापना भी ग्रहस्पष्ट की राशि अंशादि स्पष्टानुसार होगी। सूर्य की होरा के लिए ५ तथा चन्द्रमा की होरा के लिए ४ के अंक का प्रयोग किया जाता है। राश्यांशों के अनुसार होरा चक्र निम्नानुसार होगा—

होरा चक्र

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१ से १५°	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४
१६° से ३०°	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५

उदाहरण—गत पृष्ठों में १८ मई को लग्न स्पष्ट २/१७/०० अर्थात् मिथुन राशि के १७ अंश पर था। तदनुसार मिथुन राशि के १५° से अधिक अंश होने से होरा कुण्डली में कर्क (४) लग्न लगाएँगे, जबकि सामने वाले कोष्ठक सिंह (५) राशि लगा देंगे। आगे ग्रहस्पष्ट अनुसार ही सभी ग्रहों की स्थापना उपरोक्त चक्र के आधार पर करेंगे। सूर्य स्पष्ट १/०२° अर्थात् वृष के लगभग ३° अंश पर होने से सूर्य को कर्क राशि

में लगाएँगे। चन्द्र मिथुन के १० अंश होने से सिंह की होरा में लगाएँगे। मंगल तुला के २°/३४ होने से सिंह राशि में होगा। बुध मेष के २३ अंश होने कर्क (४) राशि में होगा। गुरु मीन के २८ अंश पर होने से द्वितीय होरा अर्थात्, सिंह राशि में रखेंगे। इसी तरह शुक्र, शनि, राहु–केतु आदि सभी ग्रहों की स्थापना करेंगे।

४
सू. बु. शु.

५
श. च. मं. गु.
रा. के.

द्रेष्काण विचार–एक राशि के तृतीयांश (तृतीय भाग) को द्रेष्काण कहते हैं। अर्थात् प्रत्येक राशि में ३ द्रेष्काण होते हैं। प्रत्येक द्रेष्काण १०–१० अंश का होता है। अर्थात् १ से १० अंश तक प्रथम द्रेष्काण, ११ से २० अंश तक द्वितीय द्रेष्काण, २१ से ३० अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है।

तीनों द्रेष्काण एक से पंचम राशि में रहते हैं। अर्थात् प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, दूसरा उस से पंचम राशि का, तथा तीसरा द्रेष्काण पंचम से पंचम अर्थात् नवम राशि का होता है। स्पष्टता के लिए निम्न चक्र देखें–

द्रेष्काण	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ से १० अंश प्रथम द्रेष्काण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
११ से २० अंश द्वितीय द्रेष्काण	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
२१ से ३० अंश तृतीय द्रेष्काण	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

उदाहरण कुण्डली में लग्न स्पष्ट २/१७/०० होने से मिथुन राशि का द्वितीय द्रेष्काण–अर्थात् तुला राशि का द्रे. लग्न होगा। सूर्य वृष राशि के २ अंश, ५४' का होने से सूर्य प्रथम द्रे. अर्थात् वृष राशि में ही लगेगा। चन्द्र मिथुन के १० अंश, ४ कला होने से द्वितीय द्रेष्का॰ अर्थात् तुला राशि में होगा। मंगल तुला के प्रथम द्रेष्काण अर्थात् तुला राशि में ही रहेगा। बुध मेष के २३ अंश ५३ कला होने से ३रे द्रेष्काण अर्थात् धन में होगा। गुरु मीन के २८ अंश पर संचार होने से वृश्चिक राशि में लगेगा। इसी भान्ति शुक्र, शनि, राहु, केतु आदि शेष ग्रहों की स्थापना करेंगे।

द्रेष्काण कुण्डली

७ च. मं. शु.
८ गु.
९ बु.
१०
११
१२ रा.
१
२ सू.
३
४
५ श.
६ के.

४. **सप्तमांश**–एक राशि अर्थात् ३० अंशों के ७ बराबर भाग करने से प्रत्येक भाग ४ अंश, १७ कला, साढ़े ८ विकला का होता है। इसी को सप्तमांश कहते हैं।

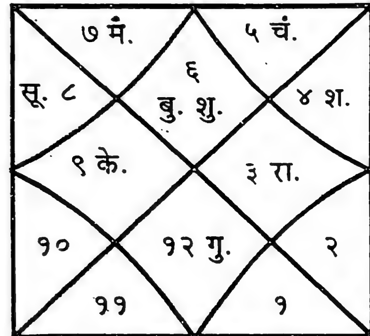
विषम राशि में उसी राशि से, सम राशि में सप्तम राशि से सप्तमांश की गणना होती है। सप्तमांश चक्र नीचे दिया जा रहा है।

सप्तमांश चक्र

अंशकलादि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृशि.	धन	मक.	कुम्भ	मीन	भाग
४/१७/८ प्रथ. भाग	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	प्रथम भाग
८/३४/१७ द्विती. भाग	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	द्वि. भाग
१२/५१/२६ तृती. भाग	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	तृती. भाग
१७/८/३४ चर्तु. भाग	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	चतु. भाग
२१/२५/४२ पंचम भाग	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	पंचम भाग
२५/४२/५१ षष्ठ. भाग	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	षष्ठ भाग
३०/०/०० सप्त. भाग	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	सप्त भाग

उदाहरणार्थ–जन्म लग्न स्पष्ट २/१७/००/० है। यह अंशादि स्पष्ट मिथुन राशि के चतुर्थ सप्तमांश में पड़ता है। अतः लग्न का सप्तमांश लग्न कन्या (६) हुआ। सूर्य स्प. वृष राशि के २ अंश ५४ कला पर है, जो कि वृष के प्रथम सप्तमांश चक्र के प्रथम भाग में होने से कुण्डली में वृश्चिक राशि पर होगा। चन्द्रमा मिथुन के १० अंश कला पर होने से तृतीय भाग–अर्थात् सिंह राशि में होगा। मंगल तुला के २°।३३' अंशादि में होने से प्रथम भाग अर्थात् तुला में होगा। बुध मेष के २३°/५३ होने से षष्ठ भाग अर्थात् कन्या में होगा। गुरु मीन राशि के २८ अंश पर होने से सप्तम भाव अर्थात् मीन राशि में लगेगा। शुक्र, मिथुन के १६°/ ३३' पर होने से कन्या में होगा। इसी भान्ति शनि राहु आदि सभी ग्रह लगेंगे।

सप्तमांश कुण्डली



नवांश अर्थात् नवमांश कुण्डली बनाना

एक राशि के नवमें भाग को नवांश या नवमांश कहते हैं। यह ३ अंश, २० कला का होता है। मेष राशि में पहला नवांश मेष का, दूसरा वृष का, तीसरा मिथुन का, चौथा कर्क का पांचवां सिंह का, छठा कन्या का, सातवां तुला का, आठवां वृश्चिक का, और नौवां धनु राशि का होता है। इस प्रकार वृष में पहला नवांश मकर का, दूसरा कुम्भ का नवांश इत्यादि क्रमानुसार चलेगा। मिथुन का नवांश तुला से शुरु होकर क्रमानुसार चलेगा। कर्क का कर्क से, सिंह का मेष से, कन्या का मकर से, तुला का तुला से, वृश्चिक का कर्क से, धनु का मेष से पुनः मकर राशि का नवांश मकर से, कुम्भ का तुला से एवं मीन का कर्क राशि से प्रथम नवांश शुरु होकर नवम भाग मीन के नवांश पर समाप्त होगा। उपरोक्त प्रक्रिया नीचे लिखे नवांश चक्र से स्पष्ट होगी।

नवांश बोधक चक्र

राशि–	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिं.	कन्या	तुला	वृशि.	धन	मक.	कुंभ	मीन	अंश कला
प्रथ. भाग	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३°–२०' तक
द्वि. भाग	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६°–४०' तक
तृती. भाग	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०°–००' तक
चतु. भाग	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३°–२०' तक
पंचम भाग	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६°–४०' तक
षष्ठ भाग	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०°–००' तक
सप्त. भाग	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३°–२०' तक
अष्ट. भाग	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६°–४०' तक
नवम भाग	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०°–००' तक

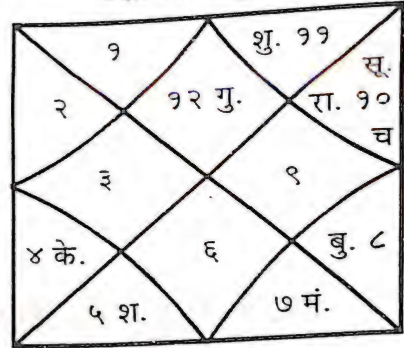
चर राशि का प्रथम नवाँश, स्थिर राशि का पांचवाँ और द्वि–स्वभाव राशि का अंतिम नवांश सर्वोत्तम माने जाते हैं। जैसे– मेष आदि चर राशियों में १ पहिला नवांश और वृषादि स्थिर राशियों में मध्य का (५वां) स्वराशि होने से शुभ होता है ।

नवांश कुण्डली द्वारा स्त्री एवं विवाह सुख एवं सौभाग्य आदि का विशेष रूप से विचार किया जाता है। यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह स्वोच्च स्थिति में हो, और नवांश कुण्डली में भी उसी शुभ राशि की स्थिति में हो, तो ऐसा ग्रह वर्गोत्तम कहलाता है, और

वह अत्यन्त शुभफलप्रद माना जाता है । विशेष अधिक विस्तृत फलादेश के लिए हमारी पुस्तक 'फलित ज्योतिष तत्त्व' का अवलोकन करें। लेखक पं. पन्ना लाल पँचांगकर्ता ।

नवांश कुण्डली बनाने की विधि—लग्न स्पष्ट जिस नवांश में पड़ता हो, वही नवांश कुण्डली का लग्न होता है। उपरोक्त नवांश बोधक चक्र की सहायता से ग्रहस्पष्ट में ग्रहों की नवांश स्थिति ज्ञात करके, ग्रहों की स्थापना कर देने से नवांश कुण्डली बन जायेगी ।

उदा. नवांश कुण्डली



उदाहरण—जैसे कि १८ मई को हमने लग्न स्पष्ट २/१७/०० निकाला था। नवांश चक्र में मिथुन राशि के नीचे और १६°/४० से अधिक २०/०० अंश के भीतर षष्ठ भाग में मीन (१२) राशि मिली। अतएव नवांश लग्न मीन होगा। सूर्य (१/२°/५५') वृष राशि के नीचे २ अंश, ५५ कला होने से नवांश के प्रथम भाग अर्थात् मकर राशि में लगेगा । चन्द्रमा मिथुन के १०° अंश से अधिक ४ कला होने से चतुर्थ नवांश की मकर राशि में स्थापित होगा। मंगल तुला के २°/३३ अंशादि होने से नवांश के प्रथम भाग तुला मं होगा । इसी भान्ति शेष सभी ग्रहों की स्थापना करेंगे।

द्वादशांश कुण्डली बनाना

राशि के बाहरवें भाग अर्थात् २ अंश ३० कला को द्वादशांश कहते हैं । इसमें माता–पिता के सुख का विशेष रूप से विचार किया है। **स्याद द्वादशांशे पितृ–मातृ सौख्यम्।''**

द्वादशांश की गणना प्रथम अपनी ही राशि से होती है । बाद में क्रम से दूसरा, तीसरा आदि आगामी राशि का होता है । सुगमता के लिए द्वादशांश चक्र दिया जाता है।

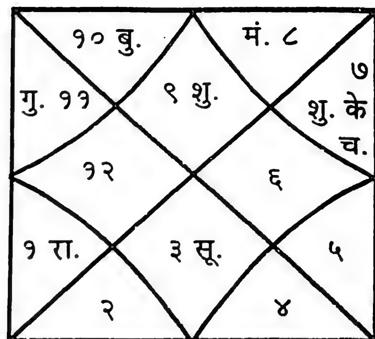
द्वादशांश चक्र

भाग	अंश–कला	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर.	कुंभ	मीन
१ भाग	२/३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२ भाग	५/ ००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३ भाग	७/३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४ भाग	२०/०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५ भाग	१२/३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६भाग	१५/०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७भाग	१७/३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६

भाग	अंश कला	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
८भाग	२०/००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९भाग	२२/३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४.	५	६	७	८
१०भाग	२५/०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११भाग	२७/३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२ भाग	३०/००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

उदाहरणार्थ लग्न स्पष्ट २/१७/०० है– अर्थात् मिथुन राशि के सप्तम भाग में धन राशि के अन्तर्गत पड़ता है। अतः द्वादशांश लग्न धन होगा। सूर्य वृष के २ अंश, ५५' क़ला होने द्वितीय भाग, अर्थात् मिथुन राशि में लगेगा । इसी भान्ति अन्य सभी ग्रहों की स्थापना करेंगे ।

द्वादशांश कुण्डली



त्रिशांश कुण्डली बनाना

त्रिशांश में प्रत्येक राशि में ५–५ खण्ड होते हैं। परन्तु विषम एवं सम राश्ंयशों के खण्डों में भिन्नता है तथा इन खण्डों के स्वामी भी अलग–अलग होते हैं ।मेष, मिथुन आदि विषम राशियों में १ से ५ अंश तक, प्रथम खण्ड का स्वामी मंगल, ६ से १० अंश तक द्वितीय खण्ड का शनि, ११ से १८ अंश तक के खण्ड का गुरु, १९ से २५ तक बुध, २६ से३० तक अंश तक पंचम खण्ड का स्वामी शुक्र होता है ।–अर्थात् विषम राशि में स्थित कोई ग्रह २६ से ३० अंश के बीच होगा तो वह ग्रह शुक्र के त्रिशांश में माना जाएगा ।

विषम राशि का त्रिशांश चक्र

अंश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ
१ से ५ अंश =मंगल	१मं.	१मं.	१मं.	१मं.	१मं.	१मं.
६ से १० अंश =शनि	११शनि	११श.	११श.	११श.	११श.	११श.
११ से १८ अंश =गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु	९ गुरु
१९ सें २५ अंश =बुध	३ बु	३ बु	३ बु	३ बु	३ बु	३ बु
२६ से ३० अंश =शुक्र	७ शु	७ शु	७ शु	७ शु	७ शु	७ शु

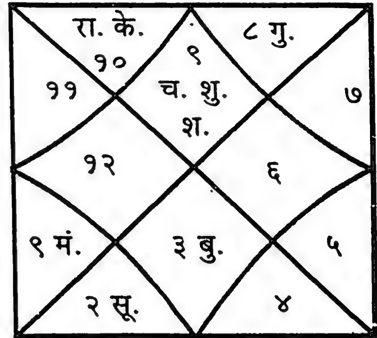
सम राशियों में –वृष, कर्क, कन्या, वृश्चि., मकर व मीन में ५ अंश तक शुक्र का, दूसरा ६ से १२ अंश तक बुध का, तीसरा (१३ से २०°) तक गुरु का, चौथा (२१ से २५) अंश तक शनि का. और पाँचवां २६ से ३० अंश तक मंगल का त्रिशांश होता है ।

सम राशि का त्रिशांश चक्र

अंश	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन
१ से ५ अंश (शुक्र)	२	२	२	२	२	२
६ से १२ अंश (बुध)	६	६	६	६	६	६
१३ से २० अंश (गुरु)	१२	१२	१२	१२	१२	१२
२१ से २५ अंश (शनि)	१०	१०	१०	१०	१०	१०
२६ से ३० अंश (मंग)	८	८	८	८	८	८

उदाहरण—जैसे १८ मई को उदाहरण में लग्न स्पष्ट २/१७/०० है, तो विषम राशि मिथुन के नीचे १० अंश से अधिक एवं १८ अंश से अल्प होने से तृतीय भाग में धनु लग्न राशि होगी। सूर्य स्प. वृष (सम) राशि २°/५५ अंश कला पर होने से प्रथम वृष एवं शुक्र के त्रिशांश में होगा। चन्द्रमा विषम मिथुन राशि के १० अंश ४ कला होने से धनु (गुरु) के त्रिशांश में होगा। मंगल तुला के २°/३३ अंशादि पर होने से प्रथम त्रिशांश अर्थात् मेष में होगा। इसी भान्ति अन्य सभी ग्रहों की स्थापना करेंगे।

त्रिशांश कुण्डली



ऊपर लिखित विभिन्न वर्णों की लग्न राशि तथा उनमें ग्रहों की स्थिति समग्र रूप में एक ही स्थान पर निम्न चक्र द्वारा स्पष्ट है –

सप्तवर्गी चक्र

ग्रह	स्पष्ट	ग्रह राशि	होरा	द्रेष्का	सप्तमांश	नवांश	द्वादश.	त्रिशां.
लग्न	२/१७/००	मिथुन	४	७	६	१२	९	९
सूर्य	१/२/५४/५७	वृष	५	२	८	१०	३	२
चन्द्र	२/१०/४/१	मिथुन	५	७	५	१०	७	९
मंगल	६/२/३३	तुला	५	७	७	७	८	१
बुध	०/२३/५३/२९	मेष	४	९	६	८	१०	३
गुरु	११/२८/१२/३९	मीन	५	८	१२	१२	११	८
शुक्र	२/१६/३३/९	मिथुन	४	७	६	११	९	९
शनि	०/१५/३१	मेष	५	५	४	५	७	९
राहु	३/२३/१६	कर्क	५	१२	३	१०	१	१०
केतु	९/२३/१६	मकर	५	६	९	४	७	१०

उपरोक्त चक्र से विभिन्न वर्गों के लग्न व ग्रहों की स्थिति एक दृष्टि में ही स्पष्ट हो जाती है। जो ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि, स्वराशि एवं अपने वर्ग में स्थित होंगे, वे उत्तम फल प्रदान करते हैं। अन्यथा इसके विपरीत फल देंगे। यदि शुभ ग्रह षड्वर्गों या सप्तवर्गों में बली हों, तो मनुष्य धनवान्, सम्पन्न और दीर्घायु वाला होता है। इन वर्गों में द्रेष्काण और नवांश वर्गों का विशेष महत्व कहा जाता है। यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में उच्चराशिस्थ अथवा शुभावस्था में है, और नवांश में भी उसी राशि का हो तो वर्गोत्तम कहलाता है। वर्गोत्तम में स्थित ग्रह अत्यन्त शुभफलदायक होता है। फलादेश में अन्य वर्गों का भी अपना–अपना निजी महत्व है। जिनका वर्णन इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड (फलित दर्पण लेखक पं. पन्ना लाल ज्यो.) में किया जावेगा । ग्रहों के बलाबल का आनयन करने के लिए आगे के पृष्ठों का अवलोकन करें।

पारिजातादि फल विचार

उपरोक्त वर्णित दशवर्गी एवं सप्तवर्गी चक्रों में जो ग्रह अपने वर्ग में, अथवा अतिमित्र के वर्ग में अथवा उच्च राशि या स्वराशि के वर्ग में होता है, उसे स्वर्क्षादि वर्गी ग्रह कहते हैं। यदि जन्मपत्री में कोई ग्रह दो वर्गों में स्वर्क्षादिवर्गी (स्ववर्गी, अतिमित्र गृही आदि) बन जाता है, उस ग्रह की 'पारिजात' संज्ञा होगी, ३ ग्रह अच्छे वर्गों में हो तो वह 'उत्तम', चार में गोपुर, पांच में 'सिंहासन', छः में पारावत, सात में देवलोक, ८ में ब्रह्मलोक, ९ में ऐरावत तथा १० वर्गों में ग्रह उत्कृष्ट होने से श्रीधाम संज्ञा होती है।

इन वर्गों के नामानुसार ही, इन में स्थित ग्रहों का फल श्रेष्ठतर होता चला जाता है ।

वर्ग संख्या	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
संज्ञा विशेष	पारिजात	उत्तम	गोपुरांश	सिंहासन	पारावात	देवलोक	ब्रह्मलोक	ऐरवात	श्रीधाम

फलित ज्योतिष में किसी भाव का पूर्णफल तभी प्राप्त होता है जब भाव, भावेश और कारक–तीनों बलवान् हों। अतएव फलकथन से पूर्व विषय सम्बन्धी भाव, भावेश, भावों एवं ग्रहों के कारकत्वादि का भी सूक्ष्मता से विचार कर लेना चाहिए ।

ग्रहों के आत्मादि कारक

सूर्यादि ७ ग्रहों में जिसके अंश सब से अधिक हों वह आत्मकारक ग्रह होता है। यदि अंश बराबर हों तो जिसके कला या विकला अधिक हों, वही ग्रह आत्मकारक माना जाता है ।

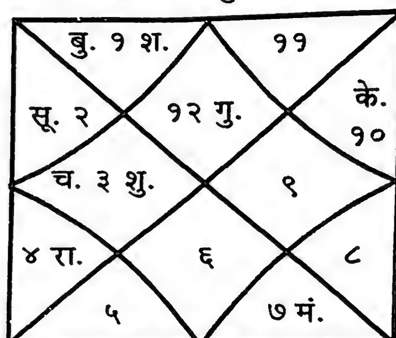
बंधन (कारागारादि) व मोक्ष (रिहाई आदि) के सम्बन्ध में आत्मकारक ग्रहों का विशेष महत्व होता है। बृहत्पाराशरी अनुसार आत्म कारक ग्रह से कम अंश वाला अमात्य, उसने न्यून अंश वाला भ्रातृकारक, उससे न्यून अंश वाला मातृकारक, उससे कम पुत्र, उससे कम ज्ञाति तथा सब से कम अंश वाला ग्रह स्त्रीकारक होता है। इनमें राहु–केतु को समाविष्ट नहीं किया गया।

उदाहरणार्थ–पिछले पृष्ठ में किए गए १८ मई के ग्रह स्पष्टों में गुरु का स्पष्ट ११/२८°/१३ सर्वाधिक अंशों वाला होने से गुरु आत्मकारक ग्रह होगा। उससे न्यून अंश बुध (२३°/५३) के होने से बुध अमात्यकारक, शुक्र भ्रातृकारक, शनि मातृकारक, शनि से कम अंश वाला चन्द्र होने से, चन्द्र पुत्र कारक उससे कम अंशों वाला सूर्य होने से, सूर्य ज्ञाति तथा सब से कम अंश मंगल होने से, मंगल स्त्री कारक ग्रह होगा।

कारकांश कुण्डली बनाना

आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो, उसी को लग्न मानकर जन्म कुण्डली के सभी ग्रहों को यथावत् राशियों में स्थापित कर देने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

कारकांश कुण्डली

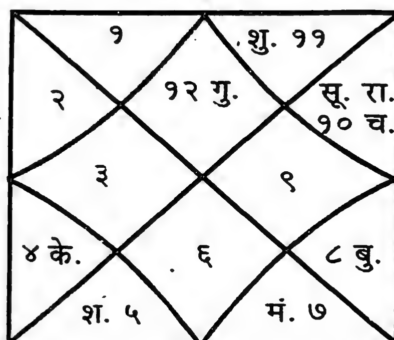


उपरोक्त उदाहरण में आत्मकारक ग्रह गुरु है, नवांश कुण्डली में गुरु मीन राशि में होने से कारकांश कुण्डली का लग्न भी मीन ही होगा। फिर सभी ग्रहों को १८ मई की उदाहरण कुण्डली में स्थित ग्रहों के अनुसार स्थापित कर देने से कारकांश कुण्डली बन जाएगी।

स्वाँश कुण्डली बनाना

स्वांश कुण्डली का लग्न कारकांश कुण्डली जैसा ही होता है। परन्तु ग्रहों की स्थापना अपनी–अपनी नवांश राशि अनुसार की जाती है। अर्थात् स्वांश कुण्डली में ग्रहों की स्थिति जन्म लग्नस्थ ग्रहों जैसी न होकर नवांश कुण्डली के ग्रहों जैसी होती है। प्रस्तुत उदाहरण की स्वांश कुण्डली में लग्न कारकांश कुण्डली भान्ति लगाया गया है तथा ग्रह स्थापना नवांश कुण्डली के समान है।

स्वांश कुण्डली

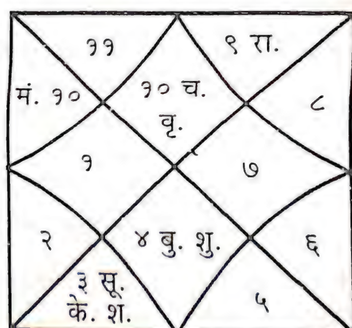


कारकांश एवं स्वांश कुण्डलियों के फलादेश हेतु इसी पुस्तक के द्वितीय भाग (फलित दर्पण) का अध्ययन करें। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान जन्म–पत्रियों में पद और उपपद लग्न कुण्डलियों की भी रचना करते हैं। उनकी निर्माण विधि अत्यन्त सरल हैं। पद व उपपद कुणडलियों का फलादेश पुस्तक के फलित खण्ड में करेंगे।

पद और उपपद कुण्डली बनाना

पद लग्न कुण्डली–जन्म कुण्डली में लग्न का स्वामी (लग्नेश) लग्न से जिस स्थान पर होगा, उससे उतने ही स्थान पर स्थित राशि का पद लग्न होगा। उदाहरणार्थ–यदि किसी जातक का जन्म लग्न मकर है, और लग्नेश शनि छटे स्थान में स्थित है, तो वहां से उतने ही स्थान आगे अर्थात् एकादश भाव में स्थित राशि 'वृश्चिक' राशि को लग्न मान कर सभी ग्रहों की जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के अनुसार ही स्थापना कर दी जाएगी। पद लग्न को आरूढ़ लग्न या विषम लग्न भी कहते हैं ।

जन्म लग्न



उपपद लग्न–लग्न कुण्डली में व्ययेश (द्वादशेश) जिस स्थान में हो, उससे उतने ही स्थान पर उपपद लग्न होता है। उदाहरणार्थ जैसे उपरोक्त जन्म कुण्डली में व्ययेश बृहस्पति, द्वादश स्थान से दूसरे (लग्न) भाव में स्थित है। अतएव बृहस्पति से दूसरे भाव की राशि अर्थात् कुम्भ राशि का उपपद लग्न होगा। शेष ग्रह लग्नवत् ही स्थापित करेंगे ।

उदाहरण पद लग्न



उदाहरण उपपद लग्न



द्वादश भावों के नाम व फलादेश विचार

द्वादश भावों के नाम एवं उनके पर्यायों के विषय में गत पृष्ठों में संक्षिप्त परिचय लिख चुके हैं। अब आगे द्वादश भावों के सम्बन्ध में कुछ और विशेष संज्ञाओं का वर्णन करते हैं। फलित ज्योतिष में इनका अनेकदा प्रयोग होता रहता है। द्वादश भावों का पुनः वर्णन करते हैं –

१. **प्रथम** (तनु भाव), २. **द्वितीय** (धन भाव), ३. **तृतीय** (सहज भाव), ४. **चतुर्थ** (सुखभाव), ५. **पंचम** (सुतभाव), ६. **षष्ठ** (शत्रु भाव), ७. **सप्तम** (स्त्री भाव), ८. **अष्टम** (आयु), ९. **नवम** (भाग्य), १०. **दशम** (कर्म भाव), ११. **एकादश** (लाभ), १२. **द्वादश** (व्यय भाव)

भावों के विशेष वर्गीकृत (Classified) नाम–

केन्द्रभाव–प्रथम (१), चतुर्थ (४), सप्तम (७), तथा दशम (१०) भावों को केन्द्र कहते हैं । इन भावों को क्रमशः १ उदय (Rising) , ४. पाताल (Nadir), ५. अस्त (Western Horizon), तथा १०. मध्यान्ह लग्न (Zenith) भी कहते हैं।

त्रिकोण–पंचम (५), नवम (९) भावों की त्रिकोण संज्ञा है। मतान्तर से प्रथम भाव को भी **त्रिकोण** मानते हैं ।

पणफर–२, ५, ८ एवं ११ (एकादश) भावों को **पणफर** कहते हैं ।

आपोक्लिम–३, ६, ९ तथा १२ वें भावों को आपोक्लिम कहते हैं ।

बृहज्जातक के अनुसार केन्द्र त्रिकोण में स्थित राशियाँ **पूर्ण बली** तथा पणफर भावों में स्थित राशियां **मध्यम बली** होती है।

आपोक्लिम (३, ६, ९, १२) स्थानों में स्थित राशियां निर्बली होती हैं।

त्रिक् भाव–६, ८ एवं १२ वें भावों को त्रिक् कहते हैं । इन भावों में स्थित राशियाँ अशुभ मानी जाती हैं।

उपचय–३, ६, १० एवं ११ वें भावों को **उपचय** कहते हैं ।

कण्टक–१, ४, ७ एवं १० भावों को **कण्टक** कहते हैं।

मारक स्थान–२, ७ एवं अष्टम (८) भावों को **मारक स्थान** कहते हैं ।

त्रिषडाय–३, ६ एवं ११ वें भावों को **त्रिषडाय** कहते हैं। इन भावों के स्वामी पापग्रहों के सदृश अशुभ फल प्रद होते हैं ।

द्वादश भावों में फलादेश विचार

(२) धनु भाव, कोश परिवारिक स्थिति नेत्र, वाणी

(१२) व्यय व्यसन, मृत्यु, हानि शयन सुख

(३) सहज पराक्रम, उद्यम धैर्य, बहन–भाई

(१) तनु (लग्न भाव) शारीरिक गठन, रूप–रंग, आकृति स्वास्थ्य, स्वभाव, सुख–दुख प्रारम्भिक जीवन

(११) लाभ आय, बड़ा भाई वाहनादि सुख दायां कान

(४) सुखभाव– माता, भूमि, सम्पत्ति, मित्र बन्धु, सवारी, चौपाए, कृषि आदि

(१०) कर्म–भाव पिता सुख, राज्य प्रातिष्ठा व्यवसाय, विदेशी–सम्बन्ध आदि

(५) सुत–गर्भ, विद्या, बुद्धि, संतान, यंत्रादि

(७) जाया, विवाह स्त्री–सुख, भागीदारी, विदेश–गमन, काम–विकार, व्यापार आदि

(९) भाग्य, धर्म, पुण्य तीर्थ विदेश–यात्रा

(६) रिपु–रोग ऋण, शत्रु, मामा–मौसी

(८) आयु, गुप्त धन, मृत्यु, दुख, गुप्तेन्द्रिय, पूर्ण–जन्म, आयु–प्रमाण

द्वादश भावों द्वारा विचारणीय विषय–

कुण्डली में प्रत्येक भाव अपनी–अपनी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। इन्ही द्वादश भावों में स्थित राशियां एवं ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं । द्वादश भावों में प्रत्येक भाव में विचारणीय विषयों के सम्बन्ध में लिखा जाता है ।

(१) प्रथम भाव (I. house)–इस भाव में मुख्य रूप से जातक का शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, आयुप्रमाण, शरीरिक रूप, वर्ण, चिन्ह जाति, स्वभाव, गुण, आकृति, सुख–दुख, शिर, पितामह, जन्म, प्रारम्भिक जीवन, वर्तमान काल आदि का विचार किया जाता है–

रूपं तथा वर्ण विनिर्णयश्च चिन्हानि जाति वयसः प्रमाणम् ।
सुखानि दुखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्य खलु सर्वमेतत् ॥

लग्न एवं लग्नेश की स्थिति के बलाबलानुसार जातक के स्वास्थ्य स्वभाव तथा व्यक्तित्व का ज्ञान किया जाता है। इस भाव में मिथुन, कन्या, तुला एवं कुंभ राशियां बलवान मानी जाती हैं। इस भाव का कारक ग्रह सूर्य है।

(२) द्वितीय भाव (II. house)–शरीर की रक्षा के लिए धन अन्न, वस्त्र, द्रव्य एवं कुटुम्बादि साधनों की आवश्यकता होती है। इस कारण इसे **धन भाव** भी कहते हैं। इस भाव से धन–संग्रह (कोश), परिवारिक सुख, मित्र, विद्या, खाद्य पदार्थ, वस्त्र, मुख, दाहिनी आंख, नाक, वाणी, स्वर–संगीत आदि कला, विद्वत्ता, लेखन–कला,

अर्जित धन, सम्पत्ति, सुवर्णादि धातुओं का क्रय विक्रय आदि का विचार किया जाता है।

वित्तं विद्या स्वान्नपानानि मुक्तिं दक्षाक्ष्यास्यं पत्रिका, वाक्कुटुम्बकम्॥

द्वितीय भाव को मारक स्थान भी कहते हैं ।इस भाव का कारक ग्रह बृहस्पति है।

(३) तृतीय भाव (III house)–इस भाव से भाई–बहिन का सुख, सहोदर, पराक्रम, नौकर–चाकर, साहस, शौर्य, धैर्य, गायन, भोगाभ्यास, नज़दीकि सम्बन्धियों का सुख, रेलयात्रा, दाहिना कान, हिम्मत, सेना,सेवक माता–पिता की मृत्यु, चाचा, मामा, दमा, खांसी–श्वास–भुजा कर्ण आदि रोगों का विचार किया जाता है ।

तीसरे भाव का कारक ग्रह मंगल है ।

(४) चतुर्थ भाव (IV house)–इस भाव से सुख–दुख का, माता का, स्थायी सम्पत्ति, मकान, जायदाय, भूमि, सवारी–सुख, चौपाया, मित्र–बन्धुबांधव, परोपकार के काम, गृह–खेत, तालाब पानी, नदी, बाग–बगीचा, मामा, श्वसुर, नानी, पेट–छाती, (हृदय) आदि के रोग, गृहस्थ जीवन का सौख्य का विचार इस भाव से किया जाता है। चन्द्रमा व बुध ग्रह इस स्थान के कारक हैं।

(५) पंचमभाव (V house)–इस भाव से बुद्धि, नीति, विद्या, गर्भ, संतान से सुख–दुख, गुप्त मन्त्रणा, शास्त्र ज्ञान, विद्वत्ता, मन्त्र सिद्धि, विचार शक्ति, लेखन कला, लाटरी शेयर्ज़ आदि आकास्मिक धन लाभ या हानि, यश–अपयश, का सुख, प्रबन्धात्मक योग्यता, पूर्वजन्म की स्थिति, भविष्य ज्ञान, आध्यात्मिक रूचि, मनोरंजन, प्रेम सम्बन्ध, इच्छाशक्ति, जठराग्नि, गर्भाशय, पेट, मूत्राशयादि सम्बन्धी विकारों का विचार पंचमभाव से करते हैं। बुद्धि प्रबन्धात्मज मन्त्र विद्या–विनेयगर्भ स्थिति–नीति संस्था। इस भाव का कारक ग्रह बृहस्पति (गुरु) है ।

(६) षष्ठभाव (VI house)–इस भाव से शत्रु, रोग, ऋण, चोरी या दुर्घटना आदि चोट की स्थिति, दुष्टकर्म, युद्ध, अपयश, मामा की स्थिति, मामा, मौसी, सौतेली माता से सुख–दुख, विश्वासघात, पापकर्म, हानि, स्व–बन्धुवर्ग से विरोध, नाभि, गुदा–स्थान,कमर सम्बन्धी रोगों का विचार षष्ठ भाव से करते हैं। शनि व मंगल ग्रह इस भाव के कारक माने जाते हैं ।

(७) सप्तम भाव (VII house)–इस भाव से स्त्री एवं विवाह सुख, काम–वासना, पति–पत्नी सम्बन्ध, सांझेदारी के काम (Partnership), व्यापार में लाभ हानि, वाद–विवाद मुकदमा कलह, पितामह, प्रवास, विदेश गमन, भाई–बहिन की संतान, लघु यात्राएं, दैनिक आय, समझौता (Agreement), प्रत्यक्ष शत्रु, काम–विकार, बवासीर, वस्ति, जननेन्द्रिय सम्बन्धी गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। इस केन्द्र भाव में वृश्चिक राशि बलवान होती है। इसे मारक स्थान भी कहते हैं। इस भाव का कारक ग्रह शुक्र है।

(८) अष्टम भाव (VIII house)–इस भाव से मृत्यु या मृत्यु के कारण, आयु, गुप्तधन की प्राप्ति, विध्न, पुरातत्व प्रेम, समुद्रादि द्वारा दीर्घ यात्राएं, पूर्व जन्म की

जानकारी, मृत्यु के बाद की स्थिति, स्त्री से भूमि–धनादि का लाभ, दुर्घटना, यातना, गुदा–अण्डकोश आदि गुप्तेन्द्रिय सम्बन्धी गुप्त रोगों एवं कष्टों, पति या पत्नी की आयु का मान, ताऊ, विघ्न, दास्य वर्ग एवं विषम परिस्थितियों का विचार अष्टम भाव से किया जाता है। इस भाव का कारक शनि ग्रह है।

(९) **नवम भाव (IX house)**–इस भाव से मानसिक वृत्ति, धर्म, दान, शील पुण्य, तीर्थ यात्रा, विद्या, भाग्योदय, विदेश यात्रा, मंत्र–सिद्धि, उत्तम विद्या, बड़े भाई, पौत्र, बहनोई, भावजादि से सम्बन्ध, धार्मिक–पुर्नजन्म प्रवृत्ति सम्बन्धी ज्ञान, मन्दिर, गुरुद्वारा आदि धर्म स्थल, गुरु, भक्ति, यश–कीर्ति, एवं जंघा आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक ग्रह सूर्य व गुरु है ।

(१०) **दशमभाव (X house)**–इस भाव को केन्द्र एवं कर्म भाव भी कहते हैं। इस भाव से पिता का सुख–दुख, अधिकार, राज्य प्रतिष्ठा, पदोन्नति, नौकरी, व्यापार (व्यवसाय), विदेश गमन, जीविका का साधन, कार्य–सिद्धि, नेतृत्व, सरकार, सास, वर्षा, वायु यानादि आकाशीय वृत्तान्त एवं घुटनों आदि में विकार का दशम भाव से देखा जाता है ।

व्यापार–मुद्रा–नृपमान–राज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।
महत्फलाप्तिः खलु सर्वमेतत् राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥

दशमभाव में मेष, वृष, सिंह, धनु (उत्तरार्ध), मकर राशि का पूर्वार्द्ध बलवान होता है। इस भाव के कारक ग्रह सूर्य, बुध, गुरु, एवं शनि हैं।

(११) **एकादशभाव (XI house)**–इस भाव से लाभ, आय, भाई, मित्र, जामाता (जवांई), ऐश्वर्य–सम्पत्ति, मोटर–वाहनादि के सुख, कुटुम्बियों का सुख, गुप्तधन, बड़ा भाई या बड़ी बहन, दांयां कान, मांगलिक कार्य, ऐश्वर्य की वस्तुएं, द्वितीय पत्नी एवं पिंडलियों का विचार ११वें भाव से करते हैं। इस भाव का कारक ग्रह गुरु है ।

(१२) **द्वादश भाव (XII house)**–इसको व्यय स्थान भी कहते हैं। इस भाव से धन हानि, खर्च, दान, दण्ड, व्यसन, रोग, शत्रुपक्ष से हानि, बाहरी स्थानों से सम्बन्ध, नेत्र पीड़ा, (बांया) फिजूल खर्ची, स्त्री पुरुष, गुप्त सम्बन्ध, शयन सुख, दुख–पीड़ा, बन्धन (जेलादि), मृत्यु के बाद प्राणी की गति, मोक्ष, कर्ज, षडयन्त्र, धोखा, राजकीय संकट, शरीर में पाँव एवं तलुवों आदि का विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक ग्रह शनि है ।

हानिर्दानं व्ययश्चापिदण्डो निर्वन्ध एव च ॥ सर्वमेतद्व्यय स्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥

जन्म कुण्डली के द्वादश भावों से शरीर अंगों का विचार–

सम्पूर्ण जन्म कुण्डली को काल पुरुष का स्वरूप मान कर प्रथम भाव से सिर का, द्वितीय भाव से मुख (चेहरे) का, तीसरे भाव से छाती का, चौथे से हृदय का, पाँचवें

से पेट का, छटे से कुक्षि एवं कमर का, सप्तम भाव से नाभि से नीचे भाग का, अष्टम भाव से गुप्त इन्द्रियों का, नवम से जंघाओं का, दसवें से दोनों घुटनों का, ग्यारहवें से पिंडलियों का, बारहवें भाव से दोनों पैरों का विचार करना चाहिए ।

भाव कुण्डली द्वारा शरीरांग

दाईं आंख मुख (२)
दोनों पांव बाईं आंख १२
१ लग्न भाव शिर
३ छाती
११ पिंडलियां
४ हृदय
१० दोनों घुटनें
पेट ५
नाभि से नीचे ७
९ जंघाएं
६ कमर
८ गुप्त इन्द्रियां

जिस भाव में शुभ ग्रह हों, या जिस भाव को शुभ ग्रह देखते हों, अथवा जिस भाव का स्वामी बलवान हो–उस भाव से सम्बन्धित शरीर का भाग पुष्ट और सुन्दर होता है। भावेश निर्बल होने से, अथवा किसी भाव में क्रूर ग्रह स्थित होने से या किसी क्रूर ग्रह से दृष्ट होने से उस भाव से सम्बन्धित शरीर का भाग कृश या रोग युक्त होता है।

भावों से दिशा विचार–प्रथम भाव से पूर्व दिशा का, **द्वितीय** भाव से ईशान (पूर्वोत्तर), चर्तुथ भाव से उत्तर दिशा, **षष्ठ भाव** से वायव्य (पश्चिमोत्तर), **सप्तम** भाव से पश्चिम दिशा का, **अष्टम भाव** से नेऋत्य (दक्षिण–पश्चिम), **दशम** भाव से दक्षिण दिशा, **द्वादश** भाव से आग्नेय (दक्षिण–पूर्व) दिशा का विचार करना चाहिए ।

जन्म कुण्डली से सगे सम्बन्धियों का विचार–प्रथम भाव से पितामह, ताया, **द्वितीय** भाव से पितृ पक्ष, पड़ौसी, मित्र, निजी कुटुम्ब, **तृतीय** भाव से भाई–बहिन, नौकर–चाकर (सेवक), चतुर्थभाव से माता का सुख, मित्र, श्वसुर आदि, **पंचम** से पुत्र–पुत्री आदि संतति, दत्तक पुत्र, **षष्ठ** भाव से मामा–मामी, मौसी, सेवक सौतेली माता, **सप्तम** भाव से पति–पत्नी, पार्टनर, तीसरा भाई, पितामह, प्रेमिका, **अष्टम** भाव से ससुराल पक्ष, ताऊ सुख, दास्य वर्ग, **नवम** भाव से साला–साली, बड़ा भाई–बहनोई, भावजादि, **दशम** भाव से पिता, गुरु, सास आदि, **एकादश भाव** से दामाद, मित्र, बड़ा भाई, पुत्र वधु, बड़ी बहन एवं दूसरी पत्नी का सुख, **द्वादश** भाव से चाचा, चाची आदि सम्बन्धियों के सुख का विचार करना चाहिए ।

१२ भावों में सूर्य की स्थिति से जन्म समय का ज्ञान

(१) जन्म कुण्डली में सूर्य प्रथम भाव में हो, तो जातक का जन्म प्रातः लगभग साढ़े पाँच से साढ़े सात बजे के बीच हुआ समझना चाहिए ।

(२) कुण्डली में सूर्य १२ वें भाव में हो, तो जातक का जन्म प्रातः लगभग साढ़े सात से साढ़े नौ बजे के मध्ध्य में हुआ समझना चाहिए।

(३) कुण्डली में सूर्य दशम भाव में हो, तो जातक का जन्म मध्यान्ह के लगभग १२ से लगभग २ बजे के बीच हुआ समझें ।

(४) यदि सूर्य अष्टम भाव में हो तो जातक का जन्म सायंकाल लगभग ४ से ६ बजे के बीच हुआ समझें।

(५) यदि कुण्डली में सूर्य/सप्तम भाव में हो, तो जातक का जन्म सायं लगभग ६ से ८ बजे के बीच (अर्थात् सूर्यास्त के आसपास) हुआ समझो।

(६) यदि कुण्डली में सूर्य पंचम भाव में हो, तो जातक का जन्म रात्रि लगभग १० से १२ के बीच हुआ समझें ।

(७) यदि सूर्य चतुर्थ भाव में हो, तो जातक का जन्म रात लगभग १२ से अर्द्धरात्रि २ बजे के बीच हुआ समझना चाहिए ।

(८) कुण्डली में सूर्य यदि तृतीय भाव में हो, तो जातक का जन्म रात्रि लगभग २ से ४ बजे के बीच हुआ है। ऐसा समझना चाहिए ।

(९) कुण्डली में सूर्य यदि दूसरे भाव मं हो, तो जातक का जन्म प्रातः लगभग ४ से ६ बजे के मध्य हुआ समझें।

नोट—कुण्डली में सूर्य की स्थिति के आधार पर जन्म का समय केवल अनुमानित जन्म समय है। बारह महीनें प्रतिदिन सूर्योदय में अन्तर के कारण लग्नारम्भ एवं लग्न समाप्ति काल एक जैसा नहीं रहता । अतएव उपरोक्त समयावधि सुनिश्चित न होकर केवल अनुमान पर आधारित है।

भाव, भावेश एवं कारकत्व सम्बन्धी विशेष नियम

भाव–(i) जन्म कुण्डली में १, ४, ५, ७, ९ एवं १० (दशम) भाव केन्द्र–त्रिकोण होने से शुभ भाव कहलाते हैं। द्वितीय (२), तृतीय (३) एवं एकादश (११)–ये मिश्रित (शुभाशुभ) प्रभाव-कारक माने जाते हैं। जबकि छठा (६), आठवां (८) एवं बारहवां (१२)–ये तीनों भाव अशुभ एवं अनिष्ट कारक माने जाते हैं। इन्हें **दुःस्थान** भी कहते हैं। इनमें स्थित ग्रह शुभ फल प्रकट नहीं कर पाते।

(ii) जिस भाव में शुभ ग्रह रहता है, उस भाव का फल शुभ, और जिसमें नीच, शत्रु राशिगत आदि पापग्रह रहता हैं, उस भाव के फल की हानि होती है।

(iii) केन्द्र–त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) भावों में शुभ ग्रहों का होना अच्छा माना जाता है। ३, ६ एवं १२वें भावों में पाप (क्रूर) ग्रहों का रहना शुभ होता है। ११वें भाव में सभी ग्रह शुभ फलदायक होते हैं। ३, ६, ११वें भावों में सूर्यादि क्रूर ग्रह पराक्रम में वृद्धि एवं अचानक लाभ प्राप्त कराते हैं।

भावेश (i)–किसी भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ग्रह ही उस भाव **का स्वामी या भावेश** कहलाता है। **प्रथम** भाव में स्थित राशि स्वामी को **प्रथमेश या लग्नेश** कहते हैं। द्वितीय भावस्थ राशि के स्वामी को द्वितीयेश या धनेश कहा जाता है। तृतीय भाव के स्वामी को तृतीयेश .... इसी भान्ति सभी भावों के स्वामियों को भाव की

स्थिति अनुसार पुकारा जाता है।

(ii) छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जिस, भाव में रहते हैं, उस भाव के फल की हानि करते हैं, अर्थात अशुभकारक होते हैं।

(iii) जो भाव अपने स्वामी मित्र या उच्चादि ग्रह से युक्त हो, अथवा गुरु, चन्द्र शुक्रादि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा वह भाव किसी अन्य पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो, तो उस भाव का फल शुभ होता है–

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतोर्वा स्यात् तस्य–तस्य वृद्धिः ॥

पापैरेव तस्य भावस्य हानि निर्देष्व्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥

जो भाव अथवा भावेश पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होगा, उस भाव अथवा भावेश (ग्रह) का फल अशुभ होगा।

(iv) केन्द्र–त्रिकोण भावों के स्वामी सदा शुभ फल प्रदायक होते है, जबकि त्रिषडाय (३, ६, ११) स्वामी तथा ८–१२वें भावों के स्वामी शुभ ग्रह होने पर भी पाप ग्रहों के सदृश अशुभ फल प्रदान करते हैं यथा पराशर ऋषि अनुसार–

सर्वे त्रिकोण नेतारो ग्रहाः शुभफल प्रदा। पतयस्त्रिषडायां यदि पापफल प्रदाः ॥

त्रिषडायपति ग्रह यदि दुःस्थान (८ या १२वें) भाव का भी स्वामी हो, तो विशेष अनिष्टकारक हो जाता है। यदि त्रिषडाय पति स्वराशि में स्थित हो, तो अल्प अनिष्टकारी होता है तथा जातक प्रायः पराक्रमी, शत्रु नाशक एवं धनवान होता है।

(५) गुरु, शुक्र, बुध एवं पूर्णं चन्द्र यदि केन्द्र (४, ७, १०) भावों के स्वामी हों तो विशेष शुभ फल नहीं करते। यदि क्रूर ग्रह केन्द्राधिपति हों, तो अशुभ फल नहीं देते। अर्थात् उनमें कुछ शुभत्व आ जाता है।

न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि ।

क्रूराश्चेद शुभं हि ते प्रबला उत्तरोत्तरम् ॥ (पाराशरे)

परन्तु ध्यान रहे केन्द्राधिपति यदि त्रिकोण भावों (१–५–९) के भी स्वामी हों, तो अवश्य शुभ फल करते हैं। गुरु–शुक्र को केन्द्राधिपात्य दोष अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक प्रबल होता है।

(६) द्वितीय और द्वादश भावों के स्वामी अन्य भावेश ग्रहों के साहचर्यानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जैसे यदि दूसरे भाव का स्वामी भाग्येश होकर द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक को अपने भाग्य द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

(७) किसी भाव में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो, उनमें से जो ग्रह सर्वाधिक बली ग्रह होगा, उसका फल विशेषतः मुख्य होगा जबकि अन्यों का गौणफल रहेगा।

(८) यदि किसी भाव के दोनों ओर (दूसरे और बाहरवें) स्थानों में शुभ ग्रह होंगे तो उस भाव सम्बन्धी शुभ फल होंगे, यदि दोनों ओर अशुभ ग्रह होंगे, तो उस भाव का

(४) यदि सूर्य अष्टम भाव में हो तो जातक का जन्म सायंकाल लगभग ४ से ६ बजे के बीच हुआ समझें।

(५) यदि कुण्डली में सूर्य/सप्तम भाव में हो, तो जातक का जन्म सायं लगभग ६ से ८ बजे के बीच (अर्थात् सूर्यास्त के आसपास) हुआ समझो।

(६) यदि कुण्डली में सूर्य पंचम भाव में हो, तो जातक का जन्म रात्रि लगभग १० से १२ के बीच हुआ समझें ।

(७) यदि सूर्य चतुर्थ भाव में हो, तो जातक का जन्म रात लगभग १२ से अर्द्धरात्रि २ बजे के बीच हुआ समझना चाहिए ।

(८) कुण्डली में सूर्य यदि तृतीय भाव में हो, तो जातक का जन्म रात्रि लगभग २ से ४ बजे के बीच हुआ है। ऐसा समझना चाहिए ।

(९) कुण्डली में सूर्य यदि दूसरे भाव मं हो, तो जातक का जन्म प्रातः लगभग ४ से ६ बजे के मध्य हुआ समझें।

नोट–कुण्डली में सूर्य की स्थिति के आधार पर जन्म का समय केवल अनुमानित जन्म समय है। बारह महीनें प्रतिदिन सूर्योदय में अन्तर के कारण लग्नारम्भ एवं लग्न समाप्ति काल एक जैसा नहीं रहता । अतएव उपरोक्त समयावधि सुनिश्चित न होकर केवल अनुमान पर आधारित है।

भाव, भावेश एवं कारकत्व सम्बन्धी विशेष नियम

भाव–(i) जन्म कुण्डली में १, ४, ५, ७, ९ एवं १० (दशम) भाव केन्द्र–त्रिकोण होने से शुभ भाव कहलाते हैं। द्वितीय (२), तृतीय (३) एवं एकादश (११)–ये मिश्रित (शुभाशुभ) प्रभाव–कारक माने जाते हैं। जबकि छठा (६), आठवां (८) एवं बारहवां (१२)–ये तीनों भाव अशुभ एवं अनिष्ट कारक माने जाते हैं। इन्हें दुःस्थान भी कहते हैं। इनमें स्थित ग्रह शुभ फल प्रकट नहीं कर पाते।

(ii) जिस भाव में शुभ ग्रह रहता है, उस भाव का फल शुभ, और जिसमें नीच, शत्रु राशिगत आदि पापग्रह रहता हैं, उस भाव के फल की हानि होती है।

(iii) केन्द्र–त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) भावों में शुभ ग्रहों का होना अच्छा माना जाता है। ३, ६ एवं १२वें भावों में पाप (क्रूर) ग्रहों का रहना शुभ होता है। ११वें भाव में सभी ग्रह शुभ फलदायक होते हैं। ३, ६, ११वें भावों में सूर्यादि क्रूर ग्रह पराक्रम में वृद्धि एवं अचानक लाभ प्राप्त कराते हैं।

भावेश (i)–किसी भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ग्रह ही उस भाव का स्वामी या भावेश कहलाता है। प्रथम भाव में स्थित राशि स्वामी को प्रथमेश या लग्नेश कहते हैं। द्वितीय भावस्थ राशि के स्वामी को द्वितीयेश या धनेश कहा जाता है। तृतीय भाव के स्वामी को तृतीयेश .... इसी भान्ति सभी भावों के स्वामियों को भाव की

स्थिति अनुसार पुकारा जाता है।

(ii) छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जिस, भाव में रहते हैं, उस भाव के फल की हानि करते हैं, अर्थात अशुभकारक होते हैं।

(iii) जो भाव अपने स्वामी मित्र या उच्चादि ग्रह से युक्त हो, अथवा गुरु, चन्द्र शुक्रादि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा वह भाव किसी अन्य पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो, तो उस भाव का फल शुभ होता है--

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतोर्वा स्यात् तस्य–तस्य वृद्धिः ॥

पापैरेव तस्य भावस्य हानि निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥

जो भाव अथवा भावेश पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होगा, उस भाव अथवा भावेश (ग्रह) का फल अशुभ होगा।

(iv.) केन्द्र–त्रिकोण भावों के स्वामी सदा शुभ फल प्रदायक होते है, जबकि त्रिषडाय (३, ६, ११) स्वामी तथा ८–१२वें भावों के स्वामी शुभ ग्रह होने पर भी पाप ग्रहों के सदृश अशुभ फल प्रदान करते हैं यथा पराशर ऋषि अनुसार–

सर्वे त्रिकोण नेतारो ग्रहाः शुभफल प्रदा। पतयस्त्रिषडायां यदि पापफल प्रदाः ॥

त्रिषडायपति ग्रह यदि दुःस्थान (८ या १२वें) भाव का भी स्वामी हो, तो विशेष अनिष्टकारक हो जाता है। यदि त्रिषडाय पति स्वराशि में स्थित हो, तो अल्प अनिष्टकारी होता है तथा जातक प्रायः पराक्रमी, शत्रु नाशक एवं धनवान होता है।

(५) गुरु, शुक्र, बुध एवं पूर्ण चन्द्र यदि केन्द्र (४, ७, १०) भावों के स्वामी हों तो विशेष शुभ फल नहीं करते। यदि क्रूर ग्रह केन्द्राधिपति हों, तो अशुभ फल नहीं देते। अर्थात् उनमें कुछ शुभत्व आ जाता है।

न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि ।

क्रूराश्चेद शुभं हि ते प्रबला उत्तरोत्तरम् ॥ (पाराशरे)

परन्तु ध्यान रहे केन्द्राधिपति यदि त्रिकोण भावों (१–५–९) के भी स्वामी हों, तो अवश्य शुभ फल करते हैं। गुरु–शुक्र को केन्द्राधिपात्य दोष अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक प्रबल होता है।

(६) द्वितीय और द्वादश भावों के स्वामी अन्य भावेश ग्रहों के साहचर्यानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जैसे यदि दूसरे भाव का स्वामी भाग्येश होकर द्वितीय भाव में स्थित हो, तो जातक को अपने भाग्य द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

(७) किसी भाव में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो, उनमें से जो ग्रह सर्वाधिक बली ग्रह होगा, उसका फल विशेषतः मुख्य होगा जबकि अन्यों का गौणफल रहेगा।

(८) यदि किसी भाव के दोनों ओर (दूसरे और बाहरवें) स्थानों में शुभ ग्रह होंगे तो उस भाव सम्बन्धी शुभ फल होंगे, यदि दोनों ओर अशुभ ग्रह होंगे, तो उस भाव का

प्रभाव भी अशुभ (खराब) होगा।

(९) गुरु छठे भाव में शत्रुनाशक, शनि आठवें भाव में दीर्घायुकारक, मंगल दसवें भाव में विशेष भाग्य कारक होता है।

(१०) राहु--केतु और अष्टमेश जिस भाव में रहते हैं, उस भाव को बिगाड़ते हैं। गुरु अकेला दूसरे, पंचम अथवा सप्तम भाव में हो तो, धन, पुत्र और स्त्री आदि सुखों के लिए अशुभकारी अथवा विघ्न–कारक होता है।

(ii) जिस भाव का कोई ग्रह कारक माना जाता है, यदि वह अकेला उस भाव में हो तो उस भाव के फल की बिगाड़ता है।

(११) कुछ भावों में ग्रह विशेष निष्फली कहलाते हैं – जैसे

(i) धन भाव में मंगल निष्फली माना जाता है।

(ii) सुख भाव में बुध (iii) सुत भाव में गुरु, (iv) रिपु (षष्ठ) भाव में शुक्र तथा जाया (स्त्री) भाव में शनि निष्फली माना जाता है।

(v) जो ग्रह भाव–मध्य में होते हैं, वह उस भाव सम्बन्धी पूर्ण फल देते हैं और जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल देते हैं। अधिक विस्तार हेतु देखें गत पृष्ठों में चलित भाव कुण्डली॥

(१२) जिस भाव का स्वामी मित्र– उच्चादि राशि में हो, केन्द्र–त्रिकोणादि शुभ स्थान में हो, या शुभ भावेश के साथ सम्बन्ध करे तथा नवांशादि वर्गो में उस (ग्रह) की स्थिति अच्छी हो, तो सम्बद्ध भाव श्रेष्ठफल प्रदान करता है। परन्तु जिस भाव का स्वामी निर्बली, अस्तंगत, नीचादि राशिस्थ या दुस्थानों में अथवा अशुभ–वर्गों में, अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उस भाव का फल अशुभ एवं नेष्ट होता है। उपरोक्त ग्रहों के शुभ फल से तात्पर्य धन लाभ, पदोन्नति, भूमि, स्त्री, संतानादि सुख, कार्मों में सफलता, मनोकामना में सिद्धि, सुख साधनों में वृद्धि आदि। अशुभ फल से तात्पर्य–धन हानि, मानसिक तनाव, कार्यों में असफलता–सफलता में बार–बार विध्न होना, असंतोष चिन्ता आदि जानें।

द्वादश भावों में कारकत्वादि का विचार

भाव, भावेश, भावगत ग्रहों एवं भाव पर दृष्टि के अतिरिक्त फलादेश के निर्णय हेतु भावों के कारकत्वादि का भी विशेष रूप से विचार कर लेना चाहिए। किसी भाव का पूर्णफल तभी होता है, जब भाव, भावेश एवं कारकादि ग्रह बलवान हो ।

किसी विशेष भाव का कारक ग्रह यदि मित्र या योग कारक ग्रह के साथ हो तो विशेष फल प्रकट करता है। लग्नादि द्वादश भावों के कारक निम्नलिखित ग्रह होते हैं। यथा–

भावों के कारक ग्रह

प्रथम भाव – सूर्य	सप्तम भाव – शुक्र
द्वितीय भाव – बृहस्पति	अष्टम भाव – शनि
तृतीय भाव – मंगल	नवम भाव – सूर्य, बृहस्पति
चतुर्थ भाव – चन्द्र, बुध	दशम भाव – सू. बु. गु., श.
पंचम भाव – बृहस्पति	एकादश भाव – बृहस्पति
षष्ठ भाव – मंगल, शनि	द्वादश भाव – शनि

☛ सूर्य से नवम या दशम भाव में पापग्रह हो, तो पिता को, चन्द्रमा से चतुर्थ माता को, मंगल से तृतीय भाई को, बुध से चतुर्थ भाव में मामा को, गुरु से पंचम पुत्र संतान को, शुक्र से सप्तम स्त्री को तथा शनि से अष्टम भाव में पापग्रह हों, तो स्वयं जातक को अरिष्ट कारक होता है। यदि उक्त भावों में शुभ ग्रह हों तो उस भाव के शुभ फल में वृद्धि कारक होते हैं ।

☛ उपरोक्त विचेचन से स्पष्ट है कि किसी भाव के फल का निर्णय करते समय **निम्न बातों पर विशेष ध्यान दें –**

(i) अभीष्ट भाव की राशि क्या है ? तथा राशि स्वामी ग्रह की स्थिति।

(ii) अभीष्ट भाव में शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति

(iii) भावेश ग्रह की उच्च–नीचादि स्थिति तथा भावेश ग्रह के साथ अन्य ग्रहों का योग–युति आदि सम्बन्ध।

(iv) भाव एवं भावेश पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि

(v) अभीष्ट भावों का बलाबल एवं नवांशादि वर्गों का विचार

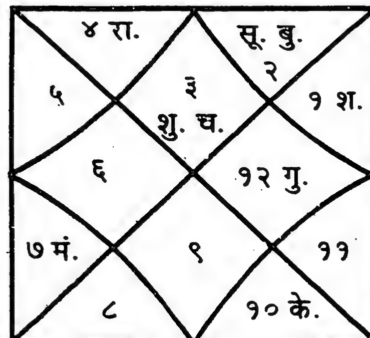
(vi) भाव कारक ग्रहों की स्थिति

(vii) भाव से सम्बन्धित ग्रह की दशा–अन्तर्दशा का विचार

(viii) गोचर विचार–जैसे जब लग्नेश ग्रह गोचरवश किसी भावेश से योग करे, तो उस भाव सम्बन्धी फल की प्राप्ति होती है।

जन्म कुण्डली देखने की विधि–(उदाहरण)

उदाहरण कुण्डली



गत पृष्ठों में दी गई उदाहरण कुण्डली (१८ मई, १९९९) में भावों एवं ग्रहों के आधार पर विश्लेषण करते हैं। प्रस्तुत कुण्डली में जातक के स्वास्थ्य विद्या, धन, व्यवसाय आदि का विचार करते हैं। जातक का जन्म लग्न मिथुन है। लग्नेश बुध द्वादश (व्यय) भाव में है तथा व्ययेश शुक्र लग्न भाव में चन्द्र के साथ स्थित है। उन दोनों पर नीच राशिस्थ शनि की विशेष तृतीय दृष्टि पड़ रही

है। फलस्वरूप जातक का स्वास्थ्य कुछ ढीला (अस्थिर) रहेगा। चूंकि चन्द्रमा माता का भी कारक होता है। अतएवं माता का स्वास्थ्य भी ठीक न होगा।

पंचम भाव में मंगल नीच राशिस्थ शनि द्वारा दृष्ट होने से विद्या के क्षेत्र में अड़चनें पड़ेंगी तथा संघर्ष अधिक रहेगा। परन्तु विद्या–बुद्धि का कारक गुरु स्वगृही होने से जातक येन–केन प्रकारेण मध्यम विद्या प्राप्त कर ही लेगा। गुरु की धन भाव पर शुभ एवं उच्च दृष्टि होने से निजी कार्य व्यवसाय द्वारा समुचित आय के साधन बनेंगे, परन्तु चन्द्र–शुक्र योग के कारण खर्च भी विशेष अधिक रहेगा। क्योंकि चन्द्र स्वराशि से द्वादशस्थ है तथा चन्द्र का कारक भी होता है।

सामान्यतः उपरोक्त विधि द्वारा प्रत्येक कुण्डली में ग्रहों, भावों एवं भावेश ग्रहों का विश्लेषण करना चाहिए। ग्रहों की दशा–अन्तर्दशा एवं गोचर विचार आगामी अध्याय में करेंगे। क्योंकि सभी ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा एवं गोचर स्थिति के अनुसार ही अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। फलादेश हेतु अधिक विस्तृत व्याख्या के लिए इसी पुस्तक का द्वितीय भाग देखें।

भाव–राशि अनुसार ग्रहों का प्रभाव

जन्म कुण्डली में द्वादश भावों एवं राशियों के बीच अनन्य सम्बन्ध होता है। द्वादश भावों के फलादेश की अभिव्यक्ति बारह राशियों के माध्यम से ही होती है। यह बात उल्लेखनीय है कि भारतीय ज्योतिष में बारह भावों की स्थिति स्थिर, लेकिन राशियों के अनुक्रम को परिवर्तनशील माना जाता है। जबकि पाश्चात्य ज्योतिष (Western-Astrology) में (कुण्डली में) राशियों को स्थिर तथा भावों को परिवर्तशील माना जाता है। जैसा कि पहले भी लिख चुके हैं कि किसी जातक के जन्मकालीन पूर्वीक्षितिज में उदीयमान राशि को लग्न एवं प्रथम भाव कहते हैं। अधिकांश भारतीय ज्योतिषी लग्न स्पष्ट को प्रथम भाव का मध्य बिन्दु मानते हैं, तथा भाव मध्य से लगभग १५ अंश पहिले प्रारम्भ होकर १५ अंश बाद तक भाव का विस्तार मानते हैं। भाव मध्य से समान अथवा असमान दूरी तक के विषय में विद्वानों में परस्पर मतभेद भी मिलते हैं। कोई भी ग्रह भाव मध्य में स्थित होकर, उस भाव के फल को पूर्ण रूप से प्रभावित करता है, परन्तु जैसे–जैसे ग्रह भाव सन्धि के पास होता है उसके फल में न्यूनता आ जाती है। गताध्याय में इस सम्बन्ध में विस्तार से विचेचन किया जा चुका है।

भावों एवं ग्रहों की भान्ति राशियों के बलाबल का भी ध्यान रखना चाहिए। यथा –

(i) जो राशि किसी शुभ एवं योग कारक ग्रह से युक्त एवं दृष्ट होती है, वह बली होती है।

(ii) जो राशि अपने स्वामी ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, अथवा गुरु, शुक्र बुधादि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, वह बलान्वित मानी जाती है।

(iii) जिस राशि पर पाप ग्रह हो अथवा शत्रुग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, वह भी बलान्वित मानी जाती है।

(iv) केन्द्रभावों में मेष, कर्कादि चर राशियों की स्थिति हो और शुभ ग्रहों का योग हो, तो अभीष्ट कार्यों में शीघ्र सफलता होती है। स्थिर राशियों में स्थित ग्रह विलम्ब में सफलता प्रदान करते हैं जबकि मिथुन, कन्या आदि द्विस्वभाव राशियों में अधिकांश ग्रह स्थित हों, तो विध्न बाधाओं एवं रूकावटों के पश्चात्–कार्यों में सिद्धि होती है।

(v) **शीर्षोदयादि राशियाँ**–मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ–ये शीर्षोदय रशियां कहलाती है, इनमें स्थित शुभाशुभ ग्रह शीघ्र फल प्रकट करते हैं। मेष, वृष, कर्क, धनु व मकर–ये पृष्ठोदय राशिया कहलाती है। इनमें स्थित ग्रह विलम्ब से कार्य सिद्धि करते हैं। मीन, मतान्तर सें (मिथुन) उभयोदयी राशियां है इनमें स्थित ग्रहों का मिश्रित प्रभाव होता है।

इसके अतिरिक्त, शीर्षोदय राशि में स्थित शुभग्रह अत्यन्त शुभ फल प्रदान करता है, जबकि पापी ग्रह अपेक्षाकृत कम अशुभ अर्थात् मिश्रित फल देता है। पृष्ठोदय राशि में स्थित पाप ग्रह अत्यन्त अशुभ हो जाता है। जबकि पृष्ठोदय राशि में स्थित शुभ ग्रह मध्यम (मिश्रित) फल करता है।

(vi) **सौम्य–क्रूरादि राशियां**– इसी भान्ति सौभ्य–क्रूरादि राशियों में ग्रह स्थिति का विचार करना चाहिए। (जैसा कि पिछले अध्याय में लिख चुके हैं।) १, ३, ५, ७, ९, ११ यह सभी राशियां क्रूर हैं, किन्तु इनमें ३, ७, ९ राशियां अपेक्षाकृत कम क्रूर एवं कुछ सौम्य भी कही जा सकती हैं, क्योंकि इनके स्वामी ग्रह शुभ हैं। उसी प्रकार २, ४, ६, ८, १०, १२ यह सभी सौम्य राशियां हैं, किन्तु इनमें भी अपेक्षाकृत २, ४, ६, १२ विशेष सौम्य हैं –अर्थात् इन सौम्य राशियों में स्थित शुभ ग्रह अधिक प्रशस्त होते हैं।

राशि तत्व विचार–तात्विक दृष्टि से मेष, सिंह एवं धनु राशियों (अग्नि तत्व) में शुभ एवं योग कारक ग्रह हों तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपद प्रतिष्ठित, धनिक एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। इनमें प्रदर्शन की भावना अधिक होती है। वृष, कन्या और मकर–(पृथिवी तत्व) राशि के जातक बुद्धिमान, सूक्ष्मदर्शी, यथार्थवादी, स्वाभिमानी, व्यवहारशील, दयालु, परिश्रमी एवं परोपकारी स्वभाव के होते हैं। सहनशील प्रकृति होगी। मानसिक शक्ति प्रबल होती है। तथा आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

मिथुन, तुला व कुम्भ–(वायु तत्त्व) राशि वाले जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, परिवर्तन शील, तर्क–वितर्क करने वाले, व्यवहार कुशल, सौंदर्य

प्रिय, तीव्र बुद्धि, नीति के अनुसार आचरण करने वाले स्वतंत्र–कल्पनाशील, हंसमुख, संगीत–कला एवं साहित्य में विशेष अभिरुचि रखने वाले होते हैं।

कर्क, वृश्चिक व मीन (जल तत्त्व) राशि वाले जातक बुद्धिमान सौम्य प्रकृति, आकर्षक व्यक्तित्व, भावुक एवं सरल हृदय, दयालु–सहृदय, कल्पनाशील प्रत्येक स्थिति में स्वयं को ढाल लेने वाले, मिलनसार, आदर्शवादी, कलात्मक (artistic) अभिरुचियां रखने वाले होते हैं। सौंदर्य–प्रिय, परिश्रमी एवं दृढ़ निश्चयी होते हैं।

पृथ्वी तत्व और जल तत्व राशियों के मध्य मित्रता, अग्नि तत्व और वायु तत्व राशियों के मध्य भी मैत्रीभाव तथा जल और अग्नि के मध्य, एवंच पृथ्वी और अग्नि तत्त्व राशियों के मध्य शत्रुभाव रहता है। इसी प्रकार शरीरांगों पर राशियों की स्थिति तथा चर–स्थिरादि विभिन्न गुणों एवं स्वभाव आदि को ध्यान में रखते हुए फलादेश का अनुशीलन करना चाहिए ।

ग्रहों सम्बन्धी कुछ अन्य विशिष्ट जानकारी

ग्रहों के कारकत्व का विचार–जिस प्रकार कुण्डली में धन, सुतादि भावों को लग्नवत् केन्द्र गत मानकर फल कथन किया जाता है, उसी भान्ति पिता, माता, भाई, मामा, चाचा, सेवक आदि विशेष कारक ग्रहों का तथा उनसे सम्बन्धित भावों पर विचार करने के साथ ही सूर्यादि कारक ग्रह जिस राशि में विद्यमान हो, उसे भी लग्न मान कर माता–पिता,धन, स्त्री आदि सुखों का विचार करना चाहिए। उदाहरणार्थ–जैसे सूर्य पिता का कारक होता है। अतएव सूर्य जिस राशि में स्थित हो, तदनुसार पिता के स्वरूप, स्वभावादि का विचार करें। सूर्य स्थित राशि से दूसरे स्थान से पिता की धन–सम्पत्ति का, सूर्य से तृतीय स्थान से उसके भाई–बहन को, सूर्य से सप्तम स्थान से उसके वैवाहिक जीवन का, आठवें से आयु–निर्णयादि का विचार करना चाहिए। इसी भान्ति माता के सुखादि निर्णय करना हो तो चतुर्थ भाव, चतुर्थेश ग्रह तथा चन्द्रमा को लग्नस्थ मानकर माता के सुख–दुखादि का विचार करना चाहिए।

यद्यपि ग्रहों के कारकत्वादि के सम्बन्ध में पुस्तक के आरम्भ में संक्षेप से लिख आए हैं। यहां पुनः विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हैं।

सूर्य–आत्मा, पिता, आत्म बल, राजा–राज्य, प्रताप, आरोग्य, सामर्थ्य, शारीरिक ओज, अग्नि नेत्र एवं नेत्र सम्बन्धी रोग, प्रशासनिक कार्य, कटु एवं तिक्त रस, लाल–वस्त्र, माणिक्य, सोना, तांबा, गेहूँ एवं लाल वर्ण के पदार्थ, वन–पर्वतादि ।

चन्द्रमा–माता, मन, चित्, बुद्धि , धन–सम्पत्ति, स्त्री, रूपादि, मन की प्रसन्नता,

चांदी, मोती, चावल, श्वेत वस्त्र (कपास), ईख, नमक सौंदर्य रसादि पदार्थों का कारक।

मंगल—पराक्रम, बल, भूमि, भाई, सेना, पुत्र, शत्रु, रोगादि, दुर्घटना, अग्नि, क्रोध, तांबा, शत्रु, गुड़, रक्त, चन्दनादि का कारक

बुध—यह विद्या, वाणी, बुद्धि, मित्र, सुख, मातुल (मामादि), बन्धु—बांधव, गणित, शिल्प--ज्योतिष, चाची, मामी, हरितवस्त्र, घृत, पन्ना—रत्न आदि का कारक है।

गुरु—यह विवेक, बुद्धि, शरीरपुष्टि, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र—धर्म, बड़े भाई, उदारता, पुष्प—राग, पीतवर्ण, सुवर्ण, ब्राह्मण, मन्त्री, सत्वगुण, पति—सुख, पौत्र, पितामह, गुरु आदि का कारक है।

शुक्र—स्त्री, वाहन, आभूषणादि, सांसारिक सुख, व्यापार, कामसुख, वीर्य, चांदी, काव्य—रुचि, संगीत, श्वेत—वस्त्र, चांदी, हीरा, दुग्धादि पदार्थों का कारक है॥

शनि—आयु, जीवन, मृत्युकारण, सेवक, दुख, रोग, विपत्ति, शिल्प, भैंस, हाथी, केश, तिल, नीलम, लोहादि पदार्थों का कारक है।

राहु—सर्प, लाटरी, गुप्त—धन, भूत—बाधा, प्रयाण, तस्करी, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, गुमेद आदि पदार्थों का कारक है।

केतु—यह गुप्त—शाक्ति, कठिन कार्य, दुख, धूम्र—रंग, अति पीड़ा, चर्म रोग, व्रण, तन्त्र—विद्या, बकरा, नीच जाति, कृष्णवस्त्र, कम्बलादि पदार्थों का कारक है।

इसी भान्ति, आर्थिक सुख का विचार करते समय धनभाव, धनेश और लाभेश के अतिरिक्त शुक्र—चन्द्र (धन—सम्पत्ति के कारक ग्रह) का भी विचार अवश्य करना चाहिए, तभी भाव सम्बन्धी फल पूर्णतया प्रकट होगा। इसी प्रकार दुख, संकट, रोग, आयुष्य आदि का कारक **शनि ग्रह** है। अतएव इन विषयें पर विचार करते समय शनि की उच्च—नीच राशि एवं अन्य, शुभ ग्रहों की युति और दृष्टि आदि का भी विचार करना चाहिए, तभी फलादेश ठीक उतरेगा ।

ग्रह और ज्ञानेन्द्रियां

सूर्य आत्मा है, चन्द्रमा मन एवं शरीर है। मंगल बुधादि शेष पांचों ग्रहों का पांचों ज्ञानेन्द्रियों पर अधिकार है। **सूर्य और मंगल** तेज के अधिष्ठाता हैं। और देखने की शक्ति (दृष्टि) पर इनका अधिकार है। मंगल को धैर्य का कारक भी मानते हैं। **चन्द्रमा और शुक्र** का रसनेन्द्रिय पर विशेष अधिकार है। क्योंकि यह दोनों जल तत्व के अधिष्ठाता हैं। पृथ्वी तत्त्व की अधिकता के कारण **बुध** को वाणी एवं घ्राणेन्द्रिय का अधिष्ठाता भी मानते हैं। **बृहस्पति** आकाश तत्व प्रधान होने के कारण ज्ञान एवं श्रवणेन्द्रिय का अधिष्ठाता माना जाता है। यदि कुण्डली में बृहस्पति पाप ग्रह से ग्रस्त या दृष्ट होगा, तो जातक कर्ण

रोग से पीड़ित होगा या कम सुनाई देगा। शुक्र, स्त्री एवं काम सुख का विशेष कारक माना जाता है। शनि, राहु व केतु वायु के अधिष्ठाता माने जाते हैं। इनसे आयु, दुख-कष्ट, रोग-मृत्यु एवं स्पर्शादि का भी विशेष विचार किया जाता है।

पंच भूतों में सूर्य और मंगल अग्नि तत्व, **बुध पृथ्वी** तत्व, **वृहस्पति** आकाश तत्व, **शुक्र** जल तत्व और **शनि, राहु-केतु** वायु तत्त्व के विशेष प्रतीक माने जाते हैं।

कुछ भावों में ग्रह निष्प्रभावी होते हैं-

जैसे **धन भाव** में अकेला **मंगल,** सुख भाव में एकाकी बुध, **सुतभाव** मे अकेला गुरु, छटे भाव में एकाकी **शुक्र** तथा सप्तम भाव में अकेला **शनि निष्फली** अर्थात् अल्प प्रभावी माना जाता है।

सम्बन्धियों के कारक ग्रह

सूर्य से पिता का, **चन्द्रमा** से माता का, एवं स्त्री के मन का, **मंगल** से लघु भ्राता एवं पुत्र, **बुध** से मातुल पक्ष मामा, मौसी, चाची, बहन की संतान एवं बन्धु-सौख्य। **गुरु** से पुत्र, विवाह एवं पति का सुख। **शुक्र** से स्त्री सम्बन्धी सुख, **शनि** से नौकर एवं कर्मचारी वर्ग, **राहु** से पितामह (दादा) का तथा **केतु** से मातामह (नाना) का विचार करना चाहिए ।

आत्मादि कारक ग्रहों का प्रयोजन ''सारावली'' में इस प्रकार से वर्णन किया गया है-**''आत्मादयो गगनैगर्वलिभिः बलवत्तराः। दुर्बलै दुर्बला ज्ञेया विपरीतं शनेः स्मृतम्।''**

अर्थात् जन्मकाल में आत्मादि कारक ग्रहों के बलवान् होने से उन ग्रहों से सम्बन्धित पदार्थ भी बली होते हैं एवं उनका पूर्ण सुख मिलता है और **कारक ग्रह** के निर्बल होने से तद् विषयक सुखों की हानि होती है। उदाहरणार्थ-जन्म काल में यदि बुध निर्बल होगा, तो जातक की वाणी निर्बल होगी अर्थात् वह पूर्णतया अपना अभिप्राय कहने में असमर्थ होगा। अथवा वाणी में रुकावट होगी।

जन्म-पत्री में ग्रहों के कारकत्वादि का विचार कर लेने के पश्चात् सटीक फलादेश हेतु ग्रहों के बलाबल तथा ग्रहों की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में भी गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

ग्रहों के बलाबल का विचार

ज्योतिष शास्त्र में **ग्रहों के छः प्रकार** के बल माने गए हैं। स्थान बल, दिग्बल, काल बल, चेष्टा बल, नैसर्गिक बल और दृग्बल। जन्मपत्री में ग्रहों का यथार्थ फल ज्ञात

करने के लिए ग्रहों के बलाबल पर विचार करना नित्तान्त आवश्यक है। क्योंकि ग्रह अपने बलाबलानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं।

१. **स्थानबल**–जो ग्रह स्वोच्च राशि, स्वराशि, मित्रराशि, मूल–त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ, स्वद्रेष्काणादि वर्गों में स्थित हों, वह स्थानबली कहलाते है। एवं अष्टकवर्ग में ४ से अधिक शुभ रेखा पाने वाले ग्रह बली माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र–शुक्रादि स्त्री ग्रह स्त्री राशि में बल पाते हैं तथा सूर्य–मंगल, गुरु आदि पुरुष ग्रह मेषादि पुरुष राशि में बल पाते हैं।

इसके विपरीत नीचादि राशि में, शत्रुगृही, पाप युक्त, पापदृष्ट, पाप वर्ग में, संधि में, पापांश युक्त, अस्त ग्रह, दृष्टि बलहीन ग्रह, और अष्टक वर्ग में ४ से कम रेखा पाने वाले ग्रह अशुभ फली होते हैं। ग्रहों के उच्च नीचादि अंशों एवं मैत्री आदि चक्र इसी पुस्तक के गत पृष्ठों पर देखें ।

२. **दिग्बल**–बुध, गुरु पूर्व दिशा में अर्थात् लग्न भाव में बली होते हैं । चन्द्र–शुक्र उत्तर दिशा (चतुर्थभाव) में, शनि पश्चिम (सप्तम) में, तथा सूर्य–मंगल दक्षिण दिशा में–अर्थात् दशम भाव में स्थित होने से दिग्बली कहलाते हैं।

३. **काल बल**–दिन में जन्म होने पर सूर्य, गुरु व शुक्र ग्रह काल बली, रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा बुध सर्वकाल में बली माना जाता है। मतान्तर से, पाप ग्रह कृष्ण पक्ष में तथा शुभ ग्रह शुक्ल पक्ष में बली माने जाते हैं तथा गुरु दिन–रात में बली होता है।

सभी ग्रह अपनी–अपनी होरा में बली होते हैं। दिनेश, मासेश एवं वर्षेश भी बली होते हैं।

४. **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र और सूर्य–क्रमवार से उत्तरोत्तर बली माने जाते है। एक मतानुसार शनि से मंगल दो गुणा बली होता है। शनि से त्रिगुणा बुध, शनि से चौगुणा गुरु, शनि से पंचगुणा शुक्र, छः गुणा चन्द्र तथा शनि से सात गुणा बलो सूर्य होता है।

५. **चेष्टा बल**–सूर्य–चन्द्र उतरायण में जब मकर से मिथुन राशि तक कहीं भी स्थित हों, तो चेष्टा बली होते हैं। मंगल, बुध, गुरु और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से भी चेष्टाबली होते हैं।

६. **दृग्बल**–जब कोई ग्रह शुभ अथवा योगकारक ग्रहों से दृष्ट हो तो दृग्बली कहलाता है।

बलवान ग्रह अपने स्वभावानुसार जिस भाव में रहता है, तदंनुसार उस भाव का फल प्रदान करता है। उपरोक्त ग्रहों के स्थानादि बलों का निर्णय गणित प्रक्रिया द्वारा भी

किया जाता है। संक्षेप में, उसकी विधि बताई जाती है।

स्थान बल—इसमें उच्चबल, युग्मायुग्म बल, सप्तवर्गैक्य बल, केन्द्र बल, द्रेष्काण बल—ये पांच तत्त्व मुख्यतया सम्मलित होते हैं।

(i) उच्चबल निकालने के लिए स्पष्ट ग्रह में से सम्बद्ध ग्रह के नीच राशयंशों को घटाना चाहिए। घटा कर जो आवे यदि वह राशि से अधिक हो, तो १२ राशि में से पुनः घटा लेना चाहिए। शेष की विकलाएं बना लें और उन विकालओं को १०८०० के द्वारा भाग देने पर लब्ध कलाएं आएंगी। शेष को ६० से गुणा कर फिर १०८०० से भाग देकर विकलाएं प्राप्त होंगी। इन कला—विकलाओं के अंशादि बना लेने पर हमें ग्रह का उच्चबल प्राप्त हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए सूर्य स्पष्ट ७। ८। १०। ४२ है। इसमें से सूर्य के नीच राशयंश (६ ।१० ।००) के घटाने से २८° ।१०।४२ इनकी विकलाएं बना लेने पर प्राप्त संख्या को १०८०० से भाग देंगे । यथा = २८×६० = १६८० + १० = १६९० × ६० = १०१४०० + ४२ = १०१४४२ ÷ १०८०० = ९ एवं शेष ४२४२ को ६० से गुणा करने पर ४२४२ × ६० = २५४५२० संख्या मिली, इसे पुनः १०८०० से भाग देने पर २३ लब्धि हुआ एवं ६१२० शेष मिला। यह शेष अर्धाधिक होने से लब्ध २३ को २४ कर दिया। इस प्रकार सूर्य ग्रह का उच्च बल ०।९।२४ प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी उच्च बल निकाल संकते हैं।

ग्रहों के कालादि बल के गणित की प्रक्रिया अन्यत्र दी जावेगी ।

नवग्रहों के स्थानादि बल का विचार

सूर्य—अपनी उच्च राशि (सिंह), स्व—नवांशस्थ, द्रेष्काण, स्व—होरा, मध्यान्ह एवं दिवस कालीन, रात्रि के प्रथम प्रहर, मित्र के नवांश में, रविवार, १, ७, ९, १० तथा एकादश भावों में एवं उत्तरायण में बली माना जाता है।

चन्द्रमा—यह कर्क राशि वृष राशि, अपनी होरा द्रेष्काण, नवांश, शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर १—४—५—९—१० भावों में सोमवार, रात्रि काल एवं दक्षिणायन में बली होता है।

मंगल—मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशियों में, स्व—नवांश, स्व—द्रेष्काणादि वर्गों में, मंगलवार एवं ३, ६ और १० भावों में, दक्षिण दिशा एवं दक्षिणायन में बली होता है।

बुध—स्व राशियों (कन्या और मिथुन) में, स्वद्रेष्काण, स्व—नवांशादि वर्गों में, बुधवार, धन राशि में, राशि के मध्य में, लग्न भावस्थ एवं २—५—९—१० भावों में, यश और बुद्धि में वृद्धि करता है। पूर्ण चन्द्रमा, गुरु, शुक्र आदि शुभ ग्रहों के साथ रहने

से एवं उत्तरायण में बली होता है। चतुर्थ स्थान में निष्फली होता है।

बृहस्पति–धन, मीन, वृश्चिक एवं कर्क राशियों में, तथा स्व–नवांश, स्व–द्रेष्काणादि स्व वर्गों में, भौमयुक्त गुरुवार, दिन के मध्य में एवं नीच राशिस्थ होने पर भी १, ४ और १० वें भाव में धन, यश और सुख की वृद्धि करता है तथा २–५–९–११वें भावों में तथा उत्तरायण में विशेष बली होता है।

शुक्र–वृष, तुला एवं स्वोच्च मीन राशि में, द्रेष्काण , नवांशादि स्व–वर्गों में, शुक्रवार, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ एवं द्वादश भावों में स्थित चन्द्रमा के साथ एवं वक्री शुक्र बली मानी जाती है। दिन में जन्म होने से शुक्र द्वारा माता का तथा रात्रि में जन्म होने से स्त्री का विचार किया जाता है। इसके बली होने से सांसारिक सुखों की अनायास ही प्राप्ति हो जाती है। मध्यान्होपरान्त भी शुक्र बली माना जाता है।

शनि–मकर, कुम्भ एवं स्वोच्च राशि (तुला), सप्तम भाव, स्वद्रेष्काणादि में, शनिवार एवं राशि के अन्त में रहने पर बली माना जाता है। यह चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टा बली, तथा कृष्ण पक्ष में वक्री हो तो समस्त राशि में एवं दक्षिणायन में बली माना जाता है।

राहु–मेष, वृष, वृश्चिक, कर्क और कुम्भ राशि में, दक्षिण दिशा का स्वामी होने से दशम भाव में बली माना जाता है। जिस स्थान पर राहु रहता है। प्रायः उस स्थान की वृद्धि में बाधा एवं हानि करता है। त्रिषडाय (३, ६, ११) भावों में भी बली होता है।

केतु–वृश्चिक, धनु एवं मीन राशि में, रात्रि कालीन एवं मंगल के साथ होने से बली माना जाता है।

अन्य ग्रहयोग से ग्रहों का बल

सूर्य से शनि को, शनि से मंगल को, मंगल से बृहस्पति को, बृहस्पति से चन्द्रमा को, चन्द्रमा से शुक्र को, शुक्र से बुध को एवं बुध से युक्त होने पर चन्द्रमा को बल प्राप्त होता है। अर्थात् इन ग्रहों के संयोग से दूसरे ग्रह का बल बढ़ता है।

इस प्रसंग में एक अन्य बात भी ध्यान देने योग्य है कि केवल ग्रह का बली होना और शुभ होना ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु ग्रह जहां स्थित हो उसके नवांशादि स्वामी की स्थिति पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए।

आत्मकारक ग्रह–

महर्षि जैमिनी मतानुसार आत्मकारक ग्रह से कोई ग्रह १–४–७ एवं १०वें स्थानों (केन्द्र) में हो, वह पूर्णबली होता है। इसी प्रकार आत्मकारक ग्रह से पणफर २–५–८–११वें स्थान में जो ग्रह स्थित हो, वह अर्धबली होता है। परन्तु आत्मकारक से

आपोक्लिम स्थानस्थ ग्रह निर्बली होता है। (जैसे कि पहले लिखा जा चुका है कि ग्रह स्पष्ट में जिस ग्रह के अंश कलादि सर्वाधिक हों, वह आत्मकारक होता है।)

स्थान–काल चेष्टादि बलों से युक्त होने से ग्रह जातक को धन, भूमि, वाहन, स्त्री पुत्र सन्तानादि सुख प्रदान करते हैं। व्यवसाय अथवा सर्विस में उच्च पद प्राप्त होता है। बड़े मकान का सुख, अपने कार्य में कुशलता, वस्त्र आभूषणादि की प्राप्ति एवं गौरवादि सम्मान प्राप्त होते हैं। इसी भान्ति ग्रहों के शुभाशुभ फलों के आंकलन के लिए ग्रहों की विभिन्न प्रकार की अवस्थाओं का भी विचार करना चाहिए ।

ग्रहों की अवस्थाएं

ग्रहों की विभिन्न प्रकार की अवस्थाएं मानी जाती हैं। जैसे–बाल्यादि ५ अवस्थाएं, दीप्तादि १० अवस्थाएं, शयनादि १२ अवस्थाएं, लज्जित आदि ६ अवस्थाएं, जाग्रतादि ३ अवस्थाएं इत्यादि।

(क) बाल्यादि अवस्थाएं–विषम राशि में रहने से ग्रह १ से ६ अंश तक बालक, ६ से १२ अंश तक कुमार, १२ अंश से १८ अंश तक युवा, १८ से २४ अंश तक वृद्ध तथा २४ से ३० अंश तक मृत अवस्था वाला कहलाता है।

सम राशि में ग्रह इसके विपरीत–अर्थात् १ से ६ अंश तक मृत, ६ से १२ अंश तक वृद्ध, १२ से १८ अंश तक युवा, १८ से २४ तक कुमार २४ से ३० अंश तक बाल्यावस्था वाला कहलाता है। बाल्यावस्था में ग्रह अत्यन्त न्यून फल करता है। कुमारावस्था प्राप्त ग्रह अर्द्धबली –अर्थात् उसका शुभाशुभ फल अर्द्ध मात्रा में ही होता है। युवावस्था (तरुण) ग्रह सबसे अधिक प्रभाव–अर्थात् पूर्ण प्रभाव करता है। वृद्धावस्था वाला ग्रह अत्यल्प शुभाशुभ फल देता है, परन्तु प्रौढ़ता एवं बड़प्पन सम्बन्धी विचार किया जा सकता है। मृतावस्था को प्राप्त ग्रह फल देने में अक्षम होता है।

(ख) ग्रहों की दीप्तादि दस अवस्थाएं–

ग्रहों की दीप्तादि अवस्थाएं भी अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती है। ग्रहों की दीप्तादि दस अवस्थाएं इस प्रकार से हैं–

१. दीप्त – जो ग्रह अपने उच्च या मूलत्रिकोण राश्यंश में हो वह दीप्तावस्था में होता है। ऐसा ग्रह उत्तम फल देता है।

२. स्वस्थ – जो ग्रह स्वक्षेत्री हो–अर्थात् अपनी ही राशि में स्थित हो, वह स्वस्थ कहलाता है। यह भी शुभ फलदायक होता है।

३. मुदित – जो ग्रह अपने मित्र या अधि–मित्र के गृह में हो, वह मुदितावस्था अथवा जो ग्रह गुरु से युक्त या दृष्ट हो वह भी मुदित अवस्था एवं शुभ फली होता है।

४. शान्त – जो ग्रह किसी शुभ ग्रह के वर्ग में स्थित हो, उसे शांतावस्था में कहेंगे। वह भी शुभ फल प्रदान करता है।

५. गर्वित (सुखित) – उच्च मूलत्रिकोण राशि में स्थित गर्वित होगा। वह शुभ फलदायक होता है।

६. पीड़ित –जो ग्रह अन्य पाप ग्रहों से ग्रस्त हो, वह पीड़ितावस्था में होगा । ऐसा ग्रह अशुभफल प्रदान करता है।

७. दीन – नीच अथवा शत्रु ग्रह के राश्यंश में आगत ग्रह दीन होता है। ऐसा ग्रह नेष्ट एवं अशुभ फल प्रदान करता है।

८. खल – पाप ग्रह के घर में गया हुआ ग्रह खल होता है। जो अशुभ फली होती है।

९. भीत – नीच राशि में स्थित या अतिचर ग्रह भीत होता है। ऐसा ग्रह भी विशेष अशुभ फलदायक होता है। तथा कार्यों में विघ्न कारक होता है।

१०. विकल – अस्तंगत हुआ ग्रह विकलावस्था में कहलाता है। शुभ ग्रह होने पर भी फल प्रदान नहीं कर पाता ।

(ग) लज्जितादि ६ अवस्थाएं –

१. लज्जित – जो ग्रह पंचम स्थान में राहु, केतु, मंगल, सूर्य और शनि से युक्त हो वह लज्जित कहलाता है। (इसके प्रभाव से पुत्र सन्तान नष्ट होती है या केवल एक ही पुत्र का सुख होता है।) व्यर्थ भ्रमण और धन का नाश होता है।

२. गर्वित – उच्च स्थान या अपने मूल त्रिकोण में ग्रह गर्वित होता है। ऐसा ग्रह उत्तम फल प्रदान करता है। धन लाभ एवं सौभाग्य में वृद्धि होती है।

३. क्षुधित – शत्रु के गृह में या शत्रु से युक्त या दृष्ट ग्रह क्षुधित कहलाता है। अशुभ फल प्रदान करता है।

इसका फल विशेष– धन हानि, शत्रु से कलह, शोक, शरीर कष्टादि है।

४. तृषित – जो ग्रह जलचर राशि में स्थित होकर केवल शत्रु या पाप ग्रह से दृष्ट हो वह 'तृषित' होता है। इसमें कुकर्म में प्रवृत्ति, बन्धु–विवाद, दुर्बलता, दुष्टों द्वारा क्लेश, परिवार में चिंता–धन–हानि एवं स्त्रियों को रोगादि, सप्तम में तृषित ग्रह होने से स्त्री की मृत्यु होगी या मृत्यु–तुल्य कष्ट होगा।

५. मुदित – मित्र के घर में, मित्र ग्रह से युक्त या दृष्ट अथवा गुरु से युक्त ग्रह 'मुदित' होता है। मुदित ग्रह शुभ एवं लाभदायक होता है।

६. क्षोभित – सूर्य के साथ स्थित होकर केवल पाप ग्रह से दृष्ट होने पर ग्रह की क्षोभितावस्था होगी ।

जिन–जिन भावों में तृषित, क्षुधित या क्षोभित ग्रह होता है उस भाव के सुख की हानि करता है।

(घ) जाग्रतादि ३ अवस्थाएं –

विषम राशि में १ से १० अंश तक जाग्रत, १० से २० अंश तक स्वप्न तथा २०

से ३० अंश तक सुषुप्ति अवस्था कहलाती है। जबकि सम राशि में १ से १० अंश तक सुषुप्ति, १० से २० तक स्वप्न तथा २० से ३० अंश तक जाग्रत अवस्था होती है। जाग्रतावस्था कार्य में सिद्धि देने वाली, स्वप्न मध्यम फली जबकि ग्रहों की सुषुप्ति अवस्था निष्फली होती है।

(ङ) शयनादि १२ अवस्थाएं –

१. शयन, २. उपवेशन, ३. नेत्रपाणि, ४. प्रकाशन, ५. गमनेच्छा, ६. गमन, ७. सभावसति, ८. आगमन, ९. भोजन, १०. नृत्यलिप्सा, ११. कौतुक (प्रसन्नचित्त), १२. निद्रा–यह द्वादशावस्थाएं हैं। प्रत्येक ग्रह को शयनादि अवस्था का फल अलग–अलग होता है। जैसे सूर्य शयनावस्था में हो तो जातक को मंदाग्नि, उपवेशन में दरिद्र, नेत्रपाणि में धनी–सुखी, प्रकाशन में उदार, गमनेच्छा में आलसी एवं प्रदेशी, गमन में परिजनहीन, सभावसति में परोपकारी, आगमन से चंचल एवं शत्रु–पीड़ित, भोजन में धनी, वाहनादि से सुखी होगा। १०. नृत्यलिप्सा में संगीत प्रेमी व धार्मिक ११. कौतुक में प्रतापी, सवारी आदि सुखों से युक्त तथा १२. निद्रावस्था में जातक नेत्ररोगी, आलसी व उत्तेजित स्वभाव वाला होता है।

शयनादि अवस्था जानने की विधि

जिस नक्षत्र में ग्रह हो, उसकी संख्या में उस ग्रह के अंशों को गुणा करके, प्राप्त संख्या को ग्रह के क्रम द्वारा गुणा करें, फिर प्राप्त संख्या में इष्टादि योग जमा करके, उस संख्या को १२ द्वारा भाग देने पर क्रमानुसार ग्रहों की शयनादि अवस्था प्राप्त हो जाएगी।

इष्टादि योग में जन्म नक्षत्र+ जन्मेष्ट घड़ी + ग्रह = तीनों का योग, इष्टादि योग होता है। इस प्रकार ऊपर लिखे अनुसार यह सूत्र बनेगा।

ग्रहावस्था – ग्रह नक्ष–संख्या × ग्रह अंश संख्या × ग्रह क्रम + इष्टादि योग ।

उदाहरण – मान लीजिए, किसी जातक का जन्म ४७/२५ घट्यादि इष्ट पर, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं कन्या लग्न में हुआ है। तथा सूर्यादि ग्रहों के अंश एवं उनके नक्षत्र क्रम इस प्रकार से हैं। नक्षत्र गणना अश्विनी नक्षत्र से करें। तथा ग्रह की गणना सूर्य से करें ।

ग्रह क्रम	सूर्य १	चन्द्र २	मंग ३	बुध ४	गुरु ५	शुक्र ६	शनि ७	राहु ८	केतु ९
अंश	वृश्चि. ८	सिंह २५	तुला ८	तुला १९	मेष १५	तुला ४	मेष १६	कन्या १५	मीन १५
नक्षत्र संख्या	अनु १७	पूफा. ११	स्वा १५	स्वा १५	भर २	चित्रा १४	भर २	हस्त १३	उभा २६

जन्म नक्षत्र		इष्ट घटी		लग्न	
१९	+	४७	+	६	= ६४ इष्टादि का योग

ग्रह नक्षत्र संख्या × ग्रह अंश × ग्रह क्रम + इष्टादि योग ÷ १२ = शेष

सूर्य = १७ × ८ × १+ ६४ = २०० ÷ १२ = ८ आगमन

चन्द्र = ११× २५ × २ + ६४= ६२४ ÷ १२= २ उपवेशन

मंगल = १५ ×८× ३ + ६४ = ४२४ ÷ १२ = ४ प्रकाशन

बुध = १५ ×१९ × ४ + ६४= १२०० ÷ १२ = ४ प्रकाशन इत्यादि

ग्रहों सम्बन्धी अन्य विशिष्ट जानकारी

ग्रहों की गति—हमारे सौरमण्डल में पृथ्वी, मंगल, बुध, गुरु आदि ग्रह सूर्य के इर्द–गिर्द पश्चिम से पूर्व अपनी २ गत्यनुसार परिभ्रमण कर रहे हैं। प्रत्येक ग्रह अपने कक्ष में अलग–अलग गति से परिभ्रमण करता है, तथा सूर्य के प्रभाव स्वरूप ग्रहों की सामान्य गति में न्यूनाधिकता होती रहती है। स्थूल रूप से ग्रहों की विभिन्न प्रकार की मध्यम गति ग्रह लाघवानुसार इस प्रकार से हैं –

ग्रहों की मध्यम दैनिक गति – सूर्य की मध्यम गति ५९'–८'' कला–विकला, चन्द्रमा की ७९०–३५'', **मंगल की** ३१'–२६", बुध केन्द्र ग. १२६' कला, गुरु की ५ कला, शुक्र की ३७ कला, शनि की २ कला एवं राहु–केतु की वक्र–गति सदा ३ कला ११ विकला रहती है। परन्तु ग्रहों की स्पष्ट गति, मध्यम गति से न्यूनाधिक होती रहती है। ग्रह गति की विभिन्न अवस्थाओं को अलग–अलग नामों से अभिहित किया जाता है।

ग्रहों की वक्री–मार्गी गति

सूर्य और चन्द्र – की गति सदैव पश्चिम से पूर्व की ओर रहती है। अतः वे सदा मार्गी (Direct) कहलाते हैं। परन्तु भौमादि अन्य ग्रह कभी पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हैं और कभी पूर्व से पश्चिम की ओर चलते प्रतीत होते हैं । ग्रहों की पश्चिम से पूर्व की ओर की गति को मार्गी और पूर्व से पश्चिम की ओर की गति को वक्री (Retrograt) गति कहते हैं। वास्तव में सभी ग्रह मार्गी गति से ही चलते हैं, परन्तु ग्रहों की सापेक्षिक गति एवं द्रष्टा के भ्रमवश ग्रह वक्री हुए परिलक्षित होते हैं। परिभाषिक रूप से ग्रहों की गति की विभिन्न स्थितियां इस प्रकार से होती हैं –

१. वक्रगति (वक्री) – जब किसी ग्रह (सूर्य–चन्द्र के अतिरिक्त) की गति

टिप्पणी – जैसा कि प्रथम अध्याय में लिखा जा चुका है कि ज्योतिष शास्त्र में सुविधा हेतु सूर्य की अपेक्षा पृथ्वी को केन्द्र मानकर पृथ्वी की गति को ही सूर्य की गतिमान लिया जाता है।

अपनी मध्यम गति से क्रमशः कम होती जावे और ग्रह आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे लौटे तो वक्री (Retrograt) कहलाता है।

२. मार्गी गति – जब कोई ग्रह वक्रगति त्यागकर सामान्य गति से क्रमशः आगे बढ़ता जाए, तो मार्गी ग्रह कहा जाता है। सूर्य चन्द्र सदा मार्गी रहते हैं, वक्री नहीं होते हैं, जबकि अन्य ग्रह वक्री--मार्गी होते रहते हैं। राहु–केतु सदा वक्री रहते हैं।

शुभ ग्रह वक्री हो तो अधिक शुभफल तथा क्रूर ग्रह वक्री हो, तो अत्यन्त अशुभ फल प्रदान करता है। सामान्य वक्री ग्रह परदेश भेजता है। जबकि मार्गी ग्रह आरोग्य एवं सफलता प्रदान करता है। गोचरफल में ग्रहों के वक्री–मार्गी का विशेष महत्त्व होता है।

३. अतिचार गति – स्पष्ट ग्रह जब मध्यम गति का अतिक्रमण करके शीघ्र आगे बढ़ता है, तो अतिचार गति वाला कहलाता है। **''अतिक्रम्याग्रो मध्यात् स्पष्टोऽतीचारगः स्मृतः।''** ग्रह यदि अतिचारी होकर एक राशि में ही पुनः वक्र हो जाए अथवा एक राशि में ही वक्र होकर पुनः मार्गी हो जाए तो शुभप्रद होता है। यदि ग्रह अतिचार गति से अग्रिम राशि में प्रवेश कर जाए या वक्री होकर पूर्व राशि में जाये तो ग्रह की यह स्थिति अशुभ मानी जाती है। विशेषकर गुरु की। अतिचार गति अशुभ होती है।

४. स्तम्भन – जब कोई ग्रह वक्री एवं अधिक मंद गति वाला होकर सामान्य अवधि की अपेक्षा बहुत दिनों तक एक ही राशि में संचार करता है, तो उस ग्रह को स्तम्भित ग्रह कहते हैं। परन्तु मंगल के सम्बन्ध में **कुच–स्तम्भ** कहते हैं।

५. मंगल कुच–स्तम्भ – यदि मंगल अति मंदगति से एक ही राशि में (निर्धारित अवधि की अपेक्षा) अधिक काल तक टिका रहता है, तो सम्बद्ध राशि को कुचस्तंभी कहा जाता है। मेष, कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि पर मंगल का कुचस्तम्भ अनिष्टकारक होता है। वृष, सिंह व तुला पर मध्यमफली तथा ३, ६, १०, ११ (कुम्भ) राशियों पर मंगल का कुचस्तम्भ शुभफलदायक माना जाता है। *

सूर्य से भावगत ग्रहों की शीघ्रादि गति –

सूर्य से दूसरे स्थान में कोई ग्रह हो तो शीघ्र गति, तीसरे समगति, चौथे मंद गति, ५वें–छठें कुछ २ वक्रगति, ७–८वें अति वक्रगति, ९वें ग्रह हो तो कुटिल गाति एवं सूर्य से १०वें स्थान ग्रह हो तो मार्गी गति, ११वें भाव कोई ग्रह हो तो शीघ्र गति तथा सूर्य से द्वादश स्थान में ग्रह हो तो ग्रह की अतिशीघ्र गति होती है।

---

* जिस वर्ष किसी राशि में मंगल का कुचस्तम्भ होता है। उस वर्ष सम्बद्ध राशि के देश में प्रजा का नाश, युद्ध भय, आन्तरिक उपद्रव, दंगे, फिसाद, नाना प्रकार के उत्पात्तों का भय होता है। भौम स्थित राशि के जातक को भी उस समय भारी नुक्सान, शरीर कष्ट दुर्घटना, एवं मानसिक चिंताओं में से गुज़रना पड़ता है।

* **ग्रहों का उदयास्त** – ग्रहों का उदय–अस्त दो प्रकार का है।

(१) ग्रहों का दैनिक (क्षितिजीय) उदय--अस्त होना । ग्रहों का दैनिक उदयास्त पृथ्वी की परिक्रमण गति के कारण होता है।

(२) सूर्य के समीप किसी ग्रह का विशेष अंशों पर रहने से अस्त एवं दूर होने पर उदय होना कहलाता है। सूर्य से थोड़ी गति वाले ग्रह जैसे मंगल, गुरु, शनि– ये सूर्य से स्वकालांश तुल्य अंश पर पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं तथा पूर्व से उदित होते हैं।

सूर्य से अधिक गति वाला चन्द्र सूर्य से अपने कालांश तुल्य अधिक होने पर पश्चिम दिशा में संध्या को उदित होता है, तथा सूर्य से कालांश तुल्य अल्पांश होने से पूर्व दिशा में अस्त होता है। बुध–शुक्र के लिए विशेष बात यह है कि सूर्य से अधिक गति होने पर भी दोनों दिशाओं में पूर्व या पश्चिम में उदय या अस्त होते हैं।

*** ग्रहों के अस्त सम्बन्धी कालांश * –**

सूर्य से निम्न अंशों के भीतर ग्रह आ जाने से ग्रह अस्त समझा जाता है –

ग्रह	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	बुध–शुक्र वक्री हो तो
कालांश	१२	१७	१४	११	९	१५	कालांश १° कम कर लें।

ग्रह लाघवानुसार बुध के कालांश १३, शुक्र के ७ अंश तक होते हैं। शेष ग्रहों के ऊपरलिखित कालांश ही माने गए हैं।

अस्त ग्रह निर्बल होता है। क्रूर एवं पापी ग्रह निर्बल होकर अनिष्ट फल में कमी करता है। तथापि अस्तंगत ग्रह जातक को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट, अपमान, कार्यों में विफलता, वाहन–हानि, शत्रु में वृद्धि एवं धन और मान की हानि करता है। उदित ग्रह धन में वृद्धि एवं सुख प्रदान करता है ।

शरीरांगों पर ग्रहों का प्रभाव –

सिर से मुख तक सूर्य का, गले से हृदय तक चन्द्र का; पेट से पीठ तक मंगल का, हाथ और पाँव पर बुध का, क़मर से जाँघ तक गुरु का, गुप्तांग से वृषण तक शुक्र का, घुटनों से पिंडली तक शनि का प्रभाव होता है। ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति अनुसार मनुष्य शरीर के अंग पुष्टापुष्ट होंगे ।

---

* **टिप्पणी** – ग्रहों के उदयास्त सम्बन्धी उपरोक्त कालांश प्राचीन भारतीय ग्रंथों पर आधारित है। आधुनिक काल में सूक्ष्म उन्नातांश पद्वति द्वारा विभिन्न अक्षांशों एवं विभिन्न स्थलों पर ग्रहों के अस्त एवं उदय काल में किंचित भिन्नता पाई जाती है। कम अक्षांश वाले प्रदेशों की अपेक्षा अधिक अक्षांश वाले प्रदेशों में किसी ग्रह का उदय बाद में और अस्त पहिले होगा। जैसे यदि २५° अक्षांश वाले प्रदेश में शुक्रास्त ३० अक्तूबर को हुआ है, तो ३५ अक्षांश वाले प्रदेश में शुक्रास्त पहिले–अर्थात्–२७ अक्तूबर को होगा ।

पाश्चात्य विद्वान सिफारियल के अनुसार सूर्यादि ग्रह मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों पर आधिपत्य रखते हैं। जैसे–

सूर्य – हृदय, मस्तिष्क, सिर, नेत्र, पीठ, मेरुदण्ड, पुरुष की बाईं आँख तथा स्त्री की दाईं आँख, सामान्य नाड़ी तंत्र, फेफड़े, रक्त आदि से सम्बन्ध रखता है।

चन्द्र – पेट, दाहिनी आँख (पुरुष), बाईं आँख (स्त्री), रक्त प्रवाह, थूक, गले से हृदय तक (छाती), ग्रन्थि–प्रक्रिया, मन, बुद्धि आदि ।

मंगल – मस्तक (माथा), बाह्य प्रजनन अंग, गुर्दे, मांस–पेशियां, नाक, कान, फेफड़े, शारीरिक बल एवं पेट से पीठ तक का भाग ।

बुध – आन्तरिक नाड़ी तंत्र, दिमाग, फेफड़े, हाथ, बाजू, जिह्वा, मुख, वाणी, बुद्धि चातुर्य, एवं शरीर की स्नायु प्रक्रिया ।

गुरु – दायाँ कान, पाचन प्रक्रिया, कमर से जंघा तक (जंघाए), चर्बी, हृदय कोश, गुल्मादि ।

शुक्र – गला, ठोड़ी, गाल, रूप–सौंदर्य, कामेच्छा, वीर्य, कफ, अण्डाशय, गुर्दा, आंतरिक काम वासनाएं सम्बन्धी।

शनि – जिगर, बायां कान, पिंडली, घुटने, हड्डियाँ एवं जोड़ तथा गुप्त–स्नायु प्रक्रिया का विचार शनि से किया जाता है।

नैपचून – मनुष्य की मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक उद्वेगों का प्रतिनिधित्व होता है।

यूरेनस – बाह्य शरीर की चुम्बकीय शक्ति (Magnetic Aura) तथा स्नायु–प्रक्रिया से सम्बंध रखता है।

ग्रहों द्वारा रोग विचार

किसी जातक की जन्म कुण्डली में जो ग्रह पीड़ित एवं अरिष्टकारक होते हैं, वह तत्सम्बन्धी रोगों के कारक होते हैं।

सूर्य – इस ग्रह से रक्त पित्त विकार, सिर–दर्द, नेत्र विकार, ज्वरवृद्धि, हृदय रोग, अस्थि एवं चर्म रोग, मन्दाग्नि, अपमान, अतिसार, चित्तव्याकुलता, उदर एवं मेरुदण्ड सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है।

चन्द्र – से कफ जन्य रोग, उन्माद, अनिद्रा–रोग, नेत्र रोग, मानसिक रोग, कैलशियम का अभाव, स्त्री जनित रोग, आलस्य, शीतज्वर, मन्दाग्नि, रक्त विकार, प्रमेह, अण्डकोष एवं गर्भादि रोगों का विचार किया जाता है।

मंगल – सामर्थ्य में कमी, कफ, गर्मी, रक्तचाप, पित्त, प्रकोप, जलन, रक्त

कुष्ठ, जख्म, अग्नि भय, रक्त विकार, बुखार, अग्नि या शस्त्रादि से घाव, तीव्र पीड़ा, चेचक, खसरा, संक्रामक एवं प्लेगादि रोगों का विचार किया जाता है।

बुध – स्नायु, श्वास, मुख, वाणी, नासिका सम्बन्धी रोग, मूकत्व, मतिभ्रम, नाड़ी कम्पन, मन्दाग्नि, कुष्ट, त्रिदोष ज्वर, बुद्धि असंतुलन, खुजली, दादादि चर्म रोग, वायु विकार, मूर्छा, दमा एवं विभ्रान्ति रोगों का विचार किया जाता है।

गुरु – कफज रोग, मूर्छा एवं कर्ण रोग, गुल्म (पेट का फोड़ा), टाईफाईड, हर्निया, शारीरिक चर्बी, स्थूलता अथवा दुर्बलता, पेट, गैसादि रोगों का विचार किया जाता है।

शुक्र – मूत्राशय सम्बन्धी रोग, प्रमेह, वीर्य–काम सम्बन्धी रोग, मधुमेह, पत्थरी, वात एवं श्लेष्म विकार धातु क्षयादि एवं स्त्री जन्य रोगों का विचार किया जाता है।

शनि – वायु एवं कफ जन्य रोग, स्नायु–दुर्बलता, अधिक श्रम से मानसिक थकान, वातज रोग (सन्निपात, लकवादि), हड्डियों, पसलियों, नख, केश, मांसपेशियां, श्वास रोग (दमादि), सन्धिरोग, पोलियो, पक्षाघात, वातशूल, पाँव. पेट सम्बन्धी एवं कैंसरादि रोगों का विचार शनि से किया जाता है।

राहु – हृदय–दौर्बल्य, कुष्ठ, मानसिक उत्तेजना, कीटाणु, या विषादि से उत्पन्न रोग, पैर में चोट, अरुचि, कृमि रोग तथा पाचन संस्थान सम्बन्धी रोग ।

केतु – श्वेत कुष्ठ, गर्भपात, चर्मरोग, जलोदर, कुष्ट फोड़ा, फुंसी, चेचक, जलन एवं विषादि रोगों का विचार केतु से किया जाता है।

ग्रह और व्यवसाय

जो बली ग्रह लग्न–लग्नेश, द्वितीय–दशमादि भावों से सम्बन्ध रखता है, वह जातक की आजीविका से मुख्यतया सम्बन्धित होता है।

सूर्य – राज्याधिकारी वर्ग, कुलीन, रईस, अधिकार प्राप्त प्रमुख एवं प्रसिद्ध व्यक्ति, कैमिस्ट, ड्रगिस्ट, सुनार, ज्यूलर्स, सैनिक, गवर्नर, प्रधान अथवा सेनाध्यक्ष आदि प्रमुख पदवियों का विचार किया जाता है। सूर्य अग्निस्वरूप है, अतः जब इसे मंगल, केतु आदि ग्रहों का भी योग प्राप्त हो तो अग्नि सम्बन्धित कार्य जैसे बिजली–उद्योगादि कार्यों से भी सम्बंन्धित करवाता है। इसी प्रकार भौम, गुरु आदि ग्रहों के योग से डाक्टरी, वैद्य, कृषि, खाद्यान्न, सरकारी कर्मचारी टैलीविज़न, सिनेमा–संगीत एवं मठाधीश, लकड़ी आदि से भी सम्बन्धित कार्य।

चन्द्रमा – जलोत्पन्न वस्तुओं के विक्रेता(Druggist), शराब, नाविक, औषधी निर्माता, मछुए, सेल्समैन, परिचारिका (नर्स आदि कार्य, जलसेना, सोडा फैक्टरी; सिंचाई विभाग, परिवहन कार्य, शुक्रयुक्त होने से सुगान्धित तेलों (Perfumery) एवं स्त्री सम्बन्धित कार्यों (Beauty Parlours etc.) सिनेमा–संगीत, टैलीविजन एवं दुग्ध पदार्थों आदि में सफलता प्रदान करता है।

मंगल – पुलिस अथवा सैनिक कार्यों में या हथियार बनाने की फैक्टरी में, सर्जरी का कार्य करने वाले, दन्तचिकित्सक, खिलाड़ी, अग्नि से सम्बन्धित बड़े–बड़े उद्योगों के कार्य जैसे बेकरी, बिजली के सामान से सम्बन्धित कार्य, रक्षा विभाग, भूमि जायदाद आदि से सम्बन्धित कार्यों का विचार मंगल ग्रह से किया जाता है।

बुध – व्याख्याता (Orators), कलर्क, वकीलादि, बुद्धिजीवी, शिक्षण, अध्यापक वर्ग, एकाऊँटैण्ट, कूटनीतिज्ञ, विज्ञान, ज्योतिष, शिल्प, चिकित्सा, पुस्तक विक्रेता, संदेशवाहक (दूत, पोस्टमैन आदि) उद्योग वर्ग व्यापार, प्रकाशन, सम्पादन, लेखन, इंजीनियर, शिल्पकार, डाक व तार विभाग, कम्पयूटर, बीमा आदि का कार्यों से सम्बन्धित विषयों का विचार बुध ग्रह से किया जाता है।

गुरु – इस ग्रह के प्रभाव से व्यक्ति दार्शनिक, प्रभावशाली राजनीतिज्ञ, जज, प्रसिद्ध वकील, उच्चशिक्षक, धर्म–गुरु, वैद्य–डाक्टर, बैंक मैनेजर, वस्त्र विक्रेता (विशेषकर ऊनी), उच्चपदाधिकारी, मंत्र–अनुष्ठान, मठाधीश का विचार होता है।

शुक्र – इस ग्रह के प्रभाव से जातक अभिनेता, कलाकार, गायक, चित्रकार, संगीतज्ञ, सौंदर्य सम्बन्धी कार्य, श्रृंगारिक प्रसाधनादि वस्तु निर्माता, एम्ब्राइड्री के कार्य, मिठाई विक्रेता, रत्न सम्बन्धी, शर्बत, शराबादि द्रव्य पदार्थों के कार्यकर्त्ता, कम्पयूटर एवं टैलिविज़न, सिनेमा, संगीत–कला एवं स्त्रियों से सम्बन्धित उद्योगों का विचार किया जाता है।

शनि – इस ग्रह से मशीनरी का कार्य करने वाले शिल्पकार, कारखाने, कम्पयूटर आदि का कार्य करने वाले, व्यापारी, भूमि जायदाद एवं ठेकेदारी के कार्य, यातायात, पुलिस, अधनिस्थ कर्मचारी, भूगर्भ से उत्पन्न होने वाले पदार्थों के कार्य जैसे लोहा, सीमैंट, पत्थर, पैट्रोल आदि कलपुर्जे मजदूर वर्ग, तिल, तैल, भैंसादि पशुओं से सम्बन्धित चमड़ादि उद्योगों का विचार किया जाता है।

राहु – चर्म उद्योग, मशीनरी, फोटोग्राफी, विज्ञान, राजनीति, मुद्रण–कार्य, जासूसी, शेयरर्ज़ लाट्री सम्बन्धी कार्य, नवीन अन्वेषण कार्य, नाविक, शराब एवं जूआ सम्बन्धी कार्यों का विचार राहु से करें।

केतु – शल्य चिकित्सक, विषैली दवाईयों के निर्माता, यात्रा सम्बन्धी, भूत–तंत्रादि विद्या, तन्त्र विद्या, हवाई जहाज़ (पाईलट) सम्बन्धी कार्य, शल्य–चिकित्सा (चीर फाड़ादि) कार्य, धूएँ युक्त कार्य एवं क्रूर कार्यों का विचार केतु ग्रह से किया जाता है।

नोट – ग्रहों द्वारा किसी जातक के व्यवसाय का निर्णय केवल दशम भावस्थ ग्रह के आधार पर नहीं कर लेना चाहिए, बल्कि दशमेश एवं कारक ग्रह की राशि के गुण–स्वभाव तथा उस पर द्वितीयेश, लग्नेश आदि ग्रहों की दृष्टि आदि के सम्बन्ध में भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए।

ग्रहों का संक्रमण काल

किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश काल को संक्रमण काल कहते हैं। सूर्य एक राशि से द्वितीय राशि में प्रायः ३० दिन में, चन्द्रमा सवा दो दिन में, मंगल ४५ दिन में, बुध १८ दिनों में, गुरु १३ मास में, शुक्र २८ दिनों में, शनि अढ़ाई वर्षों में, राहु डेढ़ वर्ष में, नैपचून सात वर्षों में, हर्षचल पौने १४ वर्षों में तथा प्लूटो (Pluto) ग्रह प्रायः २६ वर्षों में एक–एक राशि का परिभ्रमण करता है।

सूर्य संक्रान्ति – सूर्य द्वारा एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण (प्रवेश) को ही संक्रान्ति कहते हैं।

''रवेः संक्रमणं राशौ संक्रान्तिरिति कथ्यते ।
स्नान दान जप श्राद्ध होमादिषु महत्फलम् ॥'' पु. चिंतामणि

संक्रान्ति काल में स्नान, दान, जपादि कर्मों के सम्पादन का विशेष माहात्म्य कहा जाता है। मेषादि द्वादश राशियों के नाम के आधार पर ही वैसाखादि द्वादश सौर मासों की परिकल्पना की गई है। जैसे– मेष संक्रान्ति से वैसाख, वृष से ज्येष्ठ, मिथुन से आषाढ़, कर्क से श्रावण, सिंह से भाद्रपद, कन्या से आश्विन, तुला से कार्तिक, वृश्चिक से मार्गशीर्ष, धन से पौष, मकर से माघ, कुम्भ से फाल्गुन एवं मीन से चैत्र मास का प्रारम्भ माना जाता है।

ग्रहों द्वारा फल देने का समय –

सूर्य–मंगल राशि के आदि में, शनि–चन्द्रमा राशि के मध्य में, बृहस्पति–शुक्र राशि के अन्त में तथा बुध सम्पूर्ण राशि में फल प्रदान करता है। इसी भान्ति सूर्य राशि प्रवेश करने से ५ दिन पूर्व, चन्द्रमा ३ घड़ी पूर्व, मंगल ८ दिन पूर्व, बुध ७ दिन पूर्व, बृहस्पति २ मास पूर्व, शुक्र ७ दिन पूर्व, शनि ६ मास पूर्व तथा राहु–केतु राशि प्रवेश से ३ मास पूर्व ही प्रभाव करना शुरू कर देते हैं।

विंशोतरी आदि महादशा का ज्ञान

फलित ज्योतिष में ग्रहों के शुभाशुभ फल के समय का ज्ञान करने के लिए भारतीय दशा–पद्धति का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी–अपनी दशा अन्तर्दशाओं के अनुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं एवं अन्र्तदशाओं का वर्णन किया है। जैसे विंशोतरी दशा, योगिनी दशा, अष्टोतरी दशा, कालचक्र दशा आदि मुख्य है। परन्तु उत्तरी भारत में सर्वाधिक प्रचार विंशोतरी दशा का ही है। ऋषि पराशर और वाराहमिहिर के मतानुसार तो नक्षत्रोपरि साधित विंशोतरी महादशा पद्धति ही ग्रहण करनी चाहिए, अष्टोतरी नहीं ।

''दशा विंशोतरी ग्राह्य नाष्टोतरी मता''–पाराशरे। विभिन्न मत–मतान्तर से यद्यपि

विंशोतरी दशा पक्ष को ही बहुमत प्राप्त है, तथापि योगिनी, अष्टोतरी आदि दशाओं का भी अपना निजी महत्त्व है। जिनका विवेचन आगामी पृष्ठों में करेंगे ।

विंशोतरी महादशा निकालना –

विंशोतरी दशा में जन्म नक्षत्र को आधार मानकर उससे सम्बद्ध ग्रह के दशा वर्षों का निर्धारण करके अन्य आठ ग्रहों के दशा वर्षों का भी योग कर दिया जाता है। प्रत्येक ग्रह के अन्तर्गत तीन–तीन नक्षत्रों का समावेश किया गया है। किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र पर होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह से विंशोतरी दशा का प्रारम्भ माना जाता है। प्रत्येक ग्रह की दशा का वर्षमान अलग–अलग होता है। जैसे सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, गुरु की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष तथा शुक्र की दशा २० वर्ष मानी जाती है। इस प्रकार सब ग्रहों की विंशोतरी दशा का कुलमान १२० वर्ष होता है।

किसी नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक के जन्म समय किस ग्रह की महादशा प्रारम्भ होती है –इसे निम्नलिखित तालिका द्वारा जानना चाहिए–

जन्म नक्षत्र	दशा प्रारम्भ	वर्षमान
कृतिका, उ. फाल्गुनी, उतराषाढ़ा=	सूर्य	(६ वर्ष)
रोहिणी, हस्त, श्रवण =	चन्द्रमा	(१० वर्ष)
मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा=	मंगल	(७ वर्ष)
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा=	राहु	(१८ वर्ष)
पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद=	गुरु	(१६ वर्ष)
पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद=	शनि	(१९ वर्ष)
अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती=	बुध	(१७ वर्ष)
मघा, मूला, अश्विनी=	केतु	(७ वर्ष)
पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी=	शुक्र	(२० वर्ष)

नक्षत्र द्वारा जन्म दशा जानना –

कृतिका नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनकर जो संख्या आवे, उसे ९ द्वारा भाग देकर जो शेष बचे, उसे एकादि क्रम से सूर्यादि ग्रह की दशा जाने॥ जैसे (१) शेष बचने से सूर्य (२) से चन्द्र, (३) से मंगल, (४) से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु एवं ९ अर्थात् शून्य ० बचने से शुक्र की दशा प्रारम्भ होती है। उदाहरणार्थ मान लें किसी जातक का जन्म नक्षत्र अनुराधा है। कृतिका से अनुराधा नक्षत्र तक गिनने से अनुराधा की १५वीं संख्या हुई। इसको ९ द्वारा भाग देने से हमें शेष संख्या ६ प्राप्त हुई। अतएव पूर्वोक्त नियमानुसार जातिका के जन्म समय छठी दशा अर्थात् शनि की

दशा प्रारम्भ होगी। शनि की कुल दशा १९ वर्ष की होती है। जन्मकाले शनि की दशा के कितने वर्ष मासादि भोगने शेष रहते थे। इसके लिए निम्नलिखित गणित की प्रक्रिया की जाएगी।

जन्म दशा के भुक्त–भोग्य वर्षादि जानना –

जन्म समय जो नक्षत्र हो, उसका भयात और भभोग बनाओ। (भयात और भभोग बनाने की विधि हम इसी पुस्तक के गत पृष्ठो में लिख चुके हैं।) फिर भयांत एवं भभोग दोनों के घड़ी–पलों के पलात्मक बनाकर अलग--अलग रखें। तथा पलात्मक भयात को जन्म–नक्षत्र के ग्रह की दशा से गुणा करके जो संख्या प्राप्त हो, उसे पलात्मक भभोग द्वारा भाग देने पर जो लब्धि आवेगी वह व्यतीत वर्ष तथा शेष को १२ से गुणा कर पुनः पलात्मक भभोग द्वारा भाग देने से जो लब्धि मिले वह गत मास एवं शेष के पुनः ३० से गुणाकर भभोग द्वारा भाग देने पर जो लब्धि होगी, वह गत दिन प्राप्त होंगे। पुनः २४ से गुणाकर भभोग द्वारा भाग देने से गत घण्टे मिनटादि प्राप्त होंगे। प्राप्त वर्ष, मास दिनादि जातक की जन्मकालीन भुक्त (गत) दशा होगी। इस भुक्त–दशा के वर्षादि को जन्म ग्रह दशा के कुल मान में से घटाने से जातक के भोग्य (भोगने योग्य) वर्षमासादि प्राप्त हो जाएंगे।

भयात्–भभोग द्वारा दशा ज्ञात करना –

उदाहरण–मान लीजिए किसी बालक का जन्म १८ मई, १९९९ ई. को (गत पृष्ठों में लिखे उदाहरण अनुसार) प्रातः ८.३२A.M, तदनुसार ७/३०घट्यादि इष्ट पर दिल्ली में हुआ । पंचाँग दिवाकर २०५६ के पृष्ठ 59 पर १८ मई तारीख के सामने हमें वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा और गत नक्षत्र मृगशिर मिला । उपरोक्त इष्ट पर आर्द्रा नक्षत्र के भयात और भभोग इस प्रकार बनेंगे–

	६०–०	६०–० भ.
– (गत नक्षत्र)	–५३–३३	– ५३–३३ मृग (गत नक्षत्र)
	६–२७	६–२७ शेष आर्द्रा
+ इष्ट	७–३०	+४८–०५ + आर्द्रा
भयात् घड़ीपल	१३–५७	५४–३२ भभोग, आर्द्रा
	× ६०	× ६०
	७८० + ५७	३२४०+ ३२
पलात्मक=	८३७ भयात्	=३२७२ पलात्मक भभोग

गत पृष्ठ में लिखे अनुसार चूँकि आर्द्रा नक्षत्र होने से राहु की दशा शुरु होती है। अतएवं उपरोक्त भयात् अर्थात् राहु के दशा–वर्ष १८ से गुणा करके प्राप्त संख्या को

पलात्मक भभोग द्वारा भाग देंगे। जैसे–

३२७२) १५०६६ (४ वर्ष
    १३०८८
    १९७८
    १२ ×
३२७२) २३७३६ (७ मास
    २२९०४
    ८३२
    ३० ×
३२७२) २४९६० (७ दिन
    २२९०४
    २०५६ × २४ घं. = ४९३६४
३२७२) = ४६३६४ (१५ घण्टे
    ३२७२
    १६६४४
    १६३६०
    २७४ शेष

राहु के भुक्त वर्ष, मासादि = ४ वर्ष, ७ मास, ७ दिन, १५ घण्टे

इनको राहु के कुल भोग्य १८ वर्षादि में से घटाएं =

वर्ष मा. दि. घं.
१८–००–००–००
४– ७– ७ – १५

शेष राहु की भोग्य दशा = १३ –४–२२– ९

इस प्रकार जातक के जन्मकालीन राहु की भोग्य दशा १३ वर्ष, ४ मास, २२ दिन, ९ घण्टे शेष रहती है। यदि घण्टों मिनट की अपेक्षा घड़ी पलों में दशा निकालनी हो शेष संख्या को २४ घण्टों की बजाए ६० से गुणा करें।

इसके पश्चात् राहु की भोग्य दशा को जातक की जन्म समय तारीख,मास, वर्षादि में जमा कर देने से आगामी आने वाले वर्षों में विंशोतरी दशा का ज्ञान हो जाएगा। १८ मई, १९९९ ई. में प्रातः ८.३२ बजे उत्पन्न जातक का आगामी विंशोतरी दशा चक्र इस प्रकार से बनेगा–

चूँकि आजकल अंग्रेजी तारीखों एवं घण्टा. मिनटों का ही अधिक प्रचलन है, अतएवं प्रविष्टों एवं घटीपलों में लिखना चाहें, तो १८ मई की अपेक्षा प्रविष्टे ४ ज्येष्ठ

संवत २०५६ से प्रारम्भ कर सकते हैं।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

भोग्य	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
बर्ष.	१३	१६	१९	१७	७	२०	६	१०	७
मास	४	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	२२	०	०	०	०	०	०	०	०
घण्टे	९	०	०	०	०	०	०	०	०
ई. १९९९	२०१२	२०२८	२०४७	२०६४	२०७१	२०९१	२०९७	२१०७	२११४
१८ मई (५) प्रातः ८.३२ घं.	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. =११	१० अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११	१० अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११	१०–अक्तू. १७ घं., ३२ मि. = ११

उपरोक्त दशा चक्र को इस प्रकार से पढ़ेंगे, जैसे १८ मई १९९९ ई. को प्रातः ८.३२ बजे पैदा होने वाले बालक को राहु की महादशा १० अक्तूबर सायं ५ बजकर ३२ मिनट एवं २०१२ ईसवी तक रहेगी। तदुपरान्त गुरु की दशा प्रारम्भ होगी जो सन २०२८ ई. तक रहेगी। इसी प्रकार सब ग्रहों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल जानें। चूँकि घण्टे मिनट आधे दिन से अधिक एवं २४ घण्टों के निकटस्थ हैं, अतएवं सुविधा की दृष्टि से १० अक्तू. की बजाए ११ अक्तूबर ग्रहण कर सकते हैं।

चन्द्र स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा जानना

गत पृष्ठों में भयात्–भभोग द्वारा विंशोत्तरी दशा निकालने की प्रचलित विधि बतलाई गई है। अब चन्द्रमा के भोगांश अर्थात् चन्द्र स्पष्ट पर आधारित किसी ग्रह की भोग्य दशा जानने की सुगम विधि बताई जाती है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सरल एवं बोधगम्य है। इस प्रणाली के अनुसार चन्द्रमा की राशि, अंश–कलादि के आधार पर सम्बद्ध ग्रह की भोग्य दशा का निर्धारण किया जाता है। राशियों के निम्न अंशों पर ग्रहों की दशा का आरम्भ होता है। जैसे–

मेष, सिंह व धनु राशिस्थ चन्द्र के शून्य (०) अंश से केतु दशा का आरम्भ

मेष, सिंह, व धनु राशिस्थ चन्द्र के १३°/२० अंश कला से शुक्र दशा का आरम्भ

मेष, सिंह, व धनु राशिस्थ चन्द्र के २६°/४० अंश कला से सूर्य दशा का आरम्भ
वृष, कन्या व मकर राशिस्थ चन्द्र के १०°/०० अंशों से चन्द्र दशा का आरम्भ
वृष, कन्या व मकर राशिस्थ चन्द्र के २३°/२० अंश कला से मंगल दशा का आरम्भ
मिथुन, तुला व कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के ६°/४० अंश कला से राहु दशा का आरम्भ
मिथुन, तुला व कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के २०°/०० अंश कला से गुरु दशा का आरम्भ
कर्क, वृश्चिक, मीन राशिस्थ चन्द्र के ३°/२० अंश कला से शनि दशा का आरम्भ
कर्क, वृश्चिक, व मीन राशिस्थ चन्द्र के १६/४० अंश कला से बुध दशा का आरम्भ

पाठकों की सुविधा के लिए चन्द्र स्पष्ट द्वारा भोग्य ग्रह दशा जानने के लिए आगे तालिका दे रहे हैं। इसके अनुसार आप प्राप्त चन्द्र स्पष्ट के निकटस्थ स्पष्ट के आगे भोग्य दशा काल जान सकते हैं। यदि आपका स्पष्ट कुछ कला कम या अधिक है। तो आप सारिणी (ख) में तदनुसार संस्कार कर सकते हैं ध्यान रहे। ज्यों–ज्यों चन्द्र अंश कला बढ़ते जाते हैं। ग्रह दशा अवधि कम होती जाती है।

गत उदाहरण में १८ मई ७/३० जन्मेष्टं पर चन्द्र स्पष्ट २/१०/४/३७ प्राप्त हुआ था। आगामी सारिणी (क) में मिथुन राशि के नीचे और १० अंश के सामने देखने पर हमें राहु की भोग्य दशा १३ वर्ष, ६ मास मिलें। अब इसमें से ४ कला ३७ विकला का सारिणी (ख) से हमें १ मास, ७ दिन प्राप्त हुए। इस मासादि को राहु की भोग्य दशा में से घटा देने से जन्मकालिक राहु की भोग्य दशा १३ वर्ष, ४ महीने और २३ दिन प्राप्त हुए। जो कि भयात्–भभोग द्वारा प्राप्त दशा के लगभग समान है। राहु की भोग्य दशा को जन्म तारीख, मास, वर्षादि में जमा कर देने से राहु की दशा ११ अक्तूबर, २०१२ ई. तक रहेगी।

वर्ष	मास	दिन
१३	६	०
	१	७
१३	४	२३

दि.	मा.	वर्ष
१८	५	१९९९ई.
२३	४	१३
११	१०	२०१२ ई.

चन्द्र स्पष्ट द्वारा विंशोतरीदशा का भोग्यकाल सारिणी (क)

आगे चन्द्र–स्पष्ट पर आधारित सूर्य–चन्द्रादि दशाओं का भोग्यकाल (वर्ष–मास–दिनादि में) दिया गया है। २, ३ कलाओं पर की शेष दशा जानने हेतु आगामी पृष्ठों पर सारिणी (ख) देखें। ध्यान रहे, चन्द्र स्पष्ट पर आधारित दशाऽन्तदशा भयात्–भभोग द्वारा निकाली दशा से अधिक सूक्ष्म होती है।

सारिणी (क)

चन्द्र स्पष्ट अंश कला	सिंह मेष या धनु वर्ष मास दिन	वृष कन्या मकर वर्ष मास दिन	मिथुन तुला कुम्भ वर्ष मास दिन	कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
०० ००	केतु ७ ०० ००	सूर्य ४ ०६ ००	मंग३ ०६ ००	गुरु ४ ०० ०
०० २०	०६ ०९ २७	०४ ०४ ०६	०३ ०३ २७	०३ ०७ ०६
०० ४०	०६ ०७ २४	०४ ०२ १२	०३ ०१ २४	०३ ०२ १२
०१ ००	०६ ०५ २१	०४ ०० १८	०२ ११ २१	०२ ०९ १८
०१ २०	०६ ०३ १८	०३ १० २४	०२ ०९ १८	०२ ०४ २४
०१ ४०	०६ ०१ १५	०३ ०९ ००	०२ ०७ १५	०२ ०० ००
०२ ००	०५ ११ १२	०३ ०७ ०६	०२ ०५ १२	०१ ०७ ०६
०२ २०	०५ ०९ ०९	०३ ०५ १२	०२ ०३ ०९	०१ ०२ १२
०२ ४०	०५ ०७ ०६	०३ ०३ १८	०२ ०१ ०६	०० ०९ १८
०३ ००	०५ ०५ ०३	०३ ०१ २४	०१ ११ ०३	०० ०४ २४
०३ २०	०५ ०३ ००	०३ ०० ००	०१ ०९ ००	शनि१९ ० ०
०३ ४०	०५ ०० २७	०२ १० ०६	०१ ०६ २७	१८ ०६ ०९
०४ ००	०४ १० २४	०२ ०८ १२	०१ ०४ २४	१८ ०० १८
०४ २०	०४ ०८ २१	०२ ०६ १८	०१ ०२ २१	१७ ०६ २७
०४ ४०	०४ ०६ १८	०२ ०४ २४	०१ ०० १८	१७ ०१ ०६
०५ ००	०४ ०४ १५	०२ ०३ ००	०० १० १५	१६ ०७ १५
०५ २०	०४ ०२ १२	०२ ०१ ०६	०० ०८ १२	१६ ०१ २४
०५ ४०	०४ ०० ०९	०१ ११ १२	०० ०६ ०९	१५ ०८ ०३
०६ ००	०३ १० ०६	०१ ०९ १८	०० ०४ ०६	१५ ०२ १२
०६ २०	०३ ०८ ०३	०१ ०७ २४	०० ०२ ०३	१४ ०८ २१
०६ ४०	०३ ०६ ००	०१ ०६ ००	राहु१८ ० ०	१४ ०३ ००
०७ ००	०३ ०३ २७	०१ ०४ ०६	१७ ०६ १८	१३ ०९ ०९
०७ २०	०३ ०१ २४	०१ ०२ १२	१७ ०१ ०६	१३ ०३ १८
०७ ४०	०२ ११ २१	०१ ०० १८	१६ ०७ २४	१२ ०९ २७
०८ ००	०२ ०९ १८	०० १० २४	१६ ०२ १२	१२ ०४ ०६
०८ २०	०२ ०७ १५	०० ०९ ००	१५ ०९ ००	११ १० १५
०८ ४०	०२ ०५ १२	०० ०७ ०६	१५ ०३ १८	११ ०४ २४
०९ ००	०२ ०३ ०९	०० ०५ १२	१४ १० ०६	१० ११ ०३
९० २०	०२ ०१०६	०० ०३ १८	१४ ०४ २४	१० ०५ १२
०९ ४०	०१ ११ ०३	०० ०१ २४	१३ ११ १२	०९ ११ २१
१० ००	०१ ०९ ००	चंद्र१० ०० ०	१३ ०६ ००	०९ ०६ ००

चन्द्र स्पष्ट अंश कला	सिंह मेष या धनु वर्ष मास दिन	वृष कन्या मकर वर्ष मास दिन	मिथुन तुला कुम्भ वर्ष मास दिन	कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
१० २०	केतु१ ०६ २७	चन्द्र९ ०९ ००	राहु१३ ०० १८	शनि०९ ०० ०९
१० ४०	०१ ०४ २४	०९ ०६ ००	१२ ०७ ०६	०८ ०६ १८
११ ००	०१ ०२ २१	०९ ०३ ००	१२ ०१ २४	०८ ०० २७
११ २०	०१ ०० १८	०९ ०० ००	११ ०८ १२	०७ ०७ ०६
११ ४०	०० १० १५	०८ ०९ ००	११ ०३ ००	०७ ०१ १५
१२ ००	०० ०८ १२	०८ ०६ ००	१० ०९ १८	०६ ०७ २४
१२ २०	०० ०६ ०९	०८ ०३ ००	१० ०४ ०६	०६ ०२ ०३
१२ ४०	०० ०४ ०६	०८ ०० ००	०९ १० २४	०५ ०८ १२
१३ ००	०० ०२ ०३	०७ ०९ ००	०९ ०५ १२	०५ ०२ २१
१३ २०	शुक्र२० ० ००	०७ ०६ ००	०९ ०० ००	०४ ०९ ००
१३ ४०	१९ ०६ ००	०७ ०३ ००	०८ ०६ १८	०४ ०३ ०९
१४ ००	१९ ०० ००	०७ ०० ००	०८ ०१ ०६	०३ ०९ १८
१४ २०	१८ ०६ ००	०६ ०९ ००	०७ ०७ २४	०३ ०३ २७
१४ ४०	१८ ०० ००	०६ ०६ ००	०७ ०२ १२	०२ १० ०६
१५ ००	१७ ०६ ००	०६ ०३ ००	०६ ०९ ००	०२ ०४ १५
१५ २०	१७ ०० ००	०६ ०० ००	०६ ०३ १८	०१ १० २४
१५ ४०	१६ ०६ ००	०५ ०९ ००	०५ १० ०६	०१ ०५ ०३
१६ ००	१६ ०० ००	०५ ०६ ००	०५ ०४ २४	०० ११ १२
१६ २०	१५ ०६ ००	०५ ०३ ००	०४ ११ १२	०० ०५ २१
१६ ४०	१५ ०० ००	०५ ०० ००	०४ ०६ ००	बुध१७ ०० ००
१७ ००	१४ ०६ ००	०४ ०९ ००	०४ ०० १८	१६ ०६ २७
१७ २०	१४ ०० ००	०४ ०६ ००	०३ ०७ ०६	१६ ०१ २४
१७ ४०	१३ ०६ ००	०४ ०३ ००	०३ ०१ २४	१५ ०८ २१
१८ ००	१३ ०० ००	०४ ०० ००	०२ ०८ १२	१५ ०३ ४८
१८ २०	१२ ०६ ००	०३ ०९ ००	०२ ०३ ००	१४ १० १५
१८ ४०	१२ ०० ००	०३ ०६ ००	०१ ०९ १८	१४ ०५ १२
१९ ००	११ ०६ ००	०३ ०३ ००	०१ ०४ ०६	१४ ०० ०९
१९ २०	११ ०० ००	०३ ०० ००	०० १० २४	१३ ०७ ०६
१९ ४०	१० ०६ ००	०२ ०९ ००	०० ०५ १२	१३ ०२ ०३
२० ००	१० ०० ००	०२ ०६ ००	गुरु१६ ०० ००	१२ ०९ ००
२० २०	०९ ०६ ००	०२ ०३ ००	१५ ०७ ०६	१२ ०३ २७
२० ४०	०९ ०० ००	०२ ०० ००	१५ ०२ १२	१११० २४

चन्द्र स्पष्ट अंश कला	सिंह मेष या धनु वर्ष मास दिन	वृष कन्या मकर वर्ष मास दिन	मिथुन तुला कुम्भ वर्ष मास दिन	कर्क वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
२१ ००	शुक्र८ ०६ ००	चंद्र१ ९ ००	गुरु१४ ०९ १८	बुध११ ०५ २१
२१ २०	०८ ०० ००	०१ ०६ ००	१४ ०४ २४	११ ०० १८
२१ ४०	०७ ०६ ००	०१ ०३ ००	१४ ०० ००	१० ०७ १५
२२ ००	०७ ०० ००	०१ ०० ००	१३ ०७ ०६	१० ०२ १२
२२ २०	०६ ०६ ००	०० ०९००	१३ ०२ १२	०९ ०९ ०९
२२ ४०	०६ ०० ००	०० ०६ ००	१२ ०९ १८	०९ ०४ ०६
२३ ००	०५ ०६ ००	०० ०३ ००	१२ ०४ २४	०८ ११०३
२३ २०	०५ ०० ००	मंगं ७००००	१२ ०० ००	०८ ०६ ००
२३ ४०	०४ ०६ ००	०६ ०९ २७	११ ०७ ०६	०८ ०० २७
२४ ००	०४ ०० ००	०६ ०७ २४	११ ०२ १२	०७ ०७ २४
२४ २०	०३ ०६ ००	०६ ०५ २१	१० ०९ १८	०७ ०२ २१
२४ ४०	०३ ०० ००	०६ ०३ १८	१० ०४ २४	०६ ०९ १८
२५ ००	०२ ०६ ००	०६ ०१ १५	१० ०० ००	०६ ०४ १५
२५ २०	०२ ०० ००	०५ ११ १२	०९ ०७ ०६	०५ ११ १२
२५ ४०	०१ ०६ ००	०५ ०९ ०९	०९ ०२ १२	०५ ०६ ०९
२६ ००	०१ ०० ००	०५ ०७ ०६	०८ ०९ १८	०५ ०१ ०६
२६ २०	०० ०६ ००	०५ ०५ ०३	०८ ०४ २४	०४ ०८ ०३
२६ ४०	सूर्य६ ०० ००	०५ ०३ ००	०८ ०० ००	०४०३ ००
२७ ००	०५ १० ०६	०५ ०० २७	०७ ०७ ०६	०३ ०९ २७
२७ २०	०५ ०८ १२	०४ १० २४	०७ ०२ १२	०३ ०४ २४
२७ ४०	०५ ०६ १८	०४ ०८ २१	०६ ०९ १८	०२ ११ २१
२८ ००	०५ ०४ २४	०४ ०६ १८	०६ ०४ २४	०२ ०६ १८
२८ २०	०५ ०३ ००	०४ ०४ १५	०६ ०० ००	०२ ०१ १५
२८ ४०	०५ ०१ ०६	०४ ०२ १२	०५ ०७ ०६	०१ ०८ १२
२९ ००	०४ ११ १२	०४ ०० ०९	गुरु५ ०२ १२	०१ ०३ ०९
२९ २०	०४ ०९ १८	०३ १० ०६	०४ ०९ १८	०० १० ०६
२९ ४०	०४ ०७ २४	०३ ०८ ०३	०४ ०४ २४	०० ०५ ०३
३० ००	०४ ०० ००	०३ ०६ ००	०४ ०० ००	०० ०० ००

चन्द्र स्पष्ट सम्बन्धी अधिक सूक्ष्म सारिणी के लिए पंचाँग दिवाकर पृष्ठ 166 पर देखें (संवत २०५६)।

सारिणी (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं अनुसार दशा शेष

कला	केतु मा दि	शुक्र मा दि	रवि मा दि	चन्द्र मा दि	मंगल मा दि	राहु मा दि	गुरु मा दि	शनि मा दि	बुध मा दि	कला
१	० ०३	० ०९	० ०३	० ०५	० ०३	० ०८	० ०७	० ०९	० ०८	१
२	० ०६	० १८	० ०५	० ०९	० ०६	० १६	० १४	० १७	० १५	२
३	० ०९	० २७	० ०८	० १४	० ०९	० २४	० २२	० २६	० २३	३
४	० १३	१ ०६	० ११	० १८	० १३	१ ०२	० २९	१ ०४	१ ०१	४
५	० १६	१ १५	० १४	० २३	० १६	१ ११	१ ०६	१ १३	१ ०८	५
६	० १९	१ २४	० १६	० २७	० १९	१ १९	१ १३	१ २१	१ १६	६
७	० २२	२ ०३	० १९	१ ०२	० २२	१ २७	१ २०	२ ००	१ २४	७
८	० २५	२ १२	० २२	१ ०६	० २५	२ ०५	१ २८	२ ०८	२ ०१	८
९	० २८	२ २१	० २४	१ ११	० २८	२ १३	२ ०५	२ १७	२ ०९	९
१०	१ ०१	३ ००	० २७	१ १५	० ०१	२ २१	२ १२	२ २६	२ १७	१०
११	१ ०४	३ ०९	१ ००	१ २०	१ ०४	२ २९	२ १९	३ ०४	२ २४	११
१२	१ ०७	३ १८	१ ०२	१ २४	१ ०७	३ ०७	२ २६	३ १३	३ ०२	१२
१३	१ ११	३ २७	१ ०५	१ २९	१ ११	३ १६	३ ०४	३ २१	३ ०९	१३
१४	१ १४	४ ०६	१ ०८	२ ०३	१ १४	३ २४	३ ११	४ ००	३ १७	१४
१५	१ १७	४ १५	१ ११	२ ०८	१ १७	४ ०२	३ १८	४ ०८	३ २५	१५
१६	१ २०	४ २४	१ १३	२ १२	१ २०	४ १०	३ २५	४ १७	४ ०२	१६
१७	१ २३	५ ०३	१ १६	२ १७	१ २३	४ १८	४ ०२	४ २५	४ १०	१७
१८	१ २७	५ १२	१ १९	२ २१	१ २७	४ २६	४ १०	५ ०४	४ १८	१८
१९	२ ००	५ २१	१ २१	२ २६	२ ००	५ ०४	४ १७	५ १२	४ २५	१९
२०	२ ०३	६ ००	१ २४	३ ००	२ ०३	५ १२	४ २४	५ २१	५ ०३	२०

अन्तर्दशा जानने की विधि

जिस ग्रह की महादशा होती है, उसी ग्रह की अन्तर्दशा सब से पहले आरम्भ की जाती है। तदुपरांत सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र के क्रमानुसार सभी ९ ग्रहों की अन्तर्दशा के वर्ष आदि की आवृत्ति की जाती हैं। दशा–अन्तर्दशा के सम्बन्ध में ग्रह दशाओं का यह क्रम कण्ठस्थ कर लेवें, तो सुविधा रहेगी। आ (सूर्य), चं. भौम (मंग.), रा, जीव (गुरु), श, बु, के. शुक्र केवल प्रारम्भिक महादशा के अन्तर्गत पड़ने वाली अन्तर्दशा में ही भुक्त एवं भोग्य दशा काल की विशेष गणित करने की आवश्यकता है।

ग्रहों की अन्तर्दशाएँ निकालने की विधि

अन्तर्दशा में नवग्रहों के भोग्य दशा वर्ष, मासादि जानने के लिए अभीष्ट ग्रह की महादशा के वर्षों को अन्तर्दशागत ग्रह दशा के वर्षों से गुणा करके जो संख्या प्राप्त हो, उसे १२० द्वारा भाग देने पर अन्तर्दशा के वर्ष, फिर शेष को १२ से गुणा कर पुनः १२० द्वारा भाग देने पर मास प्राप्त होंगे, तथा शेष को ३० से गुणा कर पुनः १२० द्वारा भाग देने से हमें अन्तर्दशा के भोग्य दिनादि प्राप्त होंगे। उदाहरण स्वरूप यदि हमें शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा (भुक्ति) के वर्षादि ज्ञात करने हैं, तो शनि की महादशा वर्ष १९ को शुक्र दशावर्ष २० से गुणा करने पर हमें ३८० संख्या मिली, इसको १२० द्वारा भाग देने पर हमें ३ वर्ष तथा शेष २० को १२ से गुणा करके प्रांप्त संख्या (२४०) को १२० द्वारा भाग देने से हमें २ मास प्राप्त हुए ।

१९× २० = ३८० ÷ १२० = ३ वर्ष २ मास। इस प्रकार शानि की महादशा के अन्तर्गत शुक्र की अन्तर्दशा (भुक्ति) ३ वर्ष, २ मास होगी। इसी प्रकांर अन्य सभी ग्रहों की अन्तर्दशाओं के वर्ष, मासादि जान सकते हैं। परन्तु पाठकों की सुविधा हेतु आगामी पृष्ठों पर सूर्य आदि ग्रहों की अन्तर्दशाओं की सारणियां भी दी जा रही हैं।

जैसा कि पहले लिख चुके हैं कि जातक के जन्मकालीन ग्रह की दशा–अन्तर्दशा भुक्त एवं भोग्य दशा काल हेतु गणित करने की आवश्यकता होती है। किसी अभीष्ट ग्रह के भुक्त वर्ष, मासादि को महादशा के आगामी अन्तर्दशा–सारिणी में प्रदत्त वर्षों में से घटा कर, शेष भोग्य दशा काल को जन्म तारीख, में जमा कर देने से हमें अभीष्ट ग्रह की भोग्य अन्तर्दशा ज्ञात हो जाएगी।

उदाहरण – गत १८ मई के उदाहरण में राहु की महादशा के भोग्य मास १३ वर्ष, ४ मास एवं २३ दिन निकाले थे एवं च राहु के कुल मान (१८ वर्ष) में से घटा देने से ४ वर्ष, ७ मास, एवं ७ दिन भुक्त बनेंगे । अब आगामी पृष्ठों पर दिए गए राहु अन्तर्दशा चक्र में राहु मध्ये राहु अन्तर्दशा के २ वर्ष, ८ मास, १२ दिन में क्रमानुसार आगामी गुर्वन्तर के २ वर्ष, ४ मास, २४ दिन जमा कर देने से ५/१/६ वर्षादि मिले । इनमें से जातक के जन्मकालीन भुक्त ४/७/७ दशा वर्षादि घटा देने से गुरु की अन्तर्दशा का शेष भोग्य वर्ष–मासादि ज्ञात होंगे। इस समयाविधि को जातक की जन्म, तारीख, मास वर्षादि में जमा करके आगे क्रमानुसार अन्तर्दशाओं के वर्षादि जमा करते जाने से हमें राहु मध्ये अन्तर्दशाओं का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल ज्ञात हो जाएगा। अन्य शब्दों में हम कहेंगे कि जातक के जन्म कालिक इष्ट पर राहु की महादशा के अन्तर में राहु की अन्तर्दशा बीत चुकी थी, तथा गुरु की भोग्य दशा ५ मास एवं २९ दिन शेष (Balance) थी। इसको चक्र द्वारा इस प्रकार प्रकट करेंगे ।

		वर्ष	मास	दिन
राहु		२	८	१२
गुरु	+	२	४	२४
		५	१	०६
भुक्त वर्ष	–	४	७	७
भोग्य काल गुरु		०	५	२९

राहु अन्तर्दशा चक्रम्

ग्रह	जन्म ता.	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
वर्ष	०	बीत	०	२	२	१	३	०	१	१
मास	०	चुकी	५	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	०	०	२९	६	१८	१८	०	२४	०	१८
ई.	१९९९	१९९९	१९९९	२००२	२००५	२००६	२००९	२०१०	२०११	२०१२
मा.	५	५	११	९	४	४	४	३	९	१०
ता.	१८	१८	१७	२३	११	२९	२९	२३	२३	११

ध्यान रहे, किसी जातक के जन्मकालीन ग्रह की दशा अन्तर्दशा का भोग्य कालारम्भ जानने की आवश्यकता होती है। तदुपरान्त ग्रहों की उपदशाओं के वर्ष, मासादि भोग्य काल सुनिश्चित होते हैं। आगे ग्रहों की अन्तर्दशाओं के निर्धारित भोग्य काल (वर्षादि) चक्र दिए जाते हैं। चक्र में दिए गए ग्रहों के वर्ष, मासादि ग्रह दशा के समाप्ति काल को दर्शाते हैं।

जैसे उपरोक्त चक्र में गुरु के नीचे १७.११.१९९९ ई. से तात्पर्य होगा कि राहु मध्य गुरु की अन्तर दशा १७ नवं. १९९९ को समाप्त होगी।

ग्रहों की अन्तर्दशाओं का क्रम उपरोक्त उदाहरण के अनुसार ही राहु की अन्तर्दशा से आगे का क्रम दिया गया है।

गुरु की अन्तर्दशा चक्र (कुल मान १६ वर्ष)

	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग	राहु
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४
२०१२	२०१४	२०१४	२०१९	२०२०	२०२३	२०२४	२०२५	२०२६	२०२८
११/१०	२९/११	११/६	१७/९	२३/८	२३/४	११/२	११/६	१७/५	११/१०

इसी भान्ति गुरु दशा की समाप्ति (११–१०–२०२८) के उपरान्त क्रमशः शनि, बुध, केतु, शुक्र, सूर्य, चन्द्र, मंगलादि ग्रहों की अन्तर्दशाओं के सुनिश्चित दिन, मास, वर्षादि ११ अक्तूबर सन २०२८ ई. में क्रमवार जोड़ते जावेंगे, जिससे अन्तर्दशाओं का आरंभ एवं समाप्ति काल ज्ञात होता जाएगा –

शनि की अन्तर्दशा का चक्र (कुल मान १९ वर्ष)

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग.	राहु	गुरु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

बुध अन्तर्दशा चक्रम् (कुल मान १७ वर्ष)

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

केतु अन्तर्दशा चक्रम् (कुल वर्ष ७)

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग.	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

शुक्र ग्रहऽन्तर्दशा चक्र (कुलमान २० वर्ष)

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंग	राहु	बृह.	शनि	बुध	केतु
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यान्तर्दशा चक्र (कुल मान ६ वर्ष)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंग.	राहु	बृह.	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

चन्द्रान्तर्दशा चक्र (कुलमान १० वर्ष)

ग्रह	चन्द्र	मंग	राहु	बृह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलान्तर्दशा चक्र (कुल मान ७ वर्ष)

ग्रह	मंग.	राहु	बृह.	शनि.	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

प्रत्यन्तर दशा निकालना

फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता के लिए महादशा एवं अन्तर्दशा के समान ही और आगे अन्तर्विभाजन करके प्रत्यन्तर और सूक्ष्म आदि दशाएं निकाली जाती है। जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में उपरोक्त क्रम से नौ ग्रहों की अन्तर्दशा होती है, इसी प्रकार उसी क्रम से एक अन्तर्दशा में नौ ग्रहों की प्रत्यन्तरदशाएँ होती है। उदाहरणार्थ– सूर्य की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा ९ मास १८ दिन है, तो इस ९ मास, १८ दिन में गुरु, शनि, बुधादि क्रमुसार प्रत्यन्तर दशाएं भी होगी। इनकों निकालने की सरल विधि यह है कि महादशा के वर्षों को अन्तर और प्रत्यन्तर्दशा ग्रह के वर्षों से गुणा करके ४० का भाग देने से जो मास, दिनादि आएंगे वही प्रत्यन्तर्दशा के दिनादि निकलेंगे । उदाहरणार्थ–हमने सूर्य की महादशा में, एवं गुरु की अन्तर्दशा में गुरु की ही प्रत्यन्तर दशा जाननी हो, तो सूर्य की महादशा के ६ वर्ष, अन्तर्दशा वाले ग्रह के १६ वर्षों को परस्पर गुणा किया तो ६ × १६= ९६ संख्या प्राप्त हुई । इस संख्या को प्रत्यन्तर्दशा के ग्रह – गुरु के वर्षों १६ से पुनः गुणा करने पर १५३६, इस संख्या को ४० से भाग देने पर हमें गुरु की प्रत्यन्तर्दशा ३८ दिन २४ घड़ी–अर्थात् १ मास, ८ दिन, २४ घड़ी प्राप्त हुई। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा निकाली जा सकती है। पुस्तक के आगामी पृष्ठों में ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशाओं के चक्र दिये जा रहे हैं।

अथ प्रत्यन्तर दशा की सारिणियाँ

सूर्य की महदशा एवं सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्यादि प्रत्यन्तर दशाएँ

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	घटी

सूर्य में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशाएं

चं.	मं.	रा.	शु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	६	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घटी

सूर्य मध्ये मंगल प्रत्यन्तर दशाएं

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के	शु.	सू.	चं.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	००	१८	३०	घटी

सूर्य मध्ये राहु प्रत्यन्तर दशाएं

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घटी

सूर्य मध्ये गुरु प्रत्यन्तर दशाएं

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घटी

सूर्य मध्ये शनि प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास
२४	१८	१६	२७	१७	२८	१९	२१	१५	दिन
०९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घटी

सूर्य मध्ये बुध की प्रत्यन्तर दशाएं

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२०	घटी

सूर्य के मध्ये में केतु प्रत्यन्तर दशाएं

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घटी

सूर्य मध्ये शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्र की महादशा एवं चन्द्र की अन्तर्दशा के मध्य प्रत्यन्तर दशाएँ

चन्द्र मध्ये चन्द्रादि प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घटी

चन्द्र में भौम प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घटी

चन्द्र में राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	गु.	श.	बु	के	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घटी

चन्द्र में गुरु प्रत्यन्तर दशाएँ

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
२	२	२	०	२	०	१	०	२	मास
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्र में शनि प्रत्यन्तर दशाएँ

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घटी

चन्द्र में बुध प्रत्यन्तर दशाएँ

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
२	०	२	०	१	०	२	२	२	मास
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	दिन
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	घटी

चन्द्र में केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु	दशा
०	१	०	०	०	१	०	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घटी

चन्द्र में शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के	दशा
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्र में सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घटी

भौम के मध्य भौमादि प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	पल

भौम में राहु प्रत्यन्तर

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घटी

भौम में गुरु प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं..	रा	दशा
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घटी

मंगलं महादशा में शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	ग्रहाः
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०/३०	३१/३०	१६/३०	३०	५७	१५	१६/३०	५१	१२	घ. प

मंगल की महादशा में बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
१	०	१	०	०	०	१	१	१
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
३४/३०	४९/३०	३०	५१	४५	४९/३०	३३	३६	३१/३०

मंग. महादशा में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन .
३४/३०	३०	२१	१५	३४/३०	३	३६	१६/३०	३९/३०	घ. प.

मंगल की महादशा में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के
२	०	१	०	२	१	२	१	०
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

मंगल महादशा में सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घटी

मंगल की महादशा में चन्द्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु की महादशा में राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रहाः
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घटी

राहु की महादशा में गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
३	४	४	१	४	१	२	१	४
२५	१६	०२	२०	२४	१३	१२	२०	९
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु की महादशा में शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	ग्रहाः
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घटी

राहु की महादशा में बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
४	१	५	१	२	१	४	४	४
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु की महादशा में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	२	०	०	१	१	१	१	१	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घटी

राहु मध्ये शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
६	१	३	२	५	४	५	५	२	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

राहु में सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	घटी

राहु में चन्द्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घटी

राहु में मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	घटी

गुरु में गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर दशाएँ

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
३	४	३	१	४	१	२	१	३	मास
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घटी

गुरु में शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घटी

गुरु में बुध के अन्तर में बुध प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	दिन
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	घटी

गुरु में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	शं.	बु.	दशा
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	घटी

गुरु में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
५	१	२	१	४	४	५	४	१	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

गुरु मध्ये सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	घटी

गुरु मध्ये चन्द्र के अन्तर प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

गुरु में भोम के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१६	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घटी

गुरु में राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
४	३	४	४	१	४	१	२	१	मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	घटी

शनि में शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

शनि में बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	दिन
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

शनि में केतु के अन्तर प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	२	०	१	०	१	१	२	१	वर्ष
२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	मास
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

शनि में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
६	१	३	२	५	५	६	५	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

शनि में सूर्य प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	घटी

शनि में चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
१	१	२	२	३	२	१	३	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

शनि मध्ये भौम के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	दिन
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	पल

शनि में राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	दशा
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनि मध्ये गुरु अन्तर में प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
४	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध मध्ये बुधादि प्रत्यन्तर दशाएँ

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
४	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	दिन
४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

बुध मध्ये केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	१	०	०	०	१	१	५	१	मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	दिन
४६	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

बुध में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध में सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	घटी

बुध में चन्द्र के अन्तर में प्रत्यन्तर दशाएं

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	घटी

बुध में मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	दिन
४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	पल

बुध मध्ये राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर दशाएं

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध मध्ये गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२.	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध में शनि के अन्तर में प्रत्यन्तर दशाएं

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	दिन
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	०	३०	०.	पल

केतु मध्ये केत्वादि प्रत्यन्तर दशाएँ

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

केतु में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु में सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घटी

केतु में चन्द्र प्रत्यन्तर दशाएं

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	दशा
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घटी

केतु में मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	पल

केतु में राहु के अंतर में प्रत्यन्तर दशा

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
१	१	१	१	०	२	०	१	०.	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घटी

केतु में गुरु के अन्तर में प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु में शनि के अंतर में प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	पल

केतु में बुध के अन्तर में प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	७	२६	दिन
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

शुक्र में शुक्रादि प्रत्यन्तर दशाएँ

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	दशा
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र में सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र में चन्द्र के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के	शु.	सू.	दशा
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र में मंगल के अन्तर में प्रत्यन्तर

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	दशा
०	२	१	२	१	०	२	०	१	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	घटी

शुक्र में राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	दशा
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र में गुरु के अन्तर प्रत्यन्तर

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	दशा
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र में शनि के अन्तर प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	दशा
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	घटी

शुक्र में बुध के अन्तर प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	दशा
४	१	५	१	२	१	५	४	५	मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	घटी

शुक्र में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	दशा
०	२	०	१	०	२	१	२	१	मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घटी

प्रत्यन्तर दशा से सूक्ष्म दशा निकालना

सूक्ष्म दशा—प्रत्यन्तर्दशा के मास, दिन व घड़ियां सभी की घड़ियाँ (अथवा मिनट) बनाकर दशा वर्षों से गुणा करें फिर प्राप्त संख्या को ६० द्वारा भाग देने पर लब्ध अंकों में २ से भाग देवें, तो सूक्ष्म दशा के घड़ी–पल प्राप्त होंगे।

घण्टा–मिनटों में सूक्ष्म दशा निकालनी हो तो प्रत्यन्तर दशा में प्राप्त मास, दिन एवं घड़ियों के घण्टा–मिनट बना लें। अर्थात्–दिनों को ६० घड़ी की बजाए, २४ घण्टों से गुणाकर घण्टे बना लें, फिर उपरोक्त विधि अनुसार ६० से भाग देकर प्राप्त संख्या को २ से भाग देकर सूक्ष्म दशा मिलेगी। वास्तव में घटी पलों में प्रत्यन्तर सूक्ष्मादि दशा अधिक शुद्ध निकलती है।

उदाहरण—मान लीजिए, आपको सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्य की सूक्ष्म दशा का मान मालूम करना हो, तो सूर्य की प्रत्यन्तर दशा के ५ दिन, २४ घटी होते हैं। यथा सूर्य प्रत्यन्तर दशा = ५ दिन, २४ घटी = दिन ५ × ६०= ३०० + २४ =३२४ घड़ियाँ

अब ३२४ घड़ियों को सूर्य दशा वर्षों से गुणा किया ३२४ × ६ =१९४४ ÷ ६०
=३२ – २४÷२ =१६ घटी, १२ पल

१६ घड़ी, १२ पल सूर्य की सूक्ष्म दशा होगी अर्थात् सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा ६ घण्टे, २९ मिनट की होगी। इसी प्रकार सब ग्रहों की सूक्ष्म दशा निकाल सकते हैं।

प्राण दशा निकालना

सूक्ष्म–दशा के समय को पलात्मक (अथवा मिनट) बनाकर सम्बद्ध ग्रह की दशा वर्ष से गुणा करके, प्राप्त संख्या को ६० से भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो, उसमें दो का भाग देने से प्राण दशा का मान प्राप्त हो जाता है, जैसे–

सूर्य सूक्ष्मान्तर्दशा = १६ घड़ी, १२ पल = ९७२ पल

९७२ × ६ (सूर्य दशा वर्ष)= ५८३२ ÷ ६० = लब्धि ९७, शेष १२ प्राप्त होगें। इनको 2 से भाग देने पर ४८ पल, ३६ विपल बनेंगे। अर्थात् ४८ पल और ३६ विपल सूर्य की प्राण दशा होगी। पल–विपलों की अढ़ाई २ $\frac{१}{२}$ से भाग देने से हमें सूर्य की सूक्ष्म दशा मध्ये प्राण दशा १९ मिनट, २६ सैकिण्ड में प्राप्त हो जाएगी।

अष्टोतरी दशा ज्ञान

फलित ज्योतिष में फल–कथन के लिए अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है, जैसे कालदशा चक्र, निसर्ग दशा चक्र, आघात महादशा, विंशोतरी दशा, अष्टोतरी दशा, योगिनी दशा इत्यादि। परन्तु वर्तमान काल में जन्मपत्री में विंशोतरी दशा के साथ अष्टोंतरी दशा तथा योगिनी दशा लगाने का भी प्रचलन है।

अष्टोतरी दशा–इस दशा का दक्षिण भारत में विशेष अधिक प्रचलन है। मतान्तर में, कृष्ण पक्ष की रात्रि तथा शुक्ल पक्ष के दिन में किसी जातक का जन्म हो, तो अष्टोतरी दशा ग्रहण करनी चाहिए, इसके विपरीत कृष्ण पक्ष के दिन एवं शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो तो विंशोतरी दशा ग्रहण करनी चाहिए। परन्तु इस मत को अधिक मान्यता नहीं मिल पाई है।

अष्टोंतरी महादशा कुल १०८ वर्ष की होती है, जिसमें विंशोतरी दशा की भान्ति विभिन्न ग्रहों की दशा में, भिन्न–भिन्न ग्रहों के अन्तर–प्रत्यन्तर आते रहते हैं। इसमें विंशोतरी दशा की ९ ग्रहों की दशाएँ न लगाकर, केवल आठ ग्रहों की दशाएँ ही लगाई जाती हैं। केतु ग्रह की दशा नहीं लगाई जाती है। अष्टोतरी दशाओं का क्रम विंशोतरी ग्रह दशा क्रम से कुछ भिन्न होता है। जैसे–

(१) सूर्य (२) चन्द्र (३) मंगल (४) बुध (५) शनि (६) गुरु (७) राहु एवं (८) शुक्र। इनमें केतु की दशा नहीं होती। अष्टोतरी दशा में विभिन्न ग्रहों के दशा वर्ष इस प्रकार हैं –

सूर्य के ६ वर्ष, चन्द्रमा १५ वर्ष, मंगल ८ वर्ष, बुध १७ वर्ष, शनि १० वर्ष, गुरु १९ वर्ष, राहु की १२ वर्ष, और शुक्र की दशा २१ वर्ष की होती है।

अष्टोतरी दशा जानने की विधि

आर्द्रा नक्षत्र से प्रारम्भ करके क्रूर ग्रहों में ४–४ नक्षत्र तथा सौम्य ग्रहों में तीन–तीन नक्षत्र, (अभिजित सहित) स्थापित कर देने से जातक के जन्म नक्षत्र पर से अष्टोतरी दशा का ज्ञान हो जाता है। जैसे–

जन्म नक्षत्र से अष्टोतरी दशा जानना–

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा, पुर्न पुष्य श्ले.	मघा पूफा, उफा	हस्त, चित्रा स्वा, विशा	अनु, ज्ये. मूला.	पूषा, उषा अभि, श्रव	धनि. शत. पूभा.	उभा. रेव. अश्वि भर	कृति रोह. मृग.

अष्टोतरी दशा निकालने की विधि

जन्म नक्षत्र के पलात्मक भयात को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग के पलों द्वारा भाग देने से विंशोतरी की भान्ति ही दशा के भुक्त वर्ष, मास आदि आते हैं। इन्हें ग्रह दशा के कुल वर्षों में से घटाने पर अष्टोतरी के भोग्य वर्ष, मासादि निकल आवेंगे।

उदाहरण – गत पृष्ठों में १८ मई ९९ ई. के उदाहरण में हमनें एक काल्पनिक जातक के जन्मेष्ट ७/३० पर आर्द्रा नक्षत्र का भयात् १३/५७, भभोग ५४/३२ निकाला था। इनके पलात्मक बनाने पर हमें, भयात् ८३७ पल, भभोग ३२७२ पल बने थे।

अब भयात् ८३७ को आर्द्रा नक्षत्र–स्वामी सूर्य की दशा वर्ष ६ से गुणा करेंगे = ८३७ × ६ वर्ष = ५०२२ इस संख्या को पलात्मक भभोग से भाग दिया = ५०२२ ÷३२७२ = १ वर्ष, ६ मास, १२ दिन-सूर्य के भुक्त वर्ष आदि। भुक्त वर्ष, मासादि को सूर्य के कुल वर्षों में से घटाने पर हमें बालक के जन्मकालीन सूर्य की भोग्य दशा ज्ञात हो जाएगी। यथा–

	वर्ष	मास	दिन
सूर्य के कुल दशा वर्ष	६	०	०
भुक्त वर्ष, मासादि	– १	६	१२
जन्म समय सूर्य के भोग्य वर्ष, मासादि	४	५	१८

इस प्रकार जातक के जन्म समय सूर्य की भोग्य दशा ४ वर्ष, ५ मास, १८ दिन शेष रहेगी। इनको जन्म तारीख, मासादि में जमा कर देने से अष्टोतरी ग्रह दशा का समाप्ति काल निकाल आएगा। जैसे, बालक का जन्म काल =

जन्म काल =	१८	– ५	– १९९९
सूर्य की भोग्य अष्टो. दशा	१८	– ५	– ४
	१६	– ११	– २००३
			१५ +
चन्द्र की अष्टों दशा समाप्ति	१६	११	२०१८

इसी भान्ति उपरोक्त क्रमानुसार (केतु के अतिरिक्त) सभी ग्रहों की अष्टोतरी दशा का ज्ञान कर सकते हैं।

अष्टोतरी अन्तर्दशा जानने की विधि

ग्रह दशा एवं अभीष्ट ग्रह दशा से गुणा करके १०८ से भाग देने पर लब्ध वर्ष तथा शेष १२ से गुणा कर के पुनः १०८ का भाग देने से लब्ध मास, शेष को पुनः ३० से गुणा कर एवं १०८ क्रम से भाग देने पर लब्ध दिन एवं २४ से गुणा कर पुनः भाग देने से घण्टे आदि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण हेतु अष्टोतरी दशा में अन्तर्दशा चक्र इस प्रकार से होंगे।

अष्टोतरी दशा में अन्तर्दशाएं

सूर्यान्तर दशा चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	१	०	१
मास	४	१०	५	११	६	०	८	२
दिन	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०

चन्द्रान्तर दशा चक्र

ग्रह	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	सू.
वर्ष	२	१	२	१	२	१	२	०
मास	१	१	४	४	७	८	११	१०
दिन	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०

मंगल अन्तर्दशा चक्र

ग्रह	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	सू.	च.
वर्ष	०	१	०	१	०	१	०	१
मास	७	३	८	४	१०	६	५	१
दिन	३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०
घण्टे	८	८	१६	१६	०	०	०	०

बुधान्तर दशा चक्र

०	बु.	श.	गु.	रा.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	१	२	१	३	०	२	१
मास	८	६	११	१०	३	११	४	३
दिन	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
घंटे	८	१६	१६	०	०	०	०	८

अष्टोतरी दशा का फल

अष्टोतरी महादशा के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की दशा अन्तर्दशा का फलोदश विंशोतरी महादशा के फल की भान्ति ही विचारना चाहिए। संक्षेप में विंशोतरी दशाओं का फल आगामी पृष्ठों में लिखा गया है। अवलोकन करें।

योगिनी दशा विचार

योगिनी दशा का कुल मान ३६ वर्ष होता है। प्रत्येक ३६ वर्ष पश्चात् पुनः इसकी आवृत्ति होती है। योगिनी दशाओं के क्रमशः **मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा** ये आठ नाम होते हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमशः १+ २ + ३ + ४ + ५ + ६ + ७ + ८ वर्ष = ३६ वर्ष क्रमानुसार होती है।

मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी भद्रिका तथा ।
उल्का सिद्धा, संकटा व फलमासां स्वनामवत् ॥

मंगला, पिंगला आदि दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ प्रदान करती है।

योगिनी दशा जानने की विधि

अश्विनी से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र संख्या में ३ जोड़ कर ८ का भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचें तो धान्या एवं च शून्य शेष बचे तो अन्तिम–अर्थात् संकटा की दशा होती है।

जन्म नक्षत्रानुसार योगिनी दशा चक्र

दशा वर्ष	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
दशा स्वा.	चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	रा. के.
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा चित्रा श्रवण	पुर्न. स्वा धनि.	पुष्य विशा शत	श्ले. अनु. पू. भा. अश्वि	मघा ज्ये उभा. भर	पूफा मूला रेव कृति	उफा पूषा रोह ०	हस्त उषा मृग. ०

दशा स्वामी – मंगला आदि योगिनी दशा के स्वामी क्रमशः चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि एवं शुक्र ग्रह होते हैं। अर्थात् मंगला दशा का स्वामी चन्द्र, पिंगला का सूर्य, धान्या का गुरु, भ्रामरी का मंगल, भद्रिका का बुध, उल्का का शनि आदि ग्रह होते हैं। संकटा दशा के प्रथम ४ वर्षों का स्वामी राहु तथा अन्तिम ४ वर्षों का स्वामी केतु होता है। यदि पिंगला आदि दशा का अशुभ फल प्रकट हो रहा हो, तो उस दशा के स्वामी (सूर्यादि) का उपाय करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

जन्म नक्षत्र से योगिनी दशा निकालना

विंशोतरी दशा के समान योगिनी दशा का भुक्त एवं भोग्यकाल भी पलात्मक भयात को यो. दशा वर्षों से गुणा करके फिर प्राप्त संख्या को पलात्मक भभोग के द्वारा भाग देने से योगिनी दशा के भुक्त वर्ष, मासादि निकल आएंगे। भुक्त वर्ष आदि को मंगला आदि भोग्य दशा के वर्षादि में से घटाने पर भोग्य दशा के वर्ष, मासादि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण—गत पृष्ठों में लिए १८ मई ९९ के उदाहरण में आर्द्रा नक्षत्र का भयात् ८३७ पल तथा भभोग ३२७२ पल निकले थे। उपरोक्त योगिनी दशा चक्र अनुसार आर्द्रा नक्षत्र से मंगला दशा आरम्भ होती है। अतएव पलात्मक भयात् ८३७ को १ वर्ष अथवा १२ मास से गुणा करने पर १००४४ की संख्या प्राप्त हुई। १०००४ पर ३२७२ पलात्मक से भाग देने पर ० वर्ष, ३ मास एवं ३ दिन भुक्त मंगला की दशा प्राप्त हुई। इसको मंगला की कुल दशा में से घटा देने से हमें जन्मकालीन मंगला दशा का भोग्य काल ८ मास व २७ दिन प्राप्त हुए। इस भोग्य काल को जन्म तारीख के मास, वर्षादि में जमा कर देने से योगिनी दशा का आरम्भ व समाप्ति काल ज्ञात हो जाएगा। यथा इसके पश्चात् बाकी पिंगला, धान्यादि के वर्ष क्रमशः जमा करते जाएंगे, यथा–

	वर्ष	मास	दिन
	१	०	०
भुक्त	०	३	३
भोग्य	००	८	२७

	१८ –	५ –	१९९९ ई
	२७ –	८ –	००
मंगला दशा समा.	१५	२	२००० ई.
			२
पिंगला दशा समा.	१५	२	२००२ ई.

उदाहरण योगिनी दशा चक्र

भोग्य	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
वर्ष	०	२	३	४	५	६	७	८
मास	८	०	०	०	०	०	०	०
दिन	२७	०	०	०	०	०	०	०
ई. १९९९	२०००	२००२	२००५	२००९	२०१४	२०२०	२०२७	२०३५
१८–५	१८–२	१५–२	१५–२	१५–२	१५–२	१५–२	१५–२	१५–२

योगिनी अन्तर्दशा निकालना–

इसके लिए योगिनी दशा एवं उसके अन्तर्गत आने वाली अन्तर्दशा–दोनों की वर्ष संख्या को परस्पर गुणा कर के ३६ से भाग देने पर योगिनी अन्तर्दशा के वर्ष, मासादि निकल आएँगे।

उदारणार्थ– जैसे मान लीजिए आपने मंगला की दशा के अन्तर में भ्रामरी की अन्तर्दशा ज्ञात करनी है, तो दोनों के दशा वर्ष क्रमशः १ एवं ४ को गुणा करके ३६ से भाग देंगे तो मंगला मध्ये भ्रामरी की अन्तर्दशा १ मास, १० दिन निकल आएगी। जैसे–

$$१ \times ४ = ४ \text{ वर्ष} \div ३६$$
$$= \frac{४ \times १२}{३६} = \frac{४८}{३६}$$
$$= १ \text{ मास}, १० \text{ दिन}$$

पाठकों की सुविधा के लिए आगे योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं की तालिका दी जा रही है–

* योगिनी दशा में अन्तर्दशाएं

(१) मंगला में अन्तर्दशा चक्र

दशा	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मास	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

(२) पिंगला में अन्तर्दशा चक्र

दशा	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
मास	१	२	२	३	४	४	५	०
दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०

(३) धान्या में अन्तर्दशा चक्र

	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.
मास	३	४	५	६	७	८	१	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

(४) भ्रामरी में अन्तर्दशा चक्र

	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
मास	५	६	८	९	१०	१	२	४
दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

(५) भद्रिका में अन्तर्दशा चक्र

	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.
वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०
मास	८	१०	११	१	१	३	५	६
दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०

(६) उल्का में अन्तर्दशा चक्र

दशा	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०
मास	०	२	४	२	४	६	८	१०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

(७) सिद्धा में अन्तर्दशा चक्र

दशा	सिं.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१
मास	४	६	२	४	७	९	११	२
दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

(८) संकटा में अन्तर्दशा चक्र

दशा	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सिं.
वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१
मास	९	२	५	८	१०	१	४	६
दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

दशाऽन्तरदशा के फलादेश सम्बन्धी विशेष नियम

किसी भाव सम्बन्धी फलादेश जानने के लिए ग्रहों की दशा–अन्तर्दशा का ज्ञान तथा ग्रहों की गोचर स्थिति को अवश्य ध्यान में रखना होता है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा के अनुसार ही अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा के फलादेश का निर्णय करने से पूर्व उनके शुभाशुभत्व, कारकत्व, स्थानादि बल, दीप्तादि अवस्था, उदयास्त, वक्री–मार्गी, उच्च–नीचादि का ध्यान रख लेना चाहिए। प्रत्येक लग्न में ग्रह दशा के फल में भिन्नता आने की सम्भावना होती है।

(१) शुभ ग्रह की महादशा के मध्य में शुभ ग्रह की अन्तर दशा हो, तो उसका उत्तम फल होगा। उसमें धन लाभ, आरोग्य सुख, अभीष्ट कार्यों में सफलता, सन्तानादि सुख प्राप्त होते हैं।

(२) अशुभ एवं पाप ग्रह की दशा अन्तर्दशा हो, तो धन हानि, स्वास्थ्य में गड़बड़, रोग, शत्रु वृद्धि, प्रियजनों से कलह–कलेश आदि का भय रहता है।

(३) जो ग्रह उच्च राशिस्थ, मित्र राशिगत, अथवा स्वराशिगत हो वह अपनी दशा–अन्तर्दशा में धन लाभ, उच्चपद प्राप्ति, मान–सम्मानादि प्रदान करवाता है।

नीच या शत्रु राशिगत अथवा वक्री अस्तंगत या सन्धिगत ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में धन का नुकसान, रोग, वियोग, मानसिक तनाव, कलह अपव्यय आदि, अशुभ फल प्रदान करता है।

(४) केन्द्र–त्रिकोण भावों के स्वामी ग्रह अथवा केन्द्र–त्रिकोण भावों में स्थित ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में विपुल धन लाभ, भूमि जायदाद, सवारी आदि की प्राप्ति, उच्च पदोन्नति, स्त्री आदि गृह सुखों की प्राप्ति होती है।

(५) दुःस्थानों (६, ८, १२वें) में स्थित ग्रहों अथवा इन भावों के स्वामी ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में धन–हानि, रोग–शत्रु भय, शरीर कष्ट, कलह–कलेश आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

(६) जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट होगा, उसकी दशाऽन्तर्दशा में विशेष धन लाभ, प्रिय बन्धुओं का सुख, स्त्री–सतान सम्बन्धी शुभ समाचार आदि प्राप्त होते हैं।

इसके विपरीत नीच या पापी ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह की दशा/अन्तर्दशा में धन हानि, परिवारिक कलह, शरीर कष्ट, मानसिक संताप, फिजूल खर्ची आर्थिक कष्ट, दुर्घटना आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

(७) महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी ग्रह यदि परस्पर मित्रग्रह हो तथा कुण्डली में उनकी स्थिति ६, ८ या १२ वीं न हो, तो प्रियबन्धु से सम्बन्ध, भूमि जायदाद, धनादि सम्पदा का सुख एवं लाभ होता है।

दशान्तरदशा ग्रहों में परस्पर शत्रु भाव हो तथा, उनमें परस्पर ६, ८ या १२ वीं स्थिति हो, तो घरेलु एवं कारोबारी उलझनें, धन की हानि तथा बनते कार्यों में विध्न–बाधाएं पड़ती है। ग्रहों की दशा फल के सम्बन्ध में विशेष अधिक जानकारी लिए इस पुस्तक का द्वितीय फलित भाग पढ़ें।

* सूर्यादि ग्रह दशाऽन्तर दशाओं का फल

वाराहमिहिर के अनुसार जिस ग्रह की महादशा होती है, उस ग्रह की छाया मनुष्य्र शरीर पर विद्यमान रहती है और उस मनुष्य की प्रवृत्तियों को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस पर किस ग्रह का प्रभाव चल रहा है। जैसे कि पहिले लिख चुके हैं कि सूर्य और मंगल व केतु अग्नि तत्त्व हैं। चन्द्रमा और शुक्र जल तत्त्व, बुध पृथ्वी तत्त्व, गुरु आकाश तत्त्व और शनि व राहु वायु तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। शुभ ग्रह की महादशा में मनुष्य शुभ वाणी बोलता है। अशुभ ग्रह की दशा में जातक की असामान्य गतिविधियां रहती है। वह अर्थहीन अनर्गल एवं दुष्ट वाणी बोलता है। न चाहते हुए भी उससे गलत एवं अवांछित कार्य हो जाते हैं। तथा धन हानि एवं विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सूर्यादि दशाओं का फल

सूर्य दशा फल – कुण्डली में सूर्य यदि शुभ स्थिति में हो, तो उसकी दशा–अन्तर्दशा में विदेश गमन, उद्यम में वृद्धि, विशेष प्रयास द्वारा सरकार से लाभ, मान–सम्मान एवं पदोन्नति, धर्म–कर्म में अभिरुचि बढ़े, व्यवसाय में धन–लाभ, पितृ एवं भाई बन्धुओं का सुख होता है। सूर्य पाप ग्रह युक्त, नीचादि स्थिति में हो, तो धन हानि, घरेलु कलह–कलेश, प्रिय जन से वियोग, सरकारी झंझट, नेत्र रोग, तनाव, शरीर कष्ट वृथा दौड़–धूप आदि अशुभ फल होते हैं।

चन्द्र दशा फल– उच्च एवं शुभ ग्रह युक्त एवं पूर्ण चंद्र हो, तो चन्द्र दशा–अन्तर्दशा में सम्मान प्राप्ति, अकस्मात् धन प्राप्ति, स्त्री–सुख एवं सुख के अन्य साधनों में वृद्धि, राज्य सम्मान, गृह–सवारी आदि सुख प्राप्त होते हैं।

यदि चन्द्रमा नीच (बृश्चिक) या अशुभ राशिगत हो, तो उसकी दशाऽन्तर दशा में घरेलु कलह, शिर पीड़ा, धन हानि, मानसिक तनाव, विकृति, चिन्ता वात, कफ आदि रोगों के कारण शरीर कष्ट अशुभ फल घटित होते हैं।

मंगल दशा फल– मंगल उच्च, स्वराशि, या मूलत्रिकोणगत हो, तो उस की दशा/अन्तर्दशा में भूमि, जायदाद, पुत्र–संतति एवं वाहन आदि का सुख, धन लाभ, स्वास्थ्य लाभ, उद्यम में वृद्धि, शत्रु पर विजय, एवं भाई–बन्धुओं एवं मित्रों से सुख की प्राप्ति होती है।

यदि मंगल नीच राशि (कर्क), अस्तंगत, वक्री आदि हो, तो उसकी दशाऽन्तर्दशा में गृह कलह–क्लेश, संतान कष्ट, अनीति–पूर्वक धन का लाभ, प्रिय बन्धुओं से तनाव, दुर्घटना, चोटादि से रक्त–प्रकोप आदि का भय होता है।

बुध दशा फल– उच्च, स्वराशिगतादि शुभ हो, तो उसकी दशा–अन्तर्दशा में विशेष तकनीकि एवं शिल्प विद्या में सफलता, पदोन्नति, मित्रों, स्त्री एवं संतान सुख, व्यवसाय (Trading) द्वारा धन–लाभ, गणित एवं लेखा जोखादि (Accounts) व ज्योतिष आदि में अभिरुचिं, तथा आय के साधनों (Sources of Income) में वृद्धि होती है।

नीचादि अशुभ राशिगत बुध हो, तो उसकी दशा में धन हानि, स्त्री, संतानादि के कारण परेशानी, छल–कपट पूर्वक व्यवहार की प्रवृत्ति, वात–कफ–पित्तादि के कारण शरीर कष्ट, त्वचा रक्त विकारादि होते हैं।

गुरु दशा फल– उच्च, स्वराशिगतादि शुभ गुरु की दशा अन्तर्दशा में धर्म–कर्म में रुचि, उच्चपद की प्राप्ति, विद्या में सफलता, धन–लाभ, भूमि, विवाह–संतान, वाहनादि आदि ऐश्वर्यादि सुखों की प्राप्ति एवं उच्च श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क पैदा होते हैं।

नीच या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो आर्थिक परेशानियां, परिवारिक कलह–कलेश, स्त्री–संतानादि के कारण चिन्ता, उच्च– विद्या में विघ्न–बाधाएं, शरीर, कानों एवं पेट में विकारादि अशुभ फल घटित होते हैं।

शुक्र दशा फल – स्वराशि या उच्चराशिगत शुक्र हो, उसकी दशा–अन्तर्दशा में जातक को नवीन शुभ कार्यारम्भ, रत्न–आभूषण, वस्त्र, वाहन, स्त्री या काम आदि सुखों की प्राप्ति, धन–लाभ एवं सवारी आदि सुख के अन्य साधनों में वृद्धि होती है।

नीच एवं शत्रुराशिगत शुक्र की दशाऽन्तरर्दशा में स्त्री, सम्पदा के सम्बन्ध से परेशानी अथवा विरोध हो, धन–हानि, व्यर्थ की यात्राओं में धन का अपव्यय, स्त्री कष्ट, मूत्रकृच्छ सम्बन्धी रोगों का सामना रहता है।

शनि दशा फल – उच्च, स्वराशि या मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि की दशा/अन्तर्दशा में जातक को धन, वाहन, एवं कुटुम्ब आदि का सुख, उच्चपद प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, मंत्र ज्ञान, एवं दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति, व्यवसायादि द्वारा अकस्मात् धन लाभादि की सम्भावनाएं होती है।

शनि यदि नीच शत्रु राशि, अस्तंगत या वक्री अवस्था में अशुभ हो, तो उसकी दशा/अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, स्त्री एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता, आलस्य में वृद्धि, कार्यों में विफलता–नजदीकि भाई–बन्धुओं के साथ कलह–कलेश, चर्म एवं गुप्त रोग एवं क्लिष्ट रोगों का भय, आर्थिक संकट आदि अशुभ फल घटित होते हैं ।

राहु दशा फल – राहु यदि शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो या स्वराशिगत हो, तो राहु की दशाऽन्तरर्दशा में लाटरी आदि द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अभीष्ट कार्य में सिद्धि, सवारी सुख, उच्चपद प्राप्ति होती है, परन्तु प्रायः मानसिक तनाव एवं उलझनें तथा यात्राएँ अधिक रहती हैं।

राशिस्थ या पापी ग्रह से दृष्ट राहु की दशाऽन्तर दशा में शरीर कष्ट, मतिभ्रम, धन हानि, प्रिय बन्धु से वियोग, बनते कार्यों में अड़चनें नीच लोगों के कारण अपमान एवं ऋण व गुप्त रोगादि के कारण मन दुखी रहता है।

केतु दशा फल – शुभ राशि में स्थित या शुभ ग्रह से युक्त–दृष्ट केतु की दशाऽन्तर्दशा में जातक अचानक धन, लाभ, स्त्री–संतान आदि द्वारा सुख, नवीन कार्य करने में रुचि, निर्वाह योग्य धन प्राप्ति आदि फल प्राप्त होते हैं।

पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होने से केतु की दशा में दुर्घटना या शस्त्राघात से चोटादि का भय, पित्तादि के कारण ज्वरादि रोग, परिवार में कलह–कलेश, धनहानि, ऋणादि एवं बदनामी होने का भय होता है।

भावेश अनुसार विंशोतरी दशा फल

१. लग्नेश ग्रह की दशा में शारीरिक सुख और धन लाभ होता है ।

२. धनेश की दशा में धन लाभ होता है, परन्तु शरीर कष्ट भी होता है।

३. तृतीयेश ग्रह की दशा चिन्ताजनक तथा कष्टकारक होती है। गुजारे योग्य ही आदमन के साधन होते हैं।

४. चतुर्थेश ग्रह की दशा में माता, एवं स्वयं को शारीरिक सुख तथा कार, वाहन, भूमि आदि का सुख होता है। यदि चतुर्थेश पाप ग्रह युक्त हो, तो उसकी दशा में अपने बन्धुओं से विरोध या वियोग, धन हानि एवं दुर्घटना आदि का भय रहता है।

५. पंचमेश ग्रह की दशा में विद्या में सफलता, धन लाभ, संतान सुख, एवं सोची योजना में कामयाबी होती है। पंचमेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो धन हानि एवं विद्या में असफलता व संतान सम्बन्धी परेशानी होती है।

६. षष्ठेश ग्रह यदि पाप युक्त हो उसकी दशा में शरीर कष्ट, रोग एवं शत्रु भय, संतान कष्ट ऋण वृद्धित मुकद्दमा आदि अशुभ फल होते हैं।

७. सप्तमेश ग्रह (यदि पीड़ित हो) तो उसकी दशा में शरीर कष्ट मानसिक संताप, सहयोगी द्वारा धोखा, स्त्री–कष्ट सम्बन्धी कष्ट संताप व धन हानि होती है।

८. अष्टमेश की दशा में मृत्यु तुल्य कष्ट, शत्रुमय धन की हानि, स्थान परिवर्तन, निकट बन्धुओं सम्बन्धी कष्ट होता है।

९. नवमेश ग्रह की दशा में धार्मिक रूचियों का उदय, भाग्योदय, तीर्थ–यात्रा, राज्य सम्मान, श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क, भूमि धन लाभ आदि शुभ फल होते हैं।

१०. दशमेश शुभ ग्रह की दशा में कार्य क्षेत्र में लाभ व उन्नति, मान–सम्मान में वृद्धि, धर्म–कर्म में रूचि, व्यवसायिक गतिविधियां एवं आय के स्त्रोत बढ़ेंगे। परन्तु माता की सेहत के लिए दशा अशुभ होगी।

११. एकादशेश ग्रह की दशा में व्यवसाय में धन लाभ आमदन के साधनों में विस्तार, तथा प्रयासों में सफलता प्राप्त होती है। ११वें भाव में पाप ग्रह हो, तो या पाप दृष्ट हो, तो पिता एवं स्वयं के लिए कष्टकारक होती है।

१२. द्वादशेश ग्रह की दशा में व्यर्थ की यात्राएँ, रोगादि से शरीर कष्ट, धन–हानि, गुप्त चिन्ताएँ, फिजूल खर्ची व प्रयासो में विफलता होती है। फलादेश सम्बन्धी अधिक विस्तार एवं सूक्ष्म व्याख्या के लिए युक्त का द्वितीय भाग पढ़ें ॥

योगिनी दशाओं का फल

यद्यपि फलित ज्योतिष में सर्वाधिक प्रचार विंशोतरी दशा का ही है, परन्तु विंशोतरी के बाद योगिनी दशा का स्थान है। उत्तर पश्चिमी भारत में विशेष कर हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि प्रदेशों में योगिनी दशा के आधार पर फल प्रतिपादन करने का विशेष प्रचलन है।

१ **मंगला दशा का फल** – इस दशा में गृह में किसी मंगल कार्य का होना, धन–सम्पदा, सवारी आदि का लाभ, वस्त्राभूषण, धन, स्त्री व संतान आदि परिवारिक सुख में वृद्धि होती है। तथा इस दशा में गृह में कोई मंगल कार्य सम्पन्न होती है।

२ **पिंगला दशा** – इस दशा के पूर्व भाग में मन में तनाव, घरेलू–कलह आदि उलझनें, शरीर कष्ट, मानसिक कष्ट, धन हानि आदि अशुभफल होते हैं। दशा के उत्तरार्द्ध भाग में कुछ शुभ एवं लाभदायक होती है।

३. **धान्या दशा** – धन–धान्यादि का सुख, व्यवसाय में उन्नति, सवारी आदि सुख के साधनों में वृद्धि, स्त्री–संतान का सुख, तीर्थ यात्रा, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, धर्म–कर्म की ओर रुचि, एवं भाग्यकारक होती है।

४. **भ्रामरी दशा** में वृथा भ्रमण, व्याकुलता, धन–हानि, अपव्यय, गृह–कलह, तनाव, स्वास्थ्य हानि एवं ऋण व शत्रु भय आदि अशुभ फल होते हैं।

५ **भद्रिका दशा फल** – गृह में मंगल कार्य, व्यवसाय में लाभ व उन्नति, मनोरंजक एवं भोग्य पदार्थों की उपलब्धि, श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क तथा परिवारिक सुख में वृद्धि होती है। परन्तु संघर्ष के बाद शुभफल प्रकट होते हैं।

६. **उल्का दशा फल** – व्यवसाय में धन हानि, अत्यन्त संघर्ष करने पर भी लाभ कम, मित्रों एवं सम्बन्धियों से बिगाड़, शरीर कष्ट, स्त्री–संतान अथवा अधीनस्थ कर्मचारियों के एवं मित्रों के साथ मन–मुटाव पैदा होता है।

७. **सिद्धा दशा फल** – अभीष्ट कार्यों में सफलता, बिगड़े कार्यों में सुधार, कारोबार में आकस्मिक धन लाभ, विवाह आदि शुभ कार्यों पर खर्च, धर्म–कर्म की ओर रुचि तथा गृहस्थ सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होती है।

८. **संकटा दशा फल** – शरीर कष्ट, धन का नुकसान, अपने लोग भी परायों जैसा व्यवहार करें, भाई –बन्धुओं से मन–मुटाव, मानसिक तनाव व आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है। अपने लोग भी परायों जैसा व्यवहार करते हैं।

उपरोक्त विंशोत्तरी, पिंगला, संकटादि अशुभ दशा चल रही हो, तो दशा–स्वामी सम्बन्धी ग्रह का समोचित उपाय करने से लाभ होता है। अनिष्ट ग्रहों सम्बन्धी शास्त्रोक्त उपायों हेतु इसी पुस्तक का द्वितीय भाग का अवलोकन करें ।

गोचर फल विचार

ज्योतिष शास्त्र में फलादेश के कथन सम्बन्धी अनेक विधाएँ हैं। अधिकांशतः ज्योतिषी जन्म–कुण्डली द्वारा ग्रह महादशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा को आधार मान कर फलादेश कथन करते हैं। इसके अतिरिक्त सामुद्रिक हस्त रेखाओं, प्रश्न कुण्डली, केरल पद्धति, गोचर पद्धति, वर्ष कुण्डली आदि अनेक विधियों द्वारा फलादेश कथन किया जाता है। इनमें गोचर पद्धति भी फलादेश कथन की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है।

'गो' शब्द के अनेक अर्थ हैं। जैसे गाय, आकाश, नभ आदि। इस प्रकार, ज्योतिष में 'गोचर' का अर्थ हुआ आकाश में चलने वाले (संचरणशील) ग्रह, नक्षत्रादि। इन अनवरत चलने वाले ग्रहों का प्रत्येक जीव पर शुभाशुभ प्रभाव पड़ता रहता है। गोचर पद्धति में जातक के जन्मकालीन नक्षत्र, राशि एवं लग्न कुण्डली को आधार मानकार वर्तमान कालिक संचरणशील ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव का अनुशीलन किया जाता है। यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ राशि का होकर शुभ भाव में स्थित है और वही ग्रह जब अपनी संचार गति से (पंचाँगादि में देखने पर) गोचरवश भी उसी राशि में आ जाता है, तो उस समयावधि में निश्चित रूप से तद्भाव सम्बन्धी शुभ फल प्रदान करेगा। यदि जन्म कुण्डली में कोई शुभ ग्रह शुभ भाव में स्थित हो, परन्तु गोचरवश वही ग्रह जब नीच राशि में संचार कर रहा हो, तो जातक को निश्चित रूप से शुभाशुभ दोनों–अर्थात् मिश्रित प्रभाव होंगे। जन्त्री–पंचाँगों एवं अन्य पुस्तकों में राशियों का वार्षिक व मासिक फलादेश प्रायः गोचर ग्रहों के प्रभाव अनुसार लिखा जाता है। उदाहरण स्वरूप, मान लीजिए किसी जातक के जन्म समय कन्या लग्न की कुण्डली में चन्द्र एवं शनि अष्टम भाव में मेष (नीच) राशि का होकर पड़ा है। तथा लगभग तीस वर्ष बाद जब गोचरवश शनि पुनः मेष राशि में संचरित होगा; तो मेष राशि में शनि संचारकालीन जातक को विशेष रूप से शरीरकष्ट, संतान सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा।

उदाहरण कुण्डली

शु. मं. ७
रा. ५
सू. ८ बु.
६
४
९
३ गु.
१०
१२
२
११ के.
१ च. श.

भारतीय ज्योतिष में गोचर फल विचार अनेक विधाओं द्वारा किया जाता है जैसे–* जन्म नक्षत्र द्वारा–अर्थात् किसी व्यक्ति का जो जन्म नक्षत्र है, वही नक्षत्र तथा उससे १०वां, १६वां, १९वां .... आदि नक्षत्र जब पाप ग्रहों से विद्ध हो

तब जातक को अत्यन्त कष्ट रहता है। 'बाल्मीकि रामायण' में अयोध्या काण्ड में राजा दशरथ ने मृत्यु से कुछ पूर्व कहा कि ज्योतिषी कहते हैं कि 'मेरा नक्षत्र सूर्य, अंगारक (मंगल) और राहु ग्रहों से पीड़ित होने वाला है, इसलिए मेरे लिए कोई विपत्ति का समय शीघ्र आने वाला है' –

अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारूणैर्ग्रहैः। आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्यांगारकराहुभिः॥

कुछ विद्वान **जन्म लग्न कुण्डली** द्वारा एवं कुछ विद्वान सूर्यादि–सातों ग्रहों तथा राहु केतु के विशेष फलादेश हेतु **अष्टकवर्ग** से विचार करते हैं। जिसकी चर्चा हम अन्यत्र प्रसंगवश करेंगे।

अधिकांश विद्वान **चन्द्र राशि** को ही आधार मान कर गोचर फल का विचार करते हैं। भारतीय ज्योतिष में सब प्रकार के लग्नों (जन्म लग्न, सूर्य लग्नादि) के होते हुए भी गोचर विचार चन्द्र लग्न को विशेष प्रधानता प्रदान की है–"**सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु, चन्द्र लग्न प्रधानं खलु गोचरेषु॥**" अन्यत्र भी लिखा है–"**विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥**" ज्योतिर्निबन्ध॥

गोचर विचार में चन्द्रमा का अत्यधिक महत्त्व होने के कारण ही जन्म राशिस्थ चन्द्रमा से गिनने पर प्रत्येक ग्रह की पृथक–पृथक शुभाशुभ स्थिति का विचार किया जाता है। यदि जन्म राशिस्थ चन्द्रमा का ज्ञान न हो, तो प्रसिद्ध नामराशि के आधार पर भी ग्रहों के गोचर–फल का ज्ञान किया जा सकता है। परन्तु उसका फल इतना अधिक प्रामाणिक, सटीक एवं यथार्थतः घटित नहीं होगा। आगे जन्म राशि के अनुसार प्रत्येक ग्रह का शुभाशुभ गोचर फल लिखा जाता है।

ग्रह गोचर फल के सम्बन्ध में एक सामान्य नियम है कि **सूर्य, मंगल** ग्रह राशि के आरम्भ में (१० अंश तक) अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते है। **शुक्र और गुरु** राशि के मध्य में (अर्थात् १० से २० अंश तक) फल देते हैं। **चन्द्रमा और शनि** राशि के अन्तिम तृतीयांश–अर्थात् २१ से ३० अंश तक) विशेष रूप से प्रभावी होते हैं। बुध और राहु राशि के समस्त अंशों में आकस्मिक–किसी भी समय अपना शुभाशुभ फल प्रकट कर सकते हैं।

चन्द्र राशि से सूर्यादि ग्रहों का संचार फल

सूर्य का गोचर फल–जन्मस्थ चन्द्रमा से ३, ६, १० एवं ११वें स्थानों में गोचरवश सूर्य शुभ फल करता है, शेष स्थानों (१, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२वें) में गोचर सूर्य का फल अशुभ माना जाता है।

चन्द्रराशि से प्रथम भाव में सूर्य हो, तो धन हानि, स्वास्थ्य में खराबी, तनाव, वृथा यात्रा एवं स्थान परिवर्तन की सम्भावना होती है।

दूसरे स्थान में सूर्य हो तो, परिवार में कलह–कलेश, आंखों में कष्ट, धन का

अपव्यय हो। **तृतीय स्थान** में गोचरवश सूर्य आए तो पुरुषार्थ में वृद्धि, धन लाभ एवं मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। **चतुर्थ स्थान** में गोचरवश सूर्य हो तो घरेलू उलझनों के कारण सुख में कमी, सवारी, मकान–जायदाद सम्बन्धी परेशानियाँ तथा विवाह सुख में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

गोचर में **पंचम स्थान** में सूर्य होने से शरीर कष्ट, उत्तेजना, विद्या एवं सन्तान सुख में अड़चने धन–हानि एवं गुप्त चिन्ताएँ रहें।

गोचर में छठे स्थान में सूर्य हो तो शत्रु नाश, धन–लाभ, मनोवांछित कार्य में सफलता रहेगी। **चन्द्र से सातवें स्थान में** सूर्य होने से वैवाहिक जीवन में उलझनें, कारोबार में अड़चनें, धन हानि, वृथा यात्रा, पेट विकार एवं नजदीकी बन्धुओं से मनमुटाव रहे। **अष्टम** भाव में गोचर का सूर्य हो, तो शरीर कष्ट, रोग–भय, गुप्त–चिन्ता रहे। **नवम में सूर्य** हो, तो आय कम व खर्च अधिक रहे। बनते कामों में अड़चनें पैदा हो। **दशम** में **सूर्य** हो, तो धन–लाभ एवं मनोवांछित कार्यों में सफलता एवं पदोन्नति हो।

एकादश में सूर्य हो, तो अकस्मात् धन प्राप्ति, भाग्योन्नति एवं बन्धु सुख रहे।

गोचरवश द्वादश में सूर्य आए, तो आय कम व खर्च अधिक, आंखों में कष्ट एवं रोग भय रहे।

चन्द्र का गोचर फल–गोचर वश जब जन्म राशि से चन्द्रमा १, २, ३, ६, ७, १० एवं ११वें स्थान पर संचार करता है, तब क्रमशः आशाओं में सफलता, धन लाभ, प्रिय बन्धुओं से मिलाप, काम सुख, वाहन आदि सुख, कार्य व्यवसाय में उन्नति आय एवं सुख व मनोरंजन के साधनों में वृद्धि होती है।

जन्म राशि से ४, ५, ८, ९ और १२वें गोचरवश चन्द्रमा आने से धन की हानि, अशान्ति, शरीर कष्ट, अपव्यय, एवं वृथा यात्रा आदि अशुभ फल होते हैं।

मंगल का गोचर फल–जन्म-राशि से ३, ६ एवं ११वें स्थान में गोचरवश आए तो क्रमशः पुरुषार्थ एवं धन में वृद्धि, शत्रु पर विजय, बिगड़े कार्यं में सुधार एवं भूमि–जायदाद, सवारी आदि एवं भाई–बंधुओं द्वारा लाभ होता है।

चन्द्र राशि से १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १०, एवं १२ स्थानों पर गोचरवश भौम संचार हो, तो क्रमशः शरीर कष्ट, उत्तेजना, धन हानि, वाहनादि से चोट भय, गुप्त चिन्ता, विद्या एवं संतान सम्बन्धी परेशानी, पति–पत्नी वैमनस्य, भाई बन्धुओं से अनबन, शरीर कष्ट, पापाचरण, आप्रेशन का डर, कार्य व्यवसाय में विघ्न बाधाओं के बाद धन–लाभ, १२वें मंगल से रक्त विकार, शरीर–अस्वस्थता एवं फिजूल खर्ची बढ़ती है।

बुध गोचर फल–जन्म राशि से २, ४, ६, ८, १० एवं ११वें स्थान पर बुध हो, तो धन लाभ, सवारी आदि सुखों में वृद्धि, शत्रु नाश, लाटरी आदि द्वारा धन लाभ, व्यवसाय में धन लाभ, पदोन्नति, यात्रा में लाभादि शुभ फल प्राप्त होंगे।

जन्मराशि से १, ३, ७, ९ एवं १२वें स्थान बुध हो तो मानसिक तनाव, वृथायात्रा, स्त्री कष्ट एवं बन्धुओं से मनमुटाव, अड़चनें एवं शरीर कष्ट, विद्या में रुकावटें व वृथा खर्च होता है।

गुरु गोचर फल–जन्म राशि से २, ५, ७, ९ एवं ११वें गोचरवश गुरु होने से क्रमशः धन लाभ एवं परिवारिक सुख में वृद्धि, धर्म–कर्म की ओर रूचि, विद्या में सफलता, मंगल कार्य, शेयर–लाटरी आदि द्वारा अचानक लाभ एवं विवाह–संतानादि सुख, सातवें गुरु परिवारिक सुख प्रद, नवें गुरु भाग्य–वृद्धिकारक, धर्म–कर्म की ओर रूचि, एवं ११वें धन लाभ एवं पदोन्नति, प्रिय बन्धु–सुख आदि शुभ फल घटित होंगे।

जन्म राशि से १, ३, ४, ६, ८, १० एवं १२वें गुरु होने से रोजगार में विघ्न–बाधाएँ आर्थिक चिन्ता, ३रे गुरु शरीर कष्ट, बन्धु से कलह–कलेश, वृथा यात्रा, चतुर्थ गुरु अशान्ति, सवारी, भूमि जायदाद सम्बन्धी उलझनें, षष्ठ गुरु से रोग एवं शत्रु भय, अष्टम गुरु से शरीर कष्ट, धन हानि, शत्रु भय, १०वें गुरु व्यवसाय में उलझनें तथा १२वें गुरु से वृथा दौड़–धूप, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

शुक्र गोचर फल–जन्म राशि से १, २, ३, ४, ५, ८, ९, ११, १२वें स्थान पर धन–ऐश्वर्य एवं वाहनादि का सुख, स्त्री सुख, मनोरंजन के साधन, में मित्रों से प्रसन्नता आदि मिलती है। जन्म से ६, ७ एवं दसवीं राशि में जाने से धन सम्बन्धी परेशानी ऐश्वर्य वाहनादि सुखों में हानि, कार्यों में बाधाएं एवं स्त्री से विरोध एवं गुप्त चिन्ताएँ होती है।

शनि गोचर फल–गोचरवश शनि चन्द्र से ३, ६ एवं ११वें स्थानों में शुभ फल प्रकट करता है तथा क्रमशः प्रयासों में सफलता, अकस्मात् यात्रा एवं धन लाभ, छटे शनि धन एवं सुख साधनों में वृद्धि, शत्रु पर विजय, वाहन, भूमि–मकानादि भोग–सुखों की प्राप्ति तथा ११वें शनि में पदोन्नति, कार्य–व्यवसाय में लाभ, शेयर–लाटरी आदि द्वारा अचानक लाभ होता है।

शनि जन्म राशि से १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० एवं १२वें स्थान में मानसिक तनाव, शरीर–कष्ट, आर्थिक संकट रहे, दूसरे स्थान में शनि आने से परिवारिक कलह–कलेश, धन हानि, आंखों को कष्ट रहे, चतुर्थ शनि सुख में कमी, अवांछित स्थान परिवर्तन, अपव्यय, भूमि–मकान सम्बन्धी झंझट एवं वाहनादि के कारण चोट–दुर्घटना का भय रहे। गोचरवश पंचमस्थ शनि गुप्त चिन्ता, विद्या में अड़चनें, संतान कष्ट, तनाव, धोखाधड़ी से धन हानि का भय हो।

सप्तम में शनि से वैवाहिक जीवन में कलह–कलेश, धन हानि, चिन्ताएँ एवं दुर्घटना का भय रहता है।

गोचरवश अष्टम शनि से रोगभय, आर्थिक परेशानियां, परिवारिक कष्ट व अपव्यय हो, जब नवें भाव में शनि आता है, तो अशुभ कामों में प्रवृत्ति होती है, सहयोगियों से अनबन, वृथा यात्रा एवं धन का अपव्यय होता है।

गोचरवश दसवें शनि व्यवसाय अथवा सर्विस में अड़चनें, मानसिक तनाव, पति–पत्नी में मनमुटाव, उलझनें व धन हानि हो।

गोचरवश १२वें शनि आ जाए, तो वृथा यात्राएँ अधिक करनी पड़े, स्वास्थ्य में विकार, परिवार सम्बन्धी चिन्ता एवं धन का अपव्यय अधिक हो।

जिसकी जन्म राशि से १, २ एवं १२वें स्थान गोचरवश शनि आ जाए, तो उस जातक को **शनि साढ़सति** के अरिष्ट प्रभाव से ग्रस्त भी माना जाता है। जिसके प्रभाव–स्वरूप भाई–बन्धुओं से कलह–क्लेश, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, शत्रु भय व आय कम व खर्च की अधिकता रहती है।

राहु गोचर विचार–जन्म राशि से १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० एवं १२वें स्थानों में राहु प्रायः अशुभफल दायक होता है। १–२ स्थान में शरीर कष्ट–कलह–क्लेश, अपव्यय, आर्थिक परेशानियां, ४थे स्थान में भूमि सवारी सम्बन्धी परेशानी, सुख में कमी, ५वें स्थान में धन–हानि, सोची योजनाओं में अड़चनें एवं विद्या में विघ्न बाधाएं व संतान सम्बन्धी चिन्ता रहे। ५वें राहु परिवारिक कलह, हानि, शोक, चिन्ता, पेट विकार, ८में क्लिष्ट रोग एवं शत्रुभय, ९–१० में राहु होने से भाग्य में बाधा एवं कारोबार में विघ्न–बाधाएँ, धन–हानि रहे। १२वें स्थान में धन हानि, कष्ट व अपव्यय हो। जन्म राशि से ३, ६ एवं ११वें राहु होने से पुरुषार्थ में वृद्धि, धन लाभ व सुख के साधन बढ़ें, लाटरी शेयरों आदि से अचानक धन लाभ के चांस बनते हैं।

केतु–गोचर फल–३, ६ एवं ११वें स्थानों में गोचरवश केतु से पराक्रम एवं सुख साधनों में वृद्धि, शत्रुनाश, धन लाभ, श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात व धन लाभ की प्राप्ति होती है।

१, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें स्थानों में गोचरवश केतु होने से क्रमशः रोग भय–शिरपीड़ा, धन–हानि, पारिवारिक–कलह, दुर्घटना–चोटादि का भय, सुख में कमी, विद्या या सोची योजना में विफलता, बन्धुनाश–स्त्री कष्ट, गुप्त रोग एवं शत्रु भय, भाग्योन्नति में बाधा, अपव्यय, सुख में कमी, वृथा यात्रा एवं विश्वासघात होने का भय रहता है।

विशेष ज्ञातव्य

(१) जन्मकालीन कुण्डली में ग्रहों की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा को ध्यान में रखते हुए ही चन्द्रराशि से गोचर ग्रहों के शुभाशुभ फल का विवेचन करना चाहिए।

(२) कुछ विद्वान चन्द्रराशि के साथ–साथ जन्म लग्न से भी गोचर ग्रहों के शुभाशुभत्व का विचार करते हैं। तथापि चन्द्र कुण्डली एवं लग्न कुण्डली–दोनों का सामंजस्य स्थापित करके फल कहना उचित होगा।

(३) यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह अशुभ भावों का स्वामी होकर अशुभ स्थानों में पड़ा हो, तो वह ग्रह गोचर में शुभ स्थान पर आ जाने पर भी गोचर का पूर्ण अशुभ फल न होकर कुछ कम अशुभ फल होगा।

(४) यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह शुभ हो, और गोचर में भी शुभ स्थान में भ्रमण कर रहा हो, तो उत्तम फल करेगा।

(५) गोचर फल एवं वेध विचार

उपरोक्त सूर्यादि ग्रहों के गोचर वश जो शुभ स्थान कहे गए हैं। यदि उन्हीं शुभ स्थानों के नीचे लिखे वेध स्थानों पर कोई अन्य ग्रह संचार कर रहा हो, तो सम्बद्ध ग्रह का शुभ गोचरफल नहीं होगा। उदाहरण स्वरूप जन्म राशि से सूर्य तृतीय स्थान शुभ फल देता है। परन्तु यदि नवम भाव (विद्ध) में शनि के * शनि के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह हो, तो सूर्य का गोचर वश जो शुभ फल कहा गया है, वह नहीं होगा।

आगे प्रत्येक ग्रह का शुभ स्थान और वेध स्थान दिया जाता है।

जन्मराशि से सूर्यदि ग्रहों का वेध–विचार

शुभ स्थान	३	६	१०	११	०	०	०	०	०	सूर्य
वेध स्थान	९	१२	४	५	०	०	०	०	०	
शुभ स्थान	१	३	६	७	१०	११	०	०	०	चन्द्रमा
वेध स्थान	५	९	१२	२	४	८	०	०	०	कृ. पक्ष
शुभ स्थान	२	५	९	०	०	०	०	०	०	चन्द्रमा
वेध स्थान	१	६	१०	०	०	०	०	०	०	शुक्ल पक्ष
शुभ स्थान	३	६	११	०	०	०	०	०	०	मं. शनि
वेध स्थान	१२	९	५	०	०	०	०	०	०	राहु केतू
शुभ स्थान	२	४	६	८	१०	११	०	०	०	बुध
वेध स्थान	५	३	९	१	८	१२	०	०	०	
शुभ स्थान	२	५	७	९	११	०	०	०	०	गुरू
वेध स्थान	१२	४	३	१०	८	०	०	०	०	
शुभ स्थान	१	२	३	४	५	८	९	११	१२	शुक्र
वेध स्थान	८	७	१	१०	९	५	११	३	६	

जन्मराशि एवं लग्नानुसार गोचर वश कोई शुभ ग्रह भी होवे, तो भी वेध स्थान में किसी अन्य ग्रह के आ जाने से वह ग्रह अपना शुभ फल प्रदान नहीं करता। इसी भान्ति गोचरवश कोई अशुभ ग्रह भी विपरीत वेध हो जाने से गोचर अशुभ फलदायी ग्रह भी अशुभफल प्रदान नहीं करता। गोचर विचार के लिए अधिक विस्तार के लिए हमारी फलित सम्बन्धी आगामी पुस्तक का अवलोकन करें।

---

* विशेष–ध्यान रहे सूर्य–शनि (पिता–पुत्र) और चन्द्रमा व बुध (पिता–पुत्र) के मध्य वेध विचार नहीं किया जाता।

जन्म कुण्डली के कुछ प्रमुख योग

धन लाभ व तरक्की के योग

१. जन्म लग्नेश यदि दशमेश ग्रह के साथ पंचम भावस्थ हो तो उस वर्ष धन-धान्य का लाभ तथा सरकार की ओर से मान सम्मान की प्राप्ति होगी ।

२. जन्म लग्न का योग कारक शुभ ग्रह तथा गोचर कुण्डली या वर्ष लग्नाधिपति ग्रह केन्द्र या दूसरे भाव में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो ग्रह विशेष की दशा अथवा वर्ष में विपुल धन का सुख और लाभ होता है ।

३. ताजिक भास्करानुसार, धन भाव में देवगुरु बृहस्पति हो तथा नवम भाव में चन्द्र व शुक्र का योग हो, तो उस वर्ष भाग्योदय होकर धन-सम्पंदा आदि सुखों की प्राप्ति होती है ।

४. यदि जन्म लग्नेश, मुन्थेश एवं वर्ष लग्नेश ग्रह बलान्वित होकर केन्द्र, त्रिकोण भावों में स्थित हों, तो वर्ष में धन सम्पदा, आभूषण आदि द्रव्यों की प्राप्ति होती है ।

सवारी सुख विचार

१. जन्म कुण्डली एवं गोचर कुण्डली में दशमेश शुभ ग्रह हो और वह चतुर्थ, द्वितीय (धन), तृतीय या लग्न भाव में हो तथा चतुर्थेश ग्रह केन्द्रगत हो तो अच्छे चौपाय या सवारी का सुख एवं सरकार से लाभोन्नति प्राप्त होती है ।

२. जन्म या गोचर कुण्डली में छटे और ग्यारहवें भाव का स्वामी लग्न में पड़ा हो, तो उस वर्ष सवारी सुख होता है ।

३. वर्ष या गोचर कु. में भाव में यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से युक्त हो तथा दशम भाव में गुरु किसी सौम्य ग्रह के साथ हो, तो उस वर्ष सरकार से लाभ व सवारी सुख प्राप्त हो ।

भूमि-जायदाद सम्बन्धी योग

१. वर्ष लग्नेश चतुर्थ स्थान में और चतुर्थेश लग्न भाव में स्थित हो तथा भूमि कारक ग्रह मंगल की चौथे भाव पर शुभ दृष्टि पड़ती हो, तो वर्ष में भूमि, मकान जायदाद आदि सुख प्राप्त हो ।

२. जन्म एवं गोचर कुण्डली में चतुर्थेश और भाग्येश का परस्पर सम्बन्ध बनें, तो जायदाद का सुख होता है । वर्ष लग्न का स्वामी ग्रह यदि लग्न भाव को देखता हो अथवा लग्न में ही पड़ा हो तथा उसका मित्र ग्रह चतुर्थ भाव में हो अथवा चतुर्थ भाव पर गुरु या मंगल की शुभ दृष्टि हो तो, उस वर्ष जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी ।

३. चतुर्थ भाव में यदि मुंथा पर मंगल की स्वगृही दृष्टि हो, तो उस वर्ष के चतुर्थ मास में भूमि सुख होगा ।

सन्तान सुख योग

१. जन्म कुण्डली में पंचमेश ग्रह की दशा हो वर्ष कुं. में पंचमेश ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह से युक्त हो, अथवा वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो अथवा वर्ष लग्नेश से

पंचमेश त्रिकोण भावस्थ हो अथवा दृष्ट हो, तो उस वर्ष गर्भ योग बनता है ।

२. जन्म कुण्डली में गुरु जिस राशि में हो, वह राशि वर्ष कुं. में लग्न भाव में अथवा पंचम भाव में आ जाए, तो पुत्र संतान योग होगा।

३. पांचवे भाव शुक्र यदि मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो वर्ष में संतान योग बनता है। अथवा शुभ ग्रह पंचम में हो और पंचमेश ग्रह की दृष्टि भी पंचम भाव में पड़े, तो गर्भ योग होता है ।

४. गुरु पंचम अथवा नवम भाव में हो, द्वितीयेश दशम भाव में तथा पंचमेश बलवान हो, तो पुत्र सुख होता है। अथवा सातवें भाव जब शुक्र मंगल द्वारा दृष्ट हो तो स्त्री को गर्भ योग बने । तथा उस वर्ष संतान सुख प्राप्त होगा ।

परीक्षा एवं कम्पीटीशन में सफलता के योग

संतान कारक प्रायः सभी योग परीक्षा में सफलता अथवा असफलता हेतु घटित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित योग भी विशेष उपयोगी होंगे ।

१. जन्म एवं वर्ष कुण्डली के पंचमभाव में चन्द्र–गुरु अथवा शुक्र गुरु का योग हो अथवा गुरु/शुक्र द्वारा दृष्ट तथा पंचमेश की शुभ दृष्टि भी पंचम भाव पर हो तो परीक्षा या कम्पीटीशन (प्रतियोगता) में असफलता प्राप्त होगी । यदि पंचम में पाप ग्रहों का योग अथवा दृष्टि हो तो परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी ।

२. जन्म कुण्डली का पंचमेश ग्रह यदि वर्ष में पंचम अथवा नवम भाव में शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट हो तो प्रतियोगिता अथवा परीक्षा में सफलता प्रदान करता है। अथवा नवम भाव में गुरु हो और मुंथा भी शुभ ग्रह में हो तो सफलता होगी ।

वर्ष में नौकरी एवं प्रोमोशन के योग

१. दशमेश ग्रह यदि दशम भाव में पड़कर जन्म लग्न एवं वर्ष लग्नेश के साथ इत्थशाल (स्थान परिवर्तन) करे, तो उस वर्ष निः संदेह सर्विस के योग बनते हैं ।

२. वर्ष लग्नेश यदि बलवान हो दशम भाव में पड़े और उस पर मुंथेश की दृष्टि हो, तो उच्चस्तरीय सर्विस या पद की प्राप्ति होती है ।

३. वर्ष कु. में मुंथा यदि दशम भाव में पड़े तथा मुंथा या मुंथेश सूर्य राशि अथवा सूर्य के साथ सम्बन्ध स्थापित करे तो सरकारी नौकरी के योग बनते हैं ।

स्थानान्तरण के योग

१. वर्ष कुण्डली में यदि लग्नेश व तृतीयेश, चतुर्थेश व नवमेश ग्रह एक ही भाव में पड़े हों या परस्पर एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हों तो उस वर्ष बदली के योग बनेंगे ।

२. यदि वर्ष कुण्डली में लग्न एवं मुंथा चर राशि में पड़ी हो और लग्नेश व मुंथेश भी चर राशि में पड़े तो उस वर्ष अवश्य स्थानान्तरण होगा ।

३. यदि वर्ष लग्नेश ग्रह वक्री होकर चन्द्रमा देखता हो तो स्थानान्तरण होता है।

४. यदि चौथे भाव में चर राशि हो और द्वितीयेश व चतुर्थेश नवम अथवा एकादश भाव में पड़े तो बदली के बाद प्रोमोशन होती है ।

५. यदि वर्ष लग्न चर राशि का हो तथा लग्नेश व चन्द्रमा दोनों नवम भाव में

हो तो परिवर्तन शुभ एवं लाभदायक होता है ।

६. यदि वर्ष लग्न चर हो तो शीघ्र, यदि स्थिर हो तो न हो अथवा देरी से हो, द्विस्वभाव हो तो जाकर वापिस आ जाए। अथवा वर्ष लग्नेश वक्री हो तो जाकर फिर आना पड़े ।

७. दशमेश का अष्टम भावस्थ अथवा अष्टमेश का दशम भावस्थ होना अथवा दशम भावस्थ चन्द्रमा पर शनि की पाप दृष्टि हो तो सर्विस अथवा व्यवसाय के सम्बन्ध में गम्भीर उलझनों एवं परेशानियों का सामना होता है ।

विवाह सुख विचार

१. सप्तमेश यदि बलवान होकर केन्द्र भावों में स्थित एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो स्त्री सुख एवं धन–धान्य की प्राप्ति होती है.

२. वर्ष. लग्नेश या गोचर कु. में लगेश यदि सप्तम भाव में सप्तमेश ग्रह से संयुक्त होकर शुभ ग्रह से वीक्षित हो, तो उस वर्ष स्त्री अथवा पति सुख की प्राप्ति लाभदायक होती है ।

विवाह सुख में बाधक अरिष्ट योग

१. सप्तमेश अशुभ ग्रह से युक्त हो या शुभ नीच राशिस्थ हो, अंथवा सप्तम भाव में पाप ग्रह का योग अथवा दृष्टि हो तो पुरुष अथवा स्त्री के विवाह में अथवा वैवाहिक जीवन में उलझनें व परेशानियां पैदा होती है ।

२. सातवें भाव में राहु के साथ चन्द्रमा हो, तो सातवें महीने स्त्री को कष्ट हो। अथवा सातवें भाव राहु–चन्द्र–मंगल का सम्बन्ध हो तो भी स्त्री के कारण कष्ट हो ।

विदेश–यात्रा योग

१. जब वर्ष कुण्डली में वर्षेश और भाग्येश ग्रह के साथ इत्थशाल योग बने, तो उस वर्ष विदेश यात्रा का योग बनता है ।

२. नवम भाव में मुंथा का आना और मुंथेश बारहवें भाव में पड़ कर शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो शुभ विदेश यात्रा होती है ।

३. वर्ष लग्न कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ एवं सप्तम भावों में यदि चर राशियां आ जाएं तथा इन भावों के साथ शुभ ग्रह सम्बन्ध करते हों, तो उस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बनते हैं ।

४. जन्म कुण्डली का सप्तमेश ग्रह यदि वर्ष में मुंथेश व वर्षेश होकर १० या सप्तम में आ जाए तो वर्ष में शुभ विदेश यात्रा होती है. अथवा वर्ष में स्वगृही मुंथा से सप्तम भावस्थ उच्च राशिस्थ होवे तो विदेश यात्रा होगी ।

५. वर्ष कु. में सप्तमेश सप्तम भाव में ही हो, अथवा सातवें घर में चर राशिस्थ शुभ ग्रह पड़े हों, तो विदेश यात्रा लाभदायक रहती है ।

६. लग्नेश यदि द्वितीयेश अथवा पंचमेश ग्रह के साथ नवम भाव में चर राशिस्थ हो तथा चन्द्रमा भी चर राशिगत हो तो विदेश में विशेष भाग्योदय होता है।



ज्योतिष तत्त्व

प्राचीनकाल से ही मनुष्य को अपने शुभाशुभ भविष्य को जानने की जिज्ञासा रही है। उसकी इसी प्रवृत्ति ने ज्योतिष विद्या को जन्म दिया। वास्तव मे ज्योतिष शास्त्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो ईश्वरीय एवं शुद्ध प्राकृतिक नियमों पर आधारित है। प्राचीन मनीषियों ने अपनी दिव्य ज्ञान चक्षुओं एवं सतत साधना द्वारा ग्रह-नक्षत्रों की प्रकृति, एवं प्रभाव का गहन अनुशीलन किया। जिसके फलस्वरुप हमें गणित एवं फलित ज्योतिष के सिद्धान्त प्राप्त हुए। ज्योतिष शास्त्र भूत, भविष्य और वर्तमान की साकार कहानी है।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रारम्भिक जानकारी, मूलभूत गणितीय एवं फलित सम्बन्धी सिद्धान्त, सम्पूर्ण जन्मपत्री बनाने की सरल विधियां, नक्षत्रों, ग्रहों एवं राशियों के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन, तिथि-वारादि पंचांग परिचय, नवग्रह स्पष्ट एवं भावस्पष्ट करना, चलित चक्र, नवांशादि षड्वर्ग लगाना तथा उसपर आधारित फलकथन करना, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा, अष्टोतरी-योगिनी आदि दशाएं निकालने की सरल विधियां उदाहरण सहित बतलाई गई हैं।

इसके अतिरिक्त चन्द्रस्पष्ट करने की सारिणीयां, भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं देशान्तर, गोचर ग्रह फल, गण्डान्त विचार आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। जिसके अनुशीलन से साधारण पठित व्यक्ति भी एक कुशल ज्योतिषी बन सकता है। आशा है यह पुस्तक सभी वर्ग के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय होगी।

वितरक - जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (पंजाब)

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी
पचाँग दिवाकरम्
जालन्धर